केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Kendriya Vidyalaya Sangathan

हिन्दी (आधार) (कोड सं. ३०२)

Hindi (Core) (Code No. 302)

कक्षा/Class: XI

2024-25

विद्यार्थी अध्ययन सामग्री

Student Support Material

संदेश

विद्यालयी शिक्षा में शैक्षिक उत्कृष्टता प्राप्त करना केन्द्रीय विद्यालय संगठन की सर्वोच्च वरीयता है। हमारे विद्यार्थी, शिक्षक एवं शैक्षिक नेतृत्वकर्ता निरंतर उन्नति हेतु प्रयासरत रहते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में योग्यता आधारित अधिगम एवं मूल्यांकन संबन्धित उद्देश्यों को प्राप्त करना तथा सीबीएसई के दिशा निर्देशों का पालन, वर्तमान में इस प्रयास को और भी चुनौतीपूर्ण बनाता है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के पांचों **आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान** द्वारा संकलित यह 'विद्यार्थी सहायक सामाग्री' इसी दिशा में एक आवश्यक कदम है । यह सहायक सामग्री कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों के लिए सभी महत्वपूर्ण विषयों पर तैयार की गयी है । केन्द्रीय विद्यालय संगठन की 'विद्यार्थी सहायक सामग्री' अपनी गुणवत्ता एवं परीक्षा संबंधी सामाग्री-संकलन की विशेषज्ञता के लिए जानी जाती है और अन्य शिक्षण संस्थान भी इसका उपयोग परीक्षा संबंधी पठन सामग्री की तरह करते रहे हैं । शुभ-आशा एवं विश्वास है कि यह सहायक सामग्री विद्यार्थियों की सहयोगी बनकर सतत मार्गदर्शन करते हुए उन्हें सफलता के लक्ष्य तक पहुंचाएगी ।

शुभाकांक्षा सहित ।

निधि पांडे

आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

प्रभारी एवं संयोजक: श्री मुकेश कुमार, उपायुक्त एवं निदेशक

के.वि.सं. शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान चंडीगढ़

पुनरीक्षण: के.वि.सं. शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान चंडीगढ़

श्रीमती चरणजीत सेठी, पी.जी.टी. (हिंदी), के.वि. सेक्टर-31 चंडीगढ़ (चंडीगढ़ संभाग)

विषय सूची

क्रम सं.	पाठ्य विवरण	पृष्ठ सं.
1.	पाठ्यक्रम विनिर्देशन	5
	अपठित बोध	
2.	अपठित बोध (गद्य)	7
3.	अपठित बोध (पद्यांश / काव्य)	12
	सृजनात्मक लेखन और व्यावहारिक लेखन	
4.	अनुच्छेद-लेखन	16
5.	पत्र-लेखन	21
	अभिव्यक्ति और माध्यम	
6.	जनसंचार और अन्य माध्यम	24
	आरोह भाग-1 (काव्य खंड)	
9.	हम तौ एक एक करि जाना (पद-1) कबीर	40
10.	मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई (पद-1) मीरा	42
11.	घर की याद - भवानी प्रसाद मिश्र	45
12.	चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती - त्रिलोचन	49
13.	ग़ज़ल - दुष्यंत कुमार	52
14.	हे भूख मत मचल, हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर - अक्क महादेवी	55
15.	सबसे खतरनाक - अवतार सिंह संधू	58
16.	आओ, मिलकर बचाएँ - निर्मला पुतुल	61
	आरोह भाग-1 (गद्य खंड)	
17.	नमक का दरोगा - प्रेमचंद	64
18.	मियाँ नसीरुद्दीन - कृष्णा सोबती	68
19.	अपू के साथ ढाई साल - सत्यजित राय	72
20.	विदाई संभाषण - बालमुकुंद गुप्त	77
21.	गलता लोहा - शेखर जोशी	82
22.	रजनी - मन्नू भंडारी	87
23.	जामुन का पेड़ - कृश्नचंदर	90
24.	भारत माता - जवाहरलाल नेहरू	94
	पूरक पाठ्य पुस्तक वितान भाग-1	
25.	भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लता मंगेशकर - कुमार गंधर्व	98
26.	राजस्थान की रजत बूँदें - अनुपम मिश्र	104
27.	आलो आंधारि - बेबी हालदार	109
28.	आदर्श प्रश्नपत्र	114
29.	अंक विभाजन सहित उत्तरमाला	120
30.	संदर्भ एवं आभार	125

हिंदी (आधार) (कोड सं. 302) कक्षा -11वीं (2024-25)

परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

- **प्रश्न -पत्र तीन खण्डों - खंड- क, ख और ग में होगा|**
- **खंड- क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे I सभी प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।**
- **खंड- ख में अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर प्रश्न पूछे जाएँगे| प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए जाएंगे |**
- **खंड- ग में आरोह भाग - 1 एवं वितान भाग - 1 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर प्रश्न पूछे जाएँगे| प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे |**

भारांक-80 **निर्धारित समय - 03 घंटे**

वार्षिक परीक्षा हेतु भार विभाजन

	खंड-क (अपठित बोध)	18 अंक
1	01 अपठित गद्यांश (लगभग 250 शब्दों का) पर आधारित बोध, चिंतन, विश्लेषण पर बहुविकल्पीय प्रश्न, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न, लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे I (बहुविकल्पीय प्रश्न 01 अंक x 03 प्रश्न = 03 अंक, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 01 अंक x 01 प्रश्न = 1 अंक, लघूत्तरात्मक प्रश्न 02 अंक x 3 प्रश्न = 6 अंक)	10 अंक
2	01 अपठित पद्यांश (लगभग 100 शब्दों का) पर आधारित बोध, सराहना, सौंदर्य, चिंतन, विश्लेषण आदि पर बहुविकल्पीय प्रश्न, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न, लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे I (बहुविकल्पीय प्रश्न 01 अंक x 03 प्रश्न = 03 अंक, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 01 अंक x 01 प्रश्न = 01 अंक, लघूत्तरात्मक प्रश्न 02 अंक x 02 प्रश्न = 04 अंक)	08 अंक
	खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर) **पाठ संख्या 1, 2, 9, 10, 14, 15 तथा 16 पर आधारित**	22 अंक
3	दिए गए 03 अप्रत्याशित विषयों में से किसी 01 विषय पर **आधारित** लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन (06 अंक x 01 प्रश्न)	06 अंक
4	औपचारिक पत्र लेखन। (विकल्प सहित) (05 अंक x 01 प्रश्न)	05 अंक
5	**पाठ संख्या 1, 2, 9, 10, 14, 15 तथा 16 पर आधारित** 04 प्रश्न (विकल्प सहित) (02 अंक x 04 प्रश्न= 8 अंक) (लगभग 40 शब्दों में), (03 अंक x 01 प्रश्न = 3 अंक) (लगभग 60 शब्दों में)	11 अंक

	खंड- ग (आरोह भाग – 1 एवं वितान भाग-1 पाठ्य पुस्तकों के आधार पर)	40 अंक
6	पठित काव्यांश पर आधारित 05 बहुविकल्पी प्रश्न (01 अंक x 05 प्रश्न)	05 अंक
7	काव्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (03 अंक x 02 प्रश्न)	06 अंक
8	काव्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक x 02 प्रश्न)	04 अंक
9	पठित गद्यांश पर आधारित 05 बहुविकल्पी प्रश्न (01 अंक x 05 प्रश्न)	05 अंक
10	गद्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (03 अंक x 02 प्रश्न)	06 अंक
11	गद्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक x 02 प्रश्न)	04 अंक
12	वितान के पाठों पर आधारित 03 में से 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 100 शब्दों में) (05 अंक x 02 प्रश्न)	10 अंक
13	**(अ) श्रवण तथा वाचन** **(ब) परियोजना कार्य**	10+10 = 20 अंक
कुल अंक		**100 अंक**

निर्धारित पाठ्यपुस्तकें :

1. **आरोह, भाग-1,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
2. **वितान भाग-1,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
3. **अभिव्यक्ति और माध्यम**, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

नोट - पाठ्यक्रम के निम्नलिखित पाठ हटा दिए गए हैं ।

आरोह भाग - 1	काव्य खंड	• कबीर (पद 2) - संतो देखत जग बौराना • मीरा (पद 2) - पग घुंगरू बांधि मीरा नाची • रामनरेश त्रिपाठी - पथिक (पूरा पाठ) • सुमित्रानंदन पंत - वे आँखें (पूरा पाठ)
	गद्य खंड	• कृष्णनाथ - स्पीति में बारिश (पूरा पाठ) • सैयद हैदर रज़ा - आत्मा का ताप (पूरा पाठ)

अपठित बोध

अपठित बोध का अर्थ- अपठित शब्द 'अ' उपसर्ग,'पठ्' धातु (क्रिया) तथा 'इत' प्रत्यय से मिलकर बना है। यहाँ 'अ' का अर्थ है 'नहीं' और 'पठित' का अर्थ है 'पढ़ा हुआ' या 'पढ़ा गया' अर्थात पहले नहीं पढ़ा हुआ। 'बोध' शब्द का अर्थ है 'समझ'। भाव यह है कि विद्यार्थियों को वह गद्यांश अथवा पद्यांश पढ़कर समझना है और उन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देना है जिसे उन्होंने अपने पाठ्यक्रम में नहीं पढ़ा है।

अपठित गद्यांश अथवा पद्यांश पर आधरित प्रश्नों के उत्तर देने की विधि - विद्यार्थी नीचे दिए गए सुझावों की सहायता से अपठित गद्यांश या पद्यांश को समझकर उन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर आसानी से सकते हैं-

1. अपठित गद्यांश/ पद्यांश का बार-बार मौन वाचन करके उसे समझने का प्रयास करें।
2. इसके पश्चात प्रश्नों को पढ़ें और दिए गए गद्यांश /पद्यांश में संभावित उत्तरों को रेखांकित करें।
3. जिन प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट न हों, उनके उत्तर जानने हेतु गद्यांश / पद्यांशको पुन: ध्यान से पढ़ें।
4. पूछे गए प्रश्नों के अनुसार उत्तर हमेशा सहज भाषा में देने का प्रयास करें।
5. उत्तर प्रश्न के सम्मुख के दिए गए अंकों के योजनानुरूप संक्षिप्त, सरल और प्रभावशाली होना चाहिए।
6. शीर्षक हमेशा मूल कथ्य से संबंधित होना चाहिए।
7. उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास एवं मुहावरों पर ध्यान देना चाहिए।
8. पूछे गए प्रश्न के अनुसार उत्तर लिखें। गद्यांश अथवा पद्यांश की पंक्ति का वैसा ही प्रयोग करने से बचना चाहिए।

गद्यांश

(1)

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर निर्देशानुसार उत्तर दीजिए-

भारत एक स्वतंत्र धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। इस राष्ट्र के दक्षिण में स्थित कन्याकुमारी से लेकर उत्तर में कश्मीर तक विस्तृत-भू-भाग है। यह भू-भाग अनेक राज्यों के मध्य बँटा हुआ है। यहाँ अनेक धर्मानुयायी तथा भाषा-भाषी लोग रहते हैं। संपूर्ण राष्ट्र का एक ध्वज, एक लोकसभा, एक राष्ट्रचिह्न तथा एक ही संविधान है। इन सभी से मिलकर राष्ट्र का रूप बनता है। देश जब अंग्रेजों के अधीन था तब देश के प्रत्येक भाषा-भाषी तथा धर्म का अवलंबन करने वाले ने देश को स्वतंत्र कराने का प्रयत्न किया था।

उन्होंने महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलने वाले स्वाधीनता आंदोलन में भी भाग लिया था। इसी के परिणामस्वरूप हमारा देश 15 अगस्त, 1947 में स्वतंत्र हुआ। इस स्वतंत्र देश का संविधान बना और वह 26 जनवरी, 1950 में लागू हुआ। इस संविधान के लागू होने के पश्चात् हमारा देश गणतंत्र कहलाया। 15 अगस्त को स्वाधीनता दिवस तथा 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस हमें क्रमश: इसी दिन की याद दिलाते हैं। भारत की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता अनेकता में एकता है।

यहाँ विभिन्न धर्म, जाति तथा संप्रदाय के लोग रहते हैं। इन सभी लोगों की बोली और भाषा भी भिन्न है। भौगोलिक दृष्टि से देखें, तो यहाँ पर कहीं ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं, तो कहीं समतल मैदान। कहीं उपजाऊ भूमि है, तो कहीं रेगिस्तान। दक्षिण में हिंद महासागर लहलहा रहा है। प्राचीन काल में जब यातायात के साधन विकसित हुए थे, तब यह विविधता स्पष्ट रूप से झलकती थी। आधुनिक काल में एक-से-एक द्रुतगामी यातायात के साधन बन चुके हैं, जिससे देश की यह भौगोलिक सीमा सिकुड़ गई है।

निम्नांकित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

(i) एक ध्वज, एक लोकसभा, एक राष्ट्रचिह्न तथा एक ही संविधान- ये सब विशेषताएँ किसकी हैं? -1

क- संप्रभु राष्ट्र की

ख- धर्मनिरपेक्ष भारत की

ग-विभाजित देश की

घ- इनमें से कोई नहीं

(ii) देश के प्रत्येक भाषा-भाषियों तथा धर्मावलम्बियों ने किसके लिए प्रयास किया? -1

क- अपनी भाषा तथा धर्म का प्रचार किया

ख- दूसरे लोगों का शोषण किया

ग-देश को स्वतंत्र कराने का प्रयत्न किया था

घ- हमेशा अन्याय का साथ दिया

(iiii) संविधान लागू होने के बाद भारत की शासन व्यवस्था में क्या बदलाव हुआ? -1

क- भारत अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हुआ

ख- देश की सभी भाषाएँ मिलकर एक हुईं

ग-स्वाधीनता आंदोलन समाप्त हुआ

घ-गणतंत्र भारत की स्थापना हुई

(iv) व्यापक रूप से भारत की सबसे बड़ी विशेषता क्या है? -1

(v) भारत के संदर्भ में 15 अगस्त और 26 जनवरी का क्या महत्त्व है? -2

(vi) यातायात के आधुनिक साधनों के विकास से किस बात पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ा? -2

(vii) भारत की भौगोलिक दशा के विषय में अपने विचार लिखिए- 2

उत्तर- **(i)** ख- धर्मनिरपेक्षभारत की **(ii)** ग-देश को स्वतंत्र कराने का प्रयत्न किया था **(iii)** घ-गणतंत्र भारत की स्थापना हुई **(iv)** अनेकता में एकता का होना **(v)** हमारा देश भारत 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र हुआ और उसके बाद संविधान बनाया गया जो 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ। इसलिए हम 15 अगस्तको 'स्वतंत्रता दिवस' और 26 जनवरी को 'गणतंत्र दिवस' मानते हैं। **(vi)** आधुनिक काल में एक से बढ़कर एक द्रुतगामी यातायात के साधनों के विकास से आवागमन सुविधाजनक हुआ है। देश की भौगोलिक सीमाएँ सिमट कर छोटी हो गई हैं जिससे आर्थिक विकास में आशाजनक वृद्धि हुई है। **(vii)** भौगोलिक दृष्टि से देखेंतो भारत में हर जगह विभिन्नता दिखाई पड़ती है। एक तरफ उपजाऊ भूमि है, तो दूसरी तरफ दूर तक फैला रेगिस्तान भी है। कहीं-कहीं पर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं, तो कहीं समतल मैदान और हरियाली बिछी है। उत्तर में हिमालय पर्वत है तो दक्षिण में हिंद महासागर लहलहा रहा है।

(2)

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

आज से सौ वर्ष पूर्व मोहनदास करमचंद गाँधी ने शिक्षा के परिवर्तन पर मंथन किया था। उन्होंने शिक्षा का विश्लेषण केवल विद्यालय पुस्तक तथा परीक्षा तक ही सीमित रखकर नहीं किया था अपितु उन्होंने भारत की स्थिति पर विचार करने, प्रगति, सभ्यता तथा स्वतंत्रता को परखने का माध्यम बनाया था। ऐसा नही है कि उनके प्रत्येक विचार से सभी सहमत हो, पर सभी इस बात पर सहमत हैं कि उनके विचारों में समता, ईमानदारी, प्रखरता तथा भविष्य निर्माण की दृष्टि थी।

प्रसिद्ध टिप्पणीकार जगमोहन सिंह राजपूत ने लिखा है कि "भारत में अनेक शिक्षाविद तथा नीति निर्धारक जब गाँधी के 'हिंद स्वराज' में दिए गए विचारों तथा बाद में बुनियादी शिक्षा और नई तालीम पर उनके विचारों से मुँह चुराते हैं, तब यह स्पष्ट हो जाता है कि वे गाँधीजी के विचारों की गतिशीलता को या तो समझ

नहीं पा रहे है या समझना नहीं चाहते।" हिंद स्वराज पुस्तक 1903 ई. में लिखी गई। महात्मा गाँधी पहली बार 1888 ई. में विदेश के लिए रवाना हुए थे।

वे 1888 से 1914 ई. के बीच भारत में केवल चार वर्ष ही रहे। गोपालकृष्ण गोखले ने गाँधीजी को सलाह दी थी कि उन्हें भारत भ्रमण कर देश की परिस्थितियों से परिचित होना चाहिए। इस सलाह के पूर्व ही गाँधीजी ने 'हिंद स्वराज' नामक पुस्तक लिखी थी। नवंबर, 1905 में गाँधीजी ने शिक्षा पर एक लेख लिखा था। उस लेख में उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों को सलाह दी थी कि उन्हें भारत में घटित हो रहे परिवर्तनों से सबक लेना चाहिए।

उस समय गाँधीजी अँगरेजी एवं गुजराती में 'इंडियन ओपिनियन' नामक अखबार निकाल रहे थे। वे भारत की सारी घटनाओं से परिचित थे। शिक्षा संबंधी विचार उस समय उनके मानस में अंकुरित हो चुके थे। उस लेख में उन्होंने कहा था कि "भारतीयों का यह कर्तव्य बनता है कि वे शिक्षा प्रसार के लाभों से परिचित हो और यदि दक्षिण अफ्रीका की सरकार आगे नहीं आती है तो वे स्वयं आगे आकर भारतीय बच्चों की शिक्षा का प्रबंध करें।"

निम्नांकित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

(i) आज से सौ वर्ष पूर्व महात्मा गाँधी जी ने किस विषय पर मंथन किया? -1

क- भारत की राजनीतिक दशा

ख- शिक्षा में परिवर्तन

ग-सामाजिक व्यवस्था में सुधार

घ- धार्मिक मान्यताओं में परिवर्तन

(ii) कौन लोग गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा और नई तालीम पर उनके विचारों से मुँह चुराते हैं? -1

क- अनेक शिक्षाविद तथा नीति निर्धारक

ख- सभी राजनीतिक विचारक

ग-पुस्तकों के लेखक

घ-कार्यालयी कर्मचारीगण

(iii) महात्मा गाँधीजी ने अपने लेख में दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों को सलाह दी? -1

क- देश-दुनिया से अलग रहना चाहिए

ख- उन्हें महात्मा गाँधी जी का साथ देना चाहिए

ग-उन्हें राजनीतिक गतिविधियोंमें शामिल होना चाहिए

घ- उन्हें भारत में घटित हो रहे परिवर्तनों से सबक लेना चाहिए

(iv) गाँधीजी अंग्रेजी एवं गुजराती में कौन-सा अखबार निकाल रहे थे?-1

(v) महात्मा गाँधी के शिक्षा संबंधी क्या विचार थे? -2

(vi) गोपालकृष्ण गोखले जी ने महात्मा गाँधीजी को क्या सलाह दी थी?-2

(vii) महात्मा गाँधी के शिक्षा संबंधी विचारों से क्या आप सहमत हैं? - 2

उत्तर- (i) ख- शिक्षा में परिवर्तन (ii) क- अनेक शिक्षाविद तथा नीति निर्धारक **(iii)** घ- उन्हें भारत में घटित हो रहे परिवर्तनों से सबक लेना चाहिए (iv) क- इंडियन ओपिनियन **(v)** महात्मा गाँधी ने शिक्षा का विश्लेषण केवल विद्यालय पुस्तक तथा परीक्षा तक ही सीमित रखकर नहीं किया था। उन्होंने शिक्षा को भारत की स्थिति पर विचार करने, प्रगति, सभ्यता तथा स्वतंत्रता को परखने का माध्यम बनाया था। उनके विचारों में समता, ईमानदारी, प्रखरता तथा भविष्य निर्माण की दृष्टि थी। **(vi)** महात्मा गाँधी 1888 से 1914 ई. के बीच भारत में केवल चार वर्ष ही रहे। उस दौरानगोपालकृष्ण गोखले ने गाँधीजी को सलाह दी थी कि उन्हें भारत का भ्रमण करके देश की परिस्थितियों से परिचित होना चाहिए। **(vii)** महात्मा गाँधीके शिक्षा संबंधी विचार श्रेष्ठ एवं अनुकरणीय हैं।उन्होंने

शिक्षा को पुस्तक तथा परीक्षा तक ही सीमित नहीं रखा अपितु भारत की स्थिति पर विचार करने, प्रगति, सभ्यता तथा स्वतंत्रता को परखने का माध्यम बनाया।बुनियादी शिक्षा और नई तालीम पर उनके विचार क्रांतिकारी हैं। मैं उनके विचारों से सहमत हूँ।

(3)

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

काव्य-कला गतिशील कला है; किंतु चित्रण-कला स्थायी कला है। काव्य में शब्दों की सहायता से क्रियाओं और घटनाओं का वर्णन किया जा सकता है। कविता का प्रवाह समय द्वारा बँधा हुआ नहीं है। समय और कविता दोनों ही प्रगतिशील हैं; इसलिए कविता समय के साथ परिवर्तित होने वाली क्रियाओं, घटनाओं और परिस्थितियों का वर्णन समुचित रूप से कर सकती है। चित्रण-कला स्थायी होने के कारण समय के केवल एक पल को-पदार्थों के केवल एक रूप को-अंकित कर सकती है। चित्रण-कला में केवल पदार्थों का चित्रण हो सकता है।

कविता में परिवर्तनशील परिस्थितियों, घटनाओं और क्रियाओं का वर्णन हो सकता है, इसलिए कहा जा सकता है कि कविता का क्षेत्र चित्रकला से विस्तृत है। कविता द्वारा व्यक्त किए हुए एक-एक भाव और कभी-कभी कविता के एक शब्द के लिए अलग चित्र उपस्थित किए जा सकते हैं। किंतु पदार्थों का अस्तित्व समय से परे तो है नहीं, उनका भी रूप समय के साथ बदलता रहता है और ये बदलते हुए रूप बहुत अंशों में समय का प्रभाव प्रकट करते हैं। इसी प्रकार क्रिया और गति, बिना पदार्थों के आधार के संभव नहीं। इस भाँति किसी अंश में कविता पदार्थों का सहारा लेती है और चित्रण-कला प्रगतिवान समय द्वारा प्रभावित होती है, पर यह सब गौण रूप से होता है।

हमने लिखा है कि पदार्थों का चित्रण चित्रकला का काम है, कविता का नहीं। इस पर कुछ लोग आपत्ति कर सकते हैं कि काव्य-कला के माध्यम से अधिक शब्द सर्वशक्तिमान हैं, उनसे जो काम चाहे लिया जा सकता है; पदार्थों के वर्णन में वे उतने ही काम के हो सकते हैं जितने क्रियाओं के, पर यह स्वीकार करते हुए भी कि शब्द बहुत कुछकरने में समर्थ हैं, यह नहीं माना जा सकता कि वे पदार्थों का चित्रण उसी सुंदरता से कर सकते हैं जिस सुंदरता से चित्र।

निम्नांकित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

(i) कौन-सी कला में शब्दों की सहायता से क्रियाओं और घटनाओं का वर्णन किया जा सकता है? -1

क-विज्ञापन-कला

ख- नृत्य-कला

ग-काव्य-कला

घ- लोक-कला

(ii) किस कारण से कविता का क्षेत्र चित्रकला से विस्तृत है? -1

क- कविता में परिवर्तनशील परिस्थितियोंका वर्णन होसकता है

ख- इसमें घटनाओं का वर्णन होसकता है

ग- इसमें क्रियाओं का वर्णन होसकता है

घ-उपरोक्त सभी

(iii) शब्द बहुत कुछकरने में समर्थ है लेकिन शब्द अच्छी तरह से क्या नहीं कर सकता है? -1

क- समय का वर्णन

ख- पदार्थों का चित्रण

ग-घटनाओं का वर्णन

घ- क्रियाओं का उल्लेख

(iv) किस कला में केवल पदार्थों का चित्रण हो सकता है? -1

(v) कविता का क्षेत्र चित्रणकला से विस्तृत क्यों है -2

(vi) कविता और समय में क्या समानता है?-2

(vii) दिए गए अनुच्छेद के आधार पर काव्य-कला और चित्रण कला में बताइये। - 2

उत्तर-(i) ग- काव्य-कला (ii) घ-उपरोक्त सभी (iii) ख- पदार्थों का चित्रण (iv) स्थायी होने के कारण चित्रण-कला में केवल पदार्थों का चित्रण ही संभव है। (v) कविता में परिवर्तनशील परिस्थितियों, घटनाओं और क्रियाओं का वर्णन हो सकता है।इसके द्वारा व्यक्त किए हुए एक-एक भाव और कभी-कभी एक शब्द के लिए अलग चित्र उपस्थित किए जा सकते हैं।इसलिए कविता का क्षेत्र चित्रकला से विस्तृत है। **(vi)** समय और कविता दोनों ही प्रगतिशील हैं। जैसे समय के साथ क्रियाओं, घटनाओं और परिस्थितियों में परिवर्तन होता है। ठीक वैसे ही कविता में भी परिवर्तन संभव है। **(vii)** काव्य-कला गतिशील कला है जबकि किंतु चित्रण-कला स्थायी कला है। काव्य में शब्दों की सहायता से क्रियाओं और घटनाओं का वर्णन किया जा सकता है।स्थायी होने के कारण चित्रण-कला में केवल पदार्थों का चित्रण हो सकता है।

(4)

प्रश्न- निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़करपूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

हँसी भीतरी आनंद का बाहरी चिह्न है। जीवन की सबसे प्यारी और उत्तम-से-उत्तम वस्तु एक बार हँस लेना तथा शरीर को अच्छा रखने की अच्छी-से-अच्छी दवा एक बार खिलखिला उठना है। पुराने लोग कह गए हैं कि हँसो और पेट फुलाओ। हँसी न जाने कितने ही कला-कौशलों से भली है। जितना ही अधिक आनंद से हँसोगे उतनी ही आयु बढ़ेगी। एक यूनानी विद्वान कहता है कि सदा अपने कर्मों को झीखने वाला हेरीक्लेस बहुत कम जिया, पर प्रसन्न मन डेमाक्रीटस 109 वर्ष तक जिया। हँसी-खुशी का नाम जीवन है। जो रोते हैं, उनका जीवन व्यर्थ है। कवि कहता है- 'जिंदगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दादिल खाक जिया करते हैं।'

मनुष्य के शरीर के वर्णन पर एक विलायती विद्वान ने एक पुस्तक लिखी है। उसमें वह कहता है कि उत्तम सुअवसर की हँसी उदास-से-उदास मनुष्य के चित्त को प्रफुल्लित कर देती है। आनंद एक ऐसा प्रबल इंजन है कि उससे शोक और दुख की दीवारों को ढा सकते हैं। प्राण रक्षा के लिए सदा सब देशों में उत्तम-से-उत्तम उपाय मनुष्य के चित्त को प्रसन्न रखना है। सुयोग्य वैद्य अपने रोगी के कानों में आनंदरूपी मंत्र सुनाता है। एक अंग्रेज डॉक्टर कहता है कि किसी नगर में दवाई लदे हुए बीस गधे ले जाने से एक हँसोड़ आदमी को ले जाना अधिक लाभकारी है। डॉक्टर हस्फलेंडने एक पुस्तक में आयु बढ़ाने का उपाय लिखा है। वह लिखता है कि हँसी बहुत उत्तम चीज पाचन के लिए है, इससे अच्छी औषधि और नहीं है। एक रोगी ही नहीं, सबके लिए हँसी बहुत काम की वस्तु है।

हँसी शरीर के स्वास्थ्य का शुभ संवाद देने वाली है। वह एक साथ ही शरीर और मन को प्रसन्न करती है। पाचन-शक्ति बढ़ाती है, रक्त को चलाती और अधिक पसीना लाती है। हँसी एक शक्तिशाली दवा है। एक डॉक्टर कहता है कि वह जीवन की मीठी मदिरा है। डॉ. हयूड कहता है कि आनंद से बढ़कर बहुमूल्य वस्तु मनुष्य के पास और नहीं है। कारलाइल एक राजकुमार था।उसने संसार का त्याग कर दिया था। वह कहता है कि जो जी से हँसता है, वह कभी बुरा नहीं होता। जी से हँसी, तुम्हें अच्छा लगेगा। अपने मित्र को हँसाओ, वह अधिक प्रसन्न होगा। शत्रु को हँसाओ, तुमसे कम घृणा करेगा। एक अनजान को हँसाओ, तुम पर भरोसा करेगा। उदास को हँसाओ, उसका दुख घटेगा। निराश को हँसाओ, उसकी आशा बढ़ेगी।

(i) भीतरी आनंद का बाहरी चिह्न क्या है? -1

क- आशा

ख- हँसी

ग-जीत

घ-सलाह

(ii) ऐसा क्या है जो उदास-से-उदास मनुष्य के चित्त को प्रफुल्लित कर देती है? -1
क- अनुचित हँसी
ख- उत्तम सुअवसर की हँसी
ग-बेमतलब का रोना
घ-बेसमय का गाना

(iii) सुयोग्य वैद्य अपने रोगी के कानों में क्या सुनाता है? -1

क- समय का मोती
ख- सेवा का फल
ग-दु:ख के बोल
घ-आनंदरूपी मंत्र

(iv) किसने एक पुस्तक में आयु बढ़ाने का उपाय लिखा है? -1
(v) हँसी शरीर के स्वास्थ्य के लिए किस प्रकार उपयोगी है? -2
(vi) राजकुमार कारलाइल ने हँसने और हँसाने के विषय में क्या कहा? -2
(vii) दवाई लदे हुए बीस गधे ले जाने से एक हँसोड़ आदमी को ले जाना अधिक लाभकारी क्यों है? -2

उत्तर- (i) ख- हँसी (ii) ख- उत्तम सुअवसर की हँसी **(iii)** घ-आनंदरूपी मंत्र **(iv)** डॉक्टर हस्फलेंडने एक पुस्तक में आयु बढ़ाने का उपाय लिखा है। उन्होंने लिखा किपाचन के लिएहँसी बहुत उत्तम चीज है, इससे अच्छी औषधि और नहीं है। एक रोगी ही नहीं, सबके लिए हँसी बहुत काम की वस्तु है। (v) हँसी शरीर के स्वास्थ्य का शुभ संवाद देने वाली है। वह एक साथ ही शरीर और मन को प्रसन्न करती है। पाचन-शक्ति बढ़ाती है, रक्त को चलाती और अधिक पसीना लाती है। हँसी एक शक्तिशाली दवा है। एक डॉक्टर कहता है कि वह जीवन की मीठी मदिरा है। **(vi)** कारलाइल एक राजकुमार था। उसने संसार का त्याग कर दिया था। उसने कहा है कि जो जी से हँसता है, वह कभी बुरा नहीं होता। जी से हँसी, तुम्हें अच्छा लगेगा। अपने मित्र को हँसाओ, वह अधिक प्रसन्न होगा। शत्रु को हँसाओ, तुमसे कम घृणा करेगा। एक अनजान को हँसाओ, तुम पर भरोसा करेगा। उदास को हँसाओ, उसका दुख घटेगा। निराश को हँसाओ, उसकी आशा बढ़ेगी। **(vii)** लेखक ने हँसी के विषय में बहुत अच्छी जानकारी दी है। हँसी भीतरी आनंद का बाहरी चिह्न है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हँसना जरुरी है। यह सबसे उत्तम औषधि है।इससे पाचन-शक्ति बढ़ती है, रक्त का संचार होता है और मन प्रसन्न होता है। इसलिए दवाई लदे हुए बीस गधे ले जाने से एक हँसोड़ आदमी को ले जाना अधिक लाभकारी है।

पद्यांश

(1)

प्रश्न- निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

भारत माता का मंदिर यह, समता को संवाद जहाँ।
सबका शिव कल्याण यहाँ, पाएँ सभी प्रसाद यहाँ।
जाति-धर्म या संप्रदाय का, नहीं भेद व्यवधान यहाँ।
सबका स्वागत, सबका आदर, सबका सम्मान यहाँ।
राम-रहीम, बुद्ध ईसा का, सुलभ एक-सा ध्यान यहाँ।
भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के, गुण-गौरव का ज्ञान यहाँ।

नहीं चाहिए बुद्धि वैर की, भला प्रेम उन्माद यहाँ।
सब तीर्थों का एक तीर्थ यह, हृदय पवित्र बना लें हम।
रेखाएँ प्रस्तुत हैं, अपने मन के चित्र बना लें हम।
सौ-सौ आदर्शों को लेकर, एक चरित्र बना लें हम।
कोटि-कोटि कंठों से मिलकर, उठे एक जयनाद यहाँ।
सबका शिव कल्याण यहाँ है, पाएँ सभी प्रसाद यहाँ।

(i) कवि ने किस मंदिर का चित्रण बड़े ही भावपूर्ण ढंग से किया है? -1

क-भगवान शिव के मंदिर का

ख- प्राण-प्रतिष्ठा वाले मंदिर का

ग-कलायुक्त मंदिर का

घ- भारत माता के मंदिर का

(ii) अलग-अलग संस्कृतियों की कौन-सी विशेषता भारत में दिखाई पड़ती है? -1

क- गुण और गौरव

ख- अभिमान और आडंबर

ग-पाखंड और विद्वेष

घ- इनमें से कोई नहीं

(iii) तीर्थों के तीर्थ भारत में हम अपने हृदय को कैसा बना सकते हैं? -1

क-अपवित्र और अस्थिर

ख- वैर भाव वाला

ग-पवित्र और निर्मल

घ- क्लेश-भाव-युक्त

(iv) कवि के अनुसार सभी धर्मों के लोगों के प्रति भारत में कैसा भाव है? -1

(v) कोटि-कोटि कंठों से मिलकर यहाँ कौन-सा स्वर गूँजताहै? -2

(vi) इस काव्यांश में भारत को तीर्थों का तीर्थ क्यों कहा गया है ? -2

उत्तर- (i) घ- भारत माता के मंदिर का (ii) क- गुण और गौरव (iii) ग-पवित्र और निर्मल (iv) भारत में सभी जातियों, धर्म और संप्रदायों के प्रति आदरऔर सम्मान का भाव है। यहाँ बिना किसी भेदभाव के सबका स्वागत होता है। (v) कवि का कहना है कि भारत में लोक का कल्याण की भावना,प्राणियों में सद्भावना, सभी ईश्वर की कृपा सभी पर रहे और माता की जय का उद्घोष कोटि-कोटि कंठों से मिलकर गूँजता है। (vi) भारत में विभिन्न संस्कृतियों का अनूठा संगम देखने को मिलता है। यहाँ किसी एक धर्म या जाति को प्रमुखता नहीं दी जाती है बल्कि सभी का समान भाव से आदर और सम्मान किया जाता है। सभी के हृदय पवित्र भावना का वास है। इसलिए भारत को तीर्थों का तीर्थ कहा गया है।

(2)

प्रश्न- निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

मैंने देखा
एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है।
उसके नीचे कुछ छोटे-छोटे पौधे
असंतुष्ट और रुष्ट,
देखकर मुझको यों बोले हम भी कितने बदकिस्मत हैं।
जो खतरों को नहीं सामना करते

वे कैसे ऊपर को उठ सकते हैं।
इसी बड़े की छाया ने ही
हमको बौना बना रखा
हम बड़े दुखी हैं।

(i) कवि ने 'एक बड़ा बरगद का पेड़' किसे कहा है?
क-शोषण करने वाले धनी लोगों को
ख- जंगल में उगने वाले बड़े पेड़ को
ग-समाज के दबंग लोगों को
घ- छाया देने वाले बड़े वृक्ष को
(ii) बरगद के पेड़ के नीचे कुछ छोटे पौधे किस तरह से हैं?
क-अपनी इच्छा पर
ख- बरगद की दया पर
ग-संतुष्ट और मग्न
घ- असंतुष्ट और रुष्ट
(iii) कवि को देखकर छोटे पौधों ने क्या कहा?
क- उन्हें कोई महत्त्व नहीं मिलता है
ख- वे बहुत खुशकिस्मत हैं
ग-वे बहुत ही बदकिस्मत हैं
घ- उनमें कोई शक्ति नहीं है
(iv) जीवन में उन्नति करने के लिए क्या करना पड़ता है? -1
(v) बड़ों की छत्रछाया में रहने का क्या परिणाम होता है? -2
(vi) प्रस्तुत काव्यांश में समाज की किस यथार्थ स्थिति का चित्रण हुआ हैहै? -2

उत्तर- **(i)** क-शोषण करने वाले धनी लोगों को **(ii)** घ- असंतुष्ट और रुष्ट **(iii)** ग-वे बहुत ही बदकिस्मत हैं **(iv)** जीवन में उन्नति करने के लिए चुनौतियों से संघर्ष करना पड़ता है। **(v)** कवि का मानना है कि बड़ों की छत्रछाया में रहने से स्वाभाविक विकास नहीं होपाता है। हमारी बुद्धि संकीर्ण हो जाती है। इससे हमारी उन्नति रुक जाती है और हम प्रगति नहीं कर पाते हैं। **(vi)** समाज में संपन्न और धनी लोगों का बोलबाला होता है। वह दीन एवं कमजोर वर्ग का शोषण करते हैं। वह आम जनता की भलाई की कभी नहीं सोचते और ना ही उन्हें विकसित होने का अवसर देते हैं। समाजकी इसी यथार्थ दशा का चित्रण इस काव्यांश में किया गया है।

(3)

प्रश्न- निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय।।
रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुनी इठलैहैं लोग सब, बांटी न लैहैं कोय।।
रहिमन विपदा की भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जान परत सब कोय।।
रहिमन ओछे नरन ते, तजौ बैर अरु प्रीत।
काटे चाटे स्वान के, दोउ भाँति विपरीत।।

रूठे सुजन मनाइए, जो रूठे सौ बार।
रहिमन फिरि फिरि पोइए, टूटे मुक्ताहार।।

(i) रहीम कवि ने प्रेम रूपी धागे को झटका देकर न तोड़ने की बात क्यों कही है? -1

क-यह आसानी टूट जाता है

ख- इससे बेवजह शक्ति नष्ट होती है

ग-यह बहुत कोशिशों के बाद भी नहीं टूटता है

घ- धागा टूटने के बाद नहीं जुड़ता है और जुड़ने पर गाँठ बन जाती है

(ii) रहीम कवि ने अपने मन के दुःख को किसी से कहने के लिए क्यों मना किया? -1

क-मन का दुःख और बढ़ जाता है

ख- घर के लोग बहुत नाराज होते हैं

ग-लोग मन के दुःख को कम नहीं करते बल्कि उसका उपहास उड़ाते हैं

घ- मन को बहुत सुकून मिलता है

(iii) हितैषी और गैरहितैषी लोगों की पहचान कब होती है? -1

क- खुशी के हर मौके में शामिल होता है

ख- मुसीबत की घड़ी में जब कोई साथ देता और कोई नहीं देता है

ग-हमेशा अपनी दूरी बनाकर रखता है

घ- बुरा काम करते हुए कभी-कभी भलाई का काम करता है

(iv) कवि रहीम ने तुच्छ लोगों से मित्रता और शत्रुता करने से बचने के लिए किसका उदाहरण दिया है? -1

(v) कवि के अनुसारनाराज होने वाले सज्जन व्यक्ति को किस तरह मनाना चाहिए? -2

(vi) रहीम द्वारा रचित इन दोहों में से आपको सबसे अच्छा कौन सा दोहा लगा इसका भावार्थ लिखिए? -2

उत्तर- **(i)** घ- धागा टूटने के बाद नहीं जुड़ता है और जुड़ने पर गाँठ बन जाती है **(ii)** ग- लोग मन के दुःख को कम नहीं करते बल्कि उसका उपहास उड़ाते हैं **(iii)** ख- मुसीबत की घड़ी में जब कोई साथ देता और कोई नहीं देता है **(iv)** कवि रहीम ने तुच्छ लोगों से मित्रता और शत्रुता करने से बचने के लिए काटने और चाटने वाले कुत्ते का उदाहरण दिया है। **(v)** कवि के अनुसार नाराज होने वाले सज्जन व्यक्ति को हर संभव मनाने का प्रयास करना चाहिए। जिस तरह से माला में गूँथे हुये मोती के निकल जाने सेहम उसे धागे में पिरोलेते हैं। ठीक वैसे ही सज्जन व्यक्ति के नाराज होने पर मना लेना चाहिए। **(vi) [विद्यार्थी अपनी इच्छा अनुसार उत्तर लिखेंगे]**

सृजनात्मक एवं व्यावहारिक लेखन

रचनात्मक-लेखन

- किसी एक भाव, विचार या कथन को विस्तार देने के लिए 150-200 शब्दों में लिखे गए सुसंगत लेख को रचनात्मक लेखन कहते हैं।
- इसमें किसी महत्वपूर्ण घटना, दृश्य, समस्या अथवा विषयको शामिल किया जा सकता है। इसे संक्षिप्त (कम शब्दों में) किन्तु सारगर्भित (अर्थपूर्ण) ढंग से लिखा जाता है।
- अनुच्छेद एक तरह से 'निबंध' का ही संक्षिप्त रूप होता है। इसमें दिए गए विषय के किसी एक पक्ष पर अपना विचार प्रस्तुत करना होता है।
- अनुच्छेद अपने-आप में स्वतन्त्र और पूर्ण होता है। अनुच्छेद का मुख्य विचार या भाव प्राय: या तो आरम्भ में या फिर अन्त में होता है।

अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए–

(1) अनुच्छेद या निबंध या लेख लिखने से पहले रूपरेखा, संकेत-बिंदु आदि बनानी चाहिए। कभी-कभी प्रश्नपत्रों में पहले से ही रूपरेखा, संकेत-बिंदु आदि दिए होते हैं। आपको उन्हीं रूपरेखा, संकेत-बिंदु इत्यादि को ध्यान में रखते हुए अनुच्छेद लिखना होता है।

(2) अनुच्छेद या लेख में दिए गए विषय के किसी एक ही पक्ष का वर्णन करना चाहिए। क्योंकि यह सदैव सीमित शब्दों में लिखा जाता है।

(3) अनुच्छेद की भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली होनी चाहिए ताकि पाठक अनुच्छेद पढ़कर आपकी बात को सही से समझ सके।

(4) एक ही बात को बार-बार नहीं दोहराना चाहिए। इससे आप अपनी बात को कम शब्दों में पूरा नहीं कर पाएँगे।

(5) आपको ये भी ध्यान रखना है कि आप अपने विषय से न भटक जाएँ।

(6) दिए गए निर्देश के अनुसार तय शब्द-सीमा को ध्यान में रखकर ही अनुच्छेद लिखें।

(7) पूरे अनुच्छेद में एकरूपता बनाए रखनी चाहिए।

(8) विषय से संबंधित सूक्ति अथवा कविता की पंक्तियों का प्रयोग भी किया जा सकता है।

अनुच्छेद की प्रमुख विशेषताएँ–

(1) अनुच्छेद में किसी एक भाव, विचार या तथ्य को महत्त्व दिया जाता है।

(2) अनुच्छेद के सभी वाक्य एक-दूसरे से गठित और सुसंबद्ध होते है। वाक्य छोटे तथा एक दूसरे से जुड़े होते हैं।

(3) अनुच्छेद एक स्वतन्त्र और पूर्ण रचना है, जिसका कोई भी वाक्य अनावश्यक नहीं होता।

(4) अनुच्छेद सामान्यतः छोटा होता है, किन्तु इसकी लघुता या विस्तार विषयवस्तु पर निर्भर करता है।

फ़िल्में सामाजिक जीवन का दर्पण हैं

फ़िल्में आधुनिक जीवन में मनोरंजन का सर्वोत्तम साधन हैं। ये समाज के एक बहुत बड़े वर्ग को प्रभावित करती हैं। फ़िल्मों में कलाकारों के अभिनय को लोग अपने जीवन में उतारने की कोशिश करते हैं। इस दृष्टि से फ़िल्मों का सामाजिक दायित्व भी बनता है। वे केवल मनोरंजन का ही नहीं, अपितु सामाजिक बुराइयों को दूर करने का भी साधन हैं। फ़िल्में समाज में व्याप्त विभिन्न बुराइयों को दूर करके स्वस्थ वातावरण के निर्माण में सहायता करती हैं। हालाँकि समाज में रहते हुए हमें इन बुराइयों की भयानकता का पता नहीं चलता। फिल्म देखकर इनकी बुराइयों से हम दो-चार होते हैं।

उदाहरणस्वरूप 'प्यासा' और 'प्रभात' जैसी फ़िल्मों को देखकर अनेक नारियों ने वेश्यावृत्ति त्यागकर स्वस्थ जीवन जीना शुरू किया। 'पा' फ़िल्म असमय वृद्ध होने वाले बच्चों की कठिनाइयों को दर्शाती है। 'द कश्मीर फाइल्स और 'केरला स्टोरी' फ़िल्में समाज का सूक्ष्म विश्लेषण प्रकट करती हैं। इतिहासकार जहाँ इतिहास की स्थूल घटनाओं को शब्दबद्ध करता है, वहाँ फ़िल्में व्यक्ति के मन में छिपे उल्लास और पीड़ा की भावना को व्यक्त करती हैं। 'गदर' फ़िल्म में भारत-पाक युद्ध तथा 1971 की प्रमुख घटनाओं को दर्शाया गया है। 'रंग दे बसंती' फ़िल्म में आजादी के संघर्ष को संवेदनशील तरीके से दिखाया गया है। 'गोदान' में 1930 के समय के पूँजीपतियों के शोषण तथा किसानों की करुण जीवन-गाथा चित्रित है।आधुनिक समाज श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों से दूर होता जा रहा है। इस दूरी को कम करने में फ़िल्मों की अहं भूमिका है। 'आँधी' और 'मौसम" फ़िल्में कमलेश्वर की साहित्यिक कृतियों पर आधारित हैं, तो शरतचंद्र चटर्जी के 'देवदास' उपन्यास पर हिंदी व बांग्ला सहित कई भाषाओं में अनेक सफल फ़िल्में बन चुकी हैं। फ़िल्मों के गीत भी सुख-दुख के साथी बन जाते हैं। वे व्यक्ति के एकाकीपन, निराशा, दुख आदि को कम करते हैं। स्वतंत्रता दिवस व गणतंत्र दिवस पर 'ऐ मेरे वतन के लोगो' गीत को सुनकर लोगों में आज भी देशभक्ति का जज्बा जाग उठता है। विदाई के अवसर पर 'पी के घर आज प्यारी दुल्हनिया चली' गीत सुनकर वधू पक्ष के लोग भावुक हो उठते हैं। हालाँकि फ़िल्मों के केवल सकारात्मक प्रभाव ही समाज पर पड़ते हैं, ऐसा नहीं है। आज के युग में युवा फ़िल्मों से अधिक गुमराह हो रहे हैं।

फ़िल्मों में अपराध करने के नए-नए तरीके दिखाए जाते हैं, जिनका अनुसरण युवा करते हैं। नित्य प्रति हत्या के नए तरीके देखने में आ रहे हैं। बच्चे इससे सर्वाधिक प्रभावित होते हैं। वे झूठ बोलना, चोरी करना, घर से भागना आदि गलत आदतें प्रायः फ़िल्मों से ही सीखते हैं। नारी देह को प्रदर्शन की वस्तु फ़िल्मों ने ही बनाई है। लड़कियाँ मिनी स्कर्ट को आधुनिकता का पर्याय समझने लगी हैं तो लड़के फटी जींस व गले में स्कार्फ को आकर्षण का केंद्र मानते हैं। आजकल के फ़िल्म-निर्माता पैसा कमाने के लिए सस्ते गीतों पर अश्लील नृत्य करवाते हैं।

छोटे-छोटे बच्चों की जबान पर चालू भाषा के गीत होते हैं। आजकल गानों में भी भद्दी गालियों का प्रयोग बढ़ने लगा है। फ़िल्मों के शीर्षक 'कमीने' आदि बच्चों को गलत प्रवृत्ति की ओर अग्रसर करते हैं। फ़िल्मों के इस रूप की तुलना कैंसर से की जा सकती है। यह कैंसर धीरे-धीरे हमारे समाज के शरीर को जहरीला कर रहा है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि फ़िल्में समाज को तभी नयी दिशा दे सकती हैं जब वे कोरी व्यावसायिकता से ऊपर उठे तथा समाज की समस्याओं को सकारात्मक ढंग से अभिव्यक्त करें।

पर्यटन का महत्त्व

मानव अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण दूसरे देशों या अलग-अलग स्थानों की यात्रा करना चाहता है। उसे दूसरे क्षेत्र की संस्कृति, सभ्यता, प्राकृतिक सौंदर्य, ऐतिहासिक जानकारी के बारे में जानने की इच्छा होती है। इसी कारण वह अपना सुखचैन छोड़कर अनजान, दुर्गम व बीहड़ रास्तों पर घूमता रहता है। आधुनिक युग में इंटरनेट व पुस्तकों के माध्यम से वह हर स्थान की जानकारी प्राप्त कर सकता है, परंतु यह सब कागज के फूल की तरह होते हैं।

आदिमानव एक ही स्थान पर रहता तो क्या दुनिया विकसित हो पाती। एक स्थान पर टिके न रहने के कारण ही मानव को 'घुमक्कड़' कहा गया है। महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन का कहना है-'घुमक्कड़ दुनिया की सर्वश्रेष्ठ विभूति है इसलिए कि उसी ने आज की दुनिया को बनाया है। अगर घुमक्कड़ों के काफिले न आते-जाते, तो सुस्त मानव-जातियाँ सो जातीं और पशु स्तर से ऊपर नहीं उठ पातीं।"

'घुमक्कड़ी' का आधुनिक रूप 'पर्यटन" बन गया है। पहले घुमक्कड़ी अत्यंत कष्टसाध्य थी क्योंकि संचार व यातायात के साधनों का अभाव था। संसाधन भी कम थे तथा पर्यटन-स्थल पर सुविधाएँ भी विकसित नहीं थीं। आज विज्ञान का प्रताप है कि मनुष्य को बाहर जाने में कोई कठिनाई नहीं होती। आज सिर्फ़ मनुष्य में बाहर घूमने का उत्साह, धैर्य, साहस, जोखिम उठाने की तत्परता होनी चाहिए, शेष सुविधाएँ विज्ञान उन्हें प्रदान कर देता है।
20वीं सदी से पर्यटन एक उद्योग के रूप में विकसित हो गया है। विश्व के लगभग सभी देशों में पर्यटन मंत्रालय बनाए गए हैं। हर देश अपने ऐतिहासिक स्थलों, अद्भुत भौगोलिक स्थलों को सजा-सँवारकर दुनिया के सामने प्रस्तुत करना चाहता है। मनोरम पहाड़ी स्थलों पर पर्यटक आवास स्थापित किए जा रहे हैं।

पर्यटकों के लिए आवास, भोजन, मनोरंजन आदि की व्यवस्था के लिए नए-नए होटलों, लॉजों और पर्यटन-गृहों का निर्माण किया जा रहा है। यातायात के सभी प्रकार के सुलभ व आवश्यक साधनों की व्यवस्था की जा रही है। पर्यटन आज मुनाफ़ा देने वाला व्यवसाय बन गया है। पर्यटन के लिए रंग-बिरंगी पुस्तिकाएँ आकर्षक पोस्टर, पर्यटन-स्थलों के रंगीन चित्र, आवास, यातायात आदि सुविधाओं का विस्तृत ब्यौरा लगभग सभी प्रमुख सार्वजनिक स्थलों पर मिलता है। पर्यटन के प्रति रुचि जगाने के लिए लघु फ़िल्में भी तैयार की जाती हैं।

कई पर्यटन-स्थलों पर पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए संगीत, नृत्य, नाटक आदि का आयोजन किया जाता है। पर्यटन के अनेक लाभ हैं, जैसे-आनंद-प्राप्ति, जिज्ञासा की पूर्ति आदि। इसके अतिरिक्त, पर्यटन से अंतर्राष्ट्रीयता की समझ विकसित होती है। मनुष्य का दृष्टिकोण विस्तृत होता है। प्रेम व सौहार्दका प्रसार होता है। सभ्यता-संस्कृतियों का परिचय मिलता-बढ़ता है। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की भावना को पर्यटन से ही बढ़ावा मिलता है। पर्यटन के दौरान ही व्यक्ति को यथार्थ जीवन का आभास होता है तथा जीवन की एकरसता भी पर्यटन से ही समाप्त होती है।

युवा असंतोष

आज चारों तरफ असंतोष का माहौल है। बच्चे-बूढ़े, युवक-प्रौढ़, स्त्री-पुरुष, नेता-जनता सभी असंतुष्ट हैं। युवा वर्ग विशेष रूप से असंतुष्ट दिखता है। घर-बाहर सभी जगह उसे किसी-न-किसी को कोसते हुए देखा-सुना जा सकता है। अब यह प्रश्न उठता है कि आखिर ऐसा क्यों हो रहा है? इसका एक ही कारण नजर आता है नेताओं के खोखले आश्वासन। युवा वर्ग को शिक्षा ग्रहण करते समय बड़े-बड़े सब्ज़बाग दिखाए जाते हैं।वह मेहनत से डिग्रियाँ हासिल करता है, परंतु जब वह व्यावहारिक जीवन में प्रवेश करता है तो खुद को पराजित पाता है। उसे अपनी डिग्रियों की निरर्थकता का अहसास हो जाता है। इनके बल पर रोजगार नहीं मिलता। इसके अलावा, हर क्षेत्र में शिक्षितों की भीड़ दिखाई देती है। वह यह भी देखता है कि जो सिफ़ारिशी है, वह योग्यता न होने पर भी मौज कर रहा है वह सब कुछ प्राप्त कर रहा है जिसका वह वास्तविक अधिकारी नहीं है।

वस्तुत: उच्च शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों की इच्छाएँ भड़का दी जाती हैं। राजनीति से संबंधित लोग तरह-तरह के प्रलोभन देकर उन्हें भड़का देते हैं। राजनीतिज्ञ युवाओं का इस्तेमाल करते हैं। वे उन्हें चुनाव लड़वाते हैं। कुछ वास्तविक और नकली माँगों, सुविधाओं के नाम पर हड़तालें करवाई जाती हैं। इन सबका परिणाम शून्य निकलता है। युवा लक्ष्य से भटक जाते हैं। बेकारों की अथाह भीड़ को निराशा और असंतोष के सिवाय क्या मिल सकता है! जबकि

समाज युवाओं को 'कल का भविष्य' कहता है। इन्हें उन्नति का मूल कारण मानता है, परंतु सरकारी व गैर-सरकारी क्षेत्र में उन्हें मात्र बरगलाया जाता है।

उनकी वास्तविक जरूरतों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। उन्हें महज सपने दिखाए जाते हैं। पढ़ाई-लिखाई, शिक्षा, सभ्यता-संस्कृति, राजनीति और सामाजिकता हर क्षेत्र में उन्हें बड़े-बड़े सपने दिखाए जाते हैं, परंतु ये सपने हकीकत से बेहद दूर होते हैं। जब सपने पूरे न हों तो असंतोष का जन्म होना स्वाभाविक है। भ्रष्टाचार के द्वारा जिन युवाओं के सपने पूरे किए जाते हैं, ऐसे लोग आगे भी अनैतिक कार्यों में लिप्त पाए जाते हैं।

इनकी शान-शौकत भरी बनावटी जिंदगी आम युवा में हीनता का भाव जगाकर उन्हें असंतुष्ट बना देती है। ऐसे में जब असंतोष, अतृप्ति, लूट-खसोट, आपाधापी आज के व्यावहारिक जीवन का स्थायी अंग बन चुके हैं तो युवा से संतुष्टि की उम्मीद कैसे की जा सकती है? समाज के मूल्य भरभराकर गिर रहे हैं, अनैतिकता सम्मान पा रही है, तो युवा मूल्यों पर आधारित जीवन जीकर आगे नहीं बढ़ सकते।

बेरोजगारी की समस्या

आजकल जो समस्याएँ दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ी हैं, इनमें जनसंख्या-वृद्धि, महँगाई, बेरोजगारीआदि मुख्य हैं। इनमें से बेरोजगारी की समस्या ऐसी है जो देश के विकास में बाधक होने के साथ ही अनेक समस्याओं की जड़ बन गई है। किसी व्यक्ति के साथ बेरोजगारी की स्थिति तब उत्पन्न होती है, जब उसे उसकीयोग्यता, क्षमता और कार्य-कुशलता के अनुरूप काम नहीं मिलता, जबकि वह काम करने के लिए तैयार रहता है।

बेरोजगारी की समस्या शहर और गाँव दोनों ही जगहों पर पाई जाती है। नवीनतम आँकड़ों से पता चला है कि इस समय हमारे देश में ढाई करोड़ बेरोजगार हैं। यह संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती ही जा रही है। यद्यपि सरकार और उद्यमियों दुवारा इसे कम करने का प्रयास किया जाता है, पर यह प्रयास ऊँट के मुँह में जीरा साबित होता है। हमारे देश में विविध रूपों में बेरोज़गारी पाई जाती है। पहले वर्ग में वे बेरोजगार आते हैं जो पढ़-लिखकर शिक्षित और उच्च शिक्षित हैं। यह वर्ग मज़दूरी नहीं करना चाहता , क्योंकि ऐसा करने में उसकी शिक्षा आडे आती है।

दूसरे वर्ग में वे बेरोजगार आते हैं जो अनपढ़ और अप्रशिक्षित हैं। तीसरे वर्ग में व बेरोज़गार आत्ते हैं जो काम तो कर रहे है, पर उन्हें अपनी योग्यता और अनुभव के अनुपात में बहुत कम वेतन मिलता है। चौथे और अंतिम वर्ग में उन बेरोजगारों को रख सकते है, जिन्हें साल में कुछ ही महीने कम मिल माता है। खेती में काम करने वाले मज़दूरों और किसानों को इसी श्रेणी में रखा जा सकता है। बेरोज़गारी के कारणों पर विचार करने से ज्ञात होता है कि इसका मुख्य कारण औद्योगीकरण और नवीनतम साधनों की खोज एवं विकास है। जो काम हजारों मज़दूरों द्वारा महीनों में पूरे किए जाते थे, आज मशीनों की मदद से कुछ ही मज़दूरों की सहायता से कुछ ही दिनों में पूरे कर लिए जाते हैं।

उदाहरणस्वरूप जिन बैंकों में पहले सौ-सौ क्लर्क काम करते थे, उनका काम अब चार-पाँच कंप्यूटरों दुवारा किया जा रहा है। बेरोजगारी का दूसरा सबसे बड़ा कारण है जनसंख्या-वृद्धि। आजादी मिलने के बाद सरकार ने रोज़गार के नए-नए अवसरों का सृजन करने के लिए नए पदों का सृजन किया और कल-कारखानों को स्थापना की। इससे लोगों को रोजगार तो मिला, पर बढती जनसंख्या के कारण ये प्रयास नाकाफी सिद्ध हो रहे हैं। बेरोज़गारी का अन्य करण है-गलत शिक्षा – नीति, जिसका रोजगार से कुछ भी लेना – देना नहीं है।
फलत: बेरोजगारी दिन-पर दिन बढती जा रही है। बेरोजगारी एक और जहाँ परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति बाधक है, वहीं यह खाली दिमाग शैतान का घर होने की स्थिति उत्पन्न करती है। ऐसै बेरोजगार युवा अपनी ऊर्जा का उपयोग समाज एवं राष्ट्र विरोधी कार्यों में करते हैं। फलतः सामाजिक शांति भंग होती है तथा अपराध का ग्राफ बढ़ता है। बेरोज़गारी की समस्या से छुटकारा पाने के लिए शिक्षा को रोजगार से जोड़ने को आवश्यकता है। व्यावसायिक शिक्षा को विद्यालयों में लागू करने के अलावा अनिवार्य बनाना चाहिए।

स्कूली पाठ्यक्रमों में श्रम की महिमा संबंधी पाठ शामिल किया जाना चाहिए ताकि युवावर्ग श्रम के प्रति अच्छी सोच पैदा कर सके। इसके अलावा एक बार पुन: लघु एवं कुटीर उद्योग की स्थापना एवं उनके विकास के लिए उचित वातावरण बनाने को आवश्यकता है। किसानों को खाली समय में दुग्ध उत्पादन, मधुमक्खी,मछली एवं मुर्गी पालन, जैसे कार्यों के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इस काम में सरकार के अलावा धनी लोगों को भी आगे आना चाहिए ताकि भारत बेरोजगार मुक्त बन सके और प्रगति के पथ पर चलते हुए विकास की नई ऊँचाइयाँ छू सके।

विद्यार्थी जीवन में अनुशासन की आवश्यकता

विद्यार्थी जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल है। इस काल में सीखी गई बातों पर ही पूरा जीवन निर्भर हैऔर इसे सुंदर बनाने में इस काल का सर्वाधिक महत्व है। जिस प्रकार किसी प्रासाद की मजबूती उसकी नींव या आधारशिला की मजबूती पर निर्भर करती है, उसी प्रकार व्यक्ति के जीवन की सुख-शांति, विचार और व्यवहार उसके विद्यार्थी-जीवन पर निर्भर करता है।

विद्यार्थी-जीवन में बालक का मस्तिष्क गीली मिट्टी की तरह होता है, जिसे मनचाहा आकार प्रदान करके भाँति-भाँति के खिलौने और मूर्तियाँ बनाई जा हैं। उसी मिट्टी के सूख जाने और पका लिए जाने पर उसे और कोई नया आकार नहीं दिया जा सकता। अत: इस काल में विद्यार्थी अनुशासन, सच्चरित्रता, त्याग सदाचारिता आदि का भरपूर पालन करना चाहिए ताकि वह समाज और राष्ट्र के उत्थान में अपना योगदान दे सके। हालाँकि आज विद्यार्थियों में बढ़ती के लिए चिंता का विषय है।

अनुशासनहीनता के मूल कारणों पर यदि विचार करें तो ज्ञात होता है कि इसका पिता के संस्कार तथा उसकी शरारतों को अनदेखा किया जाना है। विद्यालय प्रशासन यदि बच्चे की अनुशासनहीनता की बात करे तो माता-पिता अपने बच्चे के पक्ष में खड़े हो जाते हैं तथा उसे निर्दोष बताने लगतेहैं। इससे अनुशासनहीन विद्यार्थियों का मनोबल और भी बढ़ जाता है। अनुशासनहीनता बढ़ाने में वर्तमान शिक्षाप्रणाली भी कम उत्तरदायी नहीं है।

विद्यार्थियों को रट्टू तोता बनाने वाली शिक्षा से व्यावहारिक ज्ञान नहीं हो पाता। इसके अलावा, पाठ्यक्रम में नैतिक एवं चारित्रिक शिक्षा को कोई स्थान नहीं दिया गया है। विद्यालयों में सुविधाओं की कमी, कुप्रबंधन, अध्यापकों की कमी, उनकी अरुचिकर शिक्षण-विधि, खेल-कूद की सुविधाओं का घोर अभाव, पाठ्यक्रम की अनुपयोगिता, शिक्षा का रोजगारपरक न होना, उच्च शिक्षा पाकर भी रोजगार और नौकरी की अनिश्चयभरी स्थिति विद्यार्थियों के मन में शिक्षा के प्रति अरुचि उत्पन्न करती है।

विद्यार्थियों की मनोदशा का अनुचित फ़ायदा राजनैतिक तत्व उठाते हैं। वे विद्यार्थियों को भड़काकर स्कूल-कॉलेज बंद करवाने तथा उनका बहिष्कार करने के लिए प्रेरित करते हैं। इससे विद्यार्थियों बढ़ती है। विद्यार्थियों में अनुशासन की भावना उत्पन्न करने के लिए माता-पिता, विद्यालय-प्रशासन और सरकारी तंत्र तीनों को ही अपनी-अपनी भूमिका का उचित निर्वहन करना होगा। इसके अलावा पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा और चारित्रिक शिक्षा को अवश्य शामिल किया जाना चाहिए।

प्रतिदिन प्रार्थना-सभा में नैतिक शिक्षा देने के अलावा इसे पाठ्यक्रम का अंग बनाना चाहिए। विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए इतनी सुविधाएँ बढ़ानी चाहिए कि विद्यालय और कक्षा-कक्ष में उनका मन लगे। निष्कर्षत: आज शिक्षा-प्रणाली और शिक्षा-व्यवस्था में आमूल-चूल बदलाव लाने की आवश्यकता है। शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाकर तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए नैतिक सीख देकर अनुशासनहीनता की बढ़ती समस्या पर अंकुश लगाया जा सकता है।

पत्र-लेखन

मनुष्य अपने भावों-विचारों और सूचनाओं को दूसरे लोगों तक संप्रेषित करना चाहता है। इसके लिए उसे एक उत्तम साधन चाहिए। पत्र के माध्यम से व्यक्ति अपने मन की बात आसानी से व्यक्त कर सकता है। मनुष्य को अपनी जरूरतें को पूरी करने के लिए सरकारी,गैर-सरकारी या अन्य संस्थाओं को पत्र लिखने की आवश्यकता पड़ती है।

पत्र के प्रकार- आम तौर पर पत्र दो प्रकार के होते हैं- **(क)** अनौपचारिक पत्र **(ख)** औपचारिक पत्र।

(क)अनौपचारिकपत्र-जो पत्र अपने निकट संबंधियों तथा मित्रों को लिखे जाते हैं, उन्हेंअनौपचारिकपत्र कहते हैं।इसतरह के पत्रों में पत्र पाने वाले तथा लिखने वाले के बीच घनिष्ठ संबंध होता है। यह संबंध पारिवारिकता तथा मित्रता का भी हो सकता है। इन पत्रों की विषयवस्तु निजी व घरेलू होती है। इनका स्वरूप संबंधों के आधार पर निर्धारित होता है। इन पत्रों की भाषा-शैली में कोई औपचारिकता नहीं होती तथा इनमें आत्मीयता का भाव व्यक्त होता है।

(ख) औपचारिक पत्र- इस तरह के पत्र सरकारी, गैरसरकारी एवं अन्य संस्था के प्रमुख को एक निश्चित शैली में लिखे जाते हैं। इस तरह के पत्र जरुरत पड़ने पर ही लिखे जाते हैं। इसमें पत्र पाने वाले तथा लिखने वाले के बीच कोई आत्मीय लगाव नहीं होता है। इनमें व्यावसायिक, कार्यालयी और सामान्य जीवन-व्यवहार के संदर्भ में लिखे जाने वाले पत्रों को शामिल किया जाता है।

पत्र के अंग- पत्र के निम्नलिखित अंग होते हैं-

1. पता और दिनांक
2. संबोधन व अभिवादन
3. पत्र की सामग्री या विषयवस्तु
4. पत्र का समापन

1. पता व दिनांक

अनौपचारिक पत्र में सबसे ऊपर बाईं ओर कोने में पत्र भेजने वाला अपना पता लिखता है और उसके नीचे तिथि दी जाती है।जबकि औपचारिकपत्र में जिसे पत्र भेजा जाता हैउसका पद नाम, विभाग का नाम, पता व दिनांक लिखा जाता है।

2. संबोधन तथा अभिवादन

अनौपचारिक स्थिति में-

- जिसे पत्र लिखते हैं उसे संबोधित करते हैं; जैसे-आदरणीय पिता जी, आदरणीय दादा जी, पूजनीया माता जी, श्रद्धेय ताऊ जी, आदरणीय भैया, प्यारे भाई, प्रिय मित्र आदि।
- इसके नीचे सम्मानसूचक शब्द अवश्य लिखते हैं। जैसे-प्रणाम, सादर प्रणाम, आशीर्वाद, चरण-स्पर्श, प्रसन्न रहो। अभिवादन लिखने के बाद पूर्णविराम अवश्य लगाना चाहिए।जैसे-
  पूज्य पिता जी,
  प्रणाम।

  औपचारिक स्थिति में–
- जिसे पत्र भेजा जाता हैउसका पद नाम, विभाग का नाम व पता लिखा जाता है।
- शुरू करने से पहले पत्र लिखने का कारण यानी कि विषय अवश्य लिखना चाहिए।
- विषय लिखने के बाद संबोधन लिखा जाता है; जैसे-श्रीमान, महोदय, मान्यवर आदि।

3. पत्र की सामग्री या कलेवर

अभिवादन के बाद पत्र की सामग्री लिखी जाती है। इसे विषयवस्तु कहा जाता है। इसमें हम अपनी बात कहते हैं। इसमें निम्नलिखित सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए-

- विषयवस्तु की भाषा सरल होनी चाहिए तथा वाक्य छोटे-छोटे होने चाहिए।
- लेखक का अर्थ स्पष्ट होना चाहिए।
- कलेवर बहुत विस्तृत नहीं होना चाहिए।
- कार्यालयी पत्र में यदि काटकर कुछ लिखा जाता है तो उस पर छोटे हस्ताक्षर कर देने चाहिए।
- पत्र में पुनरुक्ति नहीं होनी चाहिए।
- पत्र लिखते समय 'गागर में सागर' भरने की शैली को अपनाया जाना चाहिए।

4. पत्र का समापन

अनौपचारिक पत्र के अंत में पत्र लिखने वाले और पाने वाले की आयु, अवस्था तथा गौरव-गरिमा के अनुरूप स्वनिर्देश बदल जाते हैं। जैसे- तुम्हारा, आपका, स्नेही, शुभचिंतक, विनीत आदि।

औपचारिक पत्रों का अंत प्राय: निर्धारित स्वनिर्देश द्वारा होता है।यथा- भवदीय, आपका, शुभेच्छु विश्वासी। इसके बाद पत्र लेखक के हस्ताक्षर होते हैं। औपचारिक पत्रों में हस्ताक्षर के नीचे प्राय: प्रेषक का पूरा नाम और पद का नाम लिखा जाता है।

विशेष– परीक्षा में प्रेषक के नाम के स्थान पर 'क, ख, ग,'लिखना चाहिए। पते के स्थान पर 'परीक्षा भवन' तथा नगर के स्थान पर 'क, ख, ग,' लिख देना चाहिए। इससे उत्तर-पुस्तिका की गोपनीयता भंग नहीं होती।

औपचारिक पत्र -1

आपके मोहल्ले में बिजली की आपूर्ति ठीक तरह से नहीं हो रही है। प्राय: वोल्टेज कम या अधिक होता रहता है। इस संबंध में अपने जिले के बिजली विभाग के मुख्य अभियंता को पत्र लिखिए।

प्रति,
मुख्य अभियंता
उ० प्र० राज्य विद्युत निगम लि०
जनपद-लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

विषय- बिजली की अघोषित कटौती एवं बढ़ते संकट के संबंध में।

महोदय,

मैं आपका ध्यान अपने मोहल्ले 'निराला नगर' की विद्युत संबंधी समस्या की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। श्रीमान जी, उत्तर प्रदेश की राजधानी एवं महानगर जैसा विशिष्ट शहर होने के बाद भी यहाँ बिजली की भयंकर समस्या का सामना करना पड़ रहा है। मई-जून में यह समस्या अपने चरम पर पहुँच जाती है। यहाँ बिजली के आने और जाने का कोई समय निश्चित नहीं है। इसके अलावा बिजली का वोल्टेज कभी अचानक कम तो कभी अचानक अधिक हो जाता है। इससे हमारे घरों के बहुमूल्य उपकरणरेफ्रीजरेटर, टेलीविजन, कंप्यूटर सेट, ट्यूब लाइटें खराब हो चुके हैं।कई बार तो यह वोल्टेज इतना कम होता है कि सी.एफ.एल. जुगनू जैसे चमकते प्रतीत होते हैं। सवेरे जब बच्चों के स्कूल जाने तथा लोगों के काम पर जाने का समय होता है, तब बिजली का अचानक चले जाना बहुत कष्टप्रद होता है।

अत: आपसे प्रार्थना है कि उक्त संबंध में व्यक्तिगत रुचि लेकर समस्या का यथाशीघ्र निराकरण कराने की कृपा करेंताकि बिजली आपूर्ति सुचारु हो सके।

सधन्यवाद।

भवदीय
रामकरन शर्मा
17/4 बी निराला नगर, लखनऊ, उ० प्र०।
दिनांक 12 जून, 2024

औपचारिक पत्र -2

आपके क्षेत्र में खाली पड़ी जमीन पर वन-महोत्सव के समय बहुत से पौधे लगाए गए।उनकीउचित देखभाल के अभाव एवं सिंचाई की कमी के कारण वे सूखकर आधे हो गए हैं। इसकी जानकारी देते हुए उद्यान विभाग के मुख्याधिकारी को इनकी समुचित देख-रेख के लिए पत्र लिखिए।

प्रति,
मुख्य अधिकारी,
उद्यान विभाग,
दिल्ली नगर निगम
लाजपत नगर, दिल्ली।

विषय- वन-महोत्सव के दौरान लगाये गये पौधे देख-रेख के अभाव में सूख रहे हैं- के संबंध में।

महोदय,
मैं उक्त विषय के संबंध में कहना चाहता हूँ कि मालवीय नगर क्षेत्र में खाली पड़ी जमीन में वन-महोत्सव के दौरान लगाये गये पौधे देख-रेख के अभाव में सूख रहे हैं। दिल्ली सरकार ने जुलाई माह में अधिकाधिक वृक्ष लगाने के पुण्य उद्देश्य से वन-महोत्सव मनाया और जगह-जगह पर नए-नए पौधे लगवाये गए। इसी तारतम्य में हमारे नगर क्षेत्र कीखाली पड़ीजमीन में एक हजार पौधों का रोपण किया गया और इन्हें विकसित करने की जोर-शोर से घोषणा भी की गई। बिना सिंचाई के कुछ पौधे पूरी तरह से सूख गए हैं और कुछ सूखने की कगार पर हैं। स्थिति यह है कि अब तो ये पौधे आधे भी नहीं बचे हैं। इससे पर्यावरण को हरा-भरा एवं शुद्ध बनाने का उद्देश्य पूर्ण होने में संदेह लगने लगा है।

अतएव आपसे प्रार्थना है कि आप संबंधित कर्मचारियों को भेजकर सिंचाई की उचित व्यवस्था कराएँ तथा सूखे पौधों की जगह नए पौधे लगवाने की कृपा करें ताकि वन-महोत्सव मनाने का पुनीत उद्देश्य पूर्ण हो सके।

सधन्यवाद।
भवदीय
चंद्रभूषण सिंह
जी. 517, मालवीय नगर, दिल्ली
दिनांक 15जून, 2024

औपचारिक पत्र -3

आपका क्षेत्र भीषण बाढ़ की चपेट में है और प्रशासन कुंभकर्णी नींद में सोया है। राहत कार्यों तथा अन्य सरकारी मदद की प्राप्ति की ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

प्रति,
संपादक महोदय,
'अमर उजाला'
पटना, बिहार।

विषय- भीषण बाढ़ से उत्पन्न कठिनाइयों के संबंध में।

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय समाचारपत्र 'अमर उजाला' का नियमित पाठक हूँ। इस पत्र में प्रकाशित सामग्री पठनीय एवं ज्ञानवर्धक होती है। इस समाचार पत्र के माध्यम से मैं बाढ़ पीड़ित क्षेत्र दानापुर में उत्पन्न जनता की कठिनाइयों की ओर संबंधित अधिकारियों का ध्यान आकर्षित कराना चाहता हूँ।

इस क्षेत्र में पिछले सप्ताह हुई मुसलाधार बारिश के कारण चारों ओर पानी-ही-पानी नजर आ रहा है। गाँवों का संपर्क आस-पास के क्षेत्रों से कट गया है। फसलें पानी में डूब चुकी हैं। अनेक मरे हुए जानवर इधर-उधर बह रहे हैं। डूबे हुए क्षेत्र से अब पानी उतरने लगा है किंतु कच्चे घरों के गिर जाने के कारण लोग ऊँचे टीलों पर रहने को विवश हैं। प्रशासन की ओर से अभी तक विपदा में फंसे लोगों को कोई राहत सामग्री नहीं पहुँचाई गई है। पता नहीं प्रशासन कब तक सोया रहेगा।

अत: आपसे प्रार्थना है कि आप इसे अपने समाचारपत्र में स्थान देकर प्रकाशित करने की कृपा करें ताकि शासन प्रशासन के लोगों का ध्यान इस ओर जाए और वे बाढ़ग्रस्त लोगों की मदद करने को आगे बढ़ सकें।

सधन्यवाद।

भवदीय

रवींद्र नारायण प्रसाद

दानापुर, बिहार

दिनांक- 20जून, 2024

अभिव्यक्ति और माध्यम

1. जनसंचार माध्यम

संचार का अर्थ- 'संचार' शब्द मूलत: चर धातु में और सम उपसर्ग के योग से बना है। यहाँ 'सम्' का अर्थ है उचित, सही या पूर्ण और 'चर' का अर्थ है पहुँचना, जाना या भेजना। अर्थात् एक स्थान विशेष से अन्य दूसरे स्थान तक सूचनाओं या जानकारियों का पहुँचना अथवा भेजना ही संचार कहलाता है।'संचार' शब्द अंग्रेजी के कम्युनिकेशन (COMMUNICATION) शब्द का हिन्दीअनुवाद है।अत: हम कह सकते हैं कि संचार एक तरह से सूचनाओं के आदान-प्रदान की प्रक्रिया है।

संचार की परिभाषा- दो अथवा दो से अधिक लोगों के बीच किसी स्थान विशेष से अन्य दूसरे स्थान तक संदेशों या सूचनाओं के आदान-प्रदान की प्रक्रिया को संचार कहते हैं।

संचार के तत्व- संचार के निम्नलिखित तत्व होते हैं-

1-स्रोत या संचारक, 2- कूटीकरण, 3-कूटवाचन, 4-संदेश, 5-प्राप्तकर्ता, 6-फीडबैक,7-शोर।

1. स्रोत या संचारक (Sender)- जहाँ सेसंचार की प्रक्रिया की शुरुआत होती है, उसे स्रोत या संचारक कहते हैं।यह संचार का सबसे महत्वपूर्ण और पहला चरण है।

2. कूटीकरण (Encoding)- किसी सूचना या जानकारी को भेजने के लिए संचारक जिस भाषा का प्रयोग करता है, उसे कूटी करण कहते हैं।यह संचार का दूसरा चरण है।

3. कूटवाचन (Decoding)- जब स्रोत या संचारक द्वारा भेजी गयी सूचना या संदेश की भाषा को प्राप्तकर्ता उसी रूप में समझ लेता है तो उसे कूटवाचन कहते हैं।

4. संदेश (Message)- जब स्रोत या संचारक द्वारा भेजी गयी सूचना प्राप्तकर्ता को उसी रूप में प्राप्त हो जाती है तो वह संदेश कहलाता है।

5.प्राप्तकर्ता (Receiver)- स्रोत या संचारक द्वारा भेजी गयी सूचना जिस तक पहुँचती अर्थात् जो प्राप्त करता है, वह प्राप्तकर्ता कहलाता है।

6. फीडबैक (Feedback)- स्रोत या संचारक द्वारा भेजी गयी सूचना प्राप्त करने के बाद प्राप्तकर्ता उस सूचना के प्रति जो मनोभाव व्यक्त करता है, उसे फीडबैक कहते हैं। यहाँ संचार की प्रक्रिया पूरी हो जाती है।

7. शोर (Noise)- यदि संचार की प्रक्रिया पूरी होने में किसी भी तरह की बाधा उत्पन्न होती है तो वह बाधा ही शोर कहलाती है।

संचार माध्यम- जिन साधनों की सहायता से संचार की प्रक्रिया पूरी होती है, उन्हें संचार माध्यम कहा जाता है।जैसे- समाचारपत्र, पत्रिका, पोस्टर, बैनर, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, इंटरनेट, मोबाइल फ़ोन आदि।

संचार के प्रकार- संचार के निम्नलिखित प्रकार हैं-

1-मौखिक संचार, 2- अमौखिक (सांकेतिक) संचार, 3- अत:वैक्तिक संचार, 4- अंतर्वैक्तिक संचार, 5- समूह संचार, 6- जनसंचार।

1. मौखिक संचार- जब दो या दो से अधिक लोगों के बीच बोलकर या सुनकर संचार की प्रकिया पूरी होती है तो वह मौखिक संचार कहलाता है।

2.अमौखिक (सांकेतिक) संचार- जब संचारक और प्राप्तकर्ता के बीच संचार की प्रकिया इशारों या संकेत चिह्नों के द्वारा पूरी होती है तो वह अमौखिक या सांकेतिक संचार कहलाता है।

3.अंत:वैक्तिक संचार- जब संचार की प्रक्रिया में संचारक और प्राप्तकर्ता दोनों एक ही व्यक्ति होता है तो इस तरह के संचार को अंत:वैक्तिक संचार कहते हैं।

4.अंतर्वैक्तिक संचार- जब संचार की प्रक्रिया में केवल दो लोग संचारक और प्राप्तकर्ता ही शामिल होते हैं तो इस तरह के संचार को अंतर्वैक्तिक संचार कहते हैं।

5. समूह संचार- जब एक-दो नहीं बल्कि किसी समूह में शामिल लोगों के बीच किसी मुद्दे को लेकर चर्चा या बहस की जाती है तो इस तरह के संचार को समूह संचार कहते हैं।

6. जनसंचार- जब समाज के एक विशाल समूह के साथ प्रत्यक्ष के बजाय अप्रत्यक्ष रूप से यांत्रिक माध्यमों की सहायता से संचार किया जाता है तो इस तरह के संचार को जनसंचार कहा जाता है।

जनसंचार की विशेषताएँ- जनसंचार की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1- इसका दायरा बहुत व्यापक होता है।

2- इसकी प्रकृति सार्वजनिक होती है।

3- इसमें फीडबैक तुरंत नहीं प्राप्त होता है।

4- इसमें संचारक और प्राप्तकर्ता के बीच सीधा संबंध नहीं होता है।

5- इसमें किसी समाचार संगठन की जरुरत होती है।

6- इसमें कई द्वारपाल होते हैं जो संचार की दशा और दिशा निर्धारित करते हैं।

जनसंचार के कार्य- जनसंचार के मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं-

1.सूचना देना, 2.शिक्षित करना, 3.मनोरंजन करना, 4.एजेंडा तय करना,5. जागरूक करना,6. मंच प्रदानकरना 7.जनमत कायम करना।

जनसंचार के रूप (प्रकार)- जनसंचार के दो मुख्य रूप हैं- 1- प्रिंट मीडिया (मुद्रित माध्यम) 2- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (प्रसारित माध्यम)

1- प्रिंट मीडिया (मुद्रित माध्यम)- यह जनसंचार की सबसे मजबूत कड़ी है। इसमें समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें, पोस्टर, बैनर इत्यादि को शामिल किया जाता है।

पत्रकारिता- समाचार संगठनों द्वारा जनता के विशाल वर्ग तक ख़बरों एवं जानकारियों के आदान-प्रदान को पत्रकारिता कहा जाता है। इसके तीन पहलू हैं- (1) समाचारों को संकलित करना (2) उन्हें संपादित करके छपने लायक बनाना (3) पाठकों तक पहुँचाना।

आज़ादी से पहले के पत्रकार- महात्मा गाँधी, भारतेंदु हरिश्चंद्र, गणेश शंकर विद्यार्थी, माखन लाल चतुर्वेदी, बाबूराव विष्णुराव पराड़कर, प्रताप नारायण मिश्र, शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी तथा बालमुकंद गुप्त।

आज़ादी से पहले के समाचारपत्र एवं संपादक-

हिन्दी में → 'उदंत मार्तंड'- पं. जुगल किशोर,'सुधावर्षण' - बाबू श्याम सुंदर सेन,'दैनिक हिंदुस्तान'- एम एम मालवीय, 'हरिजन सेवक' - महात्मा गाँधी, 'प्रताप'- गणेश शंकर विद्यार्थी, 'समालोचक' - चंद्रधर शर्मा गुलेरी, 'आज'- शिव प्रकाश गुप्त, 'कर्मवीर' - माखनलाल चतुर्वेदी।

अंग्रेजी में → 'बंगाल गजट'- जेम्स आगस्टस हिकी, 'इंडियन मिरर'- देवेन्द्रनाथ टैगोर, 'प्रबुद्ध भारत'- पी अय्यासामी, 'वन्दे मातरम्'- अरविंद घोष, 'नवभारत' - श्रीमती एनी बेसेंट।

आज़ादी के बाद के पत्रकार-पूर्णचंद गुप्त, डोरीलाल, लाला जगत नारायण, इलाचंद्र जोशी, धर्मवीर भारती, प्रताप नारायण मिश्र, शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी तथा बालमुकंद गुप्त।

आज़ादी के बाद के समाचारपत्र एवं संपादक-

'दैनिक जागरण' - संजय गुप्त,'दैनिक भास्कर' - जगदीश शर्मा, 'हिंदुस्तान' - शशि शेखर, 'अमर उजाला' - मुरारी सिंह महेश्वरी, 'नवभारत' - राजेश जोशी, 'राष्ट्रीय सहारा' - डॉ विजय राय, 'स्वतंत्र भारत' - बलदेव प्रसाद मिश्र, 'जनसत्ता' -मुकेश भारद्वाज, 'प्रभात खबर' - आशुतोष चतुर्वेदी, 'राजस्थान पत्रिका', - गुलाब कोठारी

रेडियो- रेडियो जनसंचार का बहुत ही लोकप्रिय माध्यम है। इटली के इलेक्ट्रिकल इंजीनियर 'जी मार्कोनी ने 1895 ई. में' वायरलेस के जरिए ध्वनियों एवं संकेतों को एक जगह से दूसरी जगह भेजने में सफलता प्राप्त की और रेडियो का आविष्कार किया। आरंभ में इसका प्रयोग सूचनाओं के आदान-प्रदान में किया गया।1936 ई. में भारत में ऑल इंडिया रेडियो की सथापना की गई और आजादी के समय तक कुल नौ रेडियोस्टेशनों की स्थापना हो चुकी थी। सूचना एवं शिक्षा देने के अलावा रेडियो ने देश में सामासिक संस्कृति को विकसित होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1993 ई. में एफएम चैनलों की शुरुआत हुई और 1997 ई. में आकाशवाणी और दूरदर्शन को प्रसार भारती नामक स्वायत्त संस्था के अधीन कर दिया गया।

टेलीविजन- टेलीविजन जनसंचार का एक ताकतवर एवं महत्वपूर्ण साधन है।टेलीविजन का आविष्कार स्कोटिश इंजीनियर'जॉन लॉगी बेयर्ड ने 1924 ई.' ने किया। बीबीसी द्वारा टेलीविजन सेवा की शुरुआत 1936 ई. में की गयी। भारत में टेलीविजन की शुरुआत 15 सितंबर 1959 ई. को यूनेस्को की एक शैक्षिक परियोजना के तहत हुई। प्रारंभ में दिल्ली के आस-पास के गाँवों के शिक्षा एवं सामुदायिक विकास के लिए शुरू किया गया।1965 ई. में स्वतंत्रता दिवस से टेलीविजन सेवा विधिवत रूप से शुरू की गयी। 1 अप्रैल 1976 ई. को इसका नामकरण 'दूरदर्शन' किया गया। 1991 ई. में खाड़ी देशों के युद्ध का केबल के जरिए सीधा प्रसारण किया गया, जो एक तरह का नया अनुभव था।

सिनेमा- जनसंचार का सबसे लोकप्रिय और प्रभावशाली माध्यम के रूप में सिनेमा ने अपनी अमिट छाप छोड़ी है।सिनेमा को मनोरंजन का एक सशक्त माध्यम माना जाता है।यद्यपि सिनेमा से सीधे तौर पर सूचना या खबर की जानकारी नहीं मिलती है फिर भी परोक्ष रूप से सूचना एवं संदेश अवश्य प्राप्त होता है। सिनेमा का आविष्कार करने का श्रेय 'थामस अल्वा एडिसन' दिया जाता है। 1894 ई. फ्रांस में बनी 'द अराइवल ऑफ़ ट्रेन' दुनिया की पहली फिल्म है।भारत में पहली मूक फिल्म बनाने का श्रेय दादा साहेब फाल्के को दिया जाता है जिन्होंने 1913 ई. में 'राजा हरिश्चंद्र' बनाई।पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' थी जिसे 1931 ई. में एम अर्देशिर ईरानी ने बनाई।

इंटरनेट- इंटरनेट सबसे तेजी से लोकप्रिय होने वाला जनसंचार माध्यम है। यह एक ऐसा जनसंचार माध्यम है जिसमें समाचारपत्र,पुस्तक, रेडियो, टेलीविजन और सिनेमा सभी के गुण विद्यमान हैं। इसकी रफ़्तार और पहुँच दुनिया के कोने-कोने तक है। यह एक अंतर्क्रियात्मक माध्यम है जिसमें आप केवल दर्शक एवं श्रोता ही नहीं होते बल्कि आप सवाल-जवाब तथा सलाह-मशविरा में भाग भी लेते हैं। इंटरनेट के कारण मनुष्य विश्वग्राम का एक सदस्य बन चुका है।

जनसंचार का प्रभाव-

(सकारात्मक)	**(नकारात्मक)**
(1) घर बैठे देश-दुनिया के खबरों की जानकारी।	(1) काल्पनिक एवं आभासी दुनिया की सैर।
(2) सूचनाओं का त्वरित आदान-प्रदान।	(2) लोगों की जीवन-शैली में परिवर्तन।

(3) मनोरंजन के विकल्पों की अधिकता।
(4) वाणिज्य एवं व्यापार में प्रगति।
(5) शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता।

(3) अश्लीलता, मादकता एवं हिंसा में बढ़ोत्तरी।
(4) लूट-खसोट एवं ठगने की प्रवृत्ति का प्रादुर्भाव।
(5) तड़क-भड़क और फिजूलखर्ची को बढ़ावा।

2. पत्रकारिता के विविध आयाम

पत्रकारीय लेखन- अखबार पाठकों को सूचना देने, उन्हें जागरूक और शिक्षित बनाने तथा उनकामनोरंजन करने का दायित्व निभाते हैं। लोकतांत्रिक समाजों में वे एक पहरेदार, शिक्षक और जनमतनिर्माता के तौर पर बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। अपने पाठकों के लिए वे बाहरी दुनिया में खुलने वाली ऐसी खिड़की हैं, जिनके जरिये असंख्य पाठक हर रोज सुबह देश-दुनिया और अपने पास-पड़ोस की घटनाओं, समस्याओं, मुद्दों तथा विचारों से अवगत होते हैं।

अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं। इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

साहित्यिक और पत्रकारीय लेखन में अंतर

1. पत्रकारीय लेखन का संबंध तथा दायरा समसामयिक और वास्तविक घटनाओं, समस्याओं तथा मुद्दों से होता है। यह साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन-कविता, कहानी, उपन्यास आदि-इस मायने में अलग है कि इसका रिश्ता तथ्यों से होता है, न कि कल्पना से।
2. पत्रकारीय लेखन साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन से इस मायने में भी अलग है कि यह अनिवार्य रूप से तात्कालिकता और अपने पाठकों की रुचियों तथा जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जाने वाला लेखन है, जबकि साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन में लेखक को काफी छूट होती है।

समाचार- देश-दुनिया के किसी भी कोने में घटित ऐसी घटना जिसमें पाठकों की दिलचस्पी हो तथा जिसमें सार्वजनिक हित निहित हो, उसे समाचार कहते हैं।

समाचार के तत्व- (1) नवीनता (2) निकटता (3) प्रभाव (4) जनरूचि (5) संघर्ष व टकराव (6) महत्वपूर्ण लोग (7) उपयोगी जानकारियाँ (8) अनोखापन (9) पाठक वर्ग (10) नीतिगत ढाँचा।

समाचार-लेखन की शैली- अखबारों में प्रकाशित अधिकांश समाचार एक खास शैली में लिखे जाते हैं। इन समाचारों में किसी भी घटना, समस्या या विचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य, सूचना या जानकारी को सबसे पहले पैराग्राफ़ में लिखा जाता है। उसके बाद के पैराग्राफ़ में उससे कम महत्वपूर्ण सूचना या तथ्य की जानकारी दी जाती है। यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक समाचार खत्म नहीं हो जाता।

उलटा पिरामिड शैली- समाचार-लेखन की एक विशेष शैली है, जिसे उलटा पिरामिड शैली (इन्वर्टेड पिरामिडया टी स्टाइल) के नाम से जाना जाता है। यह समाचार-लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है। यह शैली कहानी या कथा-लेखन की शैली के ठीक उलटी है, जिसमें क्लाइमेक्स बिलकुल आखिर में आता है। इसे 'उलटा पिरामिड शैली' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना यानी 'क्लाइमेक्स' पिरामिड के सबसे निचले उलटा पिरामिड में हिस्से में नहीं होती, बल्कि इस शैली में पिरामिड को उलट दिया जाता है।

समाचार लेखन और छह ककार- किसी समाचार को लिखते हुए जिन छह सवालों का जवाब देने की कोशिश की जाती है, वे हैं- 1. क्या हुआ? 2. किसके साथ हुआ? 3. कब हुआ? 4.कहाँ हुआ? 5.कैसे हुआ? 6. क्यों हुआ?

इन क्या, कौन,कब,कहाँ,कैसेऔरक्योंकोहीछहककार कहते हैं।समाचार के मुखड़े (इंट्रो) यानी पहले पैराग्राफ़ या शुरुआती दो-तीन पंक्तियों में आमतौर पर तीन या चार ककारों को आधार बनाकर खबर लिखी जाती है। ये चार ककार हैं-क्या, कौन, कब और कहाँ? इसके बाद समाचार की बॉडी में और समापन के पहले बाकी दो ककारों-कैसे और क्योंका जवाब दिया जाता है। इस तरह छह ककारों के आधार पर समाचार तैयार होता है। इनमें से पहले चार ककार-क्या, कौन, कब

और कहाँसूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं जबकि बाकी दो ककारों कैसे और क्योंमें विवरणात्मक, व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर दिया जाता है।

संपादन- संवाददाताओं से प्राप्त खबरों एवं सूचनाओं में काट-छाँट एवं उसकी अशुद्धियों को दूर करके उसे पठनीय बनाने का काम ही संपादन कहलाता है।

संपादन के सिद्धांत- पत्रकारिता की साख बनाए रखने के लिए संपादन के सिद्धांतों की आवश्यकता होती है,जो निम्नलिखित हैं -

(1) तथ्यों की शुद्धता (2) वस्तुपरकता (3) निष्पक्षता (4) संतुलन (5) स्रोत

संपादकीय- किसी घटना अथवा राष्ट्रीय महत्त्व के मुद्दे पर संपादक की राय को संपादकीय कहा जाता है। इसे समाचारपत्र की आवाज भी कहा जाता है।

पत्रकारिता के प्रकार

विशेषीकृत पत्रकारिता- किसी क्षेत्र विशेष से संबंधित घटनाओं की तह में जाकर उसका अर्थ स्पष्ट करना और पाठकों को उसके महत्त्व की जानकारी देना विशेषीकृत पत्रकारिता कहलाता है। इस तरह की पत्रकारिता में संबंधित विषय में विशेषज्ञता की जरुरत होती है। जैसे- संसदीय कार्य, आर्थिक जगत, खेल जगत, न्याय प्रक्रिया, धार्मिक आस्था।

खोजपरक पत्रकारिता- खोजपरक पत्रकारिता का आशय एक ऐसी पत्रकारिता से है जिसमें उन तथ्यों एवं सूचनाओं की गहराई से छान-बीन करके जनता के सामने लाया जाता है जिन्हें आम तौर पर दबाने एवं छिपाने का प्रयास किया जाता है। इसके अंतर्गत छिपाई गई सूचना कोप्रमाण सहित प्रकाशित किया जाता है।

वॉचडॉग पत्रकारिता- जो पत्रकारिता सरकार के कामकाज पर निगाह रखती है और कोई गड़बड़ी होते ही उसका पर्दाफाश करती है, उसे वॉचडॉग पत्रकारिता कहते हैं।

एडवोकेसी पत्रकारिता- जो पत्रकारिता किसी विचारधारा या विशेष उद्देश्य या मुद्दे को उठाकर उसके पक्ष में जनमत बनाने के लिए लगातार और जोर-शोर से अभियान चलाती है, उसे एडवोकेसी पत्रकारिता कहते हैं।

वैकल्पिक पत्रकारिता- वह पत्रकारिताजो स्थापित व्यवस्था के विकल्प को सामने लाने और उसके अनुकूल सोच को अभिव्यक्त करती है, उसे वैकल्पिक पत्रकारिता कहते हैं।

पेज थ्री पत्रकारिता- पेज श्री पत्रकारिता का आशय उस पत्रकारिता से है, जिसमें फ़ैशन, अमीरों की बड़ी-बड़ी पार्टियों, महफ़िलों तथा लोकप्रिय लोगों के निजी जीवन के बारे में बताया जाता है। ऐसे समाचार सामान्यत: समाचार-पत्र के पृष्ठ तीन पर प्रकाशित होते हैं।

पीत पत्रकारिता- इसतरह की पत्रकारिता में झूठी अफवाहों, सनसनीखेज मुद्दों तथा खबरों को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कर प्रस्तुत किया जाता है। इसमें सही समाचारों की उपेक्षा करके ध्यान-खींचने वाले शीर्षकों काबहुतायत में प्रयोग किया जाता है।

पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं- **1.** पूर्णकालिक **2.** अंशकालिक **3.** फ्रीलांसर यानी स्वतंत्र।

1. **पूर्णकालिक पत्रकार**- इस श्रेणी के पत्रकार किसी समाचार संगठन में काम करने वाले नियमित कर्मचारी होते हैं। इन्हें वेतन, भत्ते एवं अन्य सुविधाएँ प्राप्त होती हैं।
2. **अंशकालिक पत्रकार**- इस श्रेणी के पत्रकार किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर एक निश्चित समयावधि के लिए कार्य करते हैं।
3. **फ्रीलांसर पत्रकार**- इस श्रेणी के पत्रकारों का संबंध किसी विशेष समाचार-पत्र से नहीं होता, बल्कि वे भुगतान के आधार पर अलग-अलग समाचार-पत्रों के लिए लिखते हैं।

पत्रकारीय लेखन के स्मरणीय तथ्य- पत्रकारीय लेखन करने वाले विशाल जन-समुदाय के लिए लिखते हैं, जिसमें पाठकों का दायरा और ज्ञान का स्तर विस्तृत होता है। इसके पाठक मजदूर से विद्वान तक होते हैं, अत: उसकी लेखन-शैली और भाषा-

1. सरल, सहज और रोचक होनी चाहिए।

2. अलंकारिक और संस्कृतनिष्ठ होने की बजाय आम बोलचाल वाली होनी चाहिए।
3. शब्द सरल और आसानी से समझ में आने वाले होने चाहिए।
4. वाक्य छोटे और सहज होने चाहिए।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्रश्न-1 जनसंचार माध्यमों के प्रकार बताइए।
उत्तर- 1- प्रिंट मीडिया (मुद्रित माध्यम) 2- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (प्रसारित माध्यम)
प्रश्न-2 पत्रकारिता से क्या आशय है?
उत्तर- ख़बरों के संचार को पत्रकारिता कहते हैं।
प्रश्न-3 मुद्रण की शुरुआत किस देश से हुई?
उत्तर- मुद्रण की शुरुआत चीन से हुई।
प्रश्न-4 छापेखाने का आविष्कार किसने किया?
उत्तर- छापेखाने का आविष्कार जर्मनी के गुटेनबर्ग ने किया।
प्रश्न-5 भारत में पहला छापाखाना कहाँ खुला?
उत्तर- भारत में पहला छापाखाना 1556 ई. में गोवा में खुला।
प्रश्न-6 मुद्रित माध्यम की सबसे बड़ी कमजोरी क्या है?
उत्तर- इसका प्रयोग केवल पढ़ा-लिखा वर्ग ही कर सकता है।
प्रश्न-7 डेडलाइन से क्या आशय है?
उत्तर- समाचारों के प्रकाशन के लिए न्यूज डेस्क पर खबरों के पहुँचाने की निर्धारित अंतिम समय-सीमा को डेडलाइन कहा जाता है ।
प्रश्न-8 रेडियो का आविष्कार किसने किया ?
उत्तर- रेडियो का आविष्कार इटली के जी. मार्कोनी ने 1895 ई.में किया।
प्रश्न-9 उल्टा पिरामिड शैली क्या है?
उत्तर- उल्टा पिरामिड समाचार लेखन की एक शैली है जिसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य सबसे पहले, उसके बाद उससे कम और अंत में सबसे कम महत्त्वपूर्ण तथ्यों को लिखा जाता है।
प्रश्न-10 रेडियो किस तरह का जनसंचार माध्यम है?
उत्तर- रेडियो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का श्रव्य जनसंचार माध्यम है।
प्रश्न-11 टेलीविजन का आविष्कार किसने किया?
उत्तर- टेलीविजन का आविष्कार जे.एल.बेयर्ड ने 1924 ई. में किया।
प्रश्न-12 टेलीविजन की कोई एक विशेषता बताइए?
उत्तर- टेलीविजन श्रव्य-दृश्य माध्यम है। इसमें कम शब्दों में अधिक जानकारी दी जाती है।
प्रश्न-13 इंटरनेट का आविष्कार कैसे हुआ?
उत्तर- इंटरनेट का आविष्कार अमेरिकी रक्षा विभाग द्वारा सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए 1969 ई. में किया गया।
प्रश्न-14 इंटरनेट पत्रकारिता क्या है?
उत्तर- इंटरनेट पर सूचनाओं के आदान-प्रदान को इंटरनेट पत्रकारिता कहा जाता है। वास्तविक रूप में इंटरनेट एक टूल है जिसका प्रयोग सूचना, मनोरंजन, ज्ञान एवं संवादो के आदान-प्रदान के लिए किया जाता है।
प्रश्न-15 इंटरनेट पत्रकारिता को अन्य किन नामों से जाना जाता है?
उत्तर- ऑनलाइन पत्रकारिता, वेब पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता।
प्रश्न-16 टेलीविजन की कोई एक विशेषता बताइए?
उत्तर- टेलीविजन श्रव्य-दृश्य माध्यम है। इसमें कम शब्दों में अधिक जानकारी दी जाती है।

प्रश्न-17 हिन्दी में नेट पत्रकारिता आरंभ किससे हुआ?
उत्तर- हिन्दी में नेट पत्रकारिता का आरंभ 'वेब दुनिया' से शुरू हुआ।
प्रश्न-18 समाचार से क्या आशय है?
उत्तर- देश-दुनिया में घटित वे घटनाएँ जिनका अधिक से अधिक से लोगों पर प्रभाव पड़ता हो तथा जिनमें अधिक से अधिक लोगों की रूचि हो, उन्हें समाचार कहते हैं।
प्रश्न-19 समाचार के तत्व बताइए।
उत्तर- नवीनता, निकटता, सरलता, तथ्यपरकता, स्पष्टता और क्रमबद्धता।
प्रश्न-20 समाचार लेखन में छः ककार क्या हैं?
उत्तर- कब, कहाँ, कैसे, कौन, क्या, क्यों।
प्रश्न-21 पत्रकारिता में बीट किसे कहते हैं?
उत्तर- संवाददाताओं में उनकी रूचि और क्षमता के अनुसार कार्य का विभाजन ही बीट कहलाता है।
प्रश्न-22 संपादकीय पृष्ठ से क्या मतलब है?
उत्तर- समाचार पत्र के जिस पृष्ठ पर संपादक द्वारा किसी ज्वलंत मुद्दे, घटना या समस्या से संबंधित राय व्यक्त की जाती है, उसे संपादकीय पृष्ठ कहा जाता है।
प्रश्न-23 पत्रकार कितने तरह के होते हैं?
उत्तर- पत्रकार तीन तरह के होते हैं- 1-पूर्णकालिक पत्रकार 2-अंशकालिक पत्रकार 3-स्वतंत्र पत्रकार
प्रश्न-24 समाचार और फीचर में क्या अंतर है?
उत्तर- समाचार में तथ्यात्मक सूचना होती है जबकि फीचर सृजनात्मक लेख होता है।
प्रश्न-25 खोजी पत्रकारिता का क्या अर्थ है?
उत्तर- घटना की तह में जाकर तथ्यों को सामने लाना जिन्हें छिपाने एवं दबाने का प्रयास किया जाता है।
प्रश्न-26 वॉचडॉग पत्रकारिता का क्या अर्थ है?
उत्तर- जो पत्रकारिता सरकार के कामकाज पर निगाह रखती है और कोई गड़बड़ी होते ही उसका पर्दाफाश करती है, उसे वॉचडॉग पत्रकारिता कहते हैं।
प्रश्न-27 'रिपोर्ताज' शब्द की उत्पत्ति किस भाषा से मानी जाती है?
उत्तर- 'रिपोर्ताज' शब्द की उत्पत्ति फ्रेंच भाषा से से मानी जाती है।

3. डायरी लेखन

डायरी लेखन- डायरी लेखन एक तरह से आत्मनिष्ठ लेखन है। जब कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में घटित घटनाओं एवं अनुभवों को क्रमबद्ध रूप से तिथिवार अभिव्यक्त करता है तो वह डायरी लेखन कहलाता है।

महत्त्व- इस तरह के लेखन में निजी जीवन की प्रमुख घटनाओं, संपर्क में आए लोगों का प्रभाव, तथ्यों का संकलन, नए स्थान की सौन्दर्यानुभूति, सुभाषित-संग्रह या कोई महत्त्वपूर्ण उपलब्धि को क्रमबद्ध ढंग से संजोया जाता है।डायरी लेखन साहित्य की एक नई विधा भी है जो आधुनिक गद्य साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण देन है। किसी भी घटना के प्रति साहित्यकार का तात्कालिक मानसिक उद्वेग साहित्य की अनुपम विधा के रूप में विस्तार पाता है।

डायरी लेखन के प्रकार- (1) व्यक्तिगत डायरी (2) वास्तविक डायरी (3) काल्पनिक डायरी (4) साहित्यिक डायरी

डायरी लेखन का उद्देश्य-

- एक व्यक्ति जिस बात को अन्य लोगों को समझा पाने तथा व्यक्त कर पाने में असमर्थ होता है, उस बात को वह डायरी में लिख लेता है। डायरी सही अर्थ में एक 'सच्चे मित्र' की भांति होती है, जिसे हम सब कुछ बता सकते है। इसमें प्रतिदिन की विशेष घटनाओं को लिखकर हम उन्हें यादगार बना लेते है।

- जिस प्रकार हम किसी तस्वीर को देखकर उस अवसर की याद ताजा कर लेते है, ठीक उसी प्रकार डायरी के माध्यम से हम अतीत में लौट सकते है तथा अपने खट्टे-मीठे अनुभवों को पुनर्जीवित कर सकते है।
- प्रसिद्ध तथा महान व्यक्ति भी डायरी लेखन किया करते थे। उनकी डायरी पढ़कर हम सम्पूर्ण युग देख सकते है। कई बार यही डायरी भविष्य में 'आत्मकथा' का रूप ले लेती है, जिससे हम महान व्यक्तियों के विचारों, अनुभवों तथा दिनचर्या के बारे में जान पाते है।

डायरी लेखक एवं उनकी डायरी-

डायरी	लेखक
द डायरी ऑफ अ यंग गर्ल	ऐनी फ्रैंक
पैरों में पंख बाँधकर	रामवृक्ष बेनीपुरी
रूस में पच्चीस मास	राहुल सांस्कृत्यायन
सुदूर दक्षिण पूर्व	सेठ गोविंद दास
हरी घाटी	डॉ. रघुवंश
एक साहित्यिक की डायरी	गजानन माधव मुक्तिबोध
लद्दाख यात्रा की डायरी	करनाल सज्जन सिंह

डायरी लिखते समय ध्यान देने वाली मुख्य बातें -

- डायरी लेखन करते समय पृष्ठ में सबसे ऊपर तिथि, दिन तथा लिखने का समय अवश्य लिखना चाहिए।
- डायरी लेखन सदैव सोने से पहले करना चाहिएताकि पूरे दिन में घटित सभी विशेष घटनाओं को लिखसकें।
- डायरी के अंत में अपने हस्ताक्षर अवश्य करना चाहिएताकि वह आपका व्यक्तिगत दस्तावेज बन सके।
- डायरी लेखन करते समय सरल तथा स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
- डायरी में दर्ज विवरण यथासंभव संक्षिप्त रहना चाहिए।
- डायरी लेखन करते समय अपने अनुभवों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना चाहिए।
- डायरी में स्थान तथा तिथि का जिक्र अवश्य करना चाहिए।
- डायरी में अपना विश्लेषण, समाज, आदि पर प्रभाव तथा निष्कर्ष भी दर्ज होना चाहिए।

डायरी लेखन के उदाहरण-

1. पुरस्कार प्राप्त होने के बाद हुई प्रसन्नता

जयपुर
06 मई, 2024, सोमवार।
रात्रि 9:30 बजे

आज का दिन बहुत अच्छा बीता। विद्यालय की प्रार्थना सभा में सभी विद्यार्थियों के सामने मुझे अंतर्विद्यालयी काव्य-पाठ प्रतियोगिता में जीता गया पुरस्कार दिया गया। घर आने पर मैंने माताजी-पिताजी को पुरस्कार दिखाया, तो वे दोनों फूले नहीं समाए। दादी माँ ने मुझे आशीर्वाद दिया। अब मैं खाना खाने के बाद सोने जा रहा हूँ।

सूरज रावत

2. प्रतियोगिता में प्रथम स्थान आने पर पुलकित हुआ मन

चंडीगढ़
14 मई 2024, मंगलवार।
रात्रि 8:00 बजे
मैं बहुत खुश हूँक्योंकि आज मेरी इच्छा पूरी हो गई है। आज प्रार्थना सभा में अध्यापिका ने सबके सामने राष्ट्रीय स्तर की वाद-विवाद प्रतियोगिता का परिणाम घोषित किया। जब उन्होंने हौसला बढ़ाते हुए प्रथम आने वाली छात्रा का नाम लियातब मुझे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ, क्योंकि वह छात्रा कोई और नहीं बल्कि मैं ही थी। सभी शिक्षकों ने मेरी बहुत प्रशंसा की। घर आने पर मैंने घर के सदस्यों को प्रधानमंत्री जी द्वारा हस्ताक्षरित अपनी उपलब्धि का प्रमाणपत्र दिखाया, तो वे सभी बहुत प्रसन्न हुए और मुझे न जाने कितने आशीर्वाद दे डाले।

तृप्ति

4. कथा-पटकथा

पटकथा - यह दो शब्दों से 'पट' और 'कथा' से जुड़कर बना है । 'पट' का अर्थ है कपड़ा अर्थात् परदा और कथा का अर्थ है कहानी अर्थात् स्क्रिप्ट।इस तरह से पटकथा का अर्थ है पर्दे(स्क्रीन) पर दिखाने के लिए लिखी जाने वाली कथा। तात्पर्य यह कि सिनेमा या दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिक के लिए तैयार किया गयालिखित कार्य (स्क्रिप्ट) को ही पटकथा कहा जाता है।

दृश्य- दृश्य पटकथा की मूल इकाई होती है। एक स्थान पर एक ही समय में लगातार चल रहे कार्य व्यापार के आधार पर एक दृश्य निर्मित होता है। स्थान, समय और कार्य में से किसी भी एक के बदलने से दृश्य भी बदल जाता है।

कथा और पटकथा में अंतर- कहानी गद्य साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। इसमें पात्रों और संवादों के माध्यम से उद्देश्यपूर्ण घटनाओं का रोचक वर्णन होता है। कहानी का आनंदपढ़कर और सुनकर प्राप्त होता है, इसलिए यह एक श्रव्य माध्यम है।

पटकथा एक नवीन विधा है जो टेलीविजन के विकास से जुड़ी है। धारावाहिकों एवं फिल्मों को दिखाने के लिए जो स्क्रिप्ट लिखी जाती है, वह पटकथा कहलाती है। इसमें एक से अधिक दृश्य होते हैं। परदे पर देखकर इसका भरपूर आनंद लिया जाता है, इसलिए यह श्रव्य-दृश्य माध्यम के अंतर्गत आता है।

प्रमुख पटकथा लेखक- मन्नू भंडारी, मनोहर श्याम जोशी,
पटकथा लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

- प्रत्येक दृश्य के साथ होने वाली घटना के समय का संकेत भी दिया जाना चाहिए।
- पात्रों की गतिविधियों के संकेत भी प्रत्येक दृश्य के प्रारंभ में देने चाहिए। (जैसे-रजनी चपरासी को घूर रही है, चपरासी मज़े से स्टूल पर बैठा है। साहब मेज़ पर पेपरवेट घुमा रहा है। फिर घड़ी देखता है।)
- दृश्य का बँटवारा करते समय समय, स्थान और कार्य का ध्यान रखा जाना चाहिए।
- प्रत्येक दृश्य के साथ उसके होने की सूचना देनी चाहिए।
- प्रत्येक दृश्य के साथ घटनास्थल का उल्लेख अवश्य करना चाहिए; जैसे-कमरा, बरामदा, पार्क, बस स्टैंड, हवाई अड्डा, सड़क आदि।
- पात्रों के संवाद और बोलने के ढंग के निर्देश भी दिए जाने चाहिए। (जैसे- रजनी: अपने में ही भुनभुनाते हुए)

पटकथा लेखन-पटकथा लेखन एक विशिष्ट तरह का सृजनात्मक लेखन है। अंग्रेजी में पटकथा को 'स्क्रीनप्ले' कहते हैं। पटकथा लेखक **मनोहर श्याम जोशी** ने अपनी पुस्तक 'पटकथा लेखन: एक परिचय' में लिखा है -**"पटकथा कुछ और नहीं, कैमरे से फिल्म के पर्दे पर दिखाए जाने के लिए लिखी गई कथा है।"**

पटकथा की संरचना- पटकथा के निम्न अंग होते हैं।

- पात्र- पटकथा में नायक तथा प्रतिनायक होते हैं।
- द्वंद्व- स्क्रीन के लिए लिखी गई कथा में टकराहट और फिर समाधान होता है।
- घटनास्थल- इसमें अलग-अलग घटनास्थल होते हैं।
- दृश्य- पटकथा में कई प्रकार के दृश्य होते हैं।

नाटक और फिल्म की पटकथा में अंतर-

- नाटक में दृश्य लंबे होते हैं जबकि फिल्म के दृश्य छोटे होते हैं।
- नाटक एक सजीव कला माध्यम है जबकि पटकथा फिल्मांकन है।
- नाटक में घटनास्थल सीमित होते हैं जबकि फिल्म में घटनास्थल असीमित होते हैं।
- नाटक में कथा का विकास रेखीय होता है जबकि फिल्म में कथा का विकास कई प्रकार से होता है।

फ्लैश बैक- फ्लैशबैक में अतीत की किसी घटना को दिखाया जाता है।

फ्लैश फॉरवर्ड- फ्लेशफॉरवर्ड में भविष्य में होने वाली किसी घटना को पहले ही दिखा देते हैं। फ्लैशबैक और फॉरवर्ड दोनों का प्रयोग करने के बाद वर्तमान में आना जरूरी होता है।

शरत चंद्र चट्टोपाध्याय के प्रसिद्ध उपन्यास देवदास पर कई फिल्में बन चुकी हैं। मुंशी प्रेमचंद, धर्मवीर भारती तथा मन्नू भंडारी आदि की रचनाओं पर फिल्म एवं टीवी धारावाहिक बन चुके हैं। सिनेमा, टेलीविजन दोनों ही माध्यमों के लिए बनने वाली फिल्में या धारावाहिकों का मूल आधार पटकथा ही होती है। पटकथा लेखन की **मूल इकाई दृश्य** होती है। वर्तमान समय में पटकथा लेखन में कंप्यूटर का प्रयोग होने लगा है। अब ऐसे सॉफ्टवेयर भी आ गए हैं, जिसमें पटकथा का प्रारूप पहले से ही तैयार रहता है।

पटकथा लेखन के त्रय बिंदु-

पटकथा लेखन में तीन बिदुओं को आधारभूमि के रूप में देखा जाता है - (1) समस्या (2) संघर्ष (3) समाधान। पटकथा के कथानक में इन तीन बिन्दुओं का समावेश रहता है और इन्हीं की प्रस्तुति पटकथा को सफल बनाती है। कथानक का सारा ताना-बना इन्हीं तीन बिन्दुओं को ध्यान में रखकर बुना जाता है।

पटकथा लिखने का तरीका-

(1) शीर्षक पृष्ठ - सबसे पहले पटकथा का शीर्षक पृष्ठ तैयार करें। इसमें अधिक बातें न लिखें।

(2) दृश्य संख्या - पटकथा में कई दृश्य होते हैं। घटना के अनुसार उनका क्रम-निर्धारण करना जरुरी होता है।

(3) शूटिंग स्क्रिप्ट - पटकथा लिखते समय इसका सबसे अधिक ध्यान रखना चाहिए। प्रत्येक दृश्य में पात्रों के अभिनय के अनुसार कोष्ठक का प्रयोग करते हुए इसे लिखा जाता है।

(4) त्रय बिन्दुओं का पालन - पटकथा में समस्या, संघर्ष और समाधान तीन बिंदु मुख्य भूमिका निभाते हैं। इनका पालन करना आवश्यक होता है।

(5) गतिविधि का विवरण - दृश्य का क्रम डालने के बाद गतिविधि का विवरण कोष्ठक का प्रयोग करते हुए लिखना चाहिए ताकि उस दृश्य का आरंभ प्रभावी हो सके। वाक्य वर्तमान काल में होने चाहिए।

(6) संवाद- पात्रानुकूल संवाद पटकथा को रोचक एवं पठनीय बनाते हैं। भाषा प्रयोग सहज एवं सटीक होना चाहिए।

(7) फ्लैशबैक / फ्लेशफॉरवर्ड - घटनाओं की जरुरत के अनुसार फ्लैशबैक / फ्लेशफॉरवर्ड करना चाहिए।

पटकथा लेखन का नमूना (संकेत मात्र) है। वास्तविक उदाहरण के लिए मन्नू भंडारी का 'रजनी' पाठ पढ़ें।

शीर्षक पृष्ठ

चन्द्रयान की कहानी

लेखक - दिव्य भूषण

पात्र परिचय

1. **डॉ. जगन्नाथ (वैज्ञानिक)**
2. **डॉ. नीलिमा (प्रोफ़ेसर)**
3. **गोकुल दत्ता (तकनीकी विशेषज्ञ)**
4. **तेजप्रकाश (मंत्रालय कर्मचारी)**

दृश्य - एक

(गतिविधि विवरण)

(दोपहर लंच के बाद का समय। अंतरिक्ष वैज्ञानिक जगन्नाथ अपने कक्ष में चिंतन की मुद्रा में अपनी कुर्सी पर बैठे हैं।प्रोफ़ेसर नीलिमा प्रवेश करती हैं।)

दृश्य - दो

(गतिविधि विवरण)

प्रो. नीलिमा - (संकोच से कुसी के सामने खड़ी होते हुए) सर, आखिर आपने क्या सोचा? क्या होगा हमारी मेहनत और त्याग, तपस्या का?

दृश्य - तीन

(गतिविधि विवरण)

वै. जगन्नाथ - (ऊपर की ओर निगाह किए हुए) मामले की मंजूरी के लिए एक महीना से अधिक समय बीत गया। लेकिन...लेकिन अब तक कोई....

दृश्य - चार

(गतिविधि विवरण)

गोकुल दत्ता- (कंप्यूटर स्क्रीन देखते हुए दोनों हाथ ऊपर उठाकर उत्साह से) लो जी पूरा हो गया हमारा चंद्रयान मिशन। ये देखो, चंद्रमा की सतह पर उतरा।

5. कार्यालयी लेखन की प्रक्रिया

ध्यातव्य:

आपने कभी न कभी आम सरकारी दफ़तर में कागज़ों और फ़ाइलों के ढेर देखे होंगे। इन फाइलों का दफ़तरों के कामकाज में महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि सरकारी कामकाज की गाड़ी फाइलों के पहियों पर ही दौड़ती है। चाहे किसी विषय पर विचार करना हो या उस पर निर्णय लेना हो, उस विषय से संबंधित एक फाइल होती है। उस विषय से संबंधित जो प्रस्ताव या पत्र बाहरी व्यक्तियों या दूसरे कार्यालयों से प्राप्त होते हैं उन्हें फाइल की दाहिनी तरफ रखा जाता है। किसी प्रस्ताव या विषय पर विचार के लिए जो टिप्पणियाँ लिखी जाती हैं या अपने विचार प्रकट किए जाते हैं वे फाइल की बाईं तरफ लगे पृष्ठों पर होते हैं। सरकारी कार्यालयों की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए इन पत्रों को कई श्रेणियों में बाँट दिया गया है। उदाहरण के लिए कई पत्र सूचनाएँ माँगने या भेजने के लिए लिखे जाते हैं। कुछ पत्रों द्वारा मुख्यालय या बड़े अधिकारी अपने अधीन कार्यरत कार्यालयों या अधीन कार्य करने वाले कर्मचारियों को आदेश भेजते हैं। कुछ पत्र अखबारों को विभागीय गतिविधियों की जानकारी देने के लिए भेजे जाते हैं।

औपचारिक पत्र (फॉर्मल लेटर)

सरकारी पत्र औपचारिक पत्र की श्रेणी में आते हैं। ज्यादातर ये पत्र एक कार्यालय, विभाग अथवा मंत्रालय से दूसरे कार्यालय, विभाग या मंत्रालय को लिखे जाते हैं। पत्र के शीर्ष पर कार्यालय, विभाग या मंत्रालय का नाम व पता लिखा जाता है। पत्र के बाईं तरफ जिसे पत्र लिखा जा रहा है उसका नाम, पता और फाइल संख्या लिखी जाती है जिससे

यह स्पष्ट हो सके कि पत्र किस विभाग द्वारा किस विषय के तहत कब लिखा जा रहा है। यदि आवश्यक हो तो अधिकारी का नाम भी दिया जाता है। वर्तमान में 'सेवा में' का प्रयोग धीरे-धीरे कम हो रहा है। 'विषय' में संक्षेप में यह लिखा जाता है कि पत्र लिखने का प्रयोजन क्या है। पत्र की भाषा सरल एवं सहज होनी चाहिए। अत्यधिक कठिन शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। इस पत्र के बाईं ओर प्रेषक का पता और तारीख दी जाती है। पत्र के अंत में 'भवदीय' शब्द का प्रयोग अधोलेख के रूप में होता है। भवदीय के नीचे पत्र भेजने वाले के हस्ताक्षर और हस्ताक्षर के नीचे कोष्ठक में पत्र लिखने वाले का नाम और नाम के नीचे पदनाम लिखा जाता है।

मुख्य टिप्पण (नोटिंग)

किसी भी ऐसे पत्र जिस पर किसी विषय पर विचार किया जा रहा है, उस पर जो राय, मंतव्य, आदेश अथवा निर्देश दिया जाता है वह टिप्पणी कहलाती है। टिप्पणी शब्द अंग्रेजी के नोटिंग शब्द के अर्थ में प्रयुक्त होता है। टिप्पणी लिखने की प्रक्रिया को हम टिप्पणयानी नोटिंग कहते हैं। टिप्पणी का उद्देश्य उन तथ्यों को स्पष्ट तथा तर्कसंगत रूप से प्रस्तुत करना है जिन पर कोई निर्णय लिया जाना है और किसी भी मामले को नियमानुसार निपटाना है। साथ ही उन बातों की ओर भी संकेत करना है जिनके आधार पर उस निर्णय को स्वीकार किया जा सकता है।
टिप्पण मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं - सहायक स्तर पर टिप्पण तथा अधिकारी स्तर पर टिप्पण।
सहायक स्तर पर टिप्पण - कार्यालय में टिप्पण कार्य अधिकतर सहायक स्तर पर होता है। इसे आरंभिक टिप्पण या मुख्य टिप्पण भी कहते हैं, जिसमें सहायक किसी मामले का संक्षिप्त ब्योरा देते हुए अपने विचार रखता है। उसका इस प्रकार के टिप्पण में सबसे पहले मुख्य पत्र या आवती में दिए गए विवरण या तथ्य का सार दिया जाता है। फिर उसमें उल्लेखित प्रस्ताव की व्याख्या की जाती है और उस विषय से संबंधित नियमों-विनियमों को ध्यान में रखते हुए अपनी राय दी जाती है। यह आवश्यक है कि टिप्पणी अपने आप में पूर्ण एवं स्पष्ट होनी चाहिए। इसमें असली मुद्दे पर अधिक बल देना चाहिए और साथ ही साथ टिप्पणी संक्षिप्त, विषय-संगत, तर्कसंगत और क्रमबद्ध होनी चाहिए। टिप्पणी करने वाले को अपने विचार संतुलित एवं शिष्ट भाषा में देने चाहिए। इसमें व्यक्तिगत आक्षेप, उपदेश या पूर्वाग्रहों के लिए कोई स्थान नहीं होता। और सबसे महत्वपूर्ण बात टिप्पणी सदैव अन्य पुरुष में लिखी जाती है।

आनुषंगिक टिप्पण

सहायक, आरंभिक या मुख्य टिप्पणी को जब उस विषय से सम्बन्ध रखने वाले अधिकारी के पास भेजता है तो वह अधिकारी टिप्पणी पढ़ने के बाद नीचे मंतव्य लिखता है। इसे आनुषंगिक टिप्पणी कहते हैं और यह क्रिया आनुषंगिक टिप्पण कहलाती है। अगर अधिकारी अपने सहायक की भेजी गई टिप्पणी से पूरी तरह सहमत है तो इस प्रकार की टिप्पणी की आवश्यकता नहीं होती। अधिकारी अधीनस्थ की टिप्पणी के नीचे या तो केवल हस्ताक्षर कर लेता है या 'मैं उपर्युक्त टिप्पणी से सहमत हूँ', यह लिखता है। परन्तु अधिकारी अगर उस भेजी गई टिपण्णी को और सशक्त एवं तर्कसंगत बनाने के लिए अपनी ओर से कुछ जोड़ना चाहता है तो वह अपना मत या अपने विचार आनुषंगिक टिप्पणी के रूप में लिख सकता है। एक बात याद रखने योग्य यह है कि अधिकारी को अधीनस्थ की टिप्पणी को काटने, बदलने या हटाने का अधिकार नहीं है। वह केवल अपनी सहमति, आंशिक सहमति या असहमति व्यक्त कर सकता है। साथ ही साथ आनुषंगिक टिप्पणी प्रायः संक्षिप्त होती है लेकिन असहमति की स्थिति में कई बार इस प्रकार की टिप्पणी बड़ी भी हो सकती है।

अनुस्मारक या स्मरण पत्र

जब पहले से किसी भेजे गए पत्र या ज्ञापन इत्यादि का उत्तर समय पर प्राप्त नहीं होता तो याद दिलाने के लिए 'अनुस्मारक' भेजा जाता है। इसे 'स्मरण पत्र' भी कहते हैं। इसका प्रारूप औपचारिक पत्र की तरह ही होता है मगर इसका आकार उससे छोटा होता है। अनुस्मारक के शुरू में पहले भेजे गए पत्र का हवाला दिया जाता है। और जब एक से अधिक अनुस्मारक भेजे जाते हैं, तो पहले अनुस्मारक को 'अनुस्मारक-1', दूसरे को 'अनुस्मारक-2', तीसरे को 'अनुस्मारक-3' इत्यादि लिखते हैं।

अर्द्धसरकारी पत्र

औपचारिक-पत्र के विपरीत अर्द्ध-सरकारी पत्र में अनौपचारिकता का अंश देखने को मिलता है। इसमें एक मैत्री भाव होता है। अर्ध-सरकारी पत्र तब लिखे जाते हैं जब लिखने वाला अधिकारी संबंधित अधिकारी को व्यक्तिगत स्तर पर जानता है। इस प्रकार का पत्र ऐसी स्थिति में भी लिखा जाता है जब किसी खास मसले पर संबोधित अधिकारी का ध्यान व्यक्तिगत रूप से आकर्षित कराया जाता है या उसका व्यक्तिगत परामर्श लिया जाए। प्रारूप में बाईं ओर शीर्ष पर प्रेषक का नाम होता है। इसके नीचे उसका पदनाम होता है। पत्र के प्रारंभ में संबोधन के रूप में महोदय या प्रिय महोदय का प्रयोग नहीं होता। ऐसे पत्र में आमतौर पर प्रयोग किया जाने वाला संबोधन 'प्रिय श्री...' या 'प्रियवर श्री...., हो सकता है। पत्र के अंत में अधोलेख के रूप में दाहिनी ओर 'भवदीय' के स्थान पर 'आपका' का प्रयोग किया जाता है। अंत में बाईं ओर सम्बोधित अधिकारी का नाम, पदनाम और पूरा पता दिया जाता है।

कार्यसूची (एजेंडा)

किसी भी संस्था की औपचारिक बैठक की कार्यसूची उस बैठक में चर्चा के लिए निर्धारित विषयों की पहले से प्राप्त जानकारी देती है। इससे बैठक के अनुशासित संचालन में सहायता मिलती है। निर्धारित विषयों से सम्बंधित या उससे जुड़ी हुई स्पष्ट टिप्पणियाँ सदस्यों को कार्यसूची के साथ पहले ही भेजी जाती हैं ताकि वे बैठक में पूरी तैयारी से आ सकें। कार्यसूची में क्रमशः उपस्थित लोगों कीराय का पूरा विवरण दिया जाता है।

प्रेस विज्ञप्ति (प्रेस रिलीज़)

कोई संस्थान या व्यक्ति किसी विषय या किसी बैठक में जो निर्णय लेता है, उसे प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से आम जनता तक पहुँचाया जाता है। निर्णय में हुई देरी का कारण भी बताया जाता है और उस निर्णय से होने वाले लाभ के बारे में भी जानकारी दी जाती है।

6. स्ववृत्त लेखन और रोजगार संबंधी आवेदन

प्रश्न 1- स्ववृत्त क्या है ? उसमें क्या विशेषताएँ होनी चाहिए ?

उत्तर- स्ववृत्त लेखन एक विशेष प्रकार का लेखन है जिसमें कोई व्यक्ति स्वयं के बारे में किसी विशेष प्रयोजन को ध्यान में रखकर सिलसिलेवार ढंग से सूचनाओं का संकलन करता है। इसमें संबंधित व्यक्ति अपने व्यक्तित्त्व, ज्ञान और अनुभव के सबल पक्ष को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि नियोक्ता के मन में उम्मीदवार के प्रति अच्छी व सकारात्मक छवि प्रस्तुत हो सके।

प्रश्न 2- स्ववृत्त में किन-किन बातों का समावेश होना चाहिए।

उत्तर- स्ववृत्त में अपना पूरा परिचय, पता, सम्पर्क सूत्र (टेलीफोन, मोबाइल, ई-मेल आदि), शैक्षणिक व व्यावसायिक योग्यताओं के सिलसिलेवार विवरण के साथ-साथ अन्य संबंधित योग्यताओं, उपलब्धियों, कार्येत्तर गतिविधियों व अभिरुचियों का उल्लेख होना चाहिए। एक-दो ऐसे सम्मानित व्यक्तियों के विवरण, जो उम्मीदवार के व्यक्तित्व व उपलब्धियों से परिचित हों, का समावेश भी होना चाहिए।

प्रश्न 3- उम्मीदवार के चयन में स्ववृत्त की क्या भूमिका रहती है?

उत्तर- किसी भी उम्मीदवार का स्ववृत्त उसके नियोक्ता पर गहरा प्रभाव डालता है। उम्मीदवार के द्वारा भेजा गयास्ववृत्त यदि अच्छा है तो उसके चयन की संभावना बढ़ जाती है। एक अच्छा स्ववृत्त दूसरे उम्मीदवारों को सरलता से पीछे छोड़ सकता है। जिस प्रकार लुभावने विज्ञापनों के द्वारा निर्माता, ग्राहकों को आकर्षित करने में सफल होता है, उसी प्रकार एक अच्छी तरह तैयार किए गए स्ववृत्त से उम्मीदवार अपना चयन करवाने में सफल हो सकता है। उम्मीदवार का स्ववृत्त उसके दूत अथवा प्रतिनिधि के रूप में होता है।

प्रश्न 4- स्ववृत्त का आकार कैसा होना चाहिए?

उत्तर- स्ववृत्त एक विशेष प्रकार का लेखन है, जिसमें व्यक्ति विशेष के बारे में किसी विशेष प्रयोजन को ध्यान में रखकर सिलसिलेवार ढंग से सूचनाएँ संकलित की जाती हैं। अतः स्ववृत्त में अभी सूचनाएँ अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत की जानी चाहिए। स्ववृत्त के आकार के विषय में कोई निश्चित नियम नहीं है। इतना अवश्य है कि स्वबृत्त न

तो जरूरत से अधिक लंबा होना चाहिए और न ही अधिक छोटा होना चाहिए। यदि स्ववृत्त छोटा हो तो उसमें अनेक ज़रूरी चीजों के छूटने की संभावना रहती है। इसी प्रकार यदि स्ववृत्त लंबा हो तो उसे पढ़ने वाला अनेक पहलुओं को नज़रअंदाज़ कर सकता है। अत: स्ववृत्त का आकार मध्यम होना चाहिए। स्ववृत्त का आकार पद के अनुसार भी होता है। यदि वह बहुत बड़ा हो तो उसके लिए उम्मीदवारों की संख्या कम होती है। ऐसे में उम्मीदवार अच्छी योग्यता और व्यापक अनुभव वाले होते हैं। ऐसे पदों के लिए स्ववृत्त का आकार नौ-दस पृष्ठों तक हो सकता है। यदि पद छोटा है तो स्ववृत्त अधिक लंबा नहीं होना चाहिए। ऐसे पदों के लिए आवेदन करने वाले उम्मीदवार का स्ववृत्त दो-तीन पृष्ठों से अधिक लंबा नहीं होना चाहिए।

स्ववृत्त (बायोडाटा) लेखन का उदाहरण-

स्ववृत्त

नाम	:	नरेंद्र कुमार
पिता का नाम	:	सुरेश कुमार
माँ का नाम	:	शबनम
जन्म तिथि	:	18 नवंबर, 1982
वर्तमान पता	:	डी 72, पाकेट चार, मयूर विहार (फ़ेज एक) दिल्ली 110092
स्थायी पता	:	वही
टेलीफ़ोन नं.	:	011-22718296
मोबाइल नं.	:	9868234859
ई-मेल	:	85narendra@yahoo.com

शैक्षणिक योग्यताएँ

क्र.सं.	परीक्षा/डिग्री/डिप्लोमा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड/महाविद्यालय/विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा	1997	राजकीय विद्यालय सीबीएसई	अंग्रेजी, हिंदी, विज्ञान, गणित सामाजिक विज्ञान	प्रथम	93%
2.	बारहवीं	1999	वही सीबीएसई	अंग्रेजी, भौतिकी, रसायन विज्ञान जीव विज्ञान, गणित	प्रथम	95%
3.	बी.एस.सी. (आनर्स)	2002	हिंदू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	कंप्यूटर साइंस	प्रथम	84%
4.	एमबीए	2004	आदर्श इन्स्टीट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट		प्रथम	85%

अन्य संबंधित योग्यताएँ

- कंप्यूटर का अच्छा ज्ञान और अभ्यास (एम.एस. ऑफ़िस तथा इंटरनेट)
- फ्रांसीसी भाषा का कार्य योग्य ज्ञान

© NCERT not to be republished

उपलब्धियाँ

- अखिल भारतीय वाद-विवाद प्रतियोगिता (वर्ष 2001) में प्रथम पुरस्कार
- राजीव गाँधी स्मारक निबंध प्रतियोगिता (2002) में प्रथम पुरस्कार
- विद्यालय और महाविद्यालय क्रिकेट टीमों का कप्तान

कार्येतर गतिविधियाँ और अभिरुचियाँ

- उद्योग व्यापार संबंधी पत्रिकाओं और अखबारों का नियमित पाठन
- देश भ्रमण का शौक
- इंटरनेट सर्फ़िंग
- फुटबाल और क्रिकेट में अभिरुचि

वैसे सम्मानित व्यक्तियों का विवरण जो उम्मीदवार के व्यक्तित्व और उपलब्धियों से परिचित हों

1. श्री जे. रामनाथन, निदेशक, आदर्श इंस्टीट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट, लोदी इस्टेट, नयी दिल्ली
2. श्री देवेंद्र गुप्ता, प्राध्यापक (मार्केटिंग), आदर्श इंस्टीट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट लोदी इस्टेट, नयी दिल्ली

तिथि

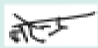

स्थान

हस्ताक्षर

प्रश्न- महाविद्यालय प्रबंधक को प्राध्यापक की नौकरी के लिए आवेदन-पत्र लिखिए।

उत्तर :

83, नौरोजी नगर, दिल्ली

12 दिसंबर, 20xx

प्रबंधक,

गायत्री कॉलेज

नई दिल्ली

विषय-प्राध्यापक की नौकरी हेतु आवेदन-पत्र।

महोदय,

दिनांक 10 दिसंबर, 20... के दैनिक 'हिंदुस्तान' से ज्ञात हुआ है कि आपके यहाँ हिंदी विषय के तीन प्राध्यापकों के स्थान रिक्त हैं। प्राध्यापक के पद की नियुक्ति के लिए आपने जो शैक्षणिक योग्यताएँ माँगी हैं, मैं उसके लिए अपने आपको पूर्ण समर्थ समझता हूँ। अत: मैं आपकी सेवा में यह प्रार्थना-पत्र भेज रहा हूँ। मेरी शैक्षणिक योग्यता तथा अनुभव का विवरण इस प्रकार है -

1. मैंने 2005 ई० में पंजाब विश्वविद्यालय से हिंदी विषय में एम० ए० प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। सन 2006 में मैने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की योग्यता परीक्षा उत्तीर्ण की है।
2. मैंने एक वर्ष तक डी० ए० वी० कॉलेज, चंडीगढ़ में अस्थायी रूप से रिक्त प्राध्यापक के पद पर भी कार्य किया है।
3. स्कूल तथा कॉलेज जीवन में मेरी क्रिकेट तथा बैडमिंटन में विशेष रुचि रही है।
4. मैंने भाषण तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता में भी अनेक बार प्रथम स्थान प्राप्त किया है। आवश्यक प्रमाण-पत्र इस प्रार्थना-पत्र के साथ भेज रहा हूँ। मुझे पूर्ण आशा है कि आप मेरे प्रार्थना-पत्र पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे और मुझे

अपनी ख्याति प्राप्त संस्था में काम करने का अवसर प्रदान करेंगे।

धन्यवाद सहित।

भवदीय

जगमोहन सहगल

संलग्न : प्रमाण-पत्रों की प्रतिलिपियाँ

7. शब्दकोश

शब्दकोश- शब्दकोश शब्दों का वह वृहत् संग्रह है जिसमें वर्णमाला क्रम के अनुसार शब्द की वर्तनी, अर्थ, उत्पत्ति, उच्चारण, व्याकरण कोटि एवं उचित वाक्य-प्रयोग दर्शाया गया हो। शब्दकोश अंग्रेजी शब्द Dictionaryका पर्यायहैजो लैटिन भाषा के Dictionariom शब्द से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ होता है शब्दों का संकलन।

शब्दकोश एक भाषिक, द्विभाषिक या बहुभाषिक हो सकते हैं। जैसे- हिंदी का हिंदी में, अंग्रेजी का अंग्रेजी में या अन्य किसी भाषा का शब्दकोश (एक भाषिक), हिंदी का अंग्रेजी में, अंग्रेजी का हिंदी में, हिंदी का उर्दू में, उर्दू का हिंदी में या इसी तरह अन्य कोई अंतर भाषीय शब्दकोश (द्विभाषिक कोश), हिंदी का अंग्रेजी और उर्दू में, अंग्रेजी का हिंदी और उर्दू में या इसी तरह अन्य कोई बहुभाषिक शब्दकोश।

शब्दकोश के प्रकार- शब्दकोश के मुख्यत: चार प्रकार हैं-

(1) सामान्य शब्दकोश (2) विशिष्ट शब्दकोश (3) व्यक्तिकोश (4)विश्वकोश।

हिंदी शब्दकोश में वर्णक्रम-

(अ) स्वर वर्णक्रम -अं,अँ, अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

(ब) व्यंजन वर्णक्रम - क, क्ष, ख, ग, घ, च, छ, ज, ज्ञ, झ,

ट, ठ, ड, ढ, त, त्र, थ, द, ध, न, प,

फ, ब, भ, म, य, र, ल, व श, ष, स, ह।

(स) कं,कँ, क, का, कि, की, कु, कू, कृ, के, कै, को, कौ, क्र।

प्रश्न- निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश के अनुसार क्रम से लगाइए।

औरत, पलक, कपूर, कंगन, गौशाला, चुनरी, कपट, पृथा, अटारी, औसत।

उत्तर- अटारी, औरत, औसत, कंगन, कपट, कपूर, गौशाला, चुनरी, पलक, पृथा।

प्रश्न- निम्नलिखित शब्दों में से शब्दकोश के अनुसार सबसे पहले कौन-सा शब्द आएगा?

तिलक, तराजू, तंतु, तुरुही, तुरंत, तुषार, तैलीय, तोला, तेरह, तिनका।

उत्तर- तंतु।

1. हम तौ एक एक करि जांनां (पद-1) - कबीर

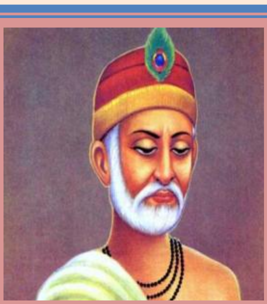

जन्म-1398 ई., काशी (उत्तर प्रदेश)। देहावसान-1518 ई.। गुरु- महान संत रामानंद। शिक्षा- साक्षर नहीं थे। काव्यधारा- निर्गुण (ज्ञानाश्रयी)। रचनाओं का संग्रह- बीजक। भाषा-सधुक्कड़ी या पंचमेल। पद के मुख्य शब्द- तिनहीं, दोजग, जोति, भांडै, बाढ़ी, काष्ट, अगिनि, घटि, व्यापक, सरुपै, जोति, भांडै, गरबांनां।

जीवन परिचय- कबीर का जन्म 1398 ई. में काशी (वाराणसी), उत्तर प्रदेश के लहरतारा नामक स्थान परहुआ। इनके विधिवत् साक्षर होने का कोई प्रमाण नहीं मिलता। इन्होंने किताबी ज्ञान के स्थान पर आँखों देखे सत्य और अनुभव को प्रमुखता दी।इनका देहावसान 1518 ई में बस्ती के निकट मगहर में हुआ।

रचनाएँ- कबीर के पदों का संग्रह 'बीजक' नामक पुस्तक हैजिसमें साखी, सबद एवं रमैनी संकलित हैं।

काव्यगत विशेषताएँ- कबीर भक्तिकाल की निर्गुण धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। इन पर नाथों-सिद्धों और सूफी संतों की बातों का प्रभाव है। वे कर्मकांड और वेद-विचार के विरोधी थे तथा जाति-भेद, वर्ण-भेद और संप्रदाय-भेद के स्थान पर प्रेम, सद्भाव और समानता का समर्थन करते थे। कबीर घुमक्कड़ थे। इसलिए इनकी भाषा में उत्तर भारत की अनेक बोलियों के शब्द पाए जाते हैं। वे अपनी बात को साफ एवं दोटूक शब्दों में प्रभावी ढंग से कह देने के हिमायती थे।

सारांश- पहले पद में कबीर ने परमात्मा को सृष्टि के कण-कण में देखा है। उसे ज्योति रूप में स्वीकार करते हुए उसकी व्याप्ति चराचर संसार में दिखाई है। इसी व्याप्ति को अद्वैत सत्ता के रूप में देखते हुए उन्होंने विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से रचनात्मक अभिव्यक्ति दी है। कबीरदास ने आत्मा और परमात्मा को एक रूप में ही देखा है। संसार के लोग अज्ञानवश इन्हें अलग-अलग मानते हैं। कवि पानी, पवन, प्रकाश आदि के उदाहरण देकर उन्हें एक जैसा बताता है। जिस प्रकार बढ़ई लकड़ी को काट सकता है, किन्तु उसमें समाहित आग को कोई नहीं काट सकता। ठीक उसी प्रकार परमात्मा को विभाजित नहीं किया जा सकता है। ईश्वर सभी के हृदय में सहज रूप में विद्यमान है। माया के कारण मनुष्य समझ नहीं पाता है।

विशेष- कबीर ने परमात्मा को एक और सर्व व्यापक बताया है। उन्होंने माया-मोह व गर्व की व्यर्थता पर प्रकाश डाला है। 'एक-एक' में यमक अलंकार 'खाक' और 'कोहरा' में रूपक अलंकार इसके अतिरिक्त उदाहरण एवं अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है। आम बोलचाल की सधुक्कड़ी भाषा का सहज प्रयोग है। पद में गेयता व संगीतात्मकता विद्यमान है। लय प्रधान तुकांत पंक्तियाँ शांत रस से युक्त हैं।

बहुविकल्पी प्रश्न

हम तौ एक एक करि जांनां ।
दोइ कहैं तिनहीं कौं दोजग जिन नाहिंन पहिचानां।
जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटे अगिनि न काटे कोई।
सब घटि अंतरि तूही व्यापक धरै सरूपै सोई।
एकै पवन एक ही पानीं एकै जोति समांनां।
एकै खाक गढ़े सब भांडै एकै कोहरा सांनां।

माया देखि के जगत लुभांनां कह रे नर गरबांनां।
निरभै भया कछू नहि ब्यापै कहै कबीर दिवांनां।

प्रश्न- सही विकल्प को चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) कबीर के अनुसार किन्हें नर्क में जाना पड़ेगा?

क- जो लोग ईश्वर में आस्था रखते हैं

ख- जो लोग पूजा-पाठ करते हैं

ग- जो आत्मा-और परमात्मा को एक मानते हैं

घ- जो ईश्वर को बाँटते और भ्रम फैलाते हैं

(ii) बढ़ई क्या कर सकता है?

क- लोहा काट सकता है

ख- आग काट सकता है

ग- लकड़ी काट सकता है

घ- इनमें से कोई नहीं

(iii) परमात्मा किस रूप में सभी प्राणियों में विद्यमान है?

क- हवा के रूप में

ख- प्रकाश रूप में

ग- जल के रूप में

घ- इनमें से कोई नहीं

(iv) एकै खाक गढ़े सब भांडै एकै कोहरा सांनां- पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क- रूपक

ख- यमक

ग- अनुप्रास

घ- इनमें से कोई नहीं

(v) कबीर ने स्वयं को दीवाना क्यों कहा है?

क- कबीर ने परमात्मा का साक्षात्कार कर लिया अब उन्हें किसी की परवाह नहीं है।

ख- वे हिन्दू और मुस्लिम से नहीं डरते थे

ग- उन्हें ईश्वर के बारे में कुछ पता नहीं था

घ- इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(i) घ- जो ईश्वर को बाँटते और भ्रम फैलाते हैं (ii) ग- लकड़ी काट सकता है (iii) ख- प्रकाश रूप में (iv) क- रूपक (v) क- कबीर ने परमात्मा का साक्षात्कार कर लिया अब उन्हें किसी की परवाह नहीं है।

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 कबीर की दृष्टि में ईश्वर एक है। इसके समर्थन में उन्होंने क्या तर्क दिए हैं?

उत्तर- कबीर ने एक ही ईश्वर के समर्थन में अनेक तर्क दिए हैं। उनका कहना है कि संसार में सब जगह एक ही पवन व जल है।सभी में एक ही ईश्वरीय ज्योति है। एक ही मिट्टी से सभी बर्तनों का निर्माण होता है।सभी प्राणियों में एक ही परमात्मा का अस्तित्व है।प्रत्येक कण में ईश्वर का वास है।

प्रश्न-2 कबीर ने अपने को दीवाना क्यों कहा है?

उत्तर- यहाँ 'दीवाना' का अर्थ है-पागल। कबीरदास ने परमात्मा का सच्चा रूप पा लिया है। वे उसकी भक्ति में लीन हैं, जबकि संसार बाहरी आडंबरों में उलझकर ईश्वर को खोज रहा है। उन्हें सांसारिक लोगों से कुछ लेना-देना नहीं है और न ही किसी की परवाह है। कबीर की भक्ति आम विचारधारा से बिलकुल अलग है।इसलिए उन्होंने स्वयं को दीवाना कहा है।

प्रश्न-3 ईश्वर के स्वरूप के विषय में कबीर क्या कहते हैं?

उत्तर- कबीर कहते हैं कि ईश्वर एक है और उसका कोई निश्चित रूप या आकार नहीं है। वह सर्वव्यापी है। अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए उन्होंने कई तर्क दिए हैं। जैसे-संसार में एक ही हवा बहती है, एक ही पानी है तथा एक ही प्रकार का प्रकाश सबके अंदर समाया हुआ है। जैसे बढ़ई लकड़ी को काट सकता है परंतु आग को नहीं। वैसे ही शरीर नष्ट हो जाता है किंतु आत्मा सदैव अमर बनी रहती है। वास्तव मेंआत्मा परमात्मा का ही अंश है जो अलग-अलग रूपों में सबमें समाया हुआ है। अत: ईश्वर एक है।

2. मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई (पद-1) - मीरा

जन्म-1498 ई., मेड़ता (राजस्थान)। देहावसान-1546 ई.। गुरु- महान संत रैदास।काव्यधारा- सगुण (कृष्णाश्रयी)।रचनाओं का संग्रह- मीरा पदावली, नरसीजी-रो-माहेरो। भाषा- राजस्थानी मिश्रित ब्रज। पद के मुख्य शब्द- गिरिधर, मुकुट, कानि, ढिग, अंसुवन, बेलि, मथनियाँ, बिलोयी, घृत, काढ़ि, डारि, छोयी, राजी।

जीवन परिचय- मीराबाई का जन्म 1498 ई० में मारवाड़ रियासत के कुड़की नामक गाँव में हुआ। इनका विवाह चित्तौड़ के राणा सांगा के पुत्र कुंवर भोजराज के साथ हुआ। शादी के 7-8 वर्ष बाद ही इनके पति का देहांत हो गया।इनके मन में बचपन से ही कृष्ण-भक्ति की भावना जन्म ले चुकी थी। इसलिए वे कृष्ण को अपना आराध्य और पति मानती रहीं।चित्तौड़ राजघराने में अनेक कष्ट उठाने के बाद ये वापस मेड़ता आ गईं। यहाँ से उन्होंने कृष्ण की लीला भूमि वृंदावन की यात्रा की। जीवन के अंतिम दिनों में वे द्वारिका चली गईं। माना जाता है कि वहीं रणछोड़ दास जी की मंदिर की मूर्ति में वे समाहित हो गईं। इनका देहावसान1546 ई. में माना जाता है।

रचनाएँ- मीरा ने मुख्यत: स्फुट पदों की रचना की। ये पद 'मीराबाई की पदावली' के नाम से संकलित हैं। दूसरी रचना नरसीजी-रो-माहेरो है।

काव्यगत विशेषताएँ- मीरा सगुण धारा की महत्वपूर्ण भक्त कवयित्री थीं। कृष्ण की उपासिका होने के कारण इनकी कविता में सगुण भक्ति मुख्य रूप से मौजूद है, लेकिन निर्गुण भक्ति का प्रभाव भी मिलता है। संत कवि रैदास उनके गुरु माने जाते हैं। इन्होंने लोकलाज और कुल की मर्यादा के नाम पर लगाए गए सामाजिक और वैचारिक बंधनों का हमेशा – विरोध किया। इन्होंने पर्दा प्रथा का पालन नहीं किया तथा मंदिर में सार्वजनिक रूप से नाचने-गाने में कभी हिचक महसूस नहीं की। मीरा सत्संग को ज्ञान प्राप्ति का माध्यम मानती थीं और ज्ञान को मुक्ति का साधन। निंदा से वे कभी विचलित नहीं हुई। वे उस युग के रूढ़िग्रस्त समाज में स्त्री-मुक्ति की आवाज बनकर उभरी।

सारांश- पहले पद में मीरा ने कृष्ण के प्रति अपनी अनन्यता व्यक्त की है तथा व्यर्थ के कार्यों में व्यस्त लोगों के प्रति दुख प्रकट किया है। वे कहती हैं कि मोर मुकुटधारी गिरिधर श्रीकृष्ण ही उसके स्वामी हैं। कृष्ण-भक्ति में लीन होकर उन्होंने अपने कुल की मर्यादा भी भुला दी है। संतों के पास बैठकर उसने लोकलाज खो दिया है। आँसुओं रूपी जल से सींचकर उसने श्रीकृष्ण प्रेम रूपी बेल बोयी है। अब इसमें आनंद रूपी फल लगने लगे हैं। उन्होंने सांसारिक

धर्म-कर्म रूपी दही से श्रीकृष्ण की भक्ति रूपी मूल्यवान घी निकालकर छाछ छोड़ दिया। संसार की धन-वैभव के प्रति लोलुपता देखकर मीरा दुखी होती हैं ईश्वर की भक्ति में लीन भक्त जनों को देखकर खुश होती हैं।वे श्रीकृष्ण से अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करती हैं।

विशेष- कृष्ण भक्त कवियों में मीराबाई का प्रमुख स्थान है।मीरा की कविता में प्रेम की गंभीर अभिव्यंजना है। इनके पदों में एक ओर विरह की वेदना है तो दूसरी ओर मिलन का उल्लास भी। इन्होंने श्रीकृष्ण के माधुर्य रूप की की उपासना की। इनकी कविता में सादगी व सरलता है। श्रीकृष्ण के प्रेम की दीवानी मीरा पर सूफियों के प्रभाव को भी देखा जा सकता है।इनके द्वारा रचित पद लोक व शास्त्रीय संगीत दोनों क्षेत्रों में आज भी लोकप्रिय हैं। इन्होंने मुक्तक गेय पदों की रचना की जिनमें माधुर्य गुण से युक्त अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। इनकी भाषा मूलत: राजस्थानी है तथा कहीं-कहीं ब्रजभाषा का प्रभाव है।

बहुविकल्पी प्रश्न

मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरों न कोई
जा के सिर मोर-मुकुट, मेरो पति सोई
छाँड़ि दयी कुल की कानि, कहा करिहैं कोई?
संतन ढिग बैठि- बैठि, लोक-लाज खोयी
अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोयी
अब त बेलि फैलि गयी, आणद-फल होयी
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलोयी
दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दयी छोयी
भगत देखि राजी हुयी, जगत देखि रोयी
दासि मीरा लाल गिरधर तारो अब मोही ।

प्रश्न- सही विकल्प को चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) मीरा के आराध्य कौन हैं?

क- श्रीहरि

ख- श्रीकृष्ण

ग- श्रीविष्णु

घ- श्रीदेव

(ii) छाँड़ि दयी कुल की कानि, कहा करिहैं कोई?- पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क- यमक

ख- रूपक

ग- अनुप्रास

घ- उपमा

(iii) मीरा ने आँसुओं रूपी जल से सींचकर क्या बोया?

क- विरह

ख- वृक्ष

ग- लता

घ- प्रेम-बेलि

(iv) घृत काढ़ि लियो- में क्या अर्थ निहित है?

क- श्रीकृष्ण की भक्ति रूपी मूल्यवान घी

ख- विरह रूपी घी

ग- सांसारिक ज्ञान रूपी छाछ

घ- अज्ञानता रूपी छाछ

(v) मीरा श्रीकृष्ण से क्या प्रार्थना करती है?

क- श्रीकृष्ण उन पर कृपा करें

ख- उन्हें धन-वैभव दें

ग- सांसारिक लोगों को दूर रखें

घ- उनका उद्धार करें

उत्तर- (i) ख- श्रीकृष्ण (ii) ग- अनुप्रास (iii) घ- प्रेम-बेलि (iv) क- श्रीकृष्ण की भक्ति रूपी मूल्यवान घी (v) घ- उनका उद्धार करें

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 मीरा श्रीकृष्ण की उपासना किस रूप में करती हैं? वह रूप कैसा है?

उत्तर- मीरा श्रीकृष्ण को अपना आराध्य मानती हैं। वे उनकी उपासना पति के रूप में करती हैं। वे उनके अलौकिक रूप पर मोहित हैं। वे पर्वत धारणकिए हुए हैं और उनके सिर पर मोरपंखका मुकुट है। इस रूप को अपनाकर मीरा श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन होकर सारे संसार से विमुख हो गई हैं।

प्रश्न- 2 लोग मीरा को बावरी क्यों कहते हैं?

उत्तर- मीरा श्रीकृष्ण की भक्ति में दीवानी होकर अपनी सुध-बुध खो चुकी हैं। उसे संसार की किसी परंपरा, रीति-रिवाज, मर्यादा अथवा लोक-लाज का ध्यान नहीं है। इसीलिए लोग उसे बावरी कहते हैं। संसारी लोग मीरा की भक्ति की पराकाष्ठा को पागलपन मानते हैं। मीरा राजसी वैभव और सुख को ठुकराकर कृष्ण भजन गाती हुई घूम रही है। साधु-संतों के साथ रहकर उन्होंने सामाजिक नियमों को तोड़ दिया है। इसलिए लोग मीरा को बावरी कहते हैं।

प्रश्न-3 मीरा जगत को देखकर रोती क्यों हैं?

उत्तर- संसार के सभी लोग संसारी मायाजाल में फँसकर ईश्वर (कृष्ण) से दूर हो गए हैं। उनका सारा जीवन व्यर्थ जा रहा है। इस सारहीन जीवन-शैली को देखकर मीरा को बहुत दुःख होता है। दुर्लभ मानव जीवन को पाकर भी लोग ईश्वर की भक्ति में ध्यान नहीं लगाते हैं। इसलिए संसार की दुर्दशा पर मीरा को रोना आता है।

प्रश्न-4 लोक-लाज खोने का अभिप्राय क्या है?

उत्तर- मीरा का विवाह राजपूत राजपरिवार में हुआ था। राजपरिवार में महिलाएँ पर्दे में रहती थीं। उन्हें मंदिरों मेंनाचने, संतों के साथ बैठने, परपुरुष के साथ रहने का अधिकार नहीं था। ऐसे कार्य करने वाली महिलाओं को समाज में उपेक्षा एवं प्रताड़ना झेलनी पड़ती थी। मीरा ने सामाजिक बंधन तोड़कर लोक-लाज खो दी। अत: लोक-लाज खोने का अर्थ है- समाज की मर्यादाओं को तोड़ना।

3. घर की याद - भवानीप्रसाद मिश्र

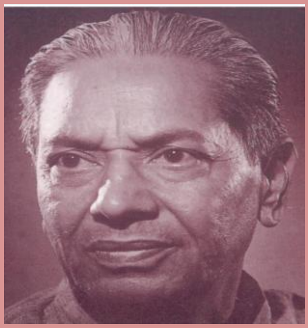

जन्म-1913 ई., होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)। निधन-1985 ई.। शिक्षा- स्नातक। प्रसिद्धि- कविता का गाँधी। मुख्य रचनाएँ- सतपुड़ा के जंगल, गीतफ़रोश, बुनी हुई रस्सी, खुशबू के शिलालेख। भाषा- खड़ीबोली (हिन्दी)। कविता के मुख्य शब्द- परिताप, गढ़ी, पसारा, बिचकें, झंझा, व्यापा, सुहागा, लीक, धीर, अस्त।

जीवन परिचय- भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म 1913 ई. में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के टिगरिया गाँव में हुआ। इन्होंने जबलपुर से उच्च शिक्षा प्राप्त की। इनका हिंदी, अंग्रेजी व संस्कृत भाषाओं पर अधिकार था। इन्होंने शिक्षक के रूप में कार्य किया। फिर वे कल्पना पत्रिका, आकाशवाणी व गाँधी जी की कई संस्थाओं से जुड़े रहे। इनकी कविताओं में सतपुड़ा एवंमालवा आदि क्षेत्रों का प्राकृतिक वैभव मिलता है। इन्हें साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश शासन का शिखर सम्मान, दिल्ली प्रशासन का गालिब पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनकी साहित्य व समाज सेवा के मद्देनजर भारत सरकार ने इन्हें पद्मश्री से अलंकृत किया। इनका देहावसान 1985 ई. में हुआ।

रचनाएँ- इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-
सतपुड़ा के जंगल, सन्नाटा, गीतफ़रोश, चकित है दुख, बुनी हुई रस्सी, खुशबू के शिलालेख, अनाम तुम आते हो, इदं न मम् आदि।

काव्यगत विशेषताएँ- भवानी प्रसाद मिश्र के साहित्य में सहजता सर्वत्र विद्यमान है। साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन में इनकी भागीदारी महत्वपूर्ण है। गाँधीवाद में इनका अखंड विश्वास था। इन्होंने गाँधी वाडमय के हिंदी खंडों का संपादन कर कविता और गाँधी जी के बीच सेतु का काम किया। इनकी कविता हिंदी की सहज लय की कविता है। इस सहजता का संबंध गाँधी के चरखे की लय से भी जुड़ता है, इसलिए इन्हें कविता का गाँधी भी कहा गया है। इनमें बोलचाल के गद्यात्मक से लगते वाक्य-विन्यास को ही कविता में बदल देने की अद्भुत क्षमता है। इसी कारण इनकी कविता सहज और लोक के करीब है।

सारांश- इस कविता में घर के सदस्यों की आत्मीयता का मार्मिक चित्रण किया गया है। कवि को जेल-प्रवास के दौरान विस्थापन की पीड़ा सालती है। कवि के स्मृति-संसार में उसके परिजन एक-एक कर शामिल होते चले जाते हैं। घर की अवधारणा की सार्थक और मार्मिक याद कविता की केंद्रीय संवेदना है। सावन के बादलों को देखकर कवि को घर की याद आती है। वह घर के सभी सदस्यों को याद करता है। उसे अपने भाइयों व बहनों की याद आती है। कवि को अपनी अनपढ़, व्याकुल, परंतु स्नेहमयी माँ की याद आती है।

कवि को अपने पिता की याद आती है जिनमें बुढ़ापे का कोई लक्षण नहीं है। वे अभी भी दौड़ सकते हैं। मौत या शेर का सामना करने से नहीं डरते। उनकी वाणी में जोश है। वे प्रतिदिन गीता का पाठ और व्यायाम करते हैं। जब वे पाँचवें बेटे को न पाकर रो पड़े होंगे तो माँ ने उन्हें समझाया होगा। कवि सावन के महीने से निवेदन करता है कि तुम खूब बरसो, लेकिन मेरे माता-पिता को मेरे लिए दुखी न होने देना। उन्हें मेरा संदेश देना कि मैं जेल में भी खुश हूँ। मुझे खाने-पीने की दिक्कत नहीं है। मैं यहाँ स्वस्थ हूँ। उन्हें मेरी सच्चाई मत बताना कि मैं निराश, दुखी व असमंजस में हूँ। हे सावन! तुम मेरा संदेश उन्हें देकर धैर्य बँधाना। इस प्रकार कवि ने अपने घर की अवधारणा का चित्र प्रस्तुत किया है।

विशेष- सावन महीने की घनघोर बारिश मेंकवि की भावुकता का स्वाभाविक चित्रण हुआ है। पारिवारिक सदस्यों के प्रति कवि का लगाव व्यक्त हुआ है। जेल में बंद होने के कारण उसकी विवशता प्रकट हुई है। माता-पिता और भाई-बहन का सहज स्नेह उसे व्याकुल कर देता है। कविता में संयुक्त परिवार का आदर्श रूप प्रस्तुत है। अनुप्रास, यमक,

उपमा व पुनरुक्ति प्रकाश अलंकारों की छटा दर्शनीय है। वात्सल्य, वीर एवं शांत रस का प्रयोग द्रष्टव्य है। तुकपूर्ण मुक्त छंद पंक्तियों में लय विद्यमान है। दृश्य बिंब है। बोलचाल के शब्दों से युक्त खड़ीबोली का सहज प्रयोग हुआ है।

बहुविकल्पी प्रश्न

और माँ बिन-पढ़ी मेरी,
दु:ख में वह गढ़ी मेरी
माँ कि जिसकी गोद में सिर,
रख लिया तो दुख नहीं फिर,
माँ कि जिसकी स्नेह-धारा,
का यहाँ तक भी पसारा,
उसे लिखना नहीं आता,
जो कि उसका पत्र पाता।

पिता जी जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,
जो अभी भी दौड़ जाएँ
जो अभी भी खिलखिलाएँ,
मौत के आगे न हिचकें,
शेर के आगे न बिचकें,
बोल में बादल गरजता,
काम में झंझा लरजता।

प्रश्न- सही विकल्प को चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) दु:ख में वह गढ़ी मेरी - यह पंक्ति किसके लिए है?

क- पिता के लिए
ख- माँ के लिए
ग- बहन के लिए
घ- भाई के लिए

(ii) माँ कि जिसकी स्नेह-धारा- इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क- अनुप्रास
ख- यमक
ग- रूपक
घ- श्लेष

(iii) कवि ने माँ की किस विवशता का उल्लेख किया है?

क- वह लिख-पढ़ नहीं सकती है
ख- वह देख-सुन नहीं सकती है
ग- उसके पास धन-दौलत नहीं है
घ- वह चल नहीं सकती है

(iv) कवि के अनुसार उसके पिता में कौन-सा लक्षण दिखाई नहीं देता है?

क- दौड़ने का

ख- सुनने का

ग- हँसने का

घ- बुढ़ापे का

(v) काम में झंझा लरजता- इसमें 'झंझा' शब्द का क्या अर्थ है?

क- बिजली

ख- बादल

ग- तूफान

घ- सागर

उत्तर-(i) ख- माँ के लिए (ii) ग- रूपक (iii) क- वह लिख-पढ़ नहीं सकती है (iv) घ- बुढ़ापे का (v) ग- तूफान

पिता जी ने कहा होगा,
हाय, कितना सहा होगा,
कहाँ, मैं रोता कहाँ हूँ
धीर मैं खोता, कहाँ हूँ
हे सजील हरे सावन,
हे कि मेरे पुण्य पावन,
तुम बरस लो वे न बरसें
पाँचवें को वे न तरसें,
मैं मजे में हूँ सही है,
घर नहीं हूँ बस यही है,
किंतु यह बस बड़ा बस है,
इसी बस से सब विरस है।

प्रश्न- सही विकल्प को चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) पिता जी ने कहा होगा- इस पंक्ति में किससे कहने का संकेत है?

क- माँ से

ख- भाई से

ग- बहन से

घ- दोस्त से

(ii) कवि ने अपना संदेश देने के लिए किस महीने को संबोधित किया है?

क- आषाढ़

ख- सावन

ग- भांदो

घ- फागुन

(iii) पाँचवें को वे न तरसें- यहाँ पाँचवें किसके लिए आया है?

क- पिता के लिए

ख- भाई के लिए

ग- माँ के लिए

घ- कवि के लिए

(iv) किंतु यह बस बड़ा बस है- इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क- अनुप्रास
ख- यमक
ग- रूपक
घ- श्लेष

(v) घर की याद' कविता के रचयिता कौन हैं?

क- कृष्णा सोबती
ख- भवानीप्रसाद मिश्र
ग- मीराबाई
घ- दुष्यंत कुमार

उत्तर-(i) क- माँ से (ii) ख- सावन (iii) घ- कवि के लिए (iv) ख- यमक (v) ख- भवानीप्रसाद मिश्र

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न- 1 पानी के रात भर गिरने और प्राण-मन के घिरने में परस्पर क्या संबंध है?

उत्तर- 'घर की याद' का आरंभ इसी पंक्ति से होता है कि 'आज पानी गिर रहा है। इसी बात को कवि कई बार अलग-अलग ढंग से कहता है-'बहुत पानी गिर रहा है', 'रात भर गिरता रहा है। भाव यह है कि सावन की झड़ी के साथ-साथ 'घर की यादों' से कवि का मन भर आया है। प्राणों से प्यारे अपने घर को, एक-एक परिजन को, माता-पिता को याद करके उसकी आँखों से भी पानी गिर रहा है। वह कहता है कि 'घर नज़र में तिर रहा है। बादलों से वर्षा हो रही है और यादों से घिरे मन का बोझ कवि की आँखों से बरस रहा है।

प्रश्न-2 मायके आई बहन के लिए कवि ने घर को 'परिताप का घर' क्यों कहा है?

उत्तर- कवि ने बहन के लिए घर को परिताप का घर कहा है। मायके में बहनका आना उत्सव बन जाता है। बहन बड़ी खुशी से अपने परिवार वालों से मिलने के लिए आती है। वह भाई-बहनों के साथ बिताए हुए क्षणों को याद करती है। लेकिन कवि के अनुसार जबघर पहुँचकर बहन को पता चलता है कि उसका एक भाई जेल में है तो वह बहुत दुखी होती है। इस कारण कवि ने घर को परिताप का घर कहा है।

प्रश्न-3 कविता में पिता के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं को उकेरा गया है?

उत्तर- कवि अपने पिता के विषय में बताता है कि उनमें वृद्धावस्था का कोई लक्षण नहीं दिखाई देता है।वे आज भी बहुत फुर्तीले हैं और दौड़ लगा सकते हैं।खिलखिलाकर हँसते हैं।वे इतने निडर हैं कि मौत के सामने भीनहीं हिचकिचाते।उनमें इतना साहस है कि वे शेर के सामने भी भयभीत नहीं होंगे। उनकी आवाज़ मानो बादलों की गर्जना है।हर काम को तूफ़ान की रफ्तार से करने की उनमें अद्भुत क्षमता है।वे नियमित गीता का पाठ और व्यायाम करते हैं। वे बहुत ही भावुक एवं संवेदनशील हैं उनमें राष्ट्र-प्रेम भी है।

प्रश्न-4 निम्नलिखित पंक्तियों में 'बस' शब्द के प्रयोग की विशेषता बताइए-

मैं मजे में हूँ सही है
घर नहीं हूँ बस यही है
किंतु यह बस बड़ा बस है।
इसी बस से सब विरस हैं।

उत्तर- कवि ने बस शब्द का लाक्षणिक प्रयोग किया है। पहली बार के प्रयोग का अर्थ है कि वह केवल घर पर ही नहीं है। दूसरे प्रयोग का अर्थ है कि वह घर से दूर रहने के लिए विवश है। तीसरा प्रयोग उसकी लाचारी व विवशता को दर्शाता है। चौथे बस से कवि के मन की व्यथा प्रकट होती है जिसके कारण उसके सारे सुख छिन गए हैं।

प्रश्न-5 कवि अपने परिजनों से क्या छिपाना चाहता है?

उत्तर- कवि स्वाधीनता आंदोलन का वह सेनानी है जो जेल की यातना झेलकर भी उसकी जानकारी अपने परिवार के लोगों को नहीं देना चाहता हैक्योंकि इससे वे दुखी होंगे। कवि कहता है कि हे सावन ! उन्हें मत बताना कि मैं उदास

रहता हूँ। मैं ठीक से सो भी नहीं पाता और मनुष्य से भागता हूँ। उन्हें यह सब मत बताना कि जेल की यातनाओं से मैं मौन हो गया हूँ और कुछ नहीं बोलता। मैं स्वयं यह नहीं समझ पा रहा कि मैं कौन हूँ? बहुत बढ़ा-चढ़ा कर भी मत कहना। कहीं ऐसा न हो कि मेरे माता-पिता को शक हो जाए कि मैं दुखी हूँ और वे मेरे लिए रोने लगें। हे सावन! तुम बरस लो जितना बरसना है, पर मेरे माता-पिता को रोना न पड़े। अपने पाँचवें पुत्र के लिए वे न तरसे अर्थात् वे हर हाल में खुश रहें। कवि उन्हें ऐसा कोई संदेश नहीं देना चाहता जो उनके लिए दुख का कारण बने।

4. चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती - त्रिलोचन

जन्म-1917 ई., सुल्तानपुर (उत्तर प्रदेश)। निधन- 2007 ई.। मूलनाम- वासुदेव सिंह।शिक्षा- स्नातक। मुख्य रचनाएँ- धरती, गुलाब और बुलबुल, दिगंत, उस जनपद का कवि हूँ, अरघान तुम्हें सौंपता हूँ, मेरा घर। भाषा- खड़ीबोली (हिंदी)। कविता के मुख्य शब्द- चीन्हती, स्वर, चौपायों, हारे-गाढे, गौने, ब्याह, बालम।

जीवन परिचय- त्रिलोचन का जन्म उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले के चिराना पट्टी में सन् 1917 में हुआ। इनका मूल नाम वासुदेव सिंह है। ये हिंदी साहित्य में प्रगतिशील काव्यधारा के प्रमुख कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों में साहित्य रचना की है। इनकी साहित्यिक उपलब्धियों के आधार पर इन्हें साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया। उत्तर प्रदेश सरकार ने इन्हें महात्मा गाँधी पुरस्कार से सम्मानित किया। शलाका सम्मान भी इनकी महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इनका निधन 9 दिसंबर, 2007 में हुआ।

रचनाएँ-इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

काव्य- धरती, गुलाब और बुलबुल, दिगंत, ताप के ताये हुए दिन, शब्द, उस जनपद का कवि हूँ, अरघानतुम्हें सौंपता हूँ, चैती, अमोला, मेरा घर, जीने की कला।

गद्य- देशकाल, रोजनामचा, काव्य और अर्थबोध, मुक्तिबोध की कविताएँ। इसके अलावा, हिंदी के अनेक कोशों के निर्माण में इनका महत्वपूर्ण योगदान है।

काव्यगत विशेषताएँ- त्रिलोचन बहुभाषाविज्ञ शास्त्री हैं। ये रागात्मक संयम व लयात्मक अनुशासन वाले कवि हैं। इसी कारण इनके नाम के साथी 'शास्त्री' जुड़ गया है, लेकिन यह शास्त्रीयता इनकी कविता के लिए बोझ नहीं बनती। ये जीवन में निहित मंद लय के कवि हैं। प्रबल आवेग और त्वरा की अपेक्षा इनके यहाँ काफी कुछ स्थिर है। इनकी भाषा छायावादी रूमानियत से मुक्त है तथा इनका काव्यठाठ ठेठ गाँव की जमीन से जुड़ा हुआ है। ये हिंदी में सॉनेट (अंग्रेज़ी छद) को स्थापित करने वाले कवि के रूप में भी जाने जाते हैं। कवि बोलचाल की भाषा को चुटीला और नाटकीय बनाकर कविताओं को नया आयाम देता है। कविता की प्रस्तुति का अंदाज कुछ ऐसा है कि वस्तु रूप की प्रस्तुति का भेद नहीं रहता।

सारांश- 'चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती' कविता धरती संग्रह में संकलित है। यह पलायन के लोक अनुभवों को मार्मिकता से अभिव्यक्त करती है। इसमें 'अक्षरों' के लिए 'काले-काले' विशेषण का प्रयोग किया गया है जो एक ओर शिक्षा-व्यवस्था के अंतर्विरोधों को उजागर करता है तो दूसरी ओर उस दारुण यथार्थ से भी हमारा परिचय कराता है जहाँ आर्थिक मजबूरियों के चलते घर टूटते हैं। काव्य नायिका चंपा अनजाने ही उस शोषक व्यवस्था के प्रतिपक्ष में खड़ी हो जाती है जहाँ भविष्य को लेकर उसके मन में अनजान खतरा है।

काव्य की नायिका चंपा अक्षरों को नहीं पहचानती। जब कवि पढ़ता है तो वह चुपचाप पास खड़ी होकर आश्चर्य से सुनती है। वह सुंदर ग्वाले की एक लड़की है तथा गाएँ-भैसें चराने का काम करती है। वह अच्छी व चंचल है। कभी वह कवि की कलम चुरा लेती है तो कभी कागज। इससे कवि परेशान हो जाता है। चंपा कहती है कि दिन भर कागज लिखते रहते हो। क्या यह काम अच्छा है? कवि हँस देता है। एक दिन कवि ने चंपा से पढ़ने-लिखने के लिए कहा। उन्होंने इसे गाँधी बाबा की इच्छा बताया। तब चंपा ने कहा कि वह नहीं पढ़ेगी।गाँधी जी बहुत अच्छे हैं, वे बच्चों को पढ़ाई की बात कैसे कहेंगे? कवि ने कहा कि पढ़ना अच्छा है। शादी के बाद तुम ससुराल जाओगी। तुम्हारा पति कलकत्ता काम के लिए जाएगा। अगर तुम नहीं पढ़ी तो उसके पत्र कैसे पढ़ोगी या अपना संदेशा उसे कैसे दोगी? इस पर चंपा ने कहा कि तुम पढ़े-लिखे झूठे हो। वह शादी नहीं करेगी। यदि शादी करेगी तो अपने पति को कभी कलकत्ता नहीं जाने देगी। यदि उसका पति कलकत्ता जाने की जिद करेगा तो वह कलकत्ता पर भारी विपत्ति आने की कामना करेगी।

विशेष- इस कविता में कवि ने पलायन के लोक अनुभवों को बड़ी ही मार्मिकता से अभिव्यक्त किया है। गाँव में साक्षरता के प्रति उदासीनता को चंपा के माध्यम से मुखरित किया गया है।ग्रामीण जीवन का चित्रण है।देशज शब्दावली युक्त सहज व सरल खड़ी बोली है। अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाशएवं प्रश्नालंकारों का स्वाभविक प्रयोग हुआ है। लाक्षणिक एवं व्यंग्य प्रधान संवाद शैली का मनोरम प्रयोग किया गया है। लय से परिपूर्ण अंग्रेजी के सॉनेटका प्रयोग दर्शनीय है।

बहुविकल्पी प्रश्न

उस दिन चंपा आई, मैंने कहा कि
चंपा, तुम भी पढ़ लो
हारे गाढ़ काम सरेगा
गाँधी बाबा की इच्छा है
सब जन पढ़ना-लिखना सीखें
चंपा ने यह कहा कि
मैं तो नहीं पढ़ूँगी
तुम तो कहते थे गाँधी बाबा अच्छे हैं
वे पढ़ने लिखने की कैसे बात कहेंगे
मैं तो नहीं पढ़ूँगी

प्रश्न- सही विकल्प को चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) कवि ने चंपा से क्या कहा?

क- घूमना-टहलना अच्छा है
ख- पशुओं को चराना चाहिए
ग- पढ़ना-लिखना अच्छा होता है
घ- शहर में रहना चाहिए

(ii) कवि के अनुसार महात्मा गाँधी जी की क्या इच्छा थी?

क- सब लोग आराम से रहें
ख- सब जन पढ़ना-लिखना सीखें
ग- सब लोग खेतों में काम करें
घ- सभी घर बनाना सीखें

(iii) चंपा ने कवि को क्या जवाब दिया?

क- वह पढ़ाई नहीं करेगी

ख- वह पशुओं को लेकर नहीं जाएगी

ग- उसे लिखना अच्छा लगता है

घ- वह कलकत्ता जाएगी

(iv) गाँधी बाबा अच्छे हैं- यह किसने कहा?

क- चंपा ने

ख- ग्वाला ने

ग- चंपा के पति ने

घ- कवि ने

(v) चंपा के अनुसार पढ़ने-लिखने के लिए कौन नहीं कह सकता?

क- कवि

ख- ग्वाला

ग- गाँधी बाबा

घ- उसका पति

उत्तर- (i) ग- पढ़ना-लिखना अच्छा होता है (ii) ख- सब जन पढ़ना-लिखना सीखें (iii) क- वह पढ़ाई नहीं करेगी (iv) घ- कवि ने (v) ग- गाँधी बाबा

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 चंपा ने ऐसा क्यों कहा कि कलकत्ता पर बजर गिरे?

उत्तर- चंपा नहीं चाहती कि उसका पति उसे छोड़कर कहीं दूर महानगर में पैसा कमाने के लिए जाए। कवि ने उसे बताया कि कलकत्ता बहुत दूर है वहाँ लोग धन कमाने जाते हैं। चंपा पति से बिछड़ना नहीं चाहती है इसलिए उसने कलकत्ते का अस्तित्व ही समाप्त कर देना चाहती है ताकि उसका पति उसके पास रहेगा। इसलिए वह कहती है कि कलकत्ते पर बजर गिरे।

प्रश्न-2 चंपा को इस पर क्यों विश्वास नहीं होता कि गाँधी बाबा ने पढ़ने-लिखने की बात कही होगी?

उत्तर- चंपा के मन में यह बात बैठी हुई है कि शिक्षित व्यक्ति रोजगार की तलाश में अपना घर-बार छोड़कर शहरों में चला जाता है। इस कारण से परिवार टूटते हैं। गाँधी जी का ग्रामीण जीवन कोउन्नत बनाना चाहते हैं। वे लोगों की भलाई की बात करते हैं। अत: वह गाँधी जी द्वारा पढ़ने-लिखने की बात कहने पर विश्वास नहीं करती। इससे लोगों का भला नहीं होता। यह गाँधी जी के विश्वास के विपरीत है।

प्रश्न-3 कवि ने चंपा की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर- चंपा एक छोटी बालिका है जो काले-काले अक्षरों को नहीं पहचानती। कवि के अनुसार वह चंचल और नटखट है। दिन भर पशुओं को चराने का काम करती है।वह बहुत शरारत करती है। उसे पढ़ना पसंद नहीं है। वह नहीं चाहती कि उसका पति रोजगार की तलाश में उससे दूर जाए।वह नगरीय संस्कृति को नष्ट कर देना चाहती है इसलिए कहती है कि कलकत्ते पर बजर गिरे।

प्रश्न-4 आपके विचार में चंपा ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मैं तो नहींपढ़ूँगी?

उत्तर- चंपा का विश्वास है कि पढ़-लिखकर व्यक्ति अपने परिवार को छोड़कर परदेश जाकर रहने लगता है। इससे घर बिखर जाते हैं। शिक्षित होकर लोग चालाक, घमंडी व कपटी हो जाते हैं। वे परिवार को भूल जाते हैं। महानगरों में जाने वाले लोगों का परिवार बिछोह की पीड़ा सहते हैं। इसलिए उसने कहा होगा कि वह नहीं पढ़ेगी।

प्रश्न- 5 इस कविता में पूर्वी प्रदेशों की स्त्रियों की किस विडंबनात्मक स्थिति का वर्णन हुआ है?

उत्तर- इस कविता में पूर्वी प्रदेशों की स्त्रियों की व्यथा को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। रोजगार की तलाश में

युवक कलकत्ता जैसे बड़े शहरों में जाते हैं और वहीं के होकर रह जाते हैं। पीछे उनकी स्त्रियाँ वपरिवार के लोग अकेले रह जाते हैं। स्त्रियाँ अनपढ़ होती हैं, अत: वे पति की चिट्ठी भी नहीं पढ़ पातीं औरन अपना संदेश भेज पाती हैं। उनका जीवन पिछड़ा रहता है तथा वे पति का वियोग सहन करने को विवशरहती हैं।

प्रश्न-6 चंपा को क्या अचरज होता है तथा क्यों?

उत्तर- चंपा पढ़ना-लिखना नहीं जानती है। जब कवि पढ़ना शुरू करता है तो चंपा को हैरानी होती है कि इन अक्षरों से स्वर कैसे निकलते हैं।वह अक्षर व ध्वनि के संबंध को समझ नहीं पाती। उसे नहीं पता कि लिखे हुए अक्षर ध्वनि को व्यक्त करने का ही एक रूप है। निरक्षर होने के कारण वह यह बात समझ नहीं पाती।

5. ग़ज़ल- दुष्यंत कुमार

जन्म- 1933 ई., बिजनौर (उत्तर प्रदेश)। निधन- 1975 ई.। प्रसिद्धि- ग़ज़ल विधा को हिन्दी में लाने का श्रेय। मुख्य रचनाएँ- सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे, साये में धूप, जलते हुए वन का वसंत, एक कंठ विषपायी। भाषा- हिंदी। ग़ज़ल के मुख्य शब्द- चिरागा, मयस्सर, दरख्तों, मुनासिब, हसीन, निजाम।

जीवन परिचय- दुष्यंत कुमार का जन्म उत्तर प्रदेश के राजापुर नवादा गाँव में 1933 ई में हुआ। इनके बचपन का नाम दुष्यंत नारायण था। प्रयाग विश्वविद्यालय से इन्होंने एम.ए. किया तथा यहीं से इनका साहित्यिक जीवन आरंभ हुआ। वे वहाँ की साहित्यिक संस्था परिमल की गोष्ठियों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे और 'नए पत्ते' जैसे महत्वपूर्ण पत्र के साथ भी जुड़े रहे। उन्होंने आकाशवाणी और मध्यप्रदेश के राजभाषा विभाग में काम किया। अल्पायु में इनका निधन 1975 ई. में हो गया।

रचनाएँ- इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

काव्य- सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे, साये में धूप, जलते हुए वन का वसंत।

गीति-नाट्य- एक कंठ विषपायी।

उपन्यास- छोटे-छोटे सवाल, आँगन में एक वृक्ष, दोहरी जिंदगी।

काव्यगत विशेषताएँ- दुष्यंत कुमार की साहित्यिक उपलब्धियाँ अद्भुत हैं। इन्होंने हिंदी में ग़ज़ल विधा को प्रतिष्ठित किया। इनके कई शेर साहित्यिक एवं राजनीतिक जमावड़ों में लोकोक्तियों की तरह दुहराए जाते हैं। साहित्यिक गुणवत्ता से समझौता न करते हुए भी इन्होंने लोकप्रियता के नए प्रतिमान कायम किए।उन्होंने राजनीति और समाज में जो कुछ चल रहा है, उसे खारिज करने और बेहतर विकल्प की तलाश को हमेशा प्रमुखता दी है।इनकी गजलों में तत्सम शब्दों के साथ-साथ उर्दू के शब्दों का काफी प्रयोग है। मुहावरों के प्रयोग से पंक्तियों की मारक क्षमता बढ़ गई है। व्यंग्यपूर्ण शब्दों में भी अर्थ की गहराई छिपी है।

ग़ज़ल- ग़ज़लमें शीर्षक देने का चलन नहीं है। ग़ज़ल एक ऐसी विधा है जिसमें सभी शेर स्वयं में पूर्ण तथा स्वतंत्र होते हैं। उन्हें किसी क्रम-व्यवस्था के तहत पढ़े जाने की दरकार नहीं रहती। एक ग़ज़ल में कम से कम पाँच और अधिक से अधिक बाइस-तेइस शेर होते हैं। इस ग़ज़ल में शेरों को आपस में गूँथकर एक रचना की शक्ल दी गई है-एक तो रूप के स्तर पर तुक का निर्वाह और दूसरी, अंतर्वस्तु के स्तर पर मिजाज का निर्वाह। इस ग़ज़ल में पहले शेर की दोनों पंक्तियों का तुक मिलता है और उसके बाद सभी शेरों की दूसरी पंक्ति में उस तुक का निर्वाह होता है।

सारांश- कवि राजनीतिज्ञों के झूठे वायदों पर व्यंग्य करता है कि जब चुनाव का दौर आता है तो नेतागण हर घर को सुविधाओं से परिपूर्ण कर देने का वायदा करते हैं, परंतु स्थिति यह है कि पूरे शहर के लिए एक भी सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाती है। कवि का मानना है कि पेड़ों के साये में भी धूप लगती है अर्थात् आश्रयदाताओं (नेता व अधिकारी वर्ग) के यहाँ भी कष्ट मिलते हैं। इसलिए वह इस व्यवस्था को हमेशा के लिए छोड़कर जाना ठीक समझता है। वह उन लोगों के जिंदगी के सफर को आसान बताता है जो परिस्थिति के अनुसार स्वयं को बदल लेते हैं।

कवि का कहना है कि मनुष्य को खुदा न मिले तो कोई बात नहीं, उसे अपना सपना नहीं छोड़ना चाहिए। थोड़े समय के लिए ही सहीहसीन सपना देखने का सुख तो मिलता है। सत्ता में बैठे लोगों को विश्वास है कि आम आदमी के जीवन में बिना उनके बदलाव नहीं आ सकता है। लेकिन कवि उनमें अपनी आवाज के असर को देखने के लिए बेचैन है। शासक शायर की आवाज को दबाने की कोशिश करता है, क्योंकि वह उसकी सत्ता को चुनौती देता है। कवि के जीने-मरने का उद्देश्य देश व जनसामान्य की खुशियाँ हैं।

विशेष- कवि ने नेताओं के झूठे आश्वासन व जनसामान्य के शोषण का यथार्थ वर्णन किया है। शासन के विरुद्ध सामाजिक चेतना एवं मानवीय मूल्यों की स्थापना की प्रभावी अभिव्यक्ति हुई है। उर्दू शब्दों की अधिकता से भाव में गहनता आई है। लक्षणा शब्द-शक्ति का सफल निर्वाह हुआ है। अनुप्रास, अन्योक्ति, विरोधाभास अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग है। प्रतीकात्मक एवं बिम्बात्मक शब्दों के प्रयोग से अर्थवत्ता आ गई है। उर्दू शब्दावली युक्त खड़ीबोली का प्रभावशाली प्रयोग किया गया है। ग़ज़ल शैली में भावों की सहज अभिव्यक्ति हुई है।

बहुविकल्पी प्रश्न

वे मुतमइन हैं कि पत्थर पिघल नहीं सकता,
मैं बेकरार हूँ आवाज में असर के लिए।
तेरा निजाम है सिल दे जुबान शायर की,
ये एहतियात जरूरी हैं इस बहर के लिए।
जिएँ तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले,
मरें तो गैर की गलियों में गुलमोहर के लिए।

प्रश्न- सही विकल्प को चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) कवि किसलिए बेचैन है?

क- सत्ता पाने के लिए
ख- आराम से रहने के लिए
ग- सुख भोगने के लिए
घ- जनता को सचेत करने के लिए

(ii) उच्च पदों पर आसीन वर्ग के पास कौन-सी ताकत है?

क- सत्ता की
ख- बाहूबल की
ग- धनबल की
घ- इनमें से कोई नहीं

(iii) उच्च पदों पर आसीन वर्ग को किस तरह की सावधानी की जरुरत है?

क- कवियों की जुबान बंद करने की

ख- रैलियाँ निकालने की

ग- आम जन को परेशान करने की

घ- इनमें से कोई नहीं

(iv) जिएँ तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले- पंक्ति में 'बगीचे' का प्रतीकार्थ क्या है?

क- धन-दौलत

ख- मन-सम्मान

ग- राग-रंग

घ- देश-समाज

(v) दुश्मन की कैद में रहकर भी कवि किसके लिए मरना चाहता है?

क- नेताओं के लिए

ख- जनता की भलाई के लिए

ग- अधिकारियों के लिए

घ- पूँजीपतियों के लिए

उत्तर- (i) घ- जनता को सचेत करने के लिए (ii) क- सत्ता की (iii) क- कवियों की जुबान बंद करने की (iv) घ- देश-समाज (v) ख- जनता की भलाई के लिए

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 गज़ल केआखिरी शेर में गुलमोहर की चर्चा हुई है। क्या उसका आशय एक खास तरह केफूलदारवृक्ष से है या उसमें कोई सांकेतिक अर्थ निहित है?

उत्तर- गज़ल के अंतिम शेर में गुलमोहर का शाब्दिक अर्थ तो एक खास फूलदार वृक्ष से ही है, पर सांकेतिक अर्थ बड़ा ही मार्मिक है। इस शेर में कवि दुष्यंत कुमार यह बताना चाहते हैं कि देश-समाज के लोगों की भलाई करने में ही जीवन की सार्थकता है। यदि इसके लिए दुश्मन की कैद में रहकर मरना भी पड़े तो उसे ख़ुशी ही होगी।

प्रश्न-2 पहले शेर में 'चिराग' शब्द एक बार बहुवचन में आया है और दूसरी बार एकवचन में। अर्थ एवं काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से इसका क्या महत्व है?

उत्तर- पहले शेर में पहले 'चिराग' शब्द का बहुवचन 'चिरागाँ' का प्रयोग हुआ है। इसका प्रतीकात्मक अर्थ है, ढेर सारी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध करवाना।दूसरी बार यह एकवचन में प्रयुक्त हुआ है। इसमें इसका अर्थ है-सीमित सुविधाएँ मिलना। दोनों का अपना महत्व है। बहुवचन के रूप में यह नेताओं के झूठे वादों की ओर संकेत करता है, जबकि दूसरा रूप यथार्थ को दर्शाता है। कवि ने एक ही शब्द का प्रतीकात्मक व लाक्षणिक प्रयोग करके अपनी अद्भुत रचनाशीलता का परिचय दिया है।

प्रश्न-3 गजल के तीसरे शेर में दुष्यंत का इशारा किस तरह के लोगों की ओर है?

उत्तर- न हो कमीज़ तो पावों से पेट ढँक लेंगे,

ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफ़र के लिए।

इस शेर में उन लोगों की ओर इशारा किया गया है जो जन साधारण का शोषण करते हैं और उन्हें दु:ख पहुँचाते हैं। आम जनता तन ढकने के लिए मेहनत मजदूरी करके अपना गुजर-बसर करने का प्रयास करती है। लेकिन सत्ता में ऊँचे पदों पर बैठे लोगउनके अभावग्रस्त जीवन का मजाक बनाकर अपने स्वार्थ की पूर्ति करते हैं। अत: ऐसे लोग आम लोगों के जीवन रूपी सफ़र को पूरा कराने में बिलकुल भी ठीक नहीं हैं।

प्रश्न-4 आशय स्पष्ट करें-

तेरा निजाम है सिल दे ज़ुबान शायर की,
ये एहतियात जरूरी है इस बहर के लिए।

उत्तर- इसमें कवि ने रचनाकारों और शासकों के संबंध के बारे में बताया है। शायर सत्ता के खिलाफ लोगों को जागरूक करता है। इससे सत्ता में बैठे शासकों को क्रांति का खतरा रहता है। वे स्वयं को बचाने के लिए शायरों की जबान अर्थात् कविताओं पर प्रतिबंध लगा सकते हैं। जैसे छंद के लिए बंधन की सावधानी जरूरी होती है, उसी तरह शासकों को भी अपनी सत्ता कायम रखने के लिए रचनाकारों की आवाज दबाना जरूरी है।

7. हे भूख मत मचल, हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर - अक्क महादेवी

जन्म-12वीं सदी., शिवमोगा (कर्नाटक)। आराध्य- चन्नमल्लिकार्जुन (भगवान शिव)। रचनाएँ- वचन सौरभ (स्पीकिंग ऑफ़ शिवा)। भाषा- मूलत: कन्नड़। अक्क का अर्थ- बड़ी बहन। वचन के मुख्य शब्द- मचल, सता, मद, पाश, चराचर, चूक, जूही के फूल, अपना घर। मुहावरे- भीख माँगना, झोली फैलाना, हाथ बढ़ाना, झपट लेना।

जीवन परिचय- अक्क महादेवी शैव आंदोलन से जुड़ी एक महत्वपूर्ण कवयित्री थीं। इनका जन्म कर्नाटक के उडुतरी गाँव जिला-शिवमोगा में 12वीं सदी में हुआ। इनके आराध्य चन्नमल्लिकार्जुन देव अर्थात् भगवान शिव थे। इनके समकालीन कन्नड़ संत कवि बसवन्ना और अल्लामा प्रभु थे। कन्नड़ भाषा में अक्क शब्द का अर्थ बहिन होता है। अक्क महादेवी अपूर्व सुंदरी थीं। वहाँ का राजा इनके अद्भुत अलौकिक सौंदर्य को देखकर मुग्ध हो गया तथा इनसे विवाह हेतु इनके परिवार पर दबाव डाला।अक्क महादेवी ने विवाह के लिए राजा के सामने तीन शर्तें रखीं। विवाह के बाद राजा ने उन शर्तों का पालन नहीं किया, इसलिए इन्होंने उसी क्षण राज-परिवार को छोड़ दिया।

अक्क ने इसके बाद जो किया, वह भारतीय नारी के इतिहास की एक विलक्षण घटना बन गई। इससे उनके विद्रोही चरित्र का पता चलता है। अक्क ने सिर्फ राजमहल नहीं छोड़ा, वहाँ से निकलते समय पुरुष वर्चस्व के विरुद्ध अपने आक्रोश की अभिव्यक्ति के रूप में अपने वस्त्रों को भी उतार फेंका।वस्त्रों का उतार फेंकना केवल वस्त्रों का त्याग नहीं, बल्कि एकांगी मर्यादाओं और केवल स्त्रियों के लिए निर्मित नियमों का तीखा विरोध था। स्त्री केवल शरीर नहीं है, इसके गहरे बोध के साथ महावीर आदि महापुरुषों के समक्ष खड़े होने का प्रयास था। अक्क के कारण बड़ी संख्या में स्त्रियाँ शैव आदोलन से जुड़ीं जिनमें अधिकतर निचले तबकों से थीं और अपने संघर्ष व यातना को कविता के रूप में अभिव्यक्ति दी। इस प्रकार अक्कमहादेवी की कविता पूरे भारतीय साहित्य में क्रांतिकारी चेतना का पहला सर्जनात्मक दस्तावेज हैं और संपूर्ण स्त्रीवादी आंदोलन के लिए एक अजस्व प्रेरणास्रोत भी।

रचनाएँ- इनकी रचना हिंदी में 'वचन-सौरभ' के नाम से तथा अंग्रेजी में स्पीकिंग ऑफ शिवा (सं.- ए. के. रामानुजन) के नाम से है।

सारांश- अक्क महादेवी द्वारा रचित दो वचन पाठ्यक्रम में लिए गए हैं। दोनों वचनों का अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद केदारनाथ सिंह ने किया है। प्रथम वचन में इंद्रियों पर नियंत्रण का संदेश दिया गया है। यह उपदेशात्मक न होकर प्रेम-भरा मनुहार है। वे चाहती हैं कि मनुष्य को अपनी भूख, प्यास, नींद आदि वृत्तियों व क्रोध, मोह, लोभ, अहम, ईर्ष्या आदि भावों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। वह लोगों को समझाती हैं कि इंद्रियों को वश में करने से ही शिव की प्राप्ति संभव है।

दूसरे वचन में एक भक्त का ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण है।चन्नमल्लिकार्जुन की अनन्य भक्त अक्क महादेवी उनकी अनुकंपा के लिए हर भौतिक वस्तु से अपनी झोली खाली रखना चाहती हैं। वे ऐसी निस्पृह स्थिति की कामना

करती हैं जिससे उनका स्व या अहंकार पूरी तरह से नष्ट हो जाए। वह ईश्वर को जूही के फूल के समान बताती हैं और कामना करती हैं कि ईश्वर उनसे ऐसे काम करवाए जिनसे उसका अहंकार समाप्त हो जाए। जब कोई उसे कुछ देना चाहे तो वह गिर जाए और उसे कोई कुत्ता छीनकर ले जाए। कवयित्री का एकमात्र लक्ष्य अपने परमात्मा की प्राप्ति है।

विशेष- कवयित्री ने प्रभु-भक्ति के लिए इंद्रियों के नियंत्रण पर बल दिया है। भावों एवं वृत्तियों को मानवीय पात्रों के समान प्रस्तुत किया गया है। शांत रस एवं भक्ति रस का परिपाक हुआ है। अनुप्रास, मानवीकरण, उपमा एवं उदाहरण अलंकारों की छटा दर्शनीय है। पदों की रचना मूलतः कन्नड़ भाषा में है। किन्तु यहाँ इसका हिन्दी अनुवाद है। पदों में संबोधन एवं उपदेशात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। प्रसाद गुण संपन्न खड़ीबोली के माध्यम से सहज अभिव्यक्ति हुई है।

बहुविकल्पी प्रश्न

हे भूख! मत मचल
प्यास, तड़प मत
हे नींद! मत सता
क्रोध, मचा मत उथल-पुथल
हे मोह! पाश अपने ढील
लोभ, मत ललचा
मद! मत कर मदहोश
ईर्ष्या, जला मत
ओ चराचर! मत चूक अवसर
आई हूँ संदेश लेकर चन्नमल्लिकार्जुन का

प्रश्न- सही विकल्प को चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) प्रस्तुत वचन में किस अलंकार की प्रमुखता है?

क- अनुप्रास
ख- यमक
ग- रूपक
घ- मानवीकरण

(ii) कवयित्री ने भूख से क्या निवेदन किया है?

क- मत सता
ख- मत मचल
ग- तड़प मत
घ- मचा मत उथल-पुथल

(iii) क्रोध का क्या काम है?

क- परेशान करना
ख- तड़प पैदा करना
ग- उथल-पुथल मचाना
घ- मचलना

(iv) लोभ से क्या मनुहार किया गया है?

क- लालच न हो
ख- तड़प न हो करना
ग- उथल-पुथल न मचे
घ- परेशान न करे

(v) कवयित्री किसका संदेश प्रचारित कर रही है?
क- भगवान श्रीकृष्ण का
ख- भगवान श्रीविष्णु का
ग- देवी दुर्गा का
घ- भगवान शिव का

उत्तर- (i) घ- मानवीकरण (ii) ख- मत मचल (iii) ग- उथल-पुथल मचाना (iv) क- लालच न हो (v) घ- भगवान शिव का

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 'लक्ष्य प्राप्ति में इंद्रियाँ बाधक होती हैं'-इसके संदर्भ में अपने तर्क दीजिए।
उत्तर- ज्ञानेंद्रियाँ मानव शरीर का महत्त्वपूर्ण अंग हैं जो अनुभव का साधन हैं। लक्ष्य प्राप्ति की जहाँ तक बात है, यदि वह ईश्वर प्राप्ति है तो वह एक ऐसी साधना के समान है जिसमें इंद्रियाँ बाधक हैं। इस समय भूख, प्यास, लालसा, कामना, प्रेम आदि का अनुभव हमें लक्ष्य से भटका देता है।इन सबका अनुभव इंद्रियाँ करवाती हैं।इंद्रियाँ लक्ष्य प्राप्ति बाधक बनती हैं।

प्रश्न-2 'ओ चराचर! मत चूक अवसर'- इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-इस पंक्ति में अक्क महादेवी का कहना है कि प्राणियों ने जो जीवन प्राप्त किया है, उसे यदि वे शिव की भक्ति में लगाएँ तो उनका कल्याण हो जाएगा। समय बीत जाने के बाद कुछ नहीं मिलता। जीव इंद्रियों के वश में होकर सांसारिक मोह-माया में उलझा रहता है। वह इन चक्करों में उलझा रहा तो ईश्वर-प्राप्ति का अवसर चूक जाएगा।

प्रश्न-3 ईश्वर के लिए किस दृष्टांत का प्रयोग किया गया है? ईश्वर और उसके साम्य का आधार बताइए।
उत्तर-अक्क महादेवी दूसरे वचन में ईश्वर को जूही के फूल के समान बताती हैं। इन दोनों में साम्य का आधार यह है कि जिस प्रकार जूही का फूल श्वेत,सात्विक, कोमल और सुगंधयुक्त है, उसी प्रकार ईश्वर भी समस्त विश्व में सबसे सात्विक, कोमल हृदय हैं। जिस प्रकार जूही का पुष्प अपनी सुगंध बिखेरने में भेदभाव नहीं करता, उसी प्रकार ईश्वर भी अपनी कृपा सब पर समान रूप से बरसाते हैं।

प्रश्न-4 अपना घर से क्या तात्पर्य है? इसे भूलने की बात क्यों कही गई है?
उत्तर-'अपना घर' से तात्पर्य है-मोहमाया से युक्त जीवन। व्यक्ति इस घर में सभी से लगाव महसूस करता है। वह इसे बनाने व बचाने के लिए निन्यानवे के फेर में पड़ा रहता है। कवयित्री इसे भूलने की बात कहती है, क्योंकि घर की मोह-ममता को छोड़े बिना ईश्वर-भक्ति नहीं की जा सकती। घर का मोह छूटने के बाद हर संबंध समाप्त हो जाता है और मनुष्य एकाग्रचित होकर भगवान में ध्यान लगा सकता है।

प्रश्न-5 दूसरे वचन में ईश्वर से क्या कामना की गई है और क्यों?
उत्तर- दूसरे वचन में अक्कमहादेवी ईश्वर से कहती हैं कि मुझसे भीख मँगवाओ। मेरी यह दशा कर दो कि भीख में मिला भी गिर जाए और कुत्ता उसे झपट कर खा जाए। यह सब कामना करने के पीछे कवयित्री की स्वयं के अहंकार को शून्य बनाने की बात छिपी है। संसार द्वारा उपेक्षित और तिरस्कृत व्यवहार से हम ईश्वर की अनन्य भक्ति की ओर प्रवृत्त होते हैं।

8. सबसे खतरनाक - अवतार सिंह संधू 'पाश'

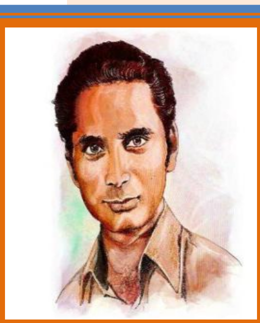

जन्म-1950 ई., जालंधर (पंजाब)। निधन-1988 ई.। उपनाम- पाश। रचनाएँ- लौह कथा, लड़ेंगे साथी, बीच का रास्ता नहीं होता, लहू है कि तब भी गाता है। भाषा- पंजाबी और हिन्दी। कविता के मुख्य शब्द- बैठे-बिठाए, सहमी-सी चुप, कपट, जुगनू की लौ, मुर्दा शांति, जमी बर्फ, रोजमर्रा, दुहराव, वीरान, मरसिए, चौगाठों।

जीवन परिचय- कवि 'पाश' का मूल नाम अवतार सिंह संधू है। इनका जन्म 1950 ई. में पंजाब राज्य के जालंधर जिले के तलवंडी सलेम गाँव में हुआ। इनका संबंध मध्यवर्गीय किसान परिवार से था। इस कारण इनकी स्नातक तक की शिक्षा अनियमित तरीके से हुई। इन्होंने जनचेतना फैलाने के लिए अनेक साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया और सिआड़, हेमज्योति, हॉक, एंटी-47 जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया। ये कुछ समय तक अमेरिका में रहे। इनकी मृत्यु 1988 ई. में हुई।

रचनाएँ- इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

लौह कथा, उड़दें बाजां मगर, साडैसमिया बिच, लड़ेंगे साथी (पंजाबी)

बीच का रास्ता नहीं होता, लहू है कि तब भी गाता है (हिंदी अनुवाद)

काव्यगत विशेषताएँ- 'पाश' समकालीन पंजाबी साहित्य के महत्वपूर्ण कवि माने जाते हैं। ये जन आंदोलनों से जुड़े रहे और विद्रोही कविता का नया सौंदर्य विधान विकसित कर उसे तीखाकिंतु सृजनात्मक तेवर दिया। इनकी कविताएँ विचार और भाव के सुंदर संयोजन से बनी गहरी राजनीतिक कविताएँ हैं, जिनमें लोक संस्कृति और परंपरा का गहरा बोध मिलता है। वे जनसामान्य की घटनाओं पर 'आउटसाइडर' की तरह प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करते, बल्कि इनकी कविताओं में वह व्यथा, निराशा और गुस्सा नजर आता है जो गहरी संपृक्तता के बगैर संभव ही नहीं है।

सारांश- सबसे खतरनाक कविता पंजाबी भाषा से अनूदित है। यह दिनोंदिन अधिकाधिक नृशंस और क्रूर होती जा रही दुनिया की विद्रूपताओं के चित्रण के साथ उस खौफनाक स्थिति की ओर इशारा करती है, जहाँ प्रतिकूलताओं से जूझने के संकल्प क्षीण पड़ते जा रहे हैं। पथरायी आँखों-सी तटस्थता से कवि की असहमति है। कवि इस प्रतिकूलता की तरफ विशेष संकेत करता है जहाँ आत्म के सवाल बेमानी हो जाते हैं। जड़ स्थितियों को बदलने की प्यास के मर जाने और बेहतर भविष्य के सपनों के गुम हो जाने को कवि सबसे खतरनाक स्थिति मानता है।

कवि का मानना है कि मेहनत की लूट, पुलिस की मार, गद्दारी-लोभ की मुट्ठी इत्यादि खतरनाक स्थितियाँ तो हैं, परंतु अन्य बातों से कम खतरनाक हैं। बिना कारण पकड़े जाना, कपट के वातावरण में सच्ची बात का गुम होना या विवशतावश समय गुजार लेना या गरीबी में दिन काटना आदि बुरी दशाएँ हैं, परंतु खतरनाक नहीं हैं। कवि कहता है कि सबसे खतरनाक वह स्थिति है जब व्यक्ति में मुर्दों जैसी शांति भर जाती है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति की विरोध-शक्ति समाप्त हो जाती है। जब व्यक्ति बँधे-बँधाए ढर्रे पर चलता है तो उसके सपने समाप्त हो जाते हैं। समय की गति का रुकना भी खतरनाक दशा है, क्योंकि व्यक्ति समय के अनुसार बदल नहीं पाता है।

मनुष्य की संवेदनशून्यता भी खतरनाक है। अन्याय के प्रति विद्रोह की भावना समाप्त होना भी गलत है। जब गीत भी मरसिए पढ़कर सुनाया जाने लगे और गुंडे आतंकित व्यक्तियों के दरवाजों पर अकड़ दिखाए तो वह भी खतरनाक होता है। उल्लू व गीदड़ों की आवाज युक्त रात भी खतरनाक है। कवि कहता है कि जब मनुष्य आत्मा की

आवाज को अनसुना कर देता है और वह संवेदनशून्य हो जाता है तब सबसे खतरनाक स्थिति होती है। उक्त स्थितियों की तुलना में मेहनत की लूट, पुलिस की मार, गद्दारी व लोभ की दशा अधिक खतरनाक नहीं है।

विशेष- कवि ने 'सबसे खतरनाक' स्थिति को स्पष्ट करने के लिए विशेष रीति का निर्वाह किया है। संवेदनहीनता, निराशा एवं निष्क्रियता को सबसे खतरनाक बताया गया है।परिस्थितियों की भयावहता के सहारे सबसे खतरनाक दशाओं को स्पष्ट किया गया है।'प्रतीकात्मक एवं बिम्बात्मक शब्दों के प्रयोग में नवीनता है। अनुप्रास, उपमा, रूपक एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग दर्शनीय है।कथन में जोश व आवेश होने के कारण ओज गुण विद्यमान है। छंद मुक्त काव्य-शैली में भावों की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। तत्सम-तद्भव शब्दों से युक्त प्रवाहपूर्ण सहज सरल खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।

बहुविकल्पी प्रश्न

सबसे खतरनाक होता है
मुर्दा शांति से भर जाना
न होना तड़प का सब सहन कर जाना
घर से निकलना काम पर
और काम से लौटकर घर आना
सबसे खतरनाक होता है
हमारे सपनों का मर जाना
सबसे खतरनाक वह घड़ी होती है
आपकी कलाई पर चलती हुई भी जो
आपकी निगाह में रुकी होती है

प्रश्न- सही विकल्प को चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) मुर्दा शांति से भर जाना'क्यों सबसे खतरनाक होता है?

क- क्योंकि मुर्दा भी जिंदा हो सकता है
ख- क्योंकि उसमें विरोध करने की क्षमता नहीं होती है
ग- क्योंकि उसमें कठोरता होती है
घ- इनमें से कोई नहीं

(ii) एक ढर्रे पर चलने वाली जिंदगी कैसी होतीहै?

क- घर से निकलना काम पर
ख- काम से लौटकर घर आना
ग- इनमें से केवल एक
घ- इनमें से दोनों

(iii) सपनों के मर जाने का क्या तात्पर्य है?

क- निराशा में जीना
ख- चिंता में डूबे रहना
ग- सुनहरे भविष्य की इच्छाएँ खत्म होना
घ- इनमें से कोई नहीं

(iv) सबसे खतरनाक वह घड़ी होती है- इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क- अनुप्रास

ख- श्लेष

ग- यमक

घ- उपमा

(v) 'सबसे खतरनाक' कविता के रचनाकार का क्या नाम है?

क- अवतार सिंह संधू

ख- अक्क महादेवी

ग- भवानीप्रसाद मिश्र

घ- निर्मला पुतुल

उत्तर- (i) ख- क्योंकि उसमें विरोध करने की क्षमता नहीं होती है (ii) घ- इनमें से दोनों (iii) ग- सुनहरे भविष्य की इच्छाएँ खत्म होना (iv) ख- श्लेष (v) क- अवतार सिंह संधू

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 मेहनत की लूट, पुलिस की मार, गद्दारी-लोभ को कवि ने सबसे खतरनाक क्यों नहीं माना?

उत्तर- कवि ने मेहनत की लूट, पुलिस की मार, गद्दारी लोभ को सबसे खतरनाक नहीं माना क्योंकि इन सब स्थितियों में आशा व उम्मीद की किरण बची रहती है। इनका प्रभाव सीमित होता है। इन क्रियाओं में प्रतिरोधक क्षमता बनी रहती है। इन स्थितियों को कभी भी बदला जा सकता है।

प्रश्न-2 'सबसे खतरनाक' शब्द के बार-बार दोहराए जाने से कविता में क्या असर पैदा हुआ?

उत्तर-'सबसे खतरनाक' शब्द के बार-बार, दोहराए जाने से पाठकों का ध्यान खतरनाक बातों की तरफ अधिक आकर्षित होता है। वे समाज की स्थितियों पर गंभीरता से विचार करते हैं। यह शब्द उस भयंकरता की ओर संकेत करता है जो समाज को निर्जीव बना रही है। इसके बार-बार प्रयोग से कथ्य प्रभावशाली ढंग से व्यक्त हुआ है।

प्रश्न-3 कवि ने कविता में कई बातों को 'बुरा है' न कहकर 'बुरा तो है' कहा है। 'तो' के प्रयोग से कथन की भंगिमा में क्या बदलाव आया है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि ने बैठे बिठाए पकड़े जाना, सहमी चुप में जकडे जाने, कपट के शोर में सही होते हुए भी दब जाने आदि को बुरा तो है कहा है। 'बुरा' शब्द प्रत्यक्ष आरोप लगाता है, परंतु 'तो' लगाने से सारा जोर 'तो' पर चला जाता है। इसका अर्थ है कि स्थितियाँ खराब अवश्य है, परंतु उनमें सुधार की गुंजाइश है। साथ ही, यह चेतावनी भी देता है कि अगर इन्हें नहीं सुधारा गया तो भविष्य में हालात और बिगड़ेंगे।

प्रश्न-4 'मुर्दा शांति से भर जाना और हमारे सपनों का मर जाना'-इनको सबसे खतरनाक माना गया है। आपकी दृष्टि में इन बातों में परस्पर क्या संगति है और ये क्यों सबसे खतरनाक है?

उत्तर- 'मुर्दा शांति से भर जाना' का अर्थ है-निष्क्रिय होना, जड़ हो जाना या प्रतिक्रिया शून्य हो जाना। ऐसी स्थिति बहुत खतरनाक है। ऐसा व्यक्ति सामाजिक अन्याय के खिलाफ संघर्ष नहीं कर पाता। उसके मन में किसी तरह की कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। वह जीवित होते हुए भी मृत के समान होता है। 'हमारे सपनों का मर जाना' का अर्थ है-कुछ करने की इच्छा समाप्त होना। मनुष्य कल्पना करके ही नए-नए कार्य करता है तथा विकसित होता है। सपनों के मर जाने से हम यथास्थिति को स्वीकार करके स्थिर एवं विचारशून्य हो जाते हैं।

प्रश्न-5 सबसे खतरनाक वह घड़ी होती है/अपनी कलाई पर चलती हुई भी जो/आपकी निगाह में रुकी होती है। इन पंक्तियों में 'घड़ी' शब्द की व्यंजना से अवगत कराइए।

उत्तर- 'घड़ी' शब्द के दो अर्थ मिलते हैं। पहला अर्थ जीवन से जुड़ा हुआ है। जीवन घड़ी की तरह चलता रहता है। वह कभी नहीं रुकता। मनुष्य की चाह समाप्त होने पर ही वह जड़ हो जाता है। दूसरा अर्थ है-दिनचर्या यदि व्यक्ति समय के अनुसार स्वयं को बाँध लेता है तो वह यांत्रिक हो जाता है। वह ढर्रे पर चलता है। उसके जीवन में नया कुछ करने का अवकाश नहीं होता।

प्रश्न-6 वह चाँद सबसे खतरनाक क्यों होता है, जो हर हत्याकांड के बाद/आपकी आँखों में मिर्चों की तरह नहीं गड़ता है?

उत्तर- 'चाँद' सौंदर्य का प्रतीक है, परंतु हत्याकांड के बाद कोई प्राणी सौंदर्य की कल्पना नहीं कर सकता। हत्या होने पर आम व्यक्ति के मन में आक्रोश उत्पन्न होता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य को चाँद आनंद प्रदान करने वाला नहीं लगता। यदि लोग ऐसी स्थिति में आनंद लेने की कोशिश करते हैं तो यह संवेदनशून्यता वास्तव में खतरनाक है।

प्रश्न-7 कवि ने 'मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती', से कविता का आरंभ करके फिर इसी से अंत क्यों किया होगा?

उत्तर- कवि ने 'मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती' से कविता का आरंभ करके इसी पर अंत किया क्योंकि कवि का ध्येय 'खतरनाक' व 'सबसे खतरनाक' स्थितियों में अंतर बताना है। कुछ स्थितियाँ खतरनाक होती हैं, परंतु उन्हें सुधारा जा सकता है कुछ दशाएँ कवि ने बताई हैं। यदि वे समाज में आ जाती हैं तो मानवता पर ही प्रश्न चिह्न लग जाता है। ऐसी स्थितियों से समाज को बचना चाहिए।

9. आओ, मिलकर बचाएँ - निर्मला पुतुल

जन्म-1972 ई., दुमका (झारखंड)। शिक्षा- स्नातक तथा नर्सिंग में डिप्लोमा। रचनाएँ- नगाड़े की तरह बजते शब्द, अपने घर की तलाश में। भाषा- संथाली। कविता के मुख्य शब्द- शहर की आबो-हवा, माटी का रंग, मन नका हरापन, जुझारूपन, पहाड़ों का मौन, खुला आँगन।

जीवन परिचय- निर्मला पुतुल का जन्म सन् 1972 में झारखंड राज्य के दुमका क्षेत्र में एक आदिवासी परिवार में हुआ। इनका प्रारंभिक जीवन बहुत संघर्षमय रहा। इनके पिता व चाचा शिक्षक थे, घर में शिक्षा का माहौल था। इसके बावजूद रोटी की समस्या से जूझने के कारण नियमित अध्ययन बाधित होता रहा। इन्होंने सोचा कि नर्स बनने पर आर्थिक कष्टों से मुक्ति मिल जाएगी। इन्होंने नर्सिंग में डिप्लोमा किया तथा काफी समय बाद इग्नू से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इनका संथाली समाज और उसके रागबोध से गहरा जुड़ाव पहले से था।नर्सिंग की शिक्षा के समय बाहर की दुनिया से भी परिचय हुआ। दोनों समाजों की क्रिया-प्रतिक्रिया से वह बोध विकसित हुआ जिससे वह अपने परिवेश की वास्तविक स्थिति को समझने में सफल हो सकीं।

रचनाएँ- इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-
नगाड़े की तरह बजते शब्द, अपने घर की तलाश में।

काव्यगत विशेषताएँ- कवयित्री ने आदिवासी समाज की विसंगतियों को बड़ी तल्लीनता से उकेरा है। इनकी कविताओं का केंद्र बिंदु आदिवासी समाज की वे स्थितियाँ हैं, जिनमें कड़ी मेहनत के बावजूद खराब दशा, कुरीतियों के कारण बिगड़ती पीढ़ी, थोड़े लाभ के लिए बड़े समझौते, पुरुष वर्चस्व, स्वार्थ के लिए पर्यावरण की हानि, शिक्षित समाज का दिक्कुओं और व्यवसायियों के हाथों की कठपुतली बनना आदि है। वे आदिवासी जीवन के कुछ अनछुए पहलुओं से, कलात्मकता के साथ हमारा परिचय कराती हैं और संथाली समाज के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों पहलुओं को बेबाकी से सामने रखती हैं। संथाली समाज में जहाँ एक ओर सादगी, भोलापन, प्रकृति से जुड़ाव और कठोर परिश्रम करने की क्षमता जैसे सकारात्मक तत्व हैं, वहीं दूसरी ओर उसमें अशिक्षा और शराब की ओर बढ़ता झुकाव जैसी कुरीतियाँ भी हैं।

सारांश- इस कविता में आदिवासी समाज के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों पक्षों का यथार्थ चित्रण हुआ है। वृहतर संदर्भ में यह कविता समाज में उन चीजों को बचाने की बात करती है जिनका होना स्वस्थ सामाजिक-प्राकृतिक परिवेश के लिए जरूरी है। प्रकृति के विनाश और विस्थापन के कारण आज आदिवासी समाज संकट में है, जो कविता का मूल स्वर है। कवयित्री को लगता है कि संथाली समाज अपनी पारंपरिक भाषा, भावुकता, भोलेपन व ग्रामीण संस्कृति को भूलता जा रहा है। नदियाँ, पहाड़, मैदान, मिट्टी, फसल, हवाएँये सब आधुनिकता के शिकार हो रहे हैं। आज के परिवेश, में विकार बढ़ रहे हैं, जिनसे बचने की जरूरत है। हमें प्राचीन संस्कारों और प्राकृतिक उपादानों को बचाना है। कवयित्री कहती है कि निराश होने की जरूरत नहीं है, क्योंकि अभी भी बचाने के लिए बहुत कुछ शेष है।

विशेष- कवयित्री ने आदिवासी समाज की विशेषताओं को बड़ी तल्लीनता से उकेरा है।प्राकृतिक परिवेश को संरक्षित रखने का आह्वान किया गया है। किसी एक व्यक्ति के नेतृत्व के बजाय सामूहिक प्रयास को प्रमुखता दी गयी है। शहरीकरण से प्राकृतिक परिवेश को गहरी हानि हो रही है। प्रतीकों एवं बिम्बों के प्रयोग से कविता प्रभावशाली बन पड़ी है। छंद मुक्त एवं अतुकांत काव्य-शैली का मनोरम प्रयोग है। दैनिक बोलचाल के शब्दों से युक्त प्रवाहमयी खड़ीबोली का प्रयोग किया है।

बहुविकल्पी प्रश्न

अपनी बस्तियों को
नंगी होने से
शहर की आबो-हवा से बचाएँ उसे
अपने चेहरे पर
संथाल परगना की माटी का रंग
बचाएँ डूबने से
पूरी की पूरी बस्ती को
हड़िया में
भाषा में झारखडीपन

प्रश्न- सही विकल्प को चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) बस्तियों के नंगी होने का क्या तात्पर्यहै?

क- बस्तियोंका हरा-भरा होना
ख- बस्तियोंका वीरान होना
ग- गाँव का उजड़ जाना
घ- शहर का बसना

(ii) शहरीकरण से किसका नुकसान हो रहाहै?

क- प्राकृतिक परिवेश का
ख- ग्रामीण संस्कृति का
ग- आदिवासी समाज का
घ- इनमें से सभी

(iii) संथाल परगनासे कौन संबंधित है?

क- आदिवासी समाज
ख- नगरीय सेवा
ग- शिक्षित समाज
घ- इनमें से कोई नहीं

(iv) पूरी की पूरी बस्ती हड़िया में कैसे डूब रही है?
क- आदिवासी समाज के शिक्षित होने के कारण
ख- मेहनत करने के कारण
ग- शराबखोरी के कारण
घ- इनमें से कोई नहीं

(v) झारखंडीपन का क्या मतलब है?
क-झारखंड की भाषा और संस्कृति
ख- झारखंड के लोगों की नशाखोरी
ग- झारखंड का कोयला खनन क्षेत्र
घ- इनमें से कोई नहीं

उत्तर- (i) ख- बस्तियोंका वीरान होना (ii) घ- इनमें से सभी (iii) क- आदिवासी समाज (iv) ग- शराबखोरी के कारण (v) क- झारखंड की भाषा और संस्कृति

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 'माटी का रंग' प्रयोग करते हुए किस बात की ओर संकेत किया गया है?
उत्तर- कवयित्री ने 'माटी का रंग' शब्द का प्रयोग करके यह बताना चाहा है कि संथाल क्षेत्र के लोगों को अपनी मूल पहचान को नहीं भूलना चाहिए। वह इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विशेषताएँ बचाए रखना चाहता है। क्षेत्र की प्रकृति, रहन-सहन, अक्खड़ता, नाच गाना, भोलापन, जुझारूपन, झारखंडी भाषा आदि को शहरी प्रभाव से दूर रखना ही कवयित्री का उद्देश्य है।

प्रश्न-2 भाषा में झारखंडीपन से क्या अभिप्राय है?
उत्तर- इसका अभिप्राय है-झारखंड की भाषा की स्वाभाविक बोली, उनका विशिष्ट उच्चारण। कवयित्री चाहती है कि संथाली लोग अपनी भाषा की स्वाभाविक विशेषताओं को नष्ट न करें।

प्रश्न-3 दिल के भोलेपन के साथ-साथ अक्खड़पन और जुझारूपन को भी बचाने की आवश्यकता पर क्यों बल दिया गया है?
उत्तर- दिल का भोलापन अर्थात् मन का साफ़ होना-इस पर कविता में इसलिए बल दिया गया है कि अच्छा मनुष्य और वह आदिवासी जिस पर शहरी कलुष का साया नहीं पड़ा वह भोला तो होता ही है, साथ-साथ उसे शहरी कही जानेवाली सभ्यता का ज्ञान नहीं तो वह अपने साफ़ मन से जो कहता है वह अक्खड़ दृष्टिकोण से कहता है। शक्तिशाली संथालों का मौलिक गुण है-जूझना, सो उसे बनाए रखना भी जरूरी है।

प्रश्न-4 प्रस्तुत कविता आदिवासी समाज की किन बुराइयों की ओर संकेत करती है?
उत्तर- इस कविता में आदिवासी समाज में जड़ता, काम से अरुचि, बाहरी संस्कृति का अंधानुकरण, शराबखोरी, अकर्मण्यता, अशिक्षा, अपनी भाषा से अलगाव, परंपराओं को पूर्णत: गलत समझना आदि बुराइयाँ आ गई हैं। आदिवासी समाज स्वाभाविक जीवन को भूलता जा रहा है।

प्रश्न-5 'इस दौर में भी बचाने को बहुत कुछ बचा है'-से क्या आशय है?
उत्तर- 'इस दौर में भी' का आशय है कि वर्तमान परिवेश में पाश्चात्य और शहरी प्रभाव ने सभी संस्कारपूर्ण मौलिक तत्वों को नष्ट कर दिया है, परंतु कवयित्री निराश नहीं है, वह कहती है कि हमारी समृद्ध परंपरा में आज भी बहुत कुछ शेष है। आओ हम उसे मिलकर बचा लें। यही इस समय की माँग है। लोगों का विश्वास, उनकी टूटती उम्मीदों को जीवित करना, सपनों को पूरा करना आदि को सामूहिक प्रयासों से बचाया जा सकता है।

प्रश्न-6 बस्तियों को शहर की किस आबो-हवा से बचाने की आवश्यकता है?
उत्तर- शहरों में भावनात्मक जुड़ाव, सादगी, भोलापन, विश्वास और खिलखिलाती हुई हँसी नहीं है। इन कमियों से

बस्तियों को बचाना बहुत जरूरी है। शहरों के प्रभाव में आकर ही दिनचर्या ठंडी होती जा रही है और जीवन की गर्माहट घट रही है। जंगल कट रहे हैं और आदिवासी लोग भी शहरी जीवन को अपना रहे हैं। बस्ती के आँगन भी सिकुड़ रहे हैं। नाचना-गाना, मस्ती भरी जिंदगी को शहरी प्रभाव से बचाना ज़रूरी है।

आरोह भाग-1 (गद्य-खंड)

1. नमक का दारोगा - प्रेमचंद

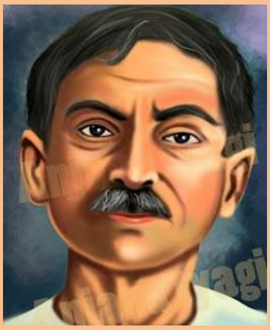

जन्म-1880 ई., ग्राम- लमही (वाराणसी, उत्तर प्रदेश)। निधन-1936 ई.। शिक्षा- स्नातक। रचनाएँ-उपन्यास: सेवासदन, रंगभूमि, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान। कहानी संग्रह: सोजे-वतन, मानसरोवर, गुप्तधन।भाषा- खड़ीबोली हिन्दी। पाठ के शब्द- निषेध, सूत्रपात, प्राबल्य, वृतांत, निगाह, कोलाहल, कतार, यथार्थ, ऐश्वर्य, कातर, अदालत, वाचाल, निमित्त। मुख्य पात्र- मुंशी वंशीधर, पंडित अलोपीदीन।

जीवन परिचय- प्रेमचंद का जन्म 1880 ई. में उत्तर प्रदेश के लमही गाँव में हुआ। इनका मूल नाम धनपतराय था। इनका बचपन अभावों में बीता। इन्होंने स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद पारिवारिक समस्याओं के कारण बी.ए. तक की पढ़ाई मुश्किल से पूरी की। ये अंग्रेजी में एम.ए. करना चाहते थे, लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए नौकरी करनी पड़ी। गाँधी जी के असहयोग आंदोलन मेंसक्रिय होने के कारण उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ने के बाद भी उनका लेखन कार्य सुचारु रूप से चलता रहा। ये अपनी पत्नी शिवरानी देवी के साथ अंग्रेजों के खिलाफ आदोलनों में हिस्सा लेते रहे। इनके जीवन का राजनीतिक संघर्ष इनकी रचनाओं मेंसामाजिक संघर्ष बनकर सामने आया जिसमें जीवन का यथार्थ और आदर्श दोनों थे। इनका निधन 1936 ई. में हुआ।

रचनाएँ- प्रेमचंद का साहित्य संसार अत्यंत विस्तृत है। ये हिंदी कथा-साहित्य के शिखर पुरुष माने जाते हैं। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

उपन्यास- सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान।

कहानी संग्रह- सोजे-वतन, मानसरोवर (आठ खंड में), गुप्त धन।

नाटक- कर्बला, संग्राम, प्रेम की देवी।

निबंध-संग्रह-कुछ विचार, विविध प्रसंग।

साहित्यिक विशेषताएँ- हिंदी साहित्य के इतिहास में कहानी और उपन्यास की विधा के विकास का काल-विभाजन प्रेमचंद को ही केंद्र में रखकर किया जाता रहा है। वस्तुत: प्रेमचंद ही पहले रचनाकार हैं जिन्होंने कहानी और उपन्यास की विधा को कल्पना और रुमानियत के धुंधलके से निकालकर यथार्थ की ठोस जमीन पर प्रतिष्ठित किया। यथार्थ की जमीन से जुड़कर कहानी किस्सागोई तक सीमित न रहकर पढ़ने-पढ़ाने की परंपरा से भी जुड़ी। इसमें उनकी हिंदुस्तानी । भाषा अपने पूरे ठाट-बाट और जातीय स्वरूप के साथ आई है।उनका आरंभिक कथा-साहित्य कल्पना, संयोग और रुमानियत के ताने-बाने से बुना गया है, लेकिन एक कथाकार के रूप में उन्होंने लगातार विकास किया और **पंच परमेश्वर** जैसी कहानी तथा **सेवासदन** जैसे उपन्यास के साथ सामाजिक जीवन को कहानी का आधार बनाने वाली यथार्थवादी कला के अग्रदूत के रूप में सामने आए।

सारांश- नमक का दारोगा' प्रेमचंद की बहुचर्चित कहानी है जो आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का एक मुकम्मल उदाहरण है। यह कहानी धन के ऊपर धर्म की जीत है। 'धन' और 'धर्म' को क्रमश: सद्वृत्ति और असद्वृत्ति, बुराई और अच्छाई, असत्य और सत्य कहा जा सकता है। कहानी में इनका प्रतिनिधित्व क्रमश: पडित अलोपीदीन और मुंशी वंशीधर नामक पात्रों ने किया है। ईमानदार कर्मयोगी मुंशी वंशीधर को खरीदने में असफल रहने के बाद पंडित अलोपीदीन अपने धन की महिमा का उपयोग कर उन्हें नौकरी से हटवा देते हैं, लेकिन अंत:सत्य के आगे उनका सिर झुक जाता है। वे सरकारी विभाग से बर्खास्त वंशीधर को बहुत ऊँचे वेतन और भत्ते के साथ अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त करते हैं।

नमक का विभाग बनने के बाद लोग नमक का व्यापार चोरी-छिपे करने लगे। इस काले व्यापार से भ्रष्टाचार बढ़ा। अधिकारियों के पौ-बारह थे। लोग दरोगा के पद के लिए लालायित थे। मुंशी वंशीधर भी रोजगार को प्रमुख मानकर इसे खोजने चले। इनके पिता अनुभवी थे। उन्होंने घर की दुर्दशा तथा अपनी वृद्धावस्था का हवाला देकर नौकरी में पद की ओर ध्यान न देकर ऊपरी आय वाली नौकरी को बेहतर बताया। वे कहते हैं कि मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। आवश्यकता व अवसर देखकर विवेक से काम करो। वंशीधर ने पिता की बातें ध्यान से सुनीं और चल दिए। धैर्य, बुद्ध आत्मावलंबन व भाग्य के कारण नमक विभाग के दारोगा पद पर प्रतिष्ठित हो गए। घर में खुशी छा गई।

सर्दी के मौसम की रात में नमक के सिपाही नशे में मस्त थे। वंशीधर ने छह महीने में ही अपनीकुशलता व उत्तम आचार से अफसरों का विश्वास जीत लिया था। यमुना नदी पर बने नावों के पुल से गाड़ियों की आवाज सुनकर वे उठ गए। उन्हें गोलमाल की शंका थी। जाकर देखा तो गाड़ियों की कतार दिखाई दी। पूछताछ पर पता चला कि ये पंडित अलोपीदीन की है। वह इलाके का प्रसिद्ध जमींदार था जो ऋण देने का काम करता था। तलाशी ली तो पता चला कि उसमें नमक है। पंडित अलोपीदीन अपने सजीले रथ में ऊँघते हुए जा रहे थे तभी गाड़ी वालों ने गाड़ियाँ रोकने की खबर दी। पंडित सारे संसार में लक्ष्मी को प्रमुख मानते थे। न्याय, नीति सब लक्ष्मी के खिलौने हैं। उसी घमंड में निश्चित होकर दारोगा के पास पहुँचे। उन्होंने कहा कि मेरी सरकार तो आप ही हैं। आपने व्यर्थ ही कष्ट उठाया। मैं सेवा में स्वयं आ ही रहा था। वंशीधर पर ईमानदारी का नशा था।उन्होंने कहा कि हम अपना ईमान नहीं बेचते। आपको गिरफ्तार किया जाता है। यह आदेश सुनकर पंडित अलोपीदीन हैरान रह गए। यह उनके जीवन की पहली घटना थी। बदलू सिंह उसका हाथ पकड़ने से घबरा गया, फिर अलोपीदीन ने सोचा कि नया लड़का है। दीनभाव में बोले-आप ऐसा न करें। हमारी इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी। वंशीधर ने साफ मना कर दिया। अलोपीदीन ने चालीस हजार तक की रिश्वत देनी चाही, परंतु वंशीधर ने उनकी एक न सुनी। धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला।

सुबह तक हर जबान पर यही किस्सा था। पंडित के व्यवहार की चारों तरफ निंदा हो रही थी। भ्रष्ट व्यक्ति भी उसकी निंदा कर रहे थे। अगले दिन अदालत में भीड़ थी। अदालत में सभी पडित अलोपीदीन के माल के गुलाम थे। वे उनके पकड़े जाने पर हैरान थे। इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आए? इस आक्रमण को रोकने के लिए वकीलों की फौज तैयार की गई। न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया। वंशीधर के पास सत्य था, गवाह लोभ से डाँवाडोल थे।

मुंशी जी को न्याय में पक्षपात होता दिख रहा था। यहाँ के कर्मचारी पक्षपात करने पर तुले हुए थे। मुकदमा शीघ्र समाप्त हो गया। डिप्टी मजिस्ट्रेट ने लिखा कि पंडित अलोपीदीन के विरुद्ध प्रमाण आधारहीन है। वे ऐसा कार्य नहीं कर सकते। दारोगा का दोष अधिक नहीं है, परंतु एक भले आदमी को दिए कष्ट के कारण उन्हें भविष्य में ऐसा न करने की चेतावनी दी जाती है। इस फैसले से सबकी बाँछे खिल गई। खूब पैसा लुटाया गया जिसने अदालत की नींव तक हिला दी। वंशीधर बाहर निकले तो चारों तरफ से व्यंग्य की बातें सुनने को मिलीं। उन्हें न्याय, विद्वता, उपाधियाँ आदि सभी निरर्थक लगने लगे।वंशीधर की बर्खास्तगी का पत्र एक सप्ताह में ही आ गया। उन्हें कर्तव्यपरायणता का दंड मिला। दुखी मन से वे घर चले। उनके पिता खूब बड़बड़ाए। यह अधिक ईमानदार बनता है।

जी चाहता है कि तुम्हारा और अपना सिर फोड़ लें। उन्हें अनेक कठोर बातें कहीं। माँ की तीर्थयात्रा की आशा मिट्टी में मिल गई। पत्नी कई दिन तक मुँह फुलाए रही।

एक सप्ताह के बाद अलोपीदीन सजे रथ में बैठकर मुंशी के घर पहुँचे। वृद्ध मुंशी उनकी चापलूसी करने लगे तथा अपने पुत्र को कोसने लगे। अलोपीदीन ने उन्हें ऐसा कहने से रोका और कहा कि कुलतिलक और पुरुषों की कीर्ति उज्ज्वल करने वाले संसार में ऐसे कितने धर्मपरायण मनुष्य हैं जो धर्म पर अपना सब कुछ अर्पण कर सकें। उन्होंने वंशीधर से कहा कि इसे खुशामद न समझिए। आपने मुझे परास्त कर दिया। वंशीधर ने सोचा कि वे उसे अपमानित करने आए हैं, परंतु पंडित की बातें सुनकर उनका संदेह दूर हो गया। उन्होंने कहा कि यह आपकी उदारता है।

अलोपीदीन ने कहा कि नदी तट पर आपने मेरी प्रार्थना नहीं सुनी, अब स्वीकार करनी पड़ेगी। उसने एक स्टांप पत्र निकाला और पद स्वीकारने के लिए प्रार्थना की। वंशीधर ने पढ़ा। पंडित ने अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर छह हजार वार्षिक वेतन, रोजाना खर्च, सवारी, बंगले आदि के साथ नियत किया था। वंशीधर ने काँपते स्वर में कहा कि मैं इस उच्च पद के योग्य नहीं हूँ। ऐसे महान कार्य के लिए बड़े अनुभवी मनुष्य की जरूरत है।

अलोपीदीन ने वंशीधर को कलम देते हुए कहा कि मुझे अनुभव, विद्वता, मर्मज्ञता, कार्यकुशलता की चाह नहीं। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह आपको सदैव वही नदी के किनारे वाला बेमुरौवत, उद्दंड, कठोर, परंतु धर्मनिष्ठ दारोगा बनाए रखे। वंशीधर की आँखें डबडबा आईं। उन्होंने काँपते हुए हाथ से मैनेजरी के कागज पर हस्ताक्षर कर दिए। अलोपीदीन ने उन्हें गले लगा लिया।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी। सवेरे देखिए तो बालक-वृद्ध सबके मुँह से यही बात सुनाई देती थी। जिसे देखिए, वही पंडित जी के इस व्यवहार पर टीका-टिप्पणी कर रहा था, निंदा की बौछारें हो रही थीं, मानो संसार से अब पापी का पाप कट गया। पानी को दूध के नाम से बेचनेवाला ग्वाला, कल्पित रोज़नामचे भरनेवाले अधिकारी वर्ग, रेल में बिना टिकट सफर करने वाले बाबू लोग, जाली दस्तावेज़ बनानेवाले सेठ और साहूकार, यह सब-के-सब देवताओं की भाँति गरदनें चला रहे थे। जब दूसरे दिन पंडित अलोपीदीन अभियुक्त होकर कांस्टेबलों के साथ, हाथों में हथकड़ियाँ, हृदय में ग्लानि और क्षोभ भरे, लज्जा से गरदन झुकाए अदालत की तरफ चले, तो सारे शहर में हलचल मच गई। मेलों में कदाचित् आँखें इतनी व्यग्र न होती होंगी। भीड़ के मारे छत और दीवार में कोई भेद न रहा।

(i) दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी। कैसे?

क- लोग सुबह भीसो रहे थे

ख- सुबहलोग सोकर उठ रहे थे

ग- सुबह सबके मुँह से पंडित जी की चर्चा निकल रही थी

घ- इनमें से कोई नहीं

(ii) ग्वाले की किस कमी की ओर संकेत किया है?

क- दूध को पानी के नाम से बेचता है

ख- पानी को दूध के नाम से बेचता है

ग- इनमें से दोनों

घ- इनमें से कोई नहीं

(iii) जाली दस्तावेज़कौन बनाते हैं?

क- सेठ और साहूकार

ख- अधिकारी वर्ग
ग- अलोपीदीन
घ- इनमें से कोई नहीं

(iv) किसके हाथों में हथकड़ियाँ लगी थीं?
क- सेठ और साहूकारों के
ख- अधिकारी वर्ग के
ग- अलोपीदीन के
घ- इनमें से कोई नहीं

(v) भीड़ के मारे............ में कोई भेद न रहा। वाक्य पूरा करो।
क- बालक और वृद्‌ध
ख- पानी और दूध
ग- सेठ और साहूकार
घ- छत और दीवार

उत्तर- (i) ग- सुबह सबके मुँह से पंडित जी की चर्चा निकल रही थी(ii)ख-पानी को दूध के नाम से बेचता है (iii) क- सेठ और साहूकार (iv) ग- अलोपीदीन के (v) घ- छत और दीवार

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 कहानी का कौन-सा पात्र आपको सर्वाधिक प्रभावित करता है और क्यों?
उत्तर- इस कहानी में मुंशी वंशीधर मुझे सर्वाधिक प्रभावित करते हैं, क्योंकि वे ईमानदार, कर्तव्य-परायण, कठोर, बेमुरौवत और धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे। उनके घर की आर्थिक दशा बहुत खराब थी पर फिर भी उनका ईमान नहीं डगमगाया। उनके पिता ने उन्हें ऊपरी आय पर नजर रखने की नसीहत दी, पर वे सत्य के मार्ग पर अडिग खड़े रहे। आज देश को ऐसे कर्मियों की जरूरत है जो बिना लालच के सत्य के मार्ग पर अडिग खड़े रहें जो परिणाम का बेखौफ़ होकर सामना कर सकें।

प्रश्न-2 'नमक का दरोगा' कहानी में पंडित अलोपीदीन के व्यक्तित्व के कौन-से दो पहलू (पक्ष) उभरकर आते हैं?
उत्तर- पंडित अलोपीदीन के दो पहलू सामने आते हैं-
नकारात्मक पहलू- पंडित अलोपीदीन लक्ष्मी के उपासक हैं। वे लक्ष्मी को सर्वोच्च मानते हैं। उन्होंने अदालत में सबको खरीद रखा है। वे कुशल वक्ता भी हैं। वाणी व धन से उन्होंने सबको वश में कर रखा है। इसी कारण वे नमक का अवैध धंधा करते हैं। वंशीधर द्‌वारा पकड़े जाने पर वे अदालत में धन के बल पर स्वयं को रिहा करवा लेते हैं और वंशीधर को नौकरी से हटवा देते हैं।
सकारात्मक पहलू- कहानी के अंत में इनका उज्ज्वल रूप सामने आता है। वे वंशीधर की ईमानदारी के कायल हैं। ऐसा व्यक्ति उन्हें सरलता से नहीं मिल सकता था। वे स्वयं उनके घर पहूँचे और उसे अपनीसारी जायदाद का स्थायी मैनेजर बना दिया। उन्हें अच्छा वेतन व सुविधाएँ देकर मान-सम्मान बढ़ाया। उनके स्थान पर आम व्यक्ति तो सदा बदला लेने की बात ही सोचता रहता।

प्रश्न-3 'लड़कियाँ हैं, वह घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं।' वाक्य समाज में लड़कियों की स्थिति की किस वास्तविकता को प्रकट करता है?

उत्तर- इस कथन से तत्कालीन समाज में लड़कियों के प्रति उपेक्षा का भाव प्रकट होता है। जिस प्रकार खेत में उगी व्यर्थ घास-फूस बिना देख-भाल और खाद-पानी के निरंतर बढ़ती रहती हैं। उसी प्रकार समाज में लड़कियों पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता है, उनके पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा और बीमार पड़ने पर इलाज इत्यादि पर बिलकुल खर्च नहीं किया जाता था किन्तु फिर भी वे जीती और बढ़तीथीं आज हमारे समाज में ऐसा नहीं है।

प्रश्न-4 मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद क्यों कहा गया है?

उत्तर- मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद कहा गया हैक्योंकि जिस तरह से चाँद महीने में एक बार पूरा दिखाई देता है। इसके बाद यह घटता चला जाता है और अंत में समाप्त हो जाता है। उसी तरह से मासिक वेतन भी एक बार पूरा आता है और खर्च होते-होते महीने के अंत तक समाप्त हो जाता है।

प्रश्न-5 नमक का दरोगा' कहानी के कोई दो अन्य शीर्षक बताते हुए उसके आधार को भी स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-1. धर्म की जीत/सत्य की विजय2. कर्तव्यनिष्ठ दारोगा

आधार

1. धर्म की जीत/सत्य की विजय शीर्षक का आधार है कि धन के आगे धर्म झुका नहीं और अंत में पंडित अलोपीदीन ने भी धर्म के द्वार पर जाकर माथा टेक दिया।
2. कर्तव्यनिष्ठ दारोगा-वंशीधर जैसा सत्यव्रत लेने वाले युवक जो पिता के कहने और घर की दशा को देखकर भी धन के लालच में नहीं आया। उसी के चारों ओर पूरी कहानी घूमती है।

प्रश्न-6 कहानी के अंत में अलोपीदीन के वंशीधर को मैनेजर नियुक्त करने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं? तर्क सहित- उत्तर दीजिए। आप इस कहानी का अंत किस प्रकार करते?

उत्तर- कहानी के अंत में अलोपीदीन ने वंशीधर को मैनेजर नियुक्त कर दिया। इसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं- **1.**अलोपीदीन स्वयं भ्रष्ट था, परंतु उसे अपनी जायदाद को सँभालने के लिए ईमानदार व्यक्ति की जरूरत थी। वंशीधर उसकी दृष्टि में योग्य व्यक्ति था।

2. अलोपीदीन आत्मग्लानि से भी पीड़ित था। उसे ईमानदार व कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति की नौकरी छिनने का दुख था। मैं इस कहानी का अंत इस प्रकार करता-ग्लानि से भरे अलोपीदीन वंशीधर के पास गए और वंशीधर के समक्ष ऊँचे वेतन के साथ मैनेजर पद देने का प्रस्ताव रखा। यह सुन वंशीधर ने कहा-यदि आपको अपने किए पर ग्लानि हो रही है तो अपना जुर्म अदालत में कबूल कर लीजिए। अलोपीदीन ने वंशीधर की शर्त मान ली। अदालत ने सारी सच्चाई जानकर वंशीधर को नौकरी पर रखने का आदेश दिया।

प्रश्न-7 'नमक का दरोगा' कहानी 'धन पर धर्म की विजय' की कहानी है। प्रमाण द्वारा स्पष्टकीजिए।

उत्तर-पंडित अलोपीदीन धन का उपासक था। उसे धन की देवी लक्ष्मी जी पर अखंड विश्वास था। उसने हमेशा रिश्वत देकर अपने कार्य करवाए। उसे लगता था कि धन के आगे सब कमज़ोर हैं। वंशीधर ने गैरकानूनी ढंग से नमक ले जा रही गाड़ियों को पकड़ लिया। अलोपीदीन ने उसे भी मोटी रिश्वत देकर मामला खत्म करना चाहा, परंतु वंशीधर ने उसकी हर पेशकश को ठुकराकर उसे गिरफ्तार करने का आदेश दिया। अलोपीदीन के जीवन में पहली बार ऐसा हुआ जब धर्म नेधन पर विजय पाई।

2.मियाँ नसीरुद्दीन – कृष्णा सोबती

जन्म- 1925 ई., गुजरात (पश्चिमी पंजाब, पाकिस्तान)। निधन- 2019 ई.। शिक्षा-स्नातक। रचनाएँ- उपन्यास: जिंदगीनामा, दिलोदानिश, समय सरगम। कहानी संग्रह: डार से बिछुड़ी, मित्रो मरजानी, बादलों के घेरे।भाषा- हिन्दी। पाठ के शब्द- मसीहा, निहायत, पेशानी, अख़बारनवीस, निठल्ला, वालिद, नसीहत, उस्ताद, जमातों, तालीम, बेसब्री, ज़हमत, शाही। मुख्य पात्र- मियाँ नसीरुद्दीन।

जीवन परिचय- कृष्णा सोबती का जन्म 1925 ई. में गुजरात (अब पाकिस्तान) प्रान्त में हुआ। इनकी शिक्षा लाहौर, शिमला व दिल्ली में हुई। इन्हें साहित्य अकादमी सम्मान, हिंदी अकादमी का शलाका सम्मान, साहित्य अकादमी की

महत्तर सदस्यता सहित अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा गया।25 जनवरी 2019 को कृष्णा सोबती जी का निधन हो गया।

रचनाएँ- कृष्णा सोबती ने अनेक विधाओं में लिखा। उनके कई उपन्यासों, लंबी कहानियों और संस्मरणों ने हिंदी के साहित्यिक संसार में अपनी दीर्घजीवी उपस्थिति सुनिश्चित की है। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

उपन्यास- जिंदगीनामा, दिलोदानिश, ऐ लड़की, समय सरगम।

कहानीसंग्रह- डार से बिछुड़ी, मित्रों मरजानी, बादलों के घेरे, सूरजमुखी अंधेरे के।

शब्दचित्र, संस्मरण- हम-हशमत, शब्दों के आलोक में।

साहित्यिक विशेषताएँ- हिंदी कथा साहित्य में कृष्णा सोबती की विशिष्ट पहचान है। वे मानती हैं कि कम लिखना विशिष्ट लिखना है। यही कारण है कि उनके संयमित लेखन और साफ-सुथरी रचनात्मकता ने अपना नया पाठक वर्ग बनाया है। उन्होंने हिंदी साहित्य को कई ऐसे यादगार चरित्र दिए हैं, जिन्हें अमर कहा जा सकता है; जैसे-मित्रो, शाहनी, हम-हशमत आदि।भारत-पाकिस्तान विभाजन पर लिखी गई रचनाओं में यशपाल के **झूठा-सच**,राही मासूम रज़ा के **आधा गाँव** और भीष्म साहनी के **तमस** के साथ-साथ कृष्णा सोबती का **'जिंदगीनामा'** एक विशिष्ट उपलब्धि है। संस्मरण के क्षेत्र में **हम-हशमत** कृति का विशिष्ट स्थान है।इसमें उन्होंने अपने ही एक-दूसरे व्यक्तित्व के रूप में हशमत नामक चरित्र का सृजन कर एक अद्भुत प्रयोग का उदाहरण प्रस्तुत किया है।इनके भाषिक प्रयोग में विविधता है। उन्होंने हिंदी की कथा-भाषा को एक विलक्षण ताजगी दी है। संस्कृतनिष्ठ तत्समता, उर्दू का बाँकपन, पंजाबी की जिंदादिली, ये सब एक साथ उनकी रचनाओं में मौजूद हैं।

सारांश- मियाँ नसीरुद्दीन शब्दचित्र **हम-हशमत** नामक संग्रह से लिया गया है। इसमें खानदानी नानबाई मियाँ नसीरुद्दीन के व्यक्तित्व, रुचियों और स्वभाव का शब्दचित्र खींचा गया है। मियाँ नसीरुद्दीन अपने मसीहाई अंदाज से रोटी पकाने की कला और उसमें अपनी खानदानी महारत बताते हैं। वे ऐसे इंसान का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जो अपने पेशे को कला का दर्जा देते हैं और करके सीखने को असली हुनर मानते हैं।

लेखिका बताती है कि एक दिन वह मटियामहल के गढ़ैया मुहल्ले की तरफ निकली तो एक अँधेरी व मामूली-सी दुकान पर आटे का ढेर सनते देखकर उसे कुछ जानने का मन हुआ। पूछताछ करने पर पता चला कि यह खानदानी नानबाई मियाँ नसीरुद्दीन की दुकान है। ये छप्पन किस्म की रोटियाँ बनाने के लिए मशहूर हैं। मियाँ चारपाई पर बैठे बीड़ी पी रहे थे। उनके चेहरे पर अनुभव और आँखों में चुस्ती व माथे पर कारीगर के तेवर थे।

लेखिका के प्रश्न पूछने की बात पर उन्होंने अखबारों पर व्यंग्य किया। वे अखबार बनाने वाले व पढ़ने वाले दोनों को निठल्ला समझते हैं। लेखिका ने प्रश्न पूछा कि आपने इतनी तरह की रोटियाँ बनाने का गुण कहाँ से सीखा? उन्होंने बेपरवाही से जवाब दिया कि यह उनका खानदानी पेशा है। इनके वालिद मियाँ बरकत शाही नानबाई थे और उनके दादा आला नानबाई मियाँ कल्लन थे। उन्होंने खानदानी शान का अहसास करते हुए बताया कि उन्होंने यह काम अपने पिता से सीखा।

नसीरुद्दीन ने बताया कि हमने यह सब मेहनत से सीखा। जिस तरह बच्चा पहले अलिफ से शुरू होकर आगे बढ़ता है या फिर कच्ची, पक्की, दूसरी से होते हुए ऊँची जमात में पहुँच जाता है, उसी तरह हमने भी छोटे-छोटे काम-बर्तन धोना, भट्ठी बनाना, भट्ठी को आँच देना आदि करके यह हुनर पाया है। तालीम की तालीम भी बड़ी चीज होती है।

खानदान के नाम पर वे गर्व से फूल उठते हैं। उन्होंने बताया कि एक बार बादशाह सलामत ने उनके बुर्जुर्गों से कहा कि ऐसी चीज बनाओ जो आग से न पके, न पानी से बने। उन्होंने ऐसी चीज बनाई और बादशाह को खूब पसंद आई। वे बड़ाई करते हैं कि खानदानी नानबाई कुएँ में भी रोटी पका सकता है। लेखिका ने इस कहावत की सच्चाई पर प्रश्नचिहन लगाया तो वे भड़क उठे। लेखिका जानना चाहती थी कि उनके बुजुर्ग किस बादशाह के यहाँ

काम करते थे। अब उनका स्वर बदल गया। वे बादशाह का नाम स्वयं भी नहीं जानते थे। वे इधर-उधर की बातें करने लगे। अंत में खीझकर बोले कि आपको कौन-सा उस बादशाह के नाम चिट्ठी-पत्री भेजनी है।

लेखिका से पीछा छुड़ाने की गरज से उन्होंने बब्बन मियाँ को भट्टी सुलगाने का आदेश दिया। लेखिका ने उनके बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि वे उन्हें मजदूरी देते हैं। लेखिका ने रोटियों की किस्में जानने की इच्छा जताई तो उन्होंने फटाफट नाम गिनवा दिए। फिर तुनक कर बोले-तुनकी पापड़ से ज्यादा महीन होती है। फिर वे यादों में खो गए और कहने लगे कि अब समय बदल गया है। अब खाने-पकाने का शौक पहले की तरह नहीं रह गया है और न अब कद्र करने वाले हैं। अब तो भारी और मोटी तंदूरी रोटी का बोलबाला है। हर व्यक्ति जल्दी में है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

मियाँ कुछ देर सोच में खोए रहे। सोचा पकवान पर रोशनी डालने को है कि नसीरुद्दीन साहिब बड़ी रुखाई से बोले- यह हम न बतावेंगे। बस, आप इत्ता समझ लीजिए कि एक कहावत है न कि खानदानी नानबाई कुएँ में भी रोटी पका सकता है। कहावत जब भी गढ़ी गई हो, हमारे बुज़ुर्गों के करतब पर ही पूरी उतरती है।' मज़ा लेने के लिए टोका- 'कहावत यह सच्ची भी है कि..मियाँ ने तरेरा-और क्या झूठी है? आप ही बताइए, रोटी पकाने में झूठ का क्या काम! झूठ से रोटी पकेगी? क्या पकती देखी है कभी! रोटी जनाब पकती है आँच से, समझे!

(i) मियाँ कुछ देर सोच में खोए रहे- इस पर लेखिका को क्या लगा?
क- मियाँ कुछ जवाब नहीं देंगे
ख- मियाँ को कुछ याद न रहा
ग-कोई नई कहानी बना रहे होंगे
घ- पकवान पर रोशनी डालना चाहते हैं

(ii) मियाँ नसीरुद्दीन ने खानदानी नानबाई की किस खूबी की ओर संकेत किया?
क- मियाँ के बारे में बता सकता है
ख- कोई भी कहानी गढ़ सकता है
ग- कुएँ में भी रोटी पका सकता है
घ- कैसा भी पकवान बना सकता है

(iii) 'कहावत यह सच्ची भी है कि..लेखिका ने ऐसा क्यों कहा?
क- असली बात पता करने के लिए
ख- मज़ा लेने के लिए
ग- चिढ़ाने के लिए
घ- इनमें से कोई नहीं

(iv) रोटी जनाब पकती है आँच से, समझे! ऐसा किसने कहा?
क- लेखिका ने
ख- उस्ताद ने
ग- शागिर्द ने
घ- मियाँनसीरुद्दीन ने

(v) मियाँनसीरुद्दीन ने अपने बुज़ुर्गों के माध्यम से क्या सिद्ध करना चाहा?
क- वे एक खानदानी नानबाई हैं
ख- उनके बुज़ुर्गों भी खानदानी नानबाई थे
ग- वे कुएँ में भी रोटी पका सकते हैं

घ- उपर्युक्त सभी

उत्तर-(i) घ- पकवान पर रोशनी डालना चाहते हैं (ii)ग- कुएँ में भी रोटी पका सकता है(iii) ख- मज़ा लेने के लिए (iv) घ- मियाँनसीरुद्दीन ने (v) घ- उपर्युक्त सभी

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 मियाँ नसीरुददीन को नानबाइयों का मसीहा क्यों कहा गया है?

उत्तर- मियाँ नसीरुद्दीन को नानबाइयों का मसीहा कहा गया है क्योंकि वे मसीहाई अंदाज से रोटी पकाने की कला का बखान करते थे। वे नानबाई हुनर में माहिर थे। उन्हें छप्पन तरह की रोटियाँ बनानी आती थी। यह तीन पीढियों से उनका खानदानी पेशा था। उनके दादा और पिता बादशाह सलामत के यहाँ शाही बावर्ची खाने में बादशाह की खिदमत किया करते थे। मियाँ रोटी बनाने को कला मानते हैं तथा स्वयं को उस्ताद कहते हैं। उनका बातचीत करने का ढंग भी महान कलाकारों जैसा है।

प्रश्न-2 लेखिका मियाँ नसीरुददीन के पास क्यों गई थी?

उत्तर- लेखिका मियाँ नसीरुद्दीन के पास इसलिए गई थी ताकि वे रोटी बनाने की कारीगरी को जाने तथा उसे लोगों को बता सके। मियाँ छप्पन तरह की रोटियाँ बनाने के लिए मशहूर थे। वह उनकी इस कारीगरी का रहस्य भी जानना चाहती थी। इसलिए उसने मियाँ से अनेक प्रश्न पूछे।

प्रश्न-3 बादशाह के नाम का प्रसंग आते ही लेखिका की बातों में मियाँ नसीरुददीन की दिलचस्पी क्यों खत्म होने लगी?

उत्तर- मियाँ नसीरुद्दीन अपनी कला में माहिर सुप्रसिद्ध नानबाई थे। वे स्वभाव से बड़े बातूनी और अपनी तारीफ़ स्वयं करनेवाले भी थे। बातचीत के दौरान उन्होंने लेखक को बताया कि तीन पीढ़ियों से वे खानदानी नानबाई हैं। उनके दादा और वालिद मरहूम बादशाह सलामत के शाही बावर्चीखाने में ऐसे पकवान पकाया करते थे कि बादशाह सलामत खूब खाते और सराहते थे। इस पर लेखिका ने उनसे बादशाह का नाम पूछा तो वे नाराज होकर बोले क्या कीजिएगा? कोई चिट्ठी-रुक्का भेजना है? और यह कहकर वे उखड़ गए? ऐसा जान पड़ता है कि बादशाह के विषय में वे झूठ कह रहे थे। इसी कारण रुखाई से अपने काम में लग गए।

प्रश्न-4 मियाँ नसीरुददीन के चेहरे पर किसी दबे हुए अंधड़ के आसार देख यह मजमून न छेड़ने का फैसला किया-इस कथन के पहले और बाद के प्रसंग का उल्लेख करते हुए इसे स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- लेखिका ने मियाँ नसीरुद्दीन से बादशाह का नाम पूछा तो वे सही उत्तर नहीं दे पाए। लेखिका द्वारा बहादुरशाह ज़फ़र का नाम लेने पर वह चिढ़ गए और बोले कि यही नाम लिख लीजिए, आपको कौन-सी बादशाह के नाम चिट्ठी भेजनी है। वह लेखिका की बातों से उकता गए थे इसलिए उन्होंने उसे नज़रअंदाज़ करने के लिए अपने कारीगर बब्बन मियाँ को भट्ठी सुलगाने का आदेश दिया। लेखिका उनके बेटे-बेटियों के बारे में जानना चाहती थी, परंतु मियाँ को चिढ़ता देख वह चुप रह गई, फिर उसने पूछा कि कारीगर लोग आपकी शागिर्दी करते हैं? तो मियाँ ने गुस्से में उत्तर दिया कि खाली शागिर्दी ही नहीं, दो रुपये मन आटा और चार रुपये मन मैदा के हिसाब से इन्हें गिन-गिन कर मजूरी भी देता हूँ। लेखिका द्वारा रोटियों के नाम पूछने पर मियाँ ने पल्ला झाड़ते हुए कुछ रोटियों के नाम गिना दिए। इसके बाद लेखिका ने उनके चेहरे पर तनाव देखा।

प्रश्न-5 पाठ में मियाँ नसीरुददीन का शब्दचित्र लेखिका ने कैसे खींचा है?

उत्तर- पाठ में मियाँ नसीरुद्दीन का शब्दचित्र लेखिका ने इस प्रकार खींचा है-हमने जो अंदर झाँका तो पाया, मियाँ चारपाई पर बैठे बीड़ी का मज़ा ले रहे हैं। मौसमों की मार से पका चेहरा, आँखों में काइयाँ, भोलापन और पेशानी पर मंझे हुए कारीगर के तेवर।

प्रश्न-6 मियाँ नसीरुददीन की कौन-सी बातें आपको अच्छी लगीं?

उत्तर- मियाँ नसीरुद्दीन की सबसे अच्छी बात है–अपने हुनर में माहिर होना। आज जब अधिकांश लोग अपने पारंपरिक पेशे को छोड़ते जा रहे हैं तो ऐसे लोग ही कला को जीवित रखते हैं। दूसरी बात जो उन्होंने कही थी कि 'सीख और शिक्षा क्या? काम तो करने से आता है'-कर्म करने में विश्वास रखना एक बड़ी बात है। आज लोग आरामतलबी में पड़कर अपनी क्षमता खो देते हैं, पर वे बुजुर्ग होकर भी व्यस्त थे। और तीसरी बात, वे अखबारवालों से दूर ही रहना पसंद करते थे।

प्रश्न-7 तालीम की तालीम ही बड़ी चीज़ होती है-यहाँ लेखिका ने तालीम शब्द का दो बार प्रयोग क्यों किया है? क्या आप दूसरी बार आए तालीम शब्द की जगह कोई अन्य शब्द रख सकते हैं? लिखिए।

उत्तर- यहाँ 'तालीम' शब्द का दो बार प्रयोग किया गया है। पहले 'तालीम' का अर्थ है-शिक्षा या प्रशिक्षण। दूसरे 'तालीम' का अर्थ है-पालन करना या आचरण करना। इसका अर्थ यह है कि जो शिक्षा पाई जाए, उसका पालन करना अधिक जरूरी है। दूसरी बार आए तालीम की जगह हम 'पालन' शब्द भी लिख सकते हैं।

प्रश्न-8 मियाँ नसीरुददीन तीसरी पीढ़ी के हैं जिसने अपने खानदानी व्यवसाय को अपनाया। वर्तमान समय में प्राय: लोग अपने पारंपरिक व्यवसाय को नहीं अपना रहे हैं। ऐसा क्यों?

उत्तर- आज के परिवेश में अनेक हुनरमंद लोग अपनी संतान को उसी कला को व्यवसाय बनाने की सलाह नहीं देते या संतान स्वयं ऐसा नहीं चाहती। इसका मुख्य कारण है कि खानदानी व्यवसाय में धन-लाभ के अवसर अपेक्षाकृत कम रहते हैं। दूसरा कारण यह भी है कि आजकल खानदानी हुनर के प्रशंसक नहीं रहे। आधुनिकता और भौतिकता के युग में कला को मान नहीं मिल रहा।

प्रश्न-9 मियाँ, कहीं अखबारनवीस तो नहीं हो? यह तो खोज़ियों की खुराफात है-अखबार की भूमिका को देखते हुए इस पर टिप्पणी करें।

उत्तर- मियाँ नसीरुद्दीन के अनुसार अखबार बनाने वाला व पढ़ने वाला-दोनों निठल्ले हैं। उनका यह दृष्टिकोण गलत है। वे उन्हें खोजियों की खुराफ़ात कहते हैं। यह कथन ठीक है। पत्रकार नए-नए तथ्यों को प्रकाश में लाते हैं। इससे लोगों का शोषण खत्म होता है। नयी खोजों से ज्ञान का प्रसार होता है, परंतु निरर्थक या भ्रम फैलाने वाली बातों को तूल देना सामाजिक दृष्टि से गलत है। सनसनीखेज खबरों से शांति भंग होती है।

3. अपू के साथ ढाई साल - सत्यजित राय

जन्म-1921 ई., कोलकाता, (पश्चिम बंगाल)। निधन-1992 ई.। कार्यक्षेत्र-फ़िल्म निर्देशन। रचनाएँ-प्रो. शंकु के कारनामे, सोने का किला, जहाँगीर की स्वर्ण मुद्रा, बादशाही अँगूठी। फ़िल्में- अपराजिता, अपू का संसार, जलसाघर, देवी चारुलता, महानगर पथेर पांचाली।पाठ के शब्द- शूटिंग, स्थगित, बेहाल, नामुमकिन, नवागत, शॉट्स, सीन, कमान। मुख्य पात्र- अपू, दुर्गा, भूलो (कुत्ता),

जीवन परिचय- सत्यजित राय का जन्म कोलकाता में 1921 ई. में हुआ। इन्होंने भारतीय सिनेमा को कलात्मक ऊँचाई प्रदान की। इनके निर्देशन में पहली फीचर फिल्म पथेर पांचाली (बांग्ला) 1955 में प्रदर्शित हुई। इससे उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। इन्होंने फिल्मों के जरिए केवल फिल्म विधा को समृद्ध ही नहीं किया, बल्कि इस माध्यम के बारे में निर्देशकों और आलोचकों के बीच एक समझ विकसित करने में भी अपना योगदान दिया। इनके कार्यों को देखते हुए इन्हें कई पुरस्कार दिए गए। इन्हें फ्रांस का लेजन डी ऑनर, जीवन की उपलब्धियों पर आस्कर और भारतरत्न सहित फिल्म जगत का हर महत्वपूर्ण सम्मान मिला। इनकी मृत्यु 1992 ई. में हुई।

रचनाएँ- सत्यजीत राय फिल्म निर्देशक तो थे ही, वे बाल व किशोर साहित्य भी लिखते थे। इनकी रचनाएँ हैं- प्रो. शंकु के कारनामे, सोने का किला, जहाँगीर की स्वर्ण मुद्रा, बादशाही अँगूठी (बांग्ला)शतरंज के खिलाडी, सद्गति (हिंदी)।

साहित्यिक विशेषताएँ- सत्यजित राय ने तीस के लगभग फीचर फिल्में बनाई। इनकी ज्यादातर फिल्में साहित्यिक कृतियों पर आधारित हैं। इनके पसंदीदा साहित्यकारों में बांग्ला के विभूति भूषण बंद्योपाध्याय से लेकर हिदी के प्रेमचंद तक शामिल हैं। फिल्मों के पटकथा-लेखन, संगीत-संयोजन एवं निर्देशन के अलावा इन्होंने बांग्ला में बच्चों और किशोरों के लिए लेखन का काम भी बहुत संजीदगी के साथ किया है। इनकी कहानियों में जासूसी रोमांच के साथ-साथ पेड़-पौधे तथा पशु-पक्षियों का सहज संसार भी है।

सारांश- अपू के साथ ढाई साल नामक संस्मरण **पथेर पांचाली** फिल्म के अनुभवों से संबंधित है जिसका निर्माण भारतीय फिल्म के इतिहास में एक बड़ी घटना के रूप में दर्ज है। इससे फिल्म के सृजन और उनके व्याकरण से संबंधित कई बारीकियों का पता चलता है। यही नहीं, जो फिल्मी दुनिया हमें अपने ग्लैमर से चौंधियाती हुई जान पड़ती है, उसका एक ऐसा सच हमारे सामने आता है, जिसमें साधनहीनता के बीच अपनी कलादृष्टि को साकार करने का संघर्ष भी है। यह पाठ मूल रूप से बांग्ला भाषा में लिखा गया है जिसका अनुवाद **विलास गिते** ने किया है।

किसी फिल्मकार के लिए उसकी पहली फिल्म एक अबूझ पहेली होती है। बनने या न बन पाने की अमूर्त शंकाओं से घिरी। फिल्म पूरी होने पर ही फिल्मकार जन्म लेता है। पहली फिल्म के निर्माण के दौरान हर फिल्म निर्माता का अनुभव संसार इतना रोमांचकारी होता है कि वह उसके जीवन में बचपन की स्मृतियों की तरह हमेशा जीवंत बना रहता है। इस अनुभव संसार में दाखिल होना उस बेहतरीन फिल्म से गुजरने से कम नहीं है लेखक बताता है कि **पथेर पांचाली** फिल्म की शूटिंग ढाई साल तक चली। उस समय वह विज्ञापन कंपनी में काम करता था। काम से फुर्सत मिलते ही और पैसे होने पर शूटिंग की जाती थी। शूटिंग शुरू करने से पहले कलाकार इकट्ठे करने के लिए बड़ा आयोजन किया गया। अपू की भूमिका निभाने के लिए छह साल का लड़का नहीं मिल रहा था। इसके लिए अखबार में विज्ञापन दिया। रासबिहारी एवेन्यू के एक भवन में किराए के कमरे पर बच्चे इंटरव्यू के लिए आते थे। एक सज्जन तो अपनी लड़की के बाल कटवाकर लाए थे। लेखक परेशान हो गया। एक दिन लेखक की पत्नी की नज़र पड़ोस में रहने वाले लड़के पर पड़ी और वह सुबीर बनर्जी ही 'पथेर पांचाली' में अपू बना।

फिल्म में अधिक समय लगने लगा तो लेखक को यह डर लगने लगा कि अगर अपू और दुर्गा नामक बच्चे बड़े हो गए तो दिक्कत हो जाएगी। सौभाग्य से वे नहीं बढ़े। फिल्म की शूटिंग के लिए वे पालसिट नामक गाँव गए। वहाँ रेल-लाइन के पास काशफूलों से भरा मैदान था। उस मैदान में शूटिंग शुरू हुई। एक दिन में आधी शूटिंग हुई। निर्देशक, छायाकार, कलाकार आदि सभी नए होने के कारण घबराए हुए थे। बाकी का सीन बाद में शूट करना था। सात दिन बाद वहाँ दोबारा पहुँचे तो काशफूल गायब थे। उन्हें जानवर खा गए। अत: आधे सीन की शूटिंग के लिए अगली शरद ऋतु की प्रतीक्षा करनी पड़ी।

अगले वर्ष शूटिंग हुई। उसी समय रेलगाड़ी के शॉट्स भी लिए गए। कई शॉट्स होने के लिए तीन रेलगाड़ियों से शूटिंग की गई। कलाकार दल का एक सदस्य पहले से ही गाड़ी के इंजन में सवार होता था ताकि वह शॉट्स वाले दृश्य में बायलर में कोयला डालता जाए और रेलगाड़ी का धुआँ निकलता दिख सके। सफेद काशफूलों की पृष्ठभूमि पर काला धुआँ अच्छा सीन दिखाता है। इस सीन को कोई दर्शक नहीं पहचान पाया।

लेखक को धन की कमी से कई समस्याएँ झेलनी पड़ीं। फिल्म में 'भूलो' नामक कुत्ते के लिए गाँव का कुत्ता लिया गया। दृश्य में कुत्ते को भात खाते हुए दिखाया जाना था, परंतु जैसे ही यह शॉट शुरू होने को था, सूरज की रोशनी व पैसे-दोनों ही खत्म हो गए। छह महीने बाद पैसे इकट्ठे करके बोडाल गाँव पहुँचे तो पता चला कि वह कुत्ता मर गया था। फिर भूलो जैसा दिखने वाला कुत्ता पकड़ा गया और उससे फिल्म की शूटिंग पूरी की गई। लेखक को आदमी के संदर्भ में भी यही समस्या हुई। फिल्म में मिठाई बेचने वाला है-श्रीनिवास। अपू व दुर्गा के पास पैसे नहीं थे। वे मुखर्जी के घर गए जो उससे मिठाई खरीदेंगे और बच्चे मिठाई खरीदते देखकर ही खुश होंगे। पैसे के अभाव के

कारण दृश्य का कुछ अंश चित्रित किया गया। बाद में वहाँ पहुँचे तो श्रीनिवास का देहांत हो चुका था। किसी तरह उनके शरीर से मिलता-जुलता व्यक्ति मिला और उनकी पीठ वाले दृश्य से शूटिंग पूरी की गई।

श्रीनिवास के सीन में भूलो कुत्ते के कारण भी परेशानी हुई। एक खास सीन में दुर्गा व अपू को मिठाई वाले के पीछे दौड़ना होता है तथा उसी समय झुरमुट में बैठे भूलो कुत्ते को भी छलाँग लगाकर दौड़ना होता है। भूलो प्रशिक्षित नहीं था, अत: वह मालिक की आज्ञा को नहीं मान रहा था। अंत में दुर्गा के हाथ में थोड़ी मिठाई छिपा कुत्ते को दिखाकर दौड़ने की योजना से शूटिंग पूरी की गई।

बारिश के दृश्य चित्रित करने में पैसे का अभाव परेशान करता था। बरसात में पैसे नहीं थे। अक्टूबर में बारिश की संभावना कम थी। वे हर रोज देहात में बारिश का इंतजार करते। एक दिन शरद ऋतु में बादल आए और धुआँधार बारिश हुई। दुर्गा व अप्पू ने बारिश में भीगने का सीन किया। ठंड से दोनों काँप रहे थे, फिर उन्हें दूध में ब्रांडी मिलाकर पिलाई गई। बोडाल गाँव में अपू-दुर्गा का घर, स्कूल, गाँव के मैदान, खेत, आम के पेड़, बाँस की झुरमुट आदि मिले। यहाँ उन्हें कई तरह के विचित्र व्यक्ति भी मिले। सुबोध दा साठ वर्ष से अधिक के थे और झोंपड़ी में अकेले रहकर बड़बड़ाते रहते थे। फिल्मवालों को देखकर उन्हें मारने की कहने लगे। बाद में वे वायलिन पर लोकगीतों की धुनें बजाकर सुनाते थे। वे सनकी थे।

इसी तरह शूटिंग के साथ वाले घर में एक धोबी था जो पागल था। वह किसी समय राजकीय मुद्दे पर भाषण देने लगता था। शूटिंग के दौरान उसके भाषण साउंड के काम को प्रभावित करता था। **पथेर पांचाली** की शूटिंग के लिए लिया गया घर खंडहर था। उसे ठीक करवाने में एक महीना लगा। इस घर के कई कमरों में सामान रखा था तथा उन्हें फिल्म में नहीं दिखाया गया था। भूपेन बाबू एक कमरे में रिकॉर्डिंग मशीन लेकर बैठते थे। वे साउंड के बारे में बताते थे। एक दिन जब उनसे साउंड के बारे में पूछा गया तो आवाज नदारद थी। उनके कमरे से एक बड़ा साँप खिड़की से नीचे उतर रहा था। उनकी बोलती बंद थी। लोगों ने उसे मारने से रोका, क्योंकि वह वास्तुसर्प था जो बहुत दिनों से वहाँ रह रहा था।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

सुबह शूटिंग शुरू करके शाम तक हमने सीन का आधा भाग चित्रित किया। निर्देशक, छायाकार, छोटे अभिनेता-अभिनेत्री हम सभी इस क्षेत्र में नवागत होने के कारण थोड़े बौराए हुए ही थे, बाकी का सीन बाद में चित्रित करने का निर्णय लेकर हम घर पहुँचे। सात दिन बाद शूटिंग के लिए उस जगह गए, तो वह जगह हम पहचान ही नहीं पाए! लगा ये कहाँ आ गए हैं हम? कहाँ गए वे सारे काशफूल। बीच के सात दिनों में जानवरों ने वे सारे काशफूल खा डाले थे! अब अगर हम उस जगह बाकी आधे सीन की शूटिंग करते, तो पहले आधे सीन के साथ उसका मेल कैसे बैठता? उसमें से 'कंटिन्युइटी' नदारद हो जाती!

(i) सुबह शूटिंग शुरू करके शाम तक लेखक ने सीन का कितना भाग चित्रित किया?

क- पूरी शूटिंग की

ख- आधा भाग

ग- एक-चौथाई

घ- तीन भाग

(ii) निर्देशक, छायाकार, छोटे अभिनेता-अभिनेत्री और लेखक क्यों बौराए हुए थे?

क- शूटिंग पूरी हो जाने के कारण

ख- शूटिंग खत्म न होने के कारण

ग- नवागत होने के कारण

घ- इनमें से कोई नहीं

(iii) वे सात दिन बाद शूटिंग के लिए उस जगह गए, तो क्या हुआ?
क- उस जगह को पहचान ही नहीं पाए
ख- शूटिंग पूरी नहीं हुई
ग- वहाँ जानवर आ गए
घ- वहाँ कोई न था

(iv) बीते सात दिनों में जानवरों ने क्या किया?
क- उस जगह पर कोई नहीं गया
ख- शूटिंग पूरी हुई
ग-सारे काशफूल खा डाले थे
घ-वे वहीं रुके रहे

(v) अपू के साथ ढाई साल पाठ के लेखक का क्या नाम है?
क- प्रेमचंद
ख- सत्यजित राय
ग-कृष्णा सोबती
घ-बालमुकुंद गुप्त

उत्तर-(i) ख- आधा भाग (ii) ग-नवागत होने के कारण (iii) क- उस जगह को पहचान ही नहीं पाए (iv) ग- सारे काशफूल खा डाले थे (v) ख- सत्यजित राय

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 पथेर पांचाली फिल्म की शूटिंग का काम ढाई साल तक क्यों चला?
उत्तर- 'पथेर पांचाली' फ़िल्म की शूटिंग का काम ढाई साल तक चला। इसके कई कारण थे-लेखक के पास पैसों का अभाव था। पैसे इकट्ठे होने पर ही वह शूटिंग करता था।वह एक विज्ञापन कंपनी में काम करता था। इसलिए काम से फुर्सत होने पर ही लेखक तथा अन्य कलाकार फिल्म की शूटिंग का काम करते थे। पात्रों के मर जाने एवं तकनीकी पिछड़ेपन के कारण भी पात्र, स्थान, दृश्य आदि की समस्याएँ आ जाती थीं।

प्रश्न-2 अब अगर हम उस जगह बाकी आधे सीन की शूटिंग करते, तो पहले आधे सीन के साथ उसका मेल कैसे बैठता? उसमें से 'कंटिन्युइटी' नदारद हो जाती-इस कथन के पीछे क्या भाव है?

उत्तर- इसके पीछे भाव यह है कि कोई भी फिल्म हमें तभी प्रभावित कर पाती है जब उसमें निरंतरता हो। यदि एक दृश्य में ही एकरूपता नहीं होती तो फिल्म कैसे चल पाती। दर्शक भ्रमित हो जाता है। पथेर पांचाली फ़िल्म में काशफूलों के साथ शूटिंग पूरी करनी थी, परंतु एक सप्ताह के अंतराल में पशु उन्हें खा गए। अत: उसी पृष्ठभूमि में दृश्य चित्रित करने के लिए एक वर्ष तक इंतजार करना पड़ा। यदि यह आधा दृश्य काशफूलों के बिना चित्रित किया जाता तो दृश्य में निरंतरता नहीं बन पाती।

प्रश्न-3 किन दो दृश्यों में दर्शक यह पहचान नहीं पाते कि उनकी शूटिंग में कोई तरकीब अपनाई गई है?
उत्तर- प्रथम दृश्य- इस दृश्य में 'भूलो' नामक कुत्ते को अपू की माँ द्वारा गमले में डाले गए भात को खाते हुए चित्रित करना था, परंतु सूर्य के अस्त होने तथा पैसे खत्म होने के कारण यह दृश्य चित्रित न हो सका। छह महीने बाद लेखक पुन: उस स्थान पर गया तब तक उस कुत्ते की मौत हो चुकी थी। काफी प्रयास के बाद उससे मिलता-जुलता

कुत्ता मिला और उसी से भात खाते हुए दृश्य को फ़िल्माया गया। यह दृश्य इतना स्वाभाविक था कि कोई भी दर्शक उसे पहचान नहीं पाया।

दूसरा दृश्य- इस दृश्य में श्रीनिवास नामक व्यक्ति मिठाई वाले की भूमिका निभा रहा था। बीच में शूटिंग रोकनी पड़ी। दोबारा उस स्थान पर जाने से पता चला कि उस व्यक्ति का देहांत हो गया है, फिर लेखक ने उससे मिलते-जुलते व्यक्ति को लेकर बाकी दृश्य फ़िल्माया। पहला श्रीनिवास बाँस वन से बाहर आता है और दूसरा श्रीनिवास कैमरे की ओर पीठ करके मुखर्जी के घर के गेट के अंदर जाता है। इस प्रकार इस दृश्य में दर्शक अलग-अलग कलाकारों की पहचान नहीं पाते।

प्रश्न-4 'भूलो' की जगह दूसरा कुत्ता क्यों लाया गया? उसने फिल्म के किस दृश्य को पूरा किया?

उत्तर- भूलो की मृत्यु हो गई थी, इस कारण उससे मिलता-जुलता कुत्ता लाया गया। फ़िल्म का दृश्य इस प्रकार था कि अप्पू की माँ उसे भात खिला रही थी। अपू तीर-कमान से खेलने के लिए उतावला है। भात खाते-खाते वह तीर छोड़ता है तथा उसे लाने के लिए भाग जाता है। माँ भी उसके पीछे दौड़ती है। भूलो कुत्ता वहीं खड़ा सब कुछ देख रहा है। उसका ध्यान भात की थाली की ओर है। यहाँ तक का दृश्य पहले भूलो कुत्ते पर फ़िल्माया गया था। इसके बाद के दृश्य में अपू की माँ बचा हुआ भात गमले में डाल देती है और भूलो वह भात खा जाता है। यह दृश्य दूसरे कुत्ते से पूरा किया गया।

प्रश्न-5 फिल्म में श्रीनिवास की क्या भूमिका थी और उनसे जुड़े बाकी दृश्यों को उनके गुजर जाने के बाद किस प्रकार फिल्माया गया?

उत्तर- फिल्म में श्रीनिवास की भूमिका मिठाई बेचने वाले की थी। उसके देहांत के बाद उसकी जैसी कद-काठी का व्यक्ति ढूँढ़ा गया। उसका चेहरा अलग था, परंतु शरीर श्रीनिवास जैसा ही था। ऐसे में फ़िल्मकार ने तरकीब लगाई। नया आदमी कैमरे की तरफ पीठ करके मुखर्जी के घर के गेट के अंदर आता है, अत: कोई भी अनुमान नहीं लगा पाता कि यह अलग व्यक्ति है।

प्रश्न-6 बारिश का दृश्य चित्रित करने मेंक्या मुश्किल आई और उसका समाधान किस प्रकार हुआ?

उत्तर- फ़िल्मकार के पास पैसे का अभाव था, अत: बारिश के दिनों में शूटिंग नहीं कर सके। अक्टूबर माह तक उनके पास पैसे इकट्ठे हुए तो बरसात के दिन समाप्त हो चुके थे। शरद ऋतु में बारिश होना भाग्य पर निर्भर था। लेखक हर रोज अपनी टीम के साथ गाँव में जाकर बैठे रहते और बादलों की ओर टकटकी लगाकर देखते रहते। एक दिन उनकी इच्छा पूरी हो गई। अचानक बादल छा गए और धुआँधार बारिश होने लगी। फिल्मकार ने इस बारिश का पूरा फायदा उठाया और दुर्गा और अपू का बारिश में भीगने वाला दृश्य शूट कर लिया। इस बरसात में भीगने से दोनों बच्चों को ठंड लग गई, परंतु दृश्य पूरा हो गया।

प्रश्न-7 किसी फिल्म की शूटिंग करते समय फिल्मकार को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उन्हें सूचीबद्ध कीजिए।

उत्तर- किसी फ़िल्म की शूटिंग करते समय फिल्मकार को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता है-

(क) धन की कमी। **(ख)** कलाकारों का चयन। **(ग)** कलाकारों के स्वास्थ्य, मृत्यु आदि की स्थिति। **(घ)** पशु-पात्रों के दृश्य की समस्या। **(ङ)** बाहरी दृश्यों हेतु लोकेशन ढूँढ़ना। **(च)** प्राकृतिक दृश्यों के लिए मौसम पर निर्भरता। **(छ)** स्थानीय लोगो का हस्तक्षेप व असहयोग। **(ज)** संगीत। **(झ)** दृश्यों की निरंतरता हेतु भटकना।

प्रश्न-8 पठित पाठ के आधार पर यह कह पाना कहाँ तक उचित है कि फिल्म को सत्यजित राय एक कला-माध्यम के रूप में देखते हैं, व्यावसायिक-माध्यम के रूप में नहीं?

उत्तर- यह बात पूर्णतया उचित है कि फ़िल्म को सत्यजित राय एक कला-माध्यम के रूप में देखते हैं, व्यावसायिक-माध्यम के रूप में नहीं। वे फिल्मों के दृश्यों के संयोजन में कोई लापरवाही नहीं बरतते। वे दृश्य को पूरा करने के लिए समय का इंतजार करते हैं। काशफूल वाले दृश्य में उन्होंने साल भर इंतजार किया। पैसे की तंगी के कारण वे

परेशान हुए, परंतु उन्होंने किसी से पैसा नहीं माँगा। वे स्टूडियो के दृश्य की बजाय प्राकृतिक दृश्य फिल्माते थे। वे कला को साधन मानते थे।

प्रश्न- 9 'वास्तुसर्प' क्या होता है? इससे लेखक का कौन-सा कार्य प्रभावित हुआ?

उत्तर- 'वास्तुसर्प' वह होता है जो घर में रहता है। लेखक ने एक गाँव में मकान शूटिंग के लिए किराये पर लिया। इसी मकान के कुछ कमरों में शूटिंग का सामान था। एक कमरे में साउंड रिकार्डिंग होती थी जहाँ भूपेन बाबू बैठते थे। वे साउंड की गुणवत्ता बताते थे। एक दिन उन्होंने उत्तर नहीं दिया। जब लोग कमरे में पहुँचे तो साँप, कमरे की खिड़की से नीचे उतर रहा था। इसी डर से भूपेन ने जवाब नहीं दिया।

प्रश्न- 10 लेखक को धोबी के कारण क्या परेशानी होती थी?
उत्तर- लेखक बोडाल गाँव के जिस घर में शूटिंग करता था, उसके पड़ोस में एक धोबी रहता था। वह अकसर 'भाइयो और बहनो!' कहकर किसी राजनीतिक मामले पर लंबा-चौड़ा भाषण शुरू कर देता था। शूटिंग के समय उसके भाषण से साउंड रिकार्डिंग का काम प्रभावित होता था। धोबी के रिश्तेदारों ने उसे सँभाला।

प्रश्न-11 'सुबोध दा' कौन थे? उनका व्यवहार कैसा था?

उत्तर- 'सुबोध दा' 60-65 आयु का विक्षिप्त वृद्ध था। वह हर वक्त कुछ-न-कुछ बड़बड़ाता रहता था। पहले वह फ़िल्म वालों को मारने दौड़ता है, परंतु बाद में वह लेखक को वायलिन पर लोकगीतों की धुनें सुनाता है। वह आते-जाते व्यक्ति को रुजवेल्ट, चर्चिल, हिटलर, अब्दुल गफ्फार खान आदि कहता है। उसके अनुसार सभी पाजी और उसके दुश्मन हैं।

प्रश्न- 12 'कंटिन्युइटी' नदारद हो जाती - यह वाक्य किस प्रसंग में आया है?

उत्तर- अपू और दुर्गा काशफूलों से भरे एक मैदान से रेलगाड़ी जाते हुए पहली बार देखते हैं- इस तरह के एक दृश्य की शूटिंग होनी थी। इस दृश्य की शूटिंग एक दिन में हो पाना मुमकिन नहीं था।लेखक सुबह से शूटिंग शुरू करके दृश्य का केवल आधा भाग की चित्रित कर पाया। जगद्धात्री का त्योहार होने के कारण बाकी का सीन बाद में चित्रित करने का निर्णय लेकर सभी घर वापस लौट गए। सात दिन बाद पुन: शूटिंग के लिए आये तो जानवरों ने सारे काशफूल खा डाले थे। अब अगर बचे हुए आधे सीन की शूटिंग होती तो पहले आधे सीन से उसका मेल ही नहीं बैठता। यह वाक्य इसी प्रसंग में आया है।

4. विदाई संभाषण – बालमुकुंद गुप्त

जन्म-1865 ई.,रोहतक(हरियाणा)। निधन-1907 ई.। रचनाएँ-शिवशंभु के चिट्ठे, चिट्ठे और खत, खेल तमाशा। प्रमुख संपादन- 'अखबार-ए-चुनार''हिंदुस्तान', हिंदी बंगवासी', 'भारतमित्र'।भाषा- हिन्दी। पाठ के मुख्य शब्द-चिरस्थाई, वाइसराय, काबू, पधारें, आविर्भाव, सूत्रधार, लीला, लेडी, दर्जा, कौंसिल, तिलांजलि, प्रलय, इच्छित, अवधि, कैसर, कत्लेआम, पराधीनता।

जीवन परिचय- बालमुकुंद गुप्त का जन्म 1865 ई. में हरियाणा के रोहतक जिले के गुड़ियानी गाँव में हुआ।इनके पिता का नाम लाला पूरनमल था। इनकी आरंभिक शिक्षा गाँव में ही उर्दू भाषा में हुई। इन्होंने हिंदी बाद मेंसीखी। इन्होंने मिडिल कक्षा तक पढ़ाई की, परंतु स्वाध्याय से काफी ज्ञान अर्जित किया। ये खड़ी बोली और आधुनिक हिंदी साहित्य

को स्थापित करने वाले लेखकों में से एक थे।इन्होंने कई अखबारों का संपादन किया। इन्होंने उर्दू के दो पत्रों 'अखबार-ए-चुनार' तथा 'कोहेनूर' का संपादन किया। बाद में हिंदी के समाचार-पत्रों'हिंदुस्तान', हिंदी बंगवासी', 'भारतमित्र' आदि का संपादन किया। इनका देहावसान बहुत कम आयु में 1907 ई. में हुआ।

रचनाएँ- इनकी रचनाएँ पाँच संग्रहों में प्रकाशित हुई हैं-
शिवशंभु के चिट्ठे, चिट्ठे और खत, खेल तमाशा, गुप्त निबंधावली, स्फुट कविताएँ।

साहित्यिक विशेषताएँ- गुप्त जी भारतेंदु युग और द्विवेदी युग के बीच की कड़ी के रूप में थे। ये राष्ट्रीय नवजागरण के सक्रिय पत्रकार थे। उस दौर के अन्य पत्रकारों की तरह वे साहित्य-सृजन में भी सक्रिय रहे। पत्रकारिता उनके लिए स्वाधीनता-संग्राम का हथियार थी। यही कारण है कि उनके लेखन में निर्भीकता पूरी तरह मौजूद है।इनकी रचनाओं में व्यंग्य-विनोद का भी पुट दिखाई पड़ता है। इन्होंने बांग्ला और संस्कृत की कुछ रचनाओं के अनुवाद भी किए। वे शब्दों के अद्भुत पारखी थे। अनस्थिरता शब्द की शुद्धता को लेकर उन्होंने महावीर प्रसाद द्विवेदी से लंबी बहस की।

सारांश- प्रस्तुत पाठ वायसराय कर्जन जो 1899-1904 व 1904-1905 तक दो बार वायसराय रहे, के शासन में भारतीयों की स्थिति का खुलासा करता है। यह अध्याय **शिवशंभु के चिट्ठे** का अंश है। कर्जन के शासनकाल में विकास के बहुत कार्य हुए, नए-नए आयोग बनाए गए, किंतु उन सबका उद्देश्य शासन में गोरों का वर्चस्व स्थापित करना तथा इस देश के संसाधनों का अंग्रेजों के हित में सर्वोत्तम उपयोग करना था। कर्जन ने हर स्तर पर अंग्रेजों का वर्चस्व स्थापित करने की चेष्टा की। वे सरकारी निरंकुशता के पक्षधर थे। लिहाजा प्रेस की स्वतंत्रता पर उन्होंने प्रतिबंध लगा दिया। अंततः कौंसिल में मनपसंद अंग्रेज सदस्य नियुक्त करवाने के मुद्दे पर उन्हें देश-विदेश दोनों जगहों पर नीचा देखना पड़ा। क्षुब्ध होकर उन्होंने इस्तीफा दे दिया और वापस इंग्लैंड चले गए।

लेखक ने भारतीयों की बेबसी, दुख एवं लाचारी को व्यंग्यात्मक ढंग से लॉर्ड कर्जन की लाचारी से जोड़ने की कोशिश की है। साथ ही यह बताने की कोशिश की है कि शासन के आततायी रूप से हर किसी को कष्ट होता है चाहे वह सामान्य जनता हो या फिर लॉर्ड कर्जन जैसा वायसराय। यह निबंध उस समय लिखा गया है जब प्रेस पर पाबंदी का दौर चल रहा था। ऐसी स्थिति में विनोदप्रियता, चुलबुलापन, संजीदगी, नवीन भाषा-प्रयोग एवं रवानगी के साथ यह एक साहसिक गद्य का नमूना है।

लेखक कर्जन को संबोधित करते हुए कहता है कि आखिरकार आपके शासन का अंत हो ही गया, अन्यथा आप तो यहाँ के स्थाई वायसराय बनने की इच्छा रखते थे। इतनी जल्दी देश को छोड़ने की बात आपको व देशवासियों को पता नहीं थी। इससे ईश्वर-इच्छा का पता चलता है। आपके दूसरी बार आने पर भारतवासी प्रसन्न नहीं थे। वे आपके जाने की प्रतीक्षा करते थे, परंतु आपके जाने से लोग दु:खी हैं। बिछड़न का समय पवित्र, निर्मल व कोमल होता है। यह करुणा पैदा करने वाला होता है। भारत में तो पशु-पक्षी भी ऐसे समय उदास हो जाते हैं। शिवशंभु की दो गाएँ थीं। बलशाली गाय कमजोर को टक्कर मारती रहती थी। एक दिन बलशाली गाय को पुरोहित को दान दे दिया गया, परंतु उसके जाने के बाद कमजोर गाय प्रसन्न नहीं रही। उसने चारा भी नहीं खाया। यहाँ पशु ऐसे हैं तो मानव की दशा का अंदाजा लगाना मुश्किल होता है।

इस देश में पहले भी अनेक शासक आए और चले गए। यह परंपरा है, परंतु आपका शासनकाल दु:खों से भरा था। कर्जन ने सारा राजकाज सुखांत समझकर किया था, उसका अंत दु:ख में हुआ। वास्तव में लीलामय की लीला का किसी को पता नहीं चलता। दूसरी बार आने पर आपने ऐसे कार्य करने की सोची थी जिससे आगे के शासकों को परेशानी न हो, परंतु सब कुछ उलट गया। आप स्वयं बेचैन रहे और देश में अशांति फैला दी। आने वाले शासकों को परेशान रहना पड़ेगा। आपने स्वयं भी कष्ट सहे और लेखक कहता है कि आपका स्थान पहले बहुत ऊँचा था। आज आपकी दशा बहुत खराब है। दिल्ली दरबार में ईश्वर और एडवर्ड के बाद आपका सर्वोच्च स्थान था। आपकी कुर्सी सोने की थी। जुलूस में आपका हाथी सबसे आगे व ऊँचा था, परंतु जंगी लाट के मुकाबले में आपको नीचा देखना पड़ा। आप धीर व गंभीर थे, परंतु कौंसिल में गैरकानूनी कानून पास करके और कनवोकेशन में अनुचित भाषण देकर अपनी

धीरता का दिवाला निकाल दिया। आपके इस्तीफे की धमकी को स्वीकार कर लिया गया। आपके इशारों पर राजा, महाराजा, अफसर नाचते थे, परंतु इस इशारे में देश की शिक्षा और स्वाधीनता समाप्त हो गई। आपने देश में बंगाल विभाजन किया, परंतु आप अपनी मर्ज़ी से एक फौजी को इच्छित पद पर नहीं बैठा सके। अत: आपको इस्तीफा देना पड़ा।

लेखक कहता है कि आपका मनमाना शासन लोगों को याद रहेगा। आप ऊँचे चढ़कर गिरे हैं, परंतु गिरकर पड़े रहना अधिक दुखी करता है। ऐसे समय में व्यक्ति स्वयं से घृणा करने लगता है। आपने कभी प्रजा के हित की नहीं सोची। आपने आँख बंदकर हुक्म चलाए और किसी की नहीं सुनी। यह शासन का तरीका नहीं है। आपने हर काम अपनी जिद से पूरे किए। कैसर और जार भी घेरने-घोटने से प्रजा की बात सुनते थे। आपने कभी प्रजा को अपने समीप ही नहीं आने दिया। नादिरशाह ने भी आसिफजाह के तलवार गले में डालकर प्रार्थना करने पर कत्लेआम रोक दिया था, परंतु आपने आठ करोड़ जनता की प्रार्थना पर बंग-भंग रद्द करने का फैसला नहीं लिया। अब आपका जाना निश्चित है, परंतु आप बंग-भंग करके अपनी जिद पूरा करना चाहते हैं। ऐसे में प्रजा कहाँ जाकर अपना दु:ख जताए।

यहाँ की जनता ने आपकी जिद का फल देख लिया। जिद ने जनता को दु:खी किया, साथ ही आपको भी जिसके कारण आपको भी पद छोड़ना पड़ा। भारत की जनता दु:ख और कष्टों की अपेक्षा परिणाम का अधिक ध्यान रखती है। वह जानती है कि संसार में सब चीज़ों का अंत है। उन्हें भगवान पर विश्वास है। वे दु:ख सहकर भी पराधीनता का कष्ट झेल रहे हैं। आप ऐसी जनता की श्रद्धा-भक्ति नहीं जीत सके।

कर्जन अनपढ़ प्रजा का नाम एकाध बार लेते थे। यह जनता नर सुलतान नाम के राजकुमार के गीत गाती है। यह राजकुमार संकट में नरवरगढ़ नामक स्थान पर कई साल रहा। उसने चौकीदारी से लेकर ऊँचे पद तक काम किया। जाते समय उसने नगर का अभिवादन किया कि वह यहाँ की जनता, भूमि का अहसान नहीं चुका सकता। अगर उससे सेवा में कोई भूल न हुई हो तो उसे प्रसन्न होकर जाने की इजाजत दें। जनता आज भी उसे याद करती है। आप इस देश के पढ़े-लिखों को देख नहीं सकते।

लेखक कर्जन को कहता है कि राजकुमार की तरह आपका विदाई-संभाषण भी ऐसा हो सकता है जिसमें आप-अपने स्वार्थी स्वभाव व धूर्तता का उल्लेख करें और भारत की भोली जनता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कह सकेंगे कि आशीर्वाद देता हूँ कि तू फिर उठे और अपने प्राचीन गौरव और यश को फिर से प्राप्त कर। मेरे बाद आने वाले तेरे गौरव को समझे। आपकी इस बात पर देश आपके पिछले कार्यों को भूल सकता है, परंतु आप में इतनी उदारता कहाँ?

बहुविकल्पी प्रश्न

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

विचारिए तो, क्या शान आपकी इस देश में थी और अब क्या हो गई। कितने ऊँचे होकर आप कितने नीचे गिरे! अलिफ़ लैला के अलहदीन ने चिराग रगड़कर और अबुलहसन ने बगदाद के खलीफा की गद्दी पर आँख खोलकर वह शान न देखी, जो दिल्ली-दरबार में आपने देखी। आपकी और आपकी लेडी की कुर्सी सोने की थी और आपके प्रभु महाराज के छोटे भाई और उनकी पत्नी की चाँदी की। आप दाहिने थे, वह बाएँ, आप प्रथम थे, वह दूसरे। इस देश के सब रईसों ने आपको सलाम पहले किया और बादशाह के भाई को पीछे। जुलूस में आपका हाथी सबसे आगे और सबसे ऊँचा था, हौदा, चवर, छत्र आदि सबसे बढ़-चढ़कर थे। सारांश यह है कि ईश्वर और महाराज एडवर्ड के बाद इस देश में आप ही का एक दर्जा था। किंतु अब देखते हैं कि जंगी लाट के मुकाबले में आपने पटखनी खाई, सिर के बल नीच आ रहे! आपके स्वदेश में वही ऊँचे माने गए, आपको साफ़ नीचा देखना पड़ा! पद-त्याग की धमकी से भी ऊँचे न हो सके।

(i) कितने ऊँचे होकर आप कितने नीचे गिरे! किसके लिए कहा गया है?

क- लेखक के लिए

ख- भारतीय शासकों के लिए
ग-लार्ड कर्जन के लिए
घ-उक्त तीनों के लिए

(ii) अबुलहसन कहाँ का खलीफा था?
क- दिल्ली का
ख- बगदाद का
ग-अरब का
घ-अफ़गानिस्तान का

(iii) महाराजके छोटे भाई और उनकी पत्नी की कुर्सी किसकी बनी थी?
क- चाँदी की
ख- सोने की
ग-ताँबे की
घ-लोहे की

(iv) ज़ुलूस में किसका हाथी सबसे आगे और सबसे ऊँचा होता था?
क- सेनापति का
ख- मंत्री का
ग-महाराज का
घ-लार्ड कर्जन का

(v) लार्ड कर्जन ने किस बात की धमकी दे रखी थी?
क- फ़्रांस जाने की
ख- इंग्लैंड न जाने की
ग-पद-त्याग की
घ-हिंदुस्तान में रहने की

उत्तर- (i) ग- लार्ड कर्जन के लिए (ii) ख- बगदाद का (iii) क- चाँदी की (iv) घ- लार्ड कर्जन का(v) ग- पद-त्याग की

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न- 1 शिवशंभु की दो गायों की कहानी के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?
उत्तर- लेखक 'शिवशंभु की दो गायों' की कहानी के माध्यम से कहना चाहता है कि भारत में मनुष्य ही नहीं, पशुओं में भी साथ रहने वालों के साथ लगाव होता है। वे उस व्यक्ति के बिछुड़ने पर भी दुखी होते हैं जो उन्हें कष्ट पहुँचाता है। यहाँ भावना प्रमुख होती है। हमारे देश में पशु-पक्षियों को भी बिछड़ने के समय उदास देखा गया है। बिछड़ते समय वैर-भाव को भुला दिया जाता है। विदाई का समय बड़ा करुणोत्पादक होता है। लॉर्ड कर्जन जैसे क्रूर आततायी के लिए भी भारत की निरीह जनता सहानुभूति का भाव रखती है।
प्रश्न- 2 आठ करोड़ प्रजा के गिड़गिड़ाकर विच्छेद न करने की प्रार्थना पर आयने ज़रा भी ध्यान नहीं दिया-यहाँ किस ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया गया है?
उत्तर- लेखक ने यहाँ बंगाल के विभाजन की ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया है। लॉर्ड कर्ज़न दो बार भारत का वायसराय बनकर आया। उसने भारत पर अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थाई करने के लिए अनेक काम किए। भारत में राष्ट्रवादी

भावनाओं को कुचलने के लिए उसने बंगाल का विभाजन करने की योजना बनाई। कर्ज़न की इस चाल को देश की जनता समझ गई और उसने इस योजना का विरोध किया, परंतु कर्ज़न ने अपनी जिद्द को पूरा किया। बंगाल के दो हिस्से कर दिए गए-पूर्वी बंगाल तथा पश्चिमी बंगाल।

प्रश्न- 3 कर्जन को इस्तीफा क्यों देना पड़ गया?

उत्तर- कर्जन को इस्तीफा देना पड़ा क्योंकि- 1. कर्जन ने बंगाल का विभाजन राष्ट्रवादी ताकतों को तोड़ने के लिए किया था, परंतु इसका परिणाम उलटा हुआ। सारा देश एकजुट हो गया और ब्रिटिश शासन की जड़े हिल गईं। 2. कर्जन इंग्लैंड में एक फ़ौजी अफ़सर को इच्छित पद पर नियुक्त करवाना चाहता था। उसकी सिफारिश को नहीं माना। गया। इससे क्षुब्ध होकर उन्होंने इस्तीफा देने की धमकी दी। ब्रिटिश सरकार ने उनका इस्तीफा की मंजूर कर लिया।

प्रश्न- 4 विचारिए तो, क्या शान आपकी इस देश में थी और अब क्या हो गई! कितने ऊँचे होकर आप कितने गिरे! आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- लेखक कहता है कि कर्ज़न की भारत में शान थी। दिल्ली दरबार में उसका वैभव चरम सीमा पर था। पति-पत्नी की कुर्सी सोने की थी। उसका हाथी सबसे ऊँचा व सबसे आगे रहता था। सम्राट के भाई का स्थान भी इनसे नीचा था। इसके इशारे पर प्रशासन, राजा, धनी नाचते थे। इसके संकेत पर बड़े-बड़े राजाओं को मिट्टी में मिला दिया गया तथा अनेक निकम्मों को बड़े पद मिले। इस देश में भगवान और एडवर्ड के बाद उसका स्थान था, परंतु इस्तीफा देने के बाद सब कुछ खत्म हो गया। इसकी सिफारिश पर एक आदमी भी नहीं रखा गया। जिद के कारण इसका वैभव नष्ट हो गया।

प्रश्न- 5 आपके और यहाँ के निवासियों के बीच में कोई तीसरी शक्ति और भी है-यहाँ तीसरी शक्ति किसे कहा गया है?

उत्तर- लॉर्ड कर्जन स्वयं को निरंकुश, सर्वशक्ति संपन्न मान बैठा था। भारतीय जनता उसकी मनमानी सह रही थी। अचानक गुस्साए लार्ड का इस्तीफा मंजूर हो गया और उसे जाना पड़ा। यहाँ लेखक कहना चाहते हैं कि लॉर्ड कर्जन और भारतीय जनता के बीच एक तीसरी शक्ति अर्थात् ब्रिटिश सरकार है जिस पर न तो लॉर्ड कर्जन का नियंत्रण है और न ही भारत के निवासियों का ही नियंत्रण है। इंग्लैंड की महारानी का शासन न तो कर्जन की बात सुनता है और न ही कर्जन के खिलाफ भारतीय जनता की गुहार सुनता है। उस पर इस निरंकुश का अंकुश भी नहीं चलता।

प्रश्न- 6 पाठ का यह अंश शिवशभू के चिट्ठे से लिया गया है, शिवशंभु नाम की चर्चा पाठ में भी हुई है। बालमुकुंद गुप्त ने इस नाम का उपयोग क्यों किया होगा?

उत्तर- शिवशंभु एक काल्पनिक पात्र है जो भाँग के नशे में खरी-खरी बात कहता है। यह पात्र अंग्रेजों की कुनीतियों को उजागर करता है। लेखक ने इस नाम का उपयोग सरकारी कानून के विरोध में किया। लार्ड कर्जन ने प्रेस की अभिव्यक्ति पर प्रतिबंध लगा दिया था। उस समय ब्रिटिश साम्राज्य से सीधी टक्कर लेने के हालात नहीं थे, परंतु शासन की पोल खोलकर जनता को जागरूक भी करना था। अतः काल्पनिक पात्र के जरिए अपनी मर्ज़ी की बातें कहलवाई जाती थीं।

प्रश्न-7 नादिर से भी बढ़कर आपकी ज़िद्द हैं-कर्जन के संदर्भ मेंक्या आपको यह बात सही लगती है? पक्ष या विपक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तर- जी हाँ! कर्ज़न के संदर्भ में हमें यह बात सही लगती है। नादिरशाह एक क्रूर राजा था। उसने दिल्ली में कत्लेआम करवाया, परंतु आसिफजाह ने तलवार गले में डालकर उसके आगे समर्पण कर कत्लेआम रोकने की प्रार्थना की, तो तुरंत कत्लेआम रोक दिया गया। कर्ज़न ने बंगाल का विभाजन किया। आठ करोड़ भारतवासियों की बार-बार विनती करने पर भी उसने अपनी जिद्द नहीं छोड़ी। इस संदर्भ में कर्ज़न की जिद्द नादिरशाह से बड़ी है। वह नादिरशाह से अधिक क्रूर था। उसने जनहित की उपेक्षा की।

प्रश्न- 8 क्या आँख बंद करके मनमाने हुक्म चलाना और किसी की कुछ न सुनने का नाम ही शासन है ? इन पंक्तियों को ध्यान में रखते हुए शासन क्या है? इस पर चर्चा कीजिए।

उत्तर- 'शासन' किसी एक व्यक्ति की इच्छा से नहीं चलता। यह नियमों का समूह है जो अच्छी व्यवस्था का गठन करता है। यह प्रबंध जनहित के अनुरूप होनी चाहिए। निरंकुश शासक से जनता दुखी रहती है तथा कुछ समय बाद उसे शासक का विनाश हो जाता है। प्रजा को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होनी चाहिए। हर नीति में जनकल्याण का भाव होना चाहिए।

प्रश्न-9 कैसर, ज़ार तथा नादिरशाह पर टिप्पणियाँ लिखिए।

उत्तर- कैसर- यह शब्द रोमन तानाशाह जूलियस सीजर के नाम से बना है। यह शब्द तानाशाह जर्मन शासकों के लिए प्रयोग होता था। **जार-** यह भी जूलियस सीजर से बना शब्द है जो विशेष रूप से रूस के तानाशाह शासकों (16वीं सदी से 1917 तक) के लिए प्रयुक्त होता था। इस शब्द का पहली बार बुल्गेरियाई शासक (913 में) के लिए प्रयोग हुआ था। **नादिरशाह-** यह 1736 से 1747 तक ईरान का शाह रहा। तानाशाही स्वरूप के कारण 'नेपोलियन ऑफ परशिया' के नाम से भी जाना जाता था। पानीपत के तीसरे युद्ध में अहमदशाह अब्दाली को नादिरशाह ने भी आक्रमण के लिए भेजा था।

प्रश्न- 10 राजकुमार सुल्तान ने नरवरगढ़ से किन शब्दों में विदा ली थी?

उत्तर- राजकुमार सुल्तान ने नरवरगढ़ से विदा लेते समय कहा-'प्यारे नरवरगढ़! मेरा प्रणाम स्वीकार ले। आज मैं तुझसे जुदा होता हूँ। तू मेरा अन्नदाता है। अपनी विपद के दिन मैंने तुझमें काटे हैं। तेरे ऋण का बदला यह गरीब सिपाही नहीं दे सकता। भाई नरवरगढ़! यदि मैंने जानबूझकर एक दिन भी अपनी सेवा में चूक की हो, यहाँ की प्रजा की शुभ चिंता न की हो, यहाँ की स्त्रियों को माता और बहन की दृष्टि से न देखा हो तो मेरा प्रणाम न ले, नहीं तो प्रसन्न होकर एक बार मेरा प्रणाम ले और मुझे जाने की आज्ञा दे।'

5. गलता लोहा – शेखर जोशी

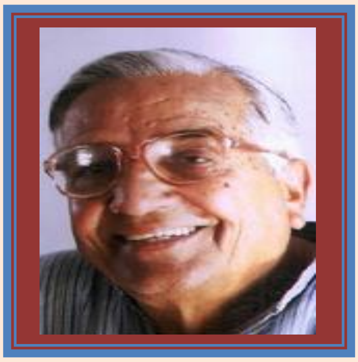

जन्म-1932ई., अल्मोड़ा(उत्तराखंड)। निधन-2022 ई.। रचनाएँ- कहानी-संग्रह:कोसी का घटवार, साथ के लोग, दाज्यू, हलवाहा, नौरंगी बीमार है; शब्द-चित्र संग्रह: एक पेड़ की याद।भाषा- हिन्दी। पाठ के मुख्य शब्द- अनायास, अनुगूँज, बूते, अनुष्ठान, कुंद, पारखी, समवेत, हमजोली, गुंजाइश, चाबुक, हैसियत, मेधावी, शिल्पकार, सुघड़। प्रमुख पात्र- वंशीधर, मोहन, धनराम,

जीवन परिचय- शेखर जोशी का जन्म उत्तरांचल के अल्मोड़ा में 1932 ई. में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अल्मोड़ा में हुई। बीसवीं सदी के छठे दशक में हिंदी कहानी में बड़े परिवर्तन हुए। इस समय एक साथ कई युवा कहानी- कारों ने परंपरागत तरीके से हटकर नई तरह की कहानियाँ लिखनी शुरू कीं। इस तरह कहानी की विधा साहित्य-जगत के केंद्र में आ खड़ी हुई। इस नए उठान को नई कहानी आंदोलन नाम दिया। इस आंदोलन में **शेखर जोशी** का स्थान अन्यतम है। इनकी साहित्यिक उपलब्धियों को देखते हुए इन्हें **पहल सम्मान** प्राप्त हुआ।

रचनाएँ- इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

कहानी-संग्रह- कोसी का घटवार, साथ के लोग, दाज्यू, हलवाहा, नौरंगी बीमार है।

शब्दचित्रसंग्रह- एक पेड़ की याद।

साहित्यिक विशेषताएँ- शेखर जोशी की कहानियाँ नई कहानी आदोलन के प्रगतिशील पक्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं। समाज का मेहनतकश और सुविधाहीन तबका इनकी कहानियों में जगह पाता है। निहायत सहज एवं आडंबर- हीन भाषा-शैली में वे सामाजिक यथार्थ के बारीक नुक्तों को पकड़ते और प्रस्तुत करते हैं। इनके रचना-संसार से गुजरते हुए समकालीन जनजीवन की बहुविध विडंबनाओं को महसूस किया जा सकता है। ऐसा करने में इनकी प्रगतिशील जीवन-दृष्टि और यथार्थ-बोध का बड़ा योगदान रहा हैइनकी कहानियाँ कई भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, पोलिश और रूसी में भी अनूदित हो चुकी है। इनकी प्रसिद्ध कहानी **दाज्यू** पर चिल्ड्रस फिल्म सोसाइटी द्वारा फिल्म का निर्माण भी हुआ है।

सारांश- इस कहानी में समाज के जातिगत विभाजन पर कई कोणों से टिप्पणी की गई है। यह कहानी लेखक के लेखन में अर्थ की गहराई को दर्शाती है। इस पूरी कहानी में लेखक की कोई मुखर टिप्पणी नहीं है। इसमें एक मेधावी, किंतु निर्धन ब्राहमण युवक मोहन किन परिस्थितियों के चलते उस मनोदशा तक पहुँचता है, जहाँ उसके लिए जातीय अभिमान बेमानी हो जाता है। सामाजिक विधि-निषेधों को ताक पर रखकर वह धनराम लोहार के आफर पर बैठता ही नहीं, उसके काम में भी अपनी कुशलता दिखाता है। मोहन का व्यक्तित्व जातिगत आधार पर निर्मित झूठे भाईचारे की जगह मेहनतकशों के सच्चे भाईचारे को प्रस्तावित करता प्रतीत होता है मानो लोहा गलकर नया आकार ले रहा हो।

मोहन के पिता वंशीधर ने जीवनभर पुरोहिती की। अब वृद्धावस्था में उनसे कठिन श्रम व व्रत-उपवास नहीं होता। उन्हें चंद्रदत्त के यहाँ रुद्री पाठ करने जाना था, परंतु जाने की तबियत नहीं है। मोहन उनका आशय समझ गया, लेकिन पिता का अनुष्ठान कर पाने में वह कुशल नहीं है। पिता का भार हलका करने के लिए वह खेतों की ओर चला, लेकिन हँसुवे की धार कुंद हो चुकी थी। उसे अपने दोस्त धनराम की याद आ गई। वह धनराम लोहार की दुकान पर धार लगवाने पहुँचा।

धनराम उसका सहपाठी था। दोनों बचपन की यादों में खो गए। मोहन ने मास्टर त्रिलोक सिंह के बारे में पूछा। धनराम ने बताया कि वे पिछले साल ही गुजरे थे। दोनों हँस-हँसकर उनकी बातें करने लगे। मोहन पढ़ाई व गायन में निपुण था। वह मास्टर का चहेता शिष्य था और उसे पूरे स्कूल का मॉनीटर बना रखा था। वे उसे कमजोर बच्चों को दंड देने का भी अधिकार देते थे। धनराम ने भी मोहन से मास्टर के आदेश पर डंडे खाए थे। धनराम उसके प्रति स्नेह व आदरभाव रखता था, क्योंकि जातिगत आधार की हीनता उसके मन में बैठा दी गई थी। उसने मोहन को कभी अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझा।

धनराम गाँव के खेतिहर या मजदूर परिवारों के लड़कों की तरह तीसरे दर्जे तक ही पढ़ पाया। मास्टर जी उसका विशेष ध्यान रखते थे। धनराम को तेरह का पहाड़ा कभी याद नहीं हुआ। इसकी वजह से उसकी पिटाई होती। मास्टर जी का नियम था कि सजा पाने वाले को अपने लिए हथियार भी जुटाना होता था। धनराम डर या मंदबुद्धि होने के कारण तेरह का पहाड़ा नहीं सुना पाया। मास्टर जी ने व्यंग्य किया-'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे। विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?"

इतना कहकर उन्होंने थैले से पाँच-छह दरॉतियाँ निकालकर धनराम को धार लगा लाने के लिए पकड़ा दी। हालाँकि धनराम के पिता ने उसे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखा दी। विद्या सीखने के दौरान मास्टर त्रिलोक सिंह उसे अपनी पसंद का बेंत चुनने की छूट देते थे, परंतु गंगाराम इसका चुनाव स्वयं करते थे। एक दिन गंगाराम अचानक चल बसे। धनराम ने सहज भाव से उनकी विरासत सँभाल ली।

इधर मोहन ने छात्रवृत्ति पाई। इससे उसके पिता वंशीधर तिवारी उसे बड़ा आदमी बनाने का स्वप्न देखने लगे। पैतृक धंधे ने उन्हें निराश कर दिया था। वे कभी परिवार का पूरा पेट नहीं भर पाए। अत: उन्होंने गाँव से चार मील दूर स्कूल में उसे भेज दिया। शाम को थकामाँदा मोहन घर लौटता तो पिता पुराण कथाओं से उसे उत्साहित करने की कोशिश करते। वर्षा के दिनों में मोहन नदी पार गाँव के यजमान के घर रहता था। एक दिन नदी में पानी कम था

तथा मोहन घसियारों के साथ नदी पार कर घर आ रहा था। पहाड़ों पर भारी वर्षा के कारण अचानक नदी में पानी बढ़ गया। किसी तरह वे घर पहुँचे इस घटना के बाद वंशीधर घबरा गए और फिर मोहन को स्कूल न भेजा।

उन्हीं दिनों बिरादरी का एक संपन्न परिवार का युवक रमेश लखनऊ से गाँव आया हुआ था। उससे वंशीधर ने मोहन की पढ़ाई के संबंध में अपनी चिंता व्यक्त की तो वह उसे अपने साथ लखनऊ ले जाने को तैयार हो गया। उसके घर में एक प्राणी बढ़ने से कोई अंतर नहीं पड़ता। वंशीधर को रमेश के रूप में भगवान मिल गया। मोहन रमेश के साथ लखनऊ पहुँचा। यहाँ से जिंदगी का नया अध्याय शुरू हुआ। घर की महिलाओं के साथ-साथ उसने गली की सभी औरतों के घर का काम करना शुरू कर दिया। रमेश बड़ा बाबू था। वह मोहन को घरेलू नौकर से अधिक हैसियत नहीं देता था। मोहन भी यह बात समझता था। कह सुनकर उसे समीप के सामान्य स्कूल में दाखिल करा दिया गया। काम के बोझ व नए वातावरण के कारण वह अपनी कोई पहचान नहीं बना पाया। गर्मियों की छुट्टी में भी वह तभी घर जा पाता जब रमेश या उसके घर का कोई आदमी गाँव जा रहा होता। उसे अगले दरजे की तैयारी के नाम पर शहर में रोक लिया जाता।

मोहन ने परिस्थितियों से समझौता कर लिया था। वह घर वालों को असलियत बताकर दुखी नहीं करना चाहता था। आठवीं कक्षा पास करने के बाद उसे आगे पढ़ने के लिए रमेश का परिवार उत्सुक नहीं था। बेरोजगारी का तर्क देकर उसे तकनीकी स्कूल में दाखिल करा दिया गया। वह पहले की तरह घर व स्कूल के काम में व्यस्त रहता। डेढ़-दो वर्ष के बाद उसे कारखानों के चक्कर काटने पड़े। इधर वंशीधर को अपने बेटे के बड़े अफसर बनने की उम्मीद थी। जब उसे वास्तविकता का पता चला तो उसे गहरा दुख हुआ। धनराम ने भी उससे पूछा तो उसने झूठ बोल दिया। धनराम ने उन्हें यही कहा -मोहन लला बचपन से ही बड़े बुद्धिमान थे।

इस तरह मोहन और धनराम जीवन के कई प्रसंगों पर बातें करते रहे। धनराम ने हँसुवे के फाल को बेंत से निकालकर तपाया, फिर उसे धार लगा दी। आमतौर पर ब्राहमण टोले के लोगों का शिल्पकार टोले में उठना-बैठना नहीं होता था। काम-काज के सिलसिले में वे खड़े-खड़े बातचीत निपटा ली जाती थी। ब्राहमण टोले के लोगों को बैठने के लिए कहना भी उनकी मर्यादा के विरुद्ध समझा जाता था। मोहन धनराम की कार्यशाला में बैठकर उसके काम को देखने लगा।

धनराम अपने काम में लगा रहा। वह लोहे की मोटी छड़ को भट्टी में गलाकर गोल बना रहा था, किंतु वह छड़ निहाई पर ठीक से फंस नहीं पा रही थी। अत: लोहा ठीक ढंग से मुड़ नहीं पा रहा था। मोहन कुछ देर उसे देखता रहा और फिर उसने दूसरी पकड़ से लोहे को स्थिर कर लिया। नपी-तुली चोटों से छड़ को पीटते-पीटते गोले का रूप दे डाला। मोहन के काम में स्फूर्ति देखकर धनराम अवाक् रह गया। वह पुरोहित खानदान के युवक द्वारा लोहार का काम करने पर आश्चर्यचकित था। धनराम के संकोच, धर्मसंकट से उदासीन मोहन लोहे के छल्ले की त्रुटिहीन गोलाई की जाँच कर रहा था। उसकी आँखों में एक सर्जक की चमक थी।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

धनराम की मंदबुद्ध रही हो या मन में बैठा हुआ डर कि पूरे दिन घोटा लगाने पर भी उसे तेरह का पहाड़ा याद नहीं हो पाया था। छुट्टी के समय जब मास्साब ने उससे दुबारा पहाड़ा सुनाने को कहा तो तीसरी सीढ़ी तक पहुँचते-पहुँचते वह फिर लड़खड़ा गया था। लेकिन इस बार मास्टर त्रिलोक सिंह ने उसके लाए हुए बेंत का उपयोग करने की बजाय ज़बान की चाबुक लगा दी थी, 'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?' अपने थैले से पाँच-छह दराँतियाँ निकालकर उन्होंने धनराम को धार लगा लाने के लिए पकड़ा दी थीं। किताबों की विद्या का ताप लगाने की सामर्थ्य धनराम के पिता की नहीं थी। धनराम हाथ-पैर चलाने लायक हुआ ही था कि बाप ने उसे धौंकनी फूंकने या सान लगाने के कामों में उलझाना शुरू कर दिया और फिर धीरे-धीरे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखाने लगा।

(i) पूरे दिन घोटा लगाने पर भी धनराम क्या याद नहीं कर पाया?

क- हिंदी की कविता

ख- तेरह का पहाड़ा

ग-अंग्रेजी की वर्णमाला

घ-स्वर और व्यंजन वर्ण

(ii) धनराम परज़बान की चाबुक किसने लगाई?

क- मोहन के पिता ने

ख- मोहन ने

ग-मास्टर त्रिलोक सिंह ने

घ-धनराम के पिता ने

(iii) मास्टर त्रिलोक सिंह नेअपने थैले से कितनी दराँतियाँ निकालकर धनराम को धार लगाने के लिए दी?

क- पाँच-छह

ख- सात-आठ

ग-तीन-चार

घ-चार-पाँच

(iv) किताबों की विद्या का ताप लगाने की सामर्थ्यकिसकी की नहीं थी?

क- मोहन के पिता की

ख- धनराम के पिता की

ग-मास्टर त्रिलोक सिंह की

घ-धनराम की

(v) धनराम के पिता किसे घन चलाने की विद्या सिखाने लगे?

क- मोहन को

ख- पुरोहित को

ग-मास्टर त्रिलोक सिंह को

घ-धनराम को

उत्तर- (i) ख- तेरह का पहाड़ा (ii) ग- मास्टर त्रिलोक सिंह ने (iii) क- पाँच-छह (iv) ख- धनराम के पिता की (v) घ- धनराम को

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 कहानी के उस प्रसंग का उल्लेख करें, जिसमें किताबों की विद्या और घन चलाने की विद्या का ज़िक्र आया है।

उत्तर- जिस समय धनराम तेरह का पहाड़ा नहीं सुना सका तो मास्टर त्रिलोक सिंह ने ज़बान के चाबुक लगाते हुए कहा कि 'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?' यह सच है कि किताबों की विद्या का ताप लगाने की सामर्थ्य धनराम के पिता की नहीं थी। उन्होंने बचपन में ही अपने पुत्र को धौंकनी फेंकने और सान लगाने के कामों में लगा दिया था वे उसे धीरे-धीरे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखाने लगे। मास्टर जी पढ़ाई करते समय छड़ी से और पिता जी मनमाने औजार-हथौड़ा, छड़, हत्था जो हाथ लगे उससे पीट पीटकर सिखाते थे। इस प्रसंग में किताबों की विद्या और घन चलाने की विद्या का जिक्र आया है।

प्रश्न-2 धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी क्यों नहीं समझता था?

उत्तर- धनराम के मन में नीची जाति के होने की बात बचपन से बिठा दी गई थी। दूसरे, मोहन कक्षा में सबसे होशियार था। इस कारण मास्टर जी ने उसे कक्षा का मॉनीटर बना दिया था। तीसरे, मास्टर जी कहते थे कि एक दिन मोहन बड़ा आदमी बनकर स्कूल और उनका नाम रोशन करेगा। उसे भी मोहन से बहुत आशाएँ थीं। इन सभी कारणों से वह मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझता था।

प्रश्न-3 धनराम को मोहन के लिए व्यवहार पर आश्चर्य होता है और क्यों?
उत्तर- मोहन ब्राहमण जति का था। उस गाँव में ब्राहमण स्वयं को श्रेष्ठ समझते थे तथा शिल्पकारों के साथ उठते-बैठते नहीं थे। यदि उन्हें बैठने के लिए कह दिया जाता तो भी उनकी मार्यादा भंग होती थी। धनराम की दुकान पर काम खत्म होने के बाद भी मोहन देर तक बैठा रहा। यह देखकर धनराम हैरान हो गया। वह और अधिक हैरान तब हुआ जब मोहन ने उसके हाथ से हथौड़ा नेकर लोहे पर नपी-तुली चोट मारने लगा और धौंकनी फेंकते हुए भट्ठी में गरम किया और ठोक पीठकर उसे गोल रूप दे रहा था।

प्रश्न-4 मोहन के लखनऊ आने के बाद के समय को लेखक ने उसके जीवन का एक नया अध्याय क्यों कहा है?
उत्तर- लेखक ने मोहन के लखनऊ प्रवास को उसके जीवन का एक नया अध्याय कहा है। यहाँ आने पर उसका जीवन बँधी-बँधाई लीक पर चलने लगा था। वह सुबह से शाम तक नौकर की तरह काम करता था। नए वातावरण व काम के बोझ के कारण मेधावी छात्र की प्रतिभा कुंठित हो गई। उसके उज्ज्वल भविष्य की कल्पनाएँ नष्ट हो गई। अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए उसे कारखानों और फैक्ट्रियों के चक्कर लगाने पड़े। उसे कोई काम नहीं मिल सका।

प्रश्न-5 मास्टर त्रिलोक सिंह के किस कथन को लेखक ने ज़बान के चाबुक कहा है और क्यों?
उत्तर- एक दिन धनराम को तेरह का पहाड़ा नहीं आया तो आदत के अनुसार मास्टर जी ने संटी मँगवाई और धनराम से सारा दिन पहाड़ा याद करके छुट्टी के समय सुनाने को कहा। जब छुट्टी के समय तक उसे पहाड़ा याद न हो सका तो मास्टर जी ने उसे मारा नहीं वरन् कहा कि “तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें ?” यही वह कथन था जिसे पाठ में लेखक ने जबान के चाबुक कहा है, क्योंकि धनराम एक लोहार का बेटा था और मास्टर जी का यह कथन उसे मार से भी अधिक चुभ गया। जैसा कि कहा भी जाता है ‘मार का घाव भर जाता है, पर कड़वी जबान का नहीं भरता’। यही धनराम के साथ हुआ और निराशा के कारण वह अपनी पढ़ाई आगे जारी नहीं रख सका।

प्रश्न-6 गाँव और शहर, दोनों जगहों पर चलने वाले मोहन के जीवन-संघर्ष में क्या फ़र्क है? चर्चा करें और लिखें।
उत्तर- गाँव में मोहन अपने लिए संघर्ष कर रहा था। दूसरे गाँव की पाठशाला में जाने के लिए प्रतिदिन नदी पार करना, मन लगाकर पढ़ना, हर अध्यापक के मन में अपनी जगह बनाना–ये सारे संघर्ष वह अपना भविष्य बनाने और अपने माता-पिता के सपने पूरे करने के लिए कर रहा था। लखनऊ शहर में जाकर रमेश के घर में आलू लाना, दही लाना, धोबी को कपड़े देकर आना-ये सब काम वह रमेश के परिवार के लिए कर रहा था। इससे उसका अपना भविष्य धूमिल हो गया और माता-पिता के सपने टूट गए। गाँव का होनहार बालक शहर में घरेलू नौकर बनकर रह गया था। इसी प्रकार के तर्क लिखकर सहपाठियों के साथ चर्चा का आयोजन किया जा सकता है।

प्रश्न-7 एक अध्यापक के रूप में त्रिलोक सिंह का व्यक्तित्व आपको कैसा लगता है? अपनी समझ में उनकीखूबियों और खामियों पर विचार करें।

उत्तर- मास्टर त्रिलोक सिंह का व्यक्तित्व अध्यापक के रूप में ठीक-ठाक लगता है। वे अच्छे अध्यापक की तरह बच्चों को लगन से पढ़ाते थे। वे किसी के सहयोग के बिना पाठशाला चलाते थे। वे अनुशासन प्रिय हैं तथा दंड के भय आदि के द्वारा बच्चों को पढ़ाते हैं। वे होशियार बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। इन सब विशेषताओं के बावज़ूद उनमें कमियाँ भी हैं। वे जातिगत भेदभाव को मानते हैं। वे विद्यार्थियों को सख्त दंड देते थे। वे मोहन से भी बच्चों की पिटाई करवाते थे। वे कमजोर बच्चों को कटु बातें बोलकर उनमें हीन भावना भरते थे। छात्रों में हीनभावना तथा भेदभाव करने का उनका तरीका अशोभनीय था।

प्रश्न-8 वंशीधर को धनराम के शब्द क्यों कचोटते रहे?

उत्तर- वंशीधर को अपने पुत्र से बड़ी आशाएँ थी। वे उसके अफसर बनकर आने के सपने देखते थे। एक दिन धनराम ने उनसे मोहन के बारे में पूछा तो उन्होंने घास का एक तिनका तोड़कर दाँत खोदते हुए बताया कि उसकी सक्रेटेरियट में नियुक्ति हो गई है। शीघ्र ही वह बड़े पद पर पहूँच जाएगा। धनराम ने उन्हें कहा कि मोहन लला बचपन से ही बड़े बुद्धिमान थे। ये शब्द वंशीधर को कचोटते रहे, क्योंकि उन्हें मोहन की वास्तविक स्थिति का पता चल चुका था। लोगों से प्रशंसा सुनकर उन्हें दु:ख होता था।

6. रजनी - मन्नू भंडारी

जन्म-1931ई., मंदसौर(मध्य प्रदेश)। निधन- 2021 ई.। रचनाएँ-उपन्यास:आपका बंटी, महाभोज, स्वामी, एक इंच मुस्कान; कहानीसंग्रह:एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु, आँखों देखा झूठ।भाषा-हिन्दी। पाठ के मुख्य शब्द- केसरिया, बहत्तर, टर्मिनल, ईयरली, वरना, शिकंजी, बहस। मुख्य पात्र- रजनी, लीलाबेन, अमित, रवि, निदेशक, संपादक।

जीवन परिचय- मन्नू भंडारी का जन्म 1931 ई. में मध्यप्रदेश के भानपुरा में हुआ। इनकी आरंभिक शिक्षा अजमेर में हुई। इन्होंने एम.ए. (हिंदी) की परीक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की। इन्होंने कोलकाता तथा दिल्ली के मिरांडा हाऊस में बतौर प्राध्यापिका के पद पर कार्य किया। इनकी साहित्यिक उपलब्धियों को देखते हुए इन्हें कई संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत किया गया। इन्हें हिंदी अकादमी, दिल्ली के शिखर सम्मान, बिहार सरकार, कोलकाता की भारतीय भाषा परिषद्, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा सम्मानित किया गया।

रचनाएँ- इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

कहानी-संग्रह- एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु, आँखों देखा झूठ।

उपन्यास- आपका बंटी, महाभोज, स्वामी, एक इंच मुस्कान (राजेंद्र यादव के साथ)।

पटकथाएँ- रजनी, निर्मला, स्वामी, दर्पण।

साहित्यिक विशेषताएँ- मन्नू भंडारी हिंदी कहानी में उस समय सक्रिय हुई जब नई कहानी आंदोलन अपने उठान पर था। उनकी कहानियों में कहीं पारिवारिक जीवन, कहीं नारी-जीवन और कहीं समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन की विसंगतियाँ विशेष आत्मीय अंदाज़ में अभिव्यक्त हुई हैं। उन्होंने आक्रोश, व्यंग्य और संवेदना कोरचनात्मक आधार दिया है; वह चाहे कहानी हो, उपन्यास हो या फिर पटकथा ही क्यों न हो।

पटकथा यानी पट या स्क्रीन के लिए लिखी गई वह कथा रजत पट अर्थात् फिल्म की स्क्रीन के लिए भी हो सकती है और टेलीविजन के लिए भी। मूल बात यह है कि जिस तरह मंच पर खेलने के लिए नाटक लिखे जाते हैं, उसी तरह कैमरे से फिल्माए जाने के लिए पटकथा लिखी जाती है। कोई भी लेखक अन्य किसी विधा में लेखन करके उतने लोगों तक अपनी बात नहीं पहुँचा सकता, जितना पटकथा लेखन द्वारा।

यहाँ मन्नू भंडारी द्वारा लिखित **रजनी** धारावाहिक की कड़ी दी जा रही है। यह नाटक 20वीं सदी के नवें दशक का बहुचर्चित टी.वी. धारावाहिक रहा है। यह वह समय था जब **हमलोग** और **बुनियाद** जैसे सोप ओपेरा दूरदर्शन का भविष्य गढ़ रहे थे। बासु चटर्जी के निर्देशन में बने इस धारावाहिक की हर कड़ी स्वयं में स्वतंत्र और मुकम्मल होती थी और उन्हें आपस में गूँथने वाली सूत्र रजनी थी। हर कड़ी में यह जुझारु और इंसाफ-पसंद स्त्री-पात्र किसी-न-किसी

सामाजिक-राजनीतिक समस्या से जूझती नजर आती थी। यहाँ **रजनी** धारावाहिक की जो कड़ी दी जा रही है, वह व्यवसाय बनती शिक्षा की समस्या की ओर समाज का ध्यान खींचती है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

देखो, तुम मुझे फिर गुस्सा दिला रहे हो रवि। गलती करने वाला तो है ही गुनहगार, पर उसे बर्दाश्त करने वालाभी कम गुनहगार नहीं होता जैसे लीला बेन और कांति भाई और हज़ारों-हज़ारों माँ-बाप। लेकिन सबसे बड़ा गुनहगार तो वह है जो चारों तरफ अन्याय, अत्याचार और तरह-तरह की धाँधलियों को देखकर भी चुप बैठा रहता है, जैसे तुम। (नकल उतारते हुए) हमें क्या करना है, हमने कोई ठेका ले रखा है दुनिया का। (गुस्से और हिकारत से) माई फ़ुट (उठकर भीतर जाने लगती हैं। जाते-जाते मुड़कर) तुम जैसे लोगों के कारण ही तो इस देश में कुछ नहीं होता, हो भी नहीं सकता! (भीतर चली जाती है।)

(i) देखो, तुम मुझे फिर गुस्सा दिला रहे हो रवि। - यह किसने कहा?

क- लेखिका ने

ख- रजनी ने

ग-अमित ने

घ-कांतिभाई ने

(ii) रजनी के अनुसार हज़ारों-हज़ारों माँ-बाप भी गुनहगार हैं? क्योंकि

क- वे गुनाह को बर्दाश्त करते हैं

ख- वे गुनहगारों की शिकायत करते हैं

ग-वे गुनहगारों का विरोध करते हैं

घ-वे गुनहगारों से मिल जाते हैं

(iii) जो चारों तरफ अन्याय, अत्याचार और तरह-तरह की धाँधलियों को देखकर भी चुप बैठा रहता है, वह है?

क- गुनाह को बर्दाश्त करने वाला

ख- गुनहगारों की शिकायत करने वाला

ग-सबसे बड़ा गुनहगार

घ-गुनहगारों का विरोध करने वाला

(iv) किन जैसे लोगों के कारण इस देश में कुछ नहीं नहीं सकता?

क- रजनी जैसे

ख- कांति भाई जैसे

ग-अमित जैसे

घ-रवि जैसे

(v) रजनी पाठ की लेखिका का क्या नाम है?

क- रजनी

ख- मन्नू भंडारी

ग- कृष्णा सोबती

घ- लीला बेन

उत्तर-(i) ख- रजनी ने (ii) क- वे गुनाह को बर्दाश्त करते हैं (iii) ग- सबसे बड़ा गुनहगार (iv) घ- रवि जैसे (v) ख- मन्नू भंडारी

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 जब किसी का बच्चा कमज़ोर होता है, तभी उसके माँ-बाप दयूशन लगवाते हैं। अगर लगे कि कोई टीचर लूट रहा है, तो उस टीचर से न ले ट्यूशन, किसी और के पास चले जाएँ. यह कोई मजबूरी तो है नहीं-प्रसंग का उल्लेख करते हुए बताएँ कि यह संवाद आपको किस सीमा तक सही या गलत लगता है, तर्क दीजिए।

उत्तर- रजनी ट्यूशन के रैकेट के बारे में निदेशक के पास जाती है। उसे बताती है कि बच्चों को जबरदस्ती ट्यूशन करने के लिए कहा जाता है। ऐसे लोगों के बारे में बोर्ड क्या कर रहा है? निदेशक ने इस समस्या को गंभीरता से नहीं लिया। वे सहज भाव से कहते हैं कि ट्यूशन करने में कोई मजबूरी नहीं है। कमजोर बच्चे को ट्यूशन पढ़ना पड़ता है। अगर कोई अध्यापक उन्हें लूटता है तो वे दूसरे के पास चले जाएँ।शिक्षा निदेशक का यह जवाब बहुत घटिया व गैरजिम्मेदाराना है। वे ट्यूशन को बुरा नहीं मानते। उन्हें इसमें गंभीरता नज़र नहीं आती। वे बच्चों के शोषण को नहीं रोकना चाहते। ऐसी बातें कहकर वह अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ना चाहते है।

प्रश्न-2 तो एक और आंदोलन का मसला मिल गया-फुसफुसाकर कही गई यह बात-
(क) किसने किस प्रसंग में कही?
(ख) इससे कहने वाले की किस मानसिकता का पता चलता है?

उत्तर- (क) यह बात रजनी के पति रवि ने पेरेंट्स मीटिंग के दौरान कही। रजनी ने कम वेतन पर काम करने वाले अध्यापकों को भी आंदोलन करने के लिए कहती है। उन्हें एकजुट होकर अन्याय करनेवालों का पर्दाफाश करना चाहिए।
(ख) इस कथन से रवि की उदासीन मानसिकता का पता चलता है। इस तरह के व्यक्ति अन्याय के खिलाफ कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करता। ये स्वार्थी प्रवृत्ति के होते हैं तथा अपने तक ही सीमित रहते हैं।

प्रश्न-3रजनी धारावाहिक की इस कड़ी की मुख्य समस्या क्या है? क्या होता अगर-
(क) अमित का पर्चा सचमुच खराब होता।
(ख) संपादक रजनी का साथ न देता।

उत्तर- रजनी धारावाहिक की इस कड़ी की मुख्य समस्या शिक्षा का व्यवसायीकरण है। स्कूल के अध्यापक बच्चों को ज़बरदस्ती ट्यूशन पढ़ने के लिए विवश करते हैं तथा ट्यूशन न लेने पर वे उनको कम अंक देते हैं।
(क) यदि अमित का पर्चा खराब होता तो यह समस्या सामने नहीं आती और न ही रजनी इसे आंदोलन का रूप दे पाती। बच्चों और अभिभावकों को ट्यूशन के शोषण से पीड़ित होना पड़ता।
(ख) यदि संपादक रजनी का साथ न देता तो यह समस्या सीमित लोगों के बीच ही रह जाती। कम संख्या का बोर्ड पर कोई असर नहीं होता। आंदोलन पूरी ताकत से नहीं चल पाता और सफलता संदिग्ध रहती।

प्रश्न-4 गलती करने वाला तो है ही गुनहगार, पर उसे बर्दाश्त करने वाला भी कम गुनहगार नहीं होता-इस संवाद के संदर्भ में आप सबसे ज्यादा किसे और क्यों गुनहगार मानते हैं?

उत्तर- इस संवाद के संदर्भ में हम सबसे ज्यादा, अत्याचार करनेवाले को दोषी मानते हैं, क्योंकि सामान्य रूप से चल रहे संसार में भी बहुत से कष्ट, दुख और तकलीफें हैं। अत्याचारी उन्हें अपने कारनामों से और बढ़ा देता है। वह स्वयं ऊपर से खुश दिखाई देता है, पर उसकी आत्मा तो जानती ही है कि वह गलती कर रहा है। उसके द्वारा जिसे सताया जा रहा है वह भी कष्ट उठा रहा है और उसकी आत्मा भी कष्ट उठाती है। इसलिए वह कष्ट से मुक्त होने के उपाय सोचता है, पर ऐसा कर नहीं पाती। ज्यादातर यही होता है। अतः अत्याचारी ही कष्ट का प्रथम कारण होने की वजह से अधिक दोषी है।

प्रश्न-5 स्त्री के चरित्र की बनी बनाई धारणा से रजनी का चेहरा किन मायनों में अलग है?

उत्तर- रजनी आम स्त्रियों से अलग है। आम स्त्री सहनशील होती है, वह डरपोक होती है। वह अन्याय का विरोध नहीं करती तथा संघर्षों से दूर रहना चाहती है। रजनी इन सबके विपरीत जुझारू, संघर्षशील व बहादुर है। वह अपने सामने हो रहे अन्याय को नहीं सहन कर सकती। वह अपने पति तक को खरी-खोटी सुनाती है तथा अधिकारियों की खिंचाई करती है। यह ट्यूशन के विरोध में जन-आंदोलन खड़ा कर देती है।

प्रश्न-6 गणित के टीचर के खिलाफ अन्य बच्चों ने आवाज क्यों नहीं उठाई?

उत्तर- गणित का अध्यापक बच्चों को जबरदस्ती ट्यूशन पर आने के लिए कहता था। ऐसा न करने पर उनके अंक तक काट देता था। दूसरे बच्चों ने उसके खिलाफ आवाज नहीं उठाई, क्योंकि उन्हें लगता था कि ऐसा करने पर अगली कक्षाओं में भी उनके साथ भेदभाव किया जाएगा। अध्यापक उनका भविष्य बिगाड़ देगा और उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा। इस डर से अमित व उसकी माँ भी रजनी को विरोध करने से रोकना चाहते थे।

प्रश्न-7 रजनी संपादक से क्या सहायता माँगती है?

उत्तर- रजनी संपादक को ट्यूशन की समस्या बताती है तथा उसे अखबार में छापने का आग्रह करती है। वह उनसे कहती है कि 25 तारीख की पेरेंट्स मीटिंग की खबर भी प्रकाशित करें। इससे सब लोगों तक खबर पहुँच जाएगी। व्यक्तिगत तौर पर हम कम लोगों से संपर्क कर पाएँगे

7.जामुन का पेड़ - कृश्नचंदर

जन्म-1914 ई., गुजरांकलां(पंजाब)। **निधन**-1977 ई.। रचनाएँ-**उपन्यास:** जरगाँव की रानी, सड़क वापस जाती है, एक गधे की आत्मकथा, हम वहशी हैं, कागज की नाव, मेरी यादों के किनारे; **कहानीसंग्रह**: एक गिरजा-ए-खंदक, यूकेलिप्ट्स की डाली।पाठ के मुख्य शब्द- झक्कड़, ताज्जुब, सेक्रेटरी, हुकूमत, अर्जेंट, डिपार्टमेंट, वारिस, स्कीम, आपत्ति, युक्ति, तगाफुल, अफवाह, इंटरव्यू, गुमनामी, फ़ौरन, पेश।

जीवन परिचय- कृश्नचंदर का जन्म पंजाब के गुजरांकलां जिले के वजीराबाद गाँव में 1914 ई. में हुआ। इनकी प्राथमिक शिक्षा जम्मू एवं कश्मीर के पुंछ क्षेत्र में हुई। 1930 ई. में वे उच्च शिक्षा के लिए लाहौर आ गए तथा फॉरमेन क्रिश्चियन कॉलेज में प्रवेश लिया। 1934 ई. में उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए किया। इसके बाद ये फिल्म जगत से जुड़ गए और अंत तक मुंबई में ही रहे। इन्हें साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया। इनका निधन 1977 ई. में हुआ।

रचनाएँ- इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

कहानी संग्रह- एक गिरजा-ए-खंदक, यूकेलिप्ट्स की डाली।

उपन्यास- शिकस्त, जरगाँव की रानी, सड़क वापस जाती है, आसमान रोशन है, एक गधे की आत्मकथा, अन्नदाता, हम वहशी हैं, जब खेत जागे, बावन पत्ते, एक वायलिन समंदर के किनारे, कागज की नाव, मेरी यादों के किनारे।

साहित्यिक विशेषताएँ- प्रेमचंद के बाद जिन कहानीकारों ने कहानी विधा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया, उनमें कृश्नचंदर का नाम महत्वपूर्ण है। इनका प्रगतिशील लेखक संघ से गहरा संबंध था। इस विचारधारा का असर इनके साहित्य पर भी मिलता है। कृश्नचंदर ने उपन्यास, नाटक, रिपोर्ताज और लेख भी बहुत से लिखे हैं, लेकिन उनकी पहचान कहानीकार के रूप में अधिक हुई है। महालक्ष्मी का पुल, आईने के सामने आदि उनकी मशहूर कहानियाँ हैं। वे प्रगतिशील और यथार्थवादी नजरिए से लिखे जाने वाले साहित्य के पक्षधर थे।

सारांश- 'जामुन का पेड़' कृश्नचंदर की प्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य कथा है। हास्य-व्यंग्य के लिए चीजों को अनुपात से ज्यादा फैला-फुलाकर दिखलाने की परिपाटी पुरानी है और यह कहानी भी उसका अनुपालन करती है। इसलिए इसकी घटनाएँ अतिशयोक्तिपूर्ण और अविश्वसनीय लगने लगती हैं। विश्वसनीयता ऐसी रचनाओं के मूल्यांकन की कसौटी नहीं हो सकती। प्रस्तुत पाठ यह स्पष्ट करता है कि कार्यालयी तौर-तरीकों में पाया जाने वाला विस्तार कितना निरर्थक और पदानुक्रम कितना हास्यस्पद है। यह व्यवस्था के संवेदनशून्य व अमानवीयता के रूप को भी बताता है।

रात को चली आँधी में सचिवालय के पार्क में जामुन का पेड़ गिर गया। सुबह माली ने देखा कि उसके नीचे एक आदमी दबा पड़ा है। उसने यह सूचना तुरंत चपरासी को दी। इस तरह मिनटों में दबे आदमी के पास भीड़ इकट्‌ठी हो गई। क्लर्कों को रसीले जामुनों की याद आ रही थी, तभी माली ने आदमी के बारे में पूछा। उन्हें उस आदमी के जीवित होने में संदेह था, तभी वह दबा आदमी बोल पड़ा। माली ने पेड़ हटाने का सुझाव दिया, परंतु सुपरिंटेंडेंट ने अपने ऊपर के अधिकारी से पूछने की बात कही। इस तरह बात डिप्टी सेक्रेटरी, ज्वांइट सेक्रेटरी, चीफ सेक्रेटरी, मिनिस्टर के पास पहुँची। मंत्री ने चीफ सेक्रेटरी से कुछ कहा और उसी क्रम में बात नीचे तक पहुँ दोपहर को भीड़ इकट्‌ठी हो गई। कुछ मनचले क्लर्क सरकारी इजाजत के बिना पेड़ हटाना चाहते थे कि तभी सुपरिंटेंडेंट फाइल लेकर भागा-भागा आया और कही कि यह काम कृषि विभाग का है। वह उन्हें फाइल भेज रहा है। कृषि विभाग ने पेड़ हटवाने की जिम्मेदारी व्यापार विभाग पर डाल दी। व्यापार विभाग ने कृषि विभाग पर जिम्मेदारी डालकर अपना पल्ला झाड़ लिया। दूसरे दिन भी फाइल चलती रही। शाम को इस मामले को हॉर्टीकल्चर विभाग के पास भेजने का फैसला किया गया, क्योंकि यह फलदार पेड़ है।

रात को माली ने दबे हुए आदमी को दाल-भात खिलाया, जबकि उसके चारों तरफ पुलिस का पहरा था। माली ने उसके परिवार के बारे में पूछा तो दबे हुए आदमी ने स्वयं को लावारिस बताया। तीसरे दिन हॉर्टीकल्चर विभाग से जवाब आया कि आजकल 'पेड़ लगाओ' स्कीम जोर-शोर से चल रही है। अत: जामुन के पेड़ को काटने की इजाजत नहीं दी जा सकती।

एक मनचले ने आदमी को काटने की बात की। इससे पेड़ बच जाएगा। दबे हुए आदमी ने इस पर आपत्ति की कि ऐसे तो वह मर जाएगा। आदमी काटने वाले ने अपना तर्क दिया कि आजकल प्लास्टिक सर्जरी उन्नति कर चुकी है। यदि आदमी को बीच में से काटकर निकाल लिया जाए तो उसे प्लास्टिक सर्जरी से जोड़ा जा सकता है। इस बात पर फाइल मेडिकल विभाग भेजी गई। वहाँ से रिपोर्ट आई कि सारी जाँच-पड़ताल करके पता चला कि प्लास्टिक सर्जरी तो हो सकती है, किंतु आदमी मर जाएगा। अत: यह फैसला रद्द हो गया।

फाइल चलती रही। रात को माली ने उस आदमी को बताया कि कल सभी सचिवों की बैठक होगी। वहाँ केस सुलझने के आसार हैं। दबे हुए आदमी ने गालिब का एक शेर सुनाया

"ये तो माना कि तगाफुल न करोगे लेकिन

खाक हो जाएँगे हम तुमको खबर होने तक!"

यह सुनकर माली हैरान हो गया। आदमी के शायर होने की बात सारे सचिवालय में फैल गई, फिर यह चर्चा शहर में फैल गई और तरह-तरह के कवि व शायर वहाँ इकट्‌ठे हो गए। वे सभी अपनी रचनाएँ सुनाने लगे। कई क्लर्क उस आदमी से अपनी कविता पर आलोचना करने को मजबूर करने लगे। जब यह पता चला कि दबा हुआ व्यक्ति कवि है, तो सब-कमेटी ने यह मामला कल्चरल डिपार्टमेंट को सौंप दिया। साहित्य अकादमी के सचिव के पास फाइल पहुँची। सचिव उसी समय उस आदमी का इंटरव्यू लेने पहुँचा। दबे हुए आदमी ने बताया कि उसका उपनाम 'ओस' है तथा कुछ दिन पहले उसका लिखा हुआ 'ओस के फूल' गद्य-संग्रह प्रकाशित हुआ है। सचिव ने आश्चर्य जताया कि इतना बड़ा लेखक उनकी अकादमी का सदस्य नहीं है। आदमी ने कहा कि मुझे पेड़ के नीचे से निकालिए। सचिव उसे आश्वासन देकर चला गया।

अगले दिन सचिव ने उसे साहित्य अकादमी का सदस्य चुने जाने की बधाई दी। आदमी ने उसे पेड़ के नीचे से निकालने की प्रार्थना की तो उसने असमर्थता जताई। उसने कहा कि यदि तुम मर गए तो वे उसकी बीवी को वजीफा दे सकते हैं। उनके विभाग का संबंध सिर्फ कल्चर से है। पेड़ काटने का काम आरी-कुल्हाड़ी से होगा। वन विभाग को लिख दिया गया है। शाम को माली ने बताया कि कल वन विभाग वाले पेड़ काट देंगे।

माली खुश था। दबे हुए आदमी का स्वास्थ्य जवाब दे रहा था। दूसरे दिन वन विभाग के लोग आरी-कुल्हाड़ी लेकर आए तो विदेश विभाग के आदेश से यह कार्य रोक दिया गया। यह पेड़ पीटोनिया राज्य के प्रधानमंत्री ने सचिवालय में दस साल पहले लगाया था। पेड़ काटने से दोनों राज्यों के संबंध बिगड़ जाएँगे। दूसरे पीटोनिया सरकार राज्य को बहुत सहायता देती है। दो देशों की खातिर एक आदमी के जीवन का बलिदान दिया जा सकता है।

अंडर सेक्रेटरी ने बताया कि प्रधानमंत्री विदेश दौरे से सुबह वापस आ गए हैं। अब वे ही निर्णय देंगे। शाम के पाँच बजे स्वयं सुपरिंटेंडेंट कवि की फाइल लेकर आया और चिल्लाया कि प्रधानमंत्री ने सारी जिम्मेदारी स्वयं लेते हूए पेड़ काटने की अनुमति दे दी। कल यह पेड़ काट दिया जाएगा। तुम्हारी फाइल पूरी हो गई। परंतु कविका हाथ ठंडा था। उसके जीवन की फाइल भी पूरी हो चुकी थी।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

दूसरे दिन माली ने चपरासी को बताया, चपरासी ने क्लर्क को, क्लर्क ने हैड-क्लर्क को। थोड़ी ही देर में सेक्रेटेरियेट में यह अफ़वाह फैल गई कि दबा हूआ आदमी शायर है। बस, फिर क्या था। लोगों का झुंड-का-झुंड शायर को देखने के लिए उमड़ पड़ा। इसकी चर्चा शहर में भी फैल गई और शाम तक गली-गली से शायर जमा होने शुरू हो गए। सेक्रेटेरियेट का लॉन भाँति-भाँति के कवियों से भर गया और दबे हूए आदमी के चारों ओर कवि-सम्मेलन का-सा वातावरण उत्पन्न हो गया। सेक्रेटेरियेट के कई क्लर्क और अंडर-सेक्रेटरी तक जिन्हें साहित्य और कविता से लगाव था, रुक गए। कुछ शायर दबे हूए आदमी को अपनी कविताएँ और दोहे सुनाने लगे। कई क्लर्क उसको अपनी कविता पर आलोचना करने को मजबूर करने लगे।

(i) सेक्रेटेरियेट में किस बात की अफ़वाह फैल गई?

क- चपरासी शायर है

ख- क्लर्क शायर है

ग- माली शायर है

घ- दबा हूआ आदमी शायर है

(ii) लोगों का झुंड किसे देखने के लिए उमड़ पड़ा?

क- चपरासी को

ख- क्लर्क को

ग- शायर को

घ- माली को

(iii) सेक्रेटेरियेट का लॉन किन लोगों से भर गया?

क- चपरासियों से

ख- कवियों से

ग- नेताओं से

घ- अंडर-सेक्रेटरी से

(iv) दबे हूए आदमी के चारों ओर कैसा वातावरण उत्पन्न हो गया?

क- कवि सम्मेलन-सा

ख- मेले-सा
ग- ज़ुलूस-सा
घ- धर्म स्थल-सा
(v) 'जामुन का पेड़' पाठ के लेखक का क्या नाम है?
क- रजनी
ख- मन्नू भंडारी
ग- कृश्नचंदर
घ- लीला बेन

उत्तर- (i) घ- दबा हुआ आदमी शायर है (ii)ग- शायर को (iii) ख- कवियों से (iv) क- कवि सम्मेलन-सा (v) ग- कृश्नचंदर

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 दबा हुआ आदमी एक कवि है, यह बात कैसे पता चली और इस जानकारी का फाइल की यात्रा पर क्या असर पड़ा?

उत्तर- सेक्रेटेरियट के लॉन में खड़ा जामुन का पेड़ रात की आँधी में गिर गया। इसके नीचे एक आदमी दब गया। उसे बचाने के लिए एक सरकारी फाइल बनी। वह एक विभाग से दूसरे विभाग में जाने लगी। माली ने उस आदमी को हौसला देते हुए उसे खिचड़ी खिलाई और कहा कि उसका मामला ऊपर तक पहुँच गया है। तब उस व्यक्ति ने आह भरते हुए गालिब का शेर कहा-

"ये तो माना कि तगाफ़ुल न करोगे लेकिन
खाक हो जाएँगे हम तुमको खबर होने तक!"

माली उसे पूछता है कि क्या आप शायर हैं? उसने 'हाँ' में सिर हिलाया। फिर माली ने यह बात क्लर्कों को बताई। इस प्रकार यह बात सारे शहर में फैल गई। सेक्रेटेरियट में शहर-भर के कवि व शायर इकट्ठे हो गए। फाइल कल्चर डिपार्टमेंट को भेजी गई। वहाँ का सचिव उस व्यक्ति का इंटरव्यू लेने आया और उसे अकादमी का सदस्य बना दिया किंतु यह कहकर कि पेड़ से नीचे से निकालने का काम उसके विभाग का नहीं है वह फाइल वन विभाग को भेज या देता है। इससे पेड़ हटाने या काटने की अनुमति मिलने का रास्ता और लंबा हो गया है।

प्रश्न- 2 कृषि-विभाग वालों ने मामले को हॉटीकल्चर विभाग को सौंपने के पीछे क्या तर्क दिया?

उत्तर- कृषि-विभाग ने मामला हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट को ही सौंपते हुए लिखा-"क्योंकि यह एक फलदार पेड़ का मामला है और एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट अनाज और खेती-बाड़ी के मामलों में फैसला करने का हकदार है। जामुन का पेड़ चूँकि एक फलदार पेड़ है। इसलिए यह पेड़ हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट के अंतर्गत आता है।"

प्रश्न- 3 कहानी में दो प्रसंग ऐसे हैं, जहाँ लोग पेड़ के नीचे दबे आदमी को निकालने के लिए कटिबद्ध होते हैं?

उत्तर- एक बार तो शुरुआती पहले दिन ही माली के कहने पर जमा हुई भीड़ तैयार थी कि सब मिलकर जोर लगाते हैं। उसी समय सुपरिंटेंडेंट बोला कि 'ठहरो! मैं अंडर सेक्रेटरी से पूछ लें।' और बस यह मामला ठप्प हो गया। दूसरा प्रसंग दोपहर के भोजन के समय आता है। दबे हुए व्यक्ति को बाहर निकालने के लिए फाइल कार्यालय में घूम रही थी तो कुछ मनचले किस्म के क्लर्क सरकारी फैसले के इंतजार के बिना इस पेड़ को स्वयं हटा देना चाहते थे कि उसी समय सुपरिंटेंडेंट फाइल लेकर भागा-भागा आया और कहा कि कृषि विभाग के अधीन आने वाले इस पेड़ को हम नहीं काट सकते। इस प्रकार संकल्प भी भंग हो जाता है।

प्रश्न- 4 यह कहना कहाँ तक युक्तिसंगत है कि इस कहानी में हास्य के साथ-साथ करुणा की भी अंतर्धारा है। अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तर- यह कहना बिल्कुल सही है कि यह कहानी हास्य के साथ-साथ करुणा की भी अंतर्धारा है। व्यक्ति पेड़ के नीचे दबा हुआ है। चारों तरफ भीड़ जमा है। वे जामुन के पेड़ तथा रसीले जामुनों की चर्चा कर रहे हैं, परंतु दबे व्यक्ति को बचाने का प्रयास नहीं होता। क्लर्कों,अधिकारियों तथा विभागों की फूहड़ हरकतें हास्य के साथ करुणा को जाग्रत करती हैं। फाइल चलती रहती है। माली ही दया करके उसे खाना खिला देता है। कुछ लोग आदमी को काटकर उसे प्लास्टिक सर्जरी से जोड़ने की बात कहते हैं। यह संवेदनहीनता का चरम रूप है। कल्चर विभाग का सचिव उसे अकादमी का सदस्य बना देता है, उससे मिठाई माँगता है, परंतु उसे बचाने का प्रयास नहीं करता। देशों के संबंध के नाम पर आम आदमी की बलि चढ़ाई जा सकती है। ये सभी घटनाएँ करुणा की गहनता को व्यक्त करती हैं।

प्रश्न-5 यदि आप माली की जगह पर होते, तो हुकूमत के फैसले का इंतजार करते या नहीं? अगर हाँ, तो क्यों और नहीं, तो क्यों?

उत्तर- यदि हम माली के स्थान पर होते तो हुकूमत के फैसले का जरा भी इंतजार न करते और बिना किसी की परवाह किए दबे हुए आदमी को निकाल लेते, क्योंकि किसी भी विभाग, कानून और हुकूमत के फैसले से ज्यादा आवश्यक है किसी की जान बचाना। अतः सबसे पहले वही किया जाना चाहिए। इतने सारे लोगों के बीच महज औपचारिकता के चलते एक व्यक्ति की जान चली जाना मनुष्यता के नाम पर धब्बा है।

प्रश्न-6 हॉर्टीकल्चर विभाग का जवाब व्यंग्यपूर्ण क्यों था?

उत्तर- हॉर्टीकल्चर विभाग के सचिव ने जवाब दिया कि उनका विभाग 'पेड़ लगाओ' अभियान में जोर-शोर से जुटा हुआ है। ऐसे में किसी भी अधिकारी को पेड़ काटने की बात नहीं सोचनी चाहिए। जामुन फलदार पेड़ है। अत: फलदार पेड़ को काटने की अनुमति कदापि नहीं दे सकते। लेखक व्यंग्य करता है कि ऐसे अफसरों को अपनी नीतियों की अधिक चिंता रहती है, व्यक्ति की जान की नहीं।

प्रश्न-7 पेड़ के बजाय आदमी को काटने की सलाह पर टिप्पणी करें।

उत्तर- एक मनचले क्लर्क ने सलाह दी कि यदि जामुन के फलदार पेड़ को बचाने की जरूरत है तो उसके नीचे दबे आदमी को काटकर निकाल लो, फिर उसे प्लास्टिक सर्जरी से जोड़ दिया जाएगा। इस तरीके से पेड़ भी बच जाएगा। यह सुझाव सरकारी बाबुओं की संवेदनशून्यता पर चोट करती है। ये ऊट-पटांग सुझाव देते हैं ताकि अफसर खुश रह सके।

प्रश्न-8 साहित्य अकादमी के सचिव ने शायर को क्या बताया?

उत्तर- साहित्य अकादमी के सचिव ने शायर को बताया कि तुम्हें साहित्य अकादमी की केंद्रीय शाखा का सदस्य चुन लिया गया है और तुम्हारे मरणोपरांत तुम्हारी बीवी को वजीफा दिया जाएगा। परंतु हमारा विभाग पेड़ के नीचे से तुम्हें नहीं निकाल सकता। यह काम साहित्य अकादमी का नहीं है। हालाँकि हमने फॉरेस्ट डिपार्टमेंट को लिख दिया है और अर्जेंट लिखा है।

8. भारत माता - जवाहरलाल नेहरू

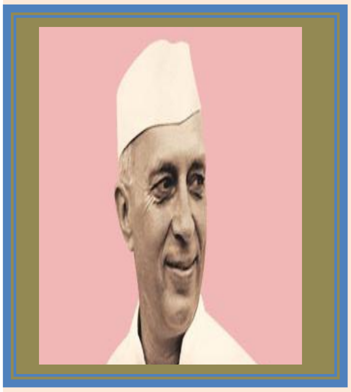

जन्म-1889 ई., इलाहाबाद(उत्तर प्रदेश)। निधन-1964 ई.। रचनाएँ-मेरी कहानी (आत्मकथा), विश्व इतिहास की झलक, हिंदुस्तान की कहानी, पिता के पत्र पुत्री के नाम,हिंदुस्तान की समस्याएँ, स्वाधीनता और उसके बाद, लड़खड़ाती दुनिया,राष्ट्रपिता,।भाषा- हिन्दी। पाठ के मुख्य शब्द- जलसे, सयाने, गिज़ा, महदूद, धुर, जुज, कशमकशों, सिलसिले, तरक्की, मुल्कों, कुतूहल, अजीज़, दरअसल।

जीवन परिचय- जवाहरलाल नेहरू का जन्म इलाहाबाद के एक संपन्न परिवार में 1889 ई. में हुआ। इनके पिता प्रसिद्ध वकील थे। नेहरू की प्रारंभिक शिक्षा घर पर तथा उच्च शिक्षा इंग्लैंड में हैरो तथा कैम्ब्रिज में हुई। इन्होंने वहीं से वकालत की पढ़ाई की। इन पर गाँधी का बहुत प्रभाव था। उनके आहवान पर वे पढ़ाई छोड़कर आजादी की लड़ाई में जुट गए। 1929 ई. में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के अध्यक्ष बने और पूर्ण स्वतंत्रता की माँग की। इनका झुकाव समाजवाद की ओर भी रहा।ये शांति, अहिंसा और मानवता के हिमायती थे। इन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्वशांति और पंचशील के सिद्धांतों का प्रचार किया। इनका निधन 1964 ई. में हुआ।

रचनाएँ- नेहरू जी उच्चकोटि के लेखक भी थे। इन्होंने अंग्रेजी में लिखा। इनकी रचनाओं का हिंदी सहित अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

मेरी कहानी (आत्मकथा), विश्व इतिहास की झलक, हिंदुस्तान की कहानी, पिता के पत्र पुत्री के नाम, लेखों औरदुनिया।

सारांश- भारत माता' अध्याय **हिंदुस्तान की कहानी** का पाँचवाँ अध्याय है। इसमें नेहरू जी ने बताया है कि किस तरह देश के कोने-कोने में आयोजित जलसों में जाकर वे आम लोगों को बताते थे कि अनेक हिस्सों में बँटा होने के बाद भी हिंदुस्तान एक है। इस अपार फैलाव के बीच एकता के क्या आधार हैं और क्यों भारत एक देश है, जिसके सभी हिस्सों की नियति एक ही तरीके से बनती-बिगड़ती है। उन्होंने **भारत माता** शब्द पर भी विचार किया तथा यह निष्कर्ष निकाला कि **भारत माता की जय** का मतलब हैयहाँ के करोड़ों-करोड़ लोगों की जय।

नेहरू जी का कहना है कि जब वे जलसों में जाते हैं तो वे श्रोताओं से भारत की चर्चा करते हैं। भारत संस्कृत शब्द है और इस जाति के परंपरागत संस्थापक के नाम से निकला है। शहरों में लोग अधिक समझदार हैं। गाँवों में किसानों से देश के बारे में चर्चा करते हैं। वे उन्हें बताते हैं कि देश के हिस्से अलग होते हुए भी एक हैं। वे उन्हें बताते थे कि उत्तर सँ लेकर दक्षिण तक और पूरब से लेकर पश्चिम तक उनकी समस्याएँ एक जैसी है और स्वराज्य सभी के लिए फायदेमंद है।

नेहरू जी ने सारे भारत की यात्रा की। इस दौरान उन्होंने यह समझाने का प्रयास किया कि हर जगह किसानों की समस्याएँ एक-सी हैं-गरीबों, कर्जदारों, पूँजीपतियों के शिकंजे, जमींदार, महाजन, कड़े लगान और सूद, पुलिस के जुल्म। ये सभी बातें विदेशी सरकार की देन हैं तथा सबको इससे छुटकारा पाने के लिए सोचना है। सभी लोगों को देश के बारे में सोचना है। वे . लोगों से चीन, स्पेन, अबीसिनिया, मध्य यूरोप, मिस्र और पश्चिमी एशिया में होने वाले परिवर्तनों का जिक्र करते हैं। वे सोवियत यूनियन व अमेरिका की उन्नति के बारे में बताते हैं। किसानों को विदेशों के बारे में समझाना आसान न था किंतु उन्होंने जैसा समझ रखा था वैसा मुश्किल भी न था। इसका कारण यह था कि हमारे महाकाव्यों व पुराणों ने इस देश की कल्पना करा दी थी और तीर्थ यात्रा करने वाले लोगों ने या बड़ी लड़ाइयों में भाग लेने सिपाहियों और कुछ ने विदेशों में नौकरी करके देश-दुनिया की जानकारी दी। सन् तीस की आर्थिक मंदी की वजह से दूसरे देशों के बारे में नेहरू जी के दिए गए उदाहरण लोगों के समझ में आ जाते थे।

जलसों में नेहरू का स्वागत अकसर 'भारत माता की जय' के नारे से होता था। वे लोगों से इस नारे का मतलब पूछते तो वे जवाब न दे पाते। एक हट्टे-कट्टे किसान ने भारत माता का अर्थ धरती बताया। उन्होंने पूछा कि कौन-सी धरती? उनके गाँव, जिले, सूबे या पूरे देश की धरती। इस प्रश्न पर फिर सब चुप हो जाते। नेहरू उन्हें बताते हैं कि भारत वह है जो उन्होंने समझ रखा है। इसमें नदी, पहाड़, जंगल, खेत व करोड़ों भारतीय शामिल हैं। भारत माता की जय का अर्थ है–इन सबकी जय। जब वे स्वयं को भारत माता का अंश समझते थे तो उनकी आँखों में चमक आ जाती थी।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

कभी ऐसा भी होता कि जब मैं किसी जलसे में पहूँचता, तो मेरा स्वागत 'भारत माता की जय!' इस नारे से ज़ोर के साथ किया जाता। मैं लोगों से अचानक पूछ बैठता कि इस नारे से उनका क्या मतलब है? यह भारत माता कौन है, जिसकी वे जय चाहते हैं। मेरे सवाल से उन्हें कुतूहल और ताज्जुब होता और कुछ जवाब न बन पड़ने पर वे एक-दूसरे की तरफ या मेरी तरफ देखने लग जाते। मैं सवाल करता ही रहता। आखिर एक हट्टे-कटटे जाट ने, जो अनगिनत पीढ़ियों से किसानी करता आया था, जवाब दिया कि भारत माता से उनका मतलब धरती से है। कौन-सी धरती? खास उनके गाँव की धरती या जिले की या सूबे की या सारे हिंदुस्तान की धरती से उनका मतलब है? इस तरह सवाल-जवाब चलते रहते, यहाँ तक कि वे ऊबकर मुझसे कहने लगते कि मैं ही बताऊँ।

(i) लेखक जब किसी जलसे में पहुँचता तो उसका स्वागत किस नारे के साथ किया जाता?

क- जय जय

ख- भारत माता की जय

ग-धरती माता की जय

घ-नेहरू जी की जय

(ii) लेखक लोगों से अचानक क्या पूछ बैठते?

क- जय के नारे का मतलब

ख- किसान का मतलब

ग-देश का मतलब

घ-धरती माता का मतलब

(iii) नेहरू जी के सवाल का जवाब किसने दिया?

क- एक नेता ने

ख- एक सैनिक ने

ग-एक हट्टे-कटटे जाट ने

घ-इनमें से कोई

(iv) भारत माता का क्या अर्थ है?

क- एक गाँव की धरती

ख- एक जिले की धरती

ग-एक सूबे की धरती

घ-सारे हिंदुस्तान की धरती

(v) भारत माता पाठ के लेखक का नामक्या है?

क- बालमुकुंद गुप्त

ख- मन्नू भंडारी

ग-कृश्नचंदर

घ-जवाहरलाल नेहरू

उत्तर- (i) ख- 'भारत माता की जय!' (ii) क- जय के नारे का मतलब (iii) ग-एक हट्टे-कटटे जाट ने (iv) घ- सारे हिंदुस्तान की धरती (v) घ- जवाहरलाल नेहरू

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 भारत की चर्चा नेहरू जी कब और किससे करते थे?

उत्तर- भारत की चर्चा नेहरू जी देश के कोने-कोने में आयोजित जलसों में जाकर अपने सुनने वालों से किया करते थे। इस विषय की चर्चा ज्यादातर वे किसानों से करते थे। उन्हें लगता था कि किसानों को संपूर्ण भारत के बारे में जानकारी कम है तथा उनका दृष्टिकोण सीमित है। वे उन्हें हिंदुस्तान का नाम भारत देश के संस्थापक के नाम से

परंपरा से चला आ रहा है। इस देश का एक हिस्सा दूसरे से अलग होते हुए भी देश एक है। इस भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराने के लिए आंदोलन की प्रेरणा देते थे।

प्रश्न-2 नेहरू जी भारत के सभी किसानों से कौन-सा प्रश्न बार-बार करते थे?

उत्तर- नेहरू जी भारत के सभी किसानों से निम्नलिखित प्रश्न बार-बार करते थे- वे 'भारत माता की जय' से क्या समझते हैं? यह भारत माता कौन है?वह धरती कौन-सी है जिसे वे भारत माता कहते हैं-गाँव की, जिले की, सूबे की या पूरे हिंदुस्तान की।

प्रश्न-3 दुनिया के बारे में किसानों को बताना नेहरू जी के लिए क्यों आसान था?

उत्तर- नेहरू जी के लिए किसानों को दुनिया के बारे में बताना आसान था। इसके निम्नलिखित कारण हैं –

- महाकाव्यों व पुराणों की कथा-कहानियों से किसान पहले से परिचित थे।
- तीर्थयात्राओं के कारण देश के चारों कोनों पर है।
- कुछ सिपाहियों ने प्रथम विश्वयुद्ध में भाग लिया था।
- कुछ लोग विदेशों में नौकरियाँ करते थे।
- 1930 की आर्थिक मंदी के कारण दूसरे मुल्कों के बारे में जानकारी थी।

प्रश्न-4 किसान सामान्यत: भारत माता का क्या अर्थ लेते थे?

उत्तर- किसान सामान्यत: 'भारत माता' का अर्थ-धरती से लेते थे। नेहरू जी ने उन्हें समझाया कि उनके गाँव, जिले, नदियाँ, पहाड़, जंगल, खेततथा करोड़ों भारतीय सभी भारत माता हैं।

प्रश्न-5 भारत माता के प्रति नेहरू जी की क्या अवधारणा थी?

उत्तर- भारत माता के प्रति नेहरू जी की अवधारणा थी कि हिंदुस्तान वह सब कुछ है जिसे उन्होंने समझ रखा है, लेकिन वह इससे भी बहुत ज्यादा है। देश का हर हिस्सा- नदी, पहाड़, खेत आदि सभी इसमें शामिल हैं। दरअसल भारत में रहने वाले करोड़ों लोग हैं, 'भारत माता की जय' का अर्थ है-करोड़ों भारतवासियों की जय। इस धारणा का अर्थ है-देशवासियों से ही देश बनता है।

प्रश्न-6 आजादी से पूर्व किसानों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता था?

उत्तर- आजादी से पूर्व किसानों को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता था- गरीबी, कर्जदारी, पूँजीपतियों के शिकजे में फंसे रहना, जमींदारों और महाजनों के कर्ज के जाल में फँसकर तड़पना, लगान की कठोरता से वसूली, पुलिस के अत्याचार, अधिक ब्याज देना तथा विदेशी शासन के अत्याचार।

प्रश्न-7 आजादी से पहले भारत-निर्माण को लेकर नेहरू के क्या सपने थे? क्या आज़ादी के बाद वे साकार हुए? चर्चा कीजिए।

उत्तर- आज़ादी से पहले भारत निर्माण को लेकर नेहरू के सपने निम्नलिखित थे –

1. देश में औद्योगिक क्रांति
2. महाजनी संस्कृति से मुक्ति
3. विज्ञान व तकनीक का विकास
4. गरीबी दूर करना।

उनके ये सपने कुछ हद तक पूरे हुए, परंतु पूर्णतः नहीं, भ्रष्टाचार, सरकारी अनिच्छा, वोट की राजनीति आदि के कारण अनेक योजनाएँ सिरे नहीं चढ़ सकी।

प्रश्न-8 आपकी दृष्टि में भारत माता और हिंदुस्तान की क्या संकल्पना है? बताइए।

उत्तर- मेरी दृष्टि में भारत माता या हिंदुस्तान वह देश है जो विभिन्न भौगोलिक सीमाओं से आबद्ध है। उत्तर में हिमालय इसका मस्तक है जो प्रहरी के समान इसकी रात-दिन रक्षा करता है तो दक्षिण में सागर इसके चरणों को

पखारता है। अनेक नदियाँ, पहाड़, जंगल, खेत, पशु-पक्षी इसकी शोभा में वृद्धि करते हैं। इस देश का हर निवासी इसका अंश है। इन सबको मिलाकर बना हुआ देश भारत है।

प्रश्न-9 वर्तमान समय में किसानों की स्थिति किस सीमा तक बदली है? चर्चा कर लिखिए।

उत्तर- आज किसानों की दशा में क्रांतिकारी बदलाव आए हैं। अब वे अपने खेतों के मालिक हैं। उन्हें लगान नहीं देना पड़ता। सूखा पड़ने या बाढ़ आने पर उसे मुआवजा मिलता है। उसकी फसलों की खरीद हेतु सरकार न्यूनतम मूल्य घोषित करती है। अच्छे बीज, खाद, कीटनाशक, बिजली, पानी आदि सब पर सरकार भारी सब्सिडी देती है। अब उसे भूखा नहीं मरना पड़ता। खेती के साथ वह छोटे-छोटे कुटीर उद्योग भी लगा सकता है। अब उसे महाजनों, जमींदारों, पुलिस के अत्याचार सहने नहीं पड़ते।

वितान भाग-1 (पूरक पाठ्यपुस्तक)

1. भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लता मंगेशकर - कुमार गंधर्व

जन्म-1924ई., बेलगाँव(कर्नाटक)। निधन- 1992 ई.। कार्यक्षेत्र- हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन। मालवा लोकधुनों एवं हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का सामंजस्य। रचना- अनूप राग-विलास।पाठ के मुख्य शब्द- अद्वितीय, तन्मयता, चित्रपट, मालिकाएँ, अभिरुचि, ध्वनिमुद्रिका, दिग्दर्शक, आलाप, द्रुतलय, लयकारी, रंजकता।

जीवन परिचय- कुमार गंधर्व भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में जाना-पहचाना नाम है। इनका जन्म 1924 ई. में कर्नाटक राज्य में बेलगाँव जिले के सुलेभावि में हुआ। इनका मूल नाम शिवपुत्र साढ़िदारमैया कामकली है। ये बचपन में ही संगीत के प्रति समर्पित हो गए। मात्र दस वर्ष की उम्र में इन्होंने गायकी की पहली मंचीय प्रस्तुति की। इनके संगीत की मुख्य विशेषता मालवा लोक-धुनों और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का सुंदर सामंजस्य है जिसका अद्भुत नमूना कबीर के पदों का उनके द्वारा गायन है। इन्होंने लोगों में रचे-बसे लुप्तप्राय पदों का संग्रह कर और उन्हें स्वरों में बाँधकर इन्हें अंतर्राष्ट्रीय पहचान दी। इनकी संगीत-साधना को देखते हुए इन्हें कालिदास सम्मान और पद्मविभूषण सहित बहुत-से सम्मानों से अलंकृत किया गया। इनका देहावसान 1992 ई. में हुआ।

सारांश- इस पाठ में लेखक ने स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर की गायकी पर बेबाक टिप्पणी की है। यह पाठ मूल रूप से हिंदी में लिखा गया है। यह रचना भाषा की सांगीतिक धरोहर है। यह शास्त्रीय संगीत और फिल्मी संगीत को एक धरातल पर ला रखने का साहस है। यह ऐसी परख है जो न शास्त्रीय है और न सुगम। यह बस संगीत है। लतामंगेशकर के 'गानपन' के बहाने लेखक ने शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत के संबंधों पर भी अपना मत प्रकट किया है।

लेखक बताता है कि बरसों पहले वह बीमार था, उस समय एक दिन उसे रेडियो पर अद्वितीय स्वर सुनाई दिया। यह स्वर उसके अंतर्मन को छू गया। गाना समाप्त होने पर गायिका का नाम घोषित किया गया-लता मंगेशकर नाम सुनकर वह हैरान रह गया। उसे लगा कि प्रसिद्ध गायक दीनानाथ मंगेशकर की अजब गायकी ही उनकी बेटी की आवाज में प्रकट हुई है। यह शायद 'बरसात' फिल्म से पहले का गाना था। लता के पहले प्रसिद्ध गायिका नूरजहाँ का चित्रपट संगीत में अपना जमाना था, परंतु लता उससे आगे निकल गई।

लेखक का मानना है कि लता के बराबर की गायिका कोई नहीं हुई। लता ने चित्रपट संगीत को लोकप्रिय बनाया। आज बच्चों के गाने का स्वर बदल गया है। यह सब लता के कारण हुआ है। चित्रपट संगीत के विविध प्रकारों को आम आदमी समझने लगा है तथा गुनगुनाने लगा है। लता ने नयी पीढ़ी के संगीत को संस्कारित किया तथा आम आदमी में संगीत विषयक अभिरुचि पैदा करने में योगदान दिया। आम श्रोता शास्त्रीय गायन व लता के गायन में से लता की ध्वनि मुद्रिका को पसंद करेगा।

आम आदमी को राग के प्रकार, ताल आदि से कोई मतलब नहीं होता। उसे केवल मस्त कर देने वाली मिठास चाहिए। लता के गायन में वह गानपन सौ फीसदी मौजूद है। लता के गायन की एक और विशेषता है-स्वरों की निर्मलता। नूरजहाँ के गानों में मादकता थी, परंतु लता के स्वरों में कोमलता और मुग्धता है। यह अलग बात है कि संगीत दिग्दर्शकों ने उसकी इस कला का भरपूर उपयोग नहीं किया है। लता के गाने में एक नादमय उच्चार है। उनके गीत के किन्हीं दो शब्दों का अंतर स्वरों के आलाप द्वारा सुंदर रीति से भरा रहता है। दोनों शब्द एक-दूसरे में विलीन होते प्रतीत होते हैं। लेखक का मानना है कि लता के करुण रस के गाने ज्यादा अच्छेनहीं हैं, उसने मुग्ध श्रृंगार की अभिव्यक्ति करने वाले मध्य या द्रुतलय के गाने अच्छे तरीके से गाए हैं। अधिकतर संगीत दिग्दर्शकों ने उनसे ऊँचे स्वर में गवाया है।

लेखक का मानना है कि शास्त्रीय संगीत व चित्रपट संगीत में तुलना करना निरर्थक है। शास्त्रीय संगीत में गंभीरता स्थायी भाव है, जबकि चित्रपट संगीत में तेज लय व चपलता प्रमुख होती है। चित्रपट संगीत व ताल प्राथमिक अवस्था का होता है और शास्त्रीय संगीत में परिष्कृत रूप। चित्रपट संगीत में आधे तालों, आसान लय, सुलभता व लोच की प्रमुखता आदि विशेषताएँ होती हैं। चित्रपट संगीत गायकों को शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी अवश्य होनी चाहिए। लता के पास यह ज्ञान भरपूर है।

लता के तीन-साढे तीन मिनट के गाने और तीन-साढे तीनघंटे की शास्त्रीय महफिल का कलात्मक व आनंदात्मक मूल्य एक जैसे हैं। उसके गानों में स्वर, लय व शब्दार्थ का संगम होता है। गाने की सारी मिठास, सारी ताकत उसकी रंजकता पर आधारित होती है और रंजकता का संबंध रसिक को आनंदित करने की सामर्थ्य से है। लता का स्थान अव्वल दर्जे के खानदानी गायक के समान है। किसी ने पूछा कि क्या लता शास्त्रीय गायकों की तीन घंटे की महफिल जमा सकती है? लेखक उसी से प्रश्न करता है कि क्या कोई प्रथम श्रेणी का गायक तीन मिनट में चित्रपट का गाना इतनी कुशलता और रसोत्कटता से गा सकेगा? शायद नहीं।

खानदानी गवैयों ने चित्रपट संगीत पर लोगों के कान बिगाड़ देने का आरोप लगाया है। लेखक का मानना है कि चित्रपट संगीत ने लोगों के कान सुधारे हैं। लेखक कहता है कि हमारे शास्त्रीय गायक आत्मसंतुष्ट वृत्ति के हैं। वे कर्मकांड को आवश्यकता से अधिक महत्त्व देते हैं, जबकि चित्रपट संगीत लोगों को अभिजात्य संगीत से परिचित करवा रहा है।

लोगों को सुरीला व भावपूर्ण गाना चाहिए। यह काम चित्रपट संगीत ने किया है। उसमें लचकदारी है। उस सगीत की मान्यताएँ, मर्यादाएँ, झंझटें आदि निराली हैं। यहाँ नवनिर्माण की गुंजाइश है। इसमें शास्त्रीय रागदारी के अलावा लोकगीतों का भरपूर प्रयोग किया गया है। संगीत का क्षेत्र विस्तृत है। ऐसे चित्रपट संगीत की बेताज सम्राज्ञी लता है। उसकी लोकप्रियता अन्य पार्श्व गायकों से अधिक है। उसके गानों से लोग पागल हो उठते हैं। आधी शताब्दी तक लोगों के मन पर उसका प्रभुत्व रहा है। यह एक चमत्कार है जो आँखों के सामने है।

वर्णनात्मक

प्रश्न-1लेखक ने पाठ में गानपन का उल्लेख किया है। पाठ के संदर्भ में स्पष्ट करते हुए बताएँ कि आपके विचार में इसेप्राप्त करने के लिए किस प्रकार के अभ्यास की आवश्यकता है?

उत्तर-'गानपन' का शाब्दिक अर्थ है- गायकी की वह विशेषता जो आम इंसान को भी भाव-विभोर कर दे। वास्तव में, यह कला लता जी में है। गीत को गाने में मन की गहराइयों से भाव पिरोए जाएँ, यही उनका प्रयास रहता है। इस प्रयासमें

उन्हें काफ़ी हद तक सफलता भी मिली है। जिस प्रकार एक मनुष्य के लिए 'मनुष्यता' का होना जरूरी है, उसी प्रकार संगीत के लिए गानपन होना बहुत ज़रूरी है। लता जी की लोकप्रियता का मुख्य कारण यही गानपन है। यह गुण अपनी गायकी में लाने के लिए गायक को भरपूर रियाज़ करना चाहिए। साथ ही गीत के बोल, स्वरों के साथ-साथ भावों में भी पिरोए जाने चाहिए। गानों में गानपन के लिए स्वरों का उचित ज्ञान के साथ-साथ स्पष्टता व निर्मलता भी होनी चाहिए। स्वरों का जितना स्पष्ट व निर्मल उच्चारण होगा, संगीत उतना ही मधुर होगा। रसों के अनुसार उनकी लयात्मकता भी होनी चाहिए। स्वर, लय, ताल, उच्चारण आदि का सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त कर उनको अपने संगीत में उतारने का प्रयास करना चाहिए।

प्रश्न-2 लेखक ने लता की गायकी की किन विशेषताओं को उजागर किया है? आपको लता की गायकी में कौन-सी विशेषताएँ नज़र आती हैं? उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर- लेखक ने लता की गायकी की निम्नलिखित विशेषताओं को उजागर किया है-

1. **सुरीलापन-** लता के गायन में सुरीलापन है। उनके स्वर में अद्भुत मिठास, तन्मयता, मस्ती, लोच आदि हैं। उनका उच्चारण मधुर पूँज से परिपूर्ण रहता है।
2. **निर्मल स्वर-** लता के स्वरों में निर्मलता है। लता का जीवन की ओर देखने का जो दृष्टिकोण है, वही उसके गायन की निर्मलता में झलकता है।
3. **कोमलता-** लता के स्वरों में कोमलता व मुग्धता है। इसके विपरीत नूरजहाँ के गायन में मादक उत्तान दिखता था।
4. **नादमय उच्चार-** यह लता के गायन की अन्य विशेषता है। उनके गीत के किन्हीं दो शब्दों का अंतर स्वरों के आलाप द्वारा सुंदर रीति से भरा रहता है। ऐसा लगता है कि वे दोनों शब्द विलीन होते-होते एक-दूसरे में मिल जाते हैं। लता के गानों में यह बात सहज व स्वाभाविक है।
5. **शास्त्रीय शुद्धता-** लता के गीतों में शास्त्रीय शुद्धता है। उन्हें शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी है। उनके गीतों में स्वर, लय व शब्दार्थ का संगम होने के साथ-साथ रंजकता भी पाई जाती है।

हमें लता की गायकी में उपर्युक्त सभी विशेषताएँ नजर आती हैं। उन्होंने भक्ति, देशप्रेम, श्रृंगार, विरह आदि हर भाव के गीत गाए हैं। उनका हर गीत लोगों के मन को छू लेता है। वे गंभीर या अनहद गीतों को सहजता से गा लेती हैं। एक तरफ 'ऐ मेरे वतन के लोगों' गीत से सारा देश भावुक हो उठता है तो दूसरी तरफ 'दिलवाले दुल्हनियाँ ले जाएंगे' फ़िल्म के अल्हड़ गीत युवाओं को मस्त करते हैं। वास्तव में, गायकी के क्षेत्र में लता सर्वश्रेष्ठ हैं।

प्रश्न-3 लता ने करुण रस के गानों के साथ न्याय नहीं किया है, जबकि श्रृंगारपरक गाने वे बड़ी उत्कटता से गाती हैं। इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर- लेखक का यह कथन पूर्णतया सत्य नहीं प्रतीत होता। यह संभव है कि किसी विशेष चित्रपट में लता ने करुण रस के गीतों के साथ न्याय नहीं किया हो, किंतुसभी चित्रपटों पर यह बात लागू नहीं होती। लता ने कई चित्रपटों में अपनी आवाज़ दी है तथा उनमें करुण रस के गीत बड़ी मार्मिकता व रसोत्कटता के साथ गाए हैं। उनकी वाणी में एक स्वाभाविक करुणा विद्यमान है। उनके स्वरों में करुणा छलकती-सी प्रतीत होती है। फ़िल्म 'रुदाली' में उनका 'दिल-हुँ-हुँ करे.......' गीत विरही जनों के हृदयों को उत्कंठित ही नहीं करता अपितु अपनी मार्मिकता से हृदय को बींध-सा देता है। इसी प्रकार अन्यकई चित्रपटों पर भी यह बात लागू होती है। अत: यह नहीं कहा जा सकता है कि लता जी केवल श्रृंगार के गीत ही भली प्रकार गा सकती हैं। वे सभी गीतों को समान रसमयता के साथ गा सकती हैं।

प्रश्न-4 संगीत का क्षेत्र ही विस्तीर्ण है। वहाँ अब तक अलक्षित असंशोधित और अदृष्टिपूर्व ऐसा खूब बड़ा प्रांत है, तथापि बड़े जोश से इसकी खोज और उपयोग चित्रपट के लोग करते चले आ रहे हैं-इस कथन को वर्तमान फ़िल्मी संगीत के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- भारतीय संगीत शास्त्र बहुत प्राचीन है। इसमें वैदिक काल से ही नाना प्रकार के प्रयोग होते रहे हैं। इतनी प्राचीन परंपरा होने के कारण उसका क्षेत्र भी बहुत विशाल हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय संस्कृति भी बहुरंगी संस्कृति है। इसमें केवल भारतीय ही नहीं अपितु विदेशों से आने वाली संस्कृतियों का भी समावेश समय-समय पर होता रहा है। आज भी संगीत में नए-नए प्रयोग होते देखे जा सकते हैं। शास्त्रीय व लोकसंगीत की परंपरा आज भी निरंतर चल रही है, किंतु उनमें नाना प्रकार के प्रयोग करके संगीत को नया आयाम आज की फ़िल्मों में दिया जा रहा है। फ़िल्मों में गीत-संगीतकार कुछ-न-कुछ नया करने का प्रयास पहले से ही करते आए हैं। आजकल के फ़िल्मी संगीत पर भी यह बात लागू होती है। कभी इसमें पॉप संगीत का मिश्रण किया जाता है तो कभी सूफ़ी संगीत का तथा कभी लोक संगीत का। लोक संगीतों में भी अनेकानेक प्रांतों के संगीत को आधार बनाकर नए-नए गीतों की रचना कर उन पर संगीत दिया जाता है। इसका फ़िल्मकार लोग बहुत जोर-शोर से प्रचार भी करते हैं। इस प्रकार वर्तमान फ़िल्मी संगीत में भी नए प्रयोगों के माध्यम से संगीत का विस्तार हो। रहा है।

प्रश्न-5 'चित्रपट संगीत ने लोगों के कान बिगाड़ दिए'-अकसर यह आरोप लगाया जाता रहा है। इस संदर्भ में कुमार गंधर्व की राय और अपनी राय लिखें।

उत्तर- शास्त्रीय संगीतकारों का एक बहुत बड़ा वर्ग हमारे देश में रहता है। शास्त्रीय संगीत की परंपरा बहुत प्राचीन व उत्कृष्ट है। शास्त्रीय संगीत में प्रत्येक राग के अनुसार स्वर, लय, ताल आदि निश्चित होते हैं, उनमें थोड़ा-सा भी परिवर्तन असहनीय होता है। लोक संगीत या फ़िल्मी संगीत स्वर, लय, ताल आदि के संबंध में इतना सख्त रवैया नहीं रखता। इसमें जो भी श्रोताओं को आह्लादित करे, वही श्रेष्ठ समझा जाता है। इसे सीखने के लिए भी शास्त्रीय संगीत की तरह वर्षों के अभ्यास की जरूरत नहीं होती। शास्त्रीय संगीत के आचार्य चित्रपट या फ़िल्मी संगीत पर यह दोष मढ़ते रहते हैं कि उसने लोगों के कान बिगाड़ दिए हैं; अर्थात् उसके कारण लोगों को केवल कर्णप्रिय धुनें सुनने की आदत पड़ गई है।

इस विषय में कुमार गंधर्व का मत है कि वस्तुतः फ़िल्मी संगीत ने लोगों के कान बिगाड़े नहीं अपितु सुधारे हैं। आज फ़िल्मी संगीत के कारण एक साधारण श्रोता भी स्वर, लय, ताल आदि के विषय में जानकारी रखने लगा है। लोगों की रुचि संगीत में बढ़ी है। शास्त्रीय संगीत के काल में कितने लोग संगीत का ज्ञान रखते थे? कितने लोग उसके दीवाने होते थे? अर्थात् बहुत कम। आज लोग केवल फ़िल्मी संगीत ही नहीं शास्त्रीय संगीत की ओर भी मुड़ने लगे हैं। यह भी फ़िल्मी संगीत के कारण ही संभव हुआ है। हमारा मत भी कुमार गंधर्व से मिलता है। हमारा भी यही मानना है कि आज के फ़िल्मी संगीत के कारण ही शास्त्रीय संगीतकारों की पूछ भी बढ़ी है। जब उन्हें फ़िल्मों में संगीत देने व कार्यक्रम प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है तो लाखों लोग उन्हें पहचानते हैं। अतः फ़िल्मी संगीत पर उपर्युक्त दोष लगाना उचित नहीं है।

प्रश्न-6 शास्त्रीय एवं चित्रपट दोनों तरह के संगीतों के महत्त्व का आधार क्या होना चाहिए? कुमार गंधर्व की इस संबंध में क्या राय है? स्वयं आप क्या सोचते हैं?

उत्तर- कुमार गंधर्व का स्पष्ट मत है कि चाहे शास्त्रीय संगीत हो या फ़िल्मी संगीत, वही संगीत अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाएगा, जो 'रसिकों या श्रोताओं को अधिक आनंदित कर सकेगा। वस्तुतः यह तथ्य बिलकुल सही है कि संगीत का मूल ही आनंद है। संगीत की उत्पत्ति उल्लास से हुई है। श्रोता भी संगीत अपने मनोविनोद के लिए ही सुनते हैं न कि ज्ञान के लिए। अतः संगीत का चरम उद्देश्य आनंद प्राप्ति ही है। जो भी संगीत श्रोताओं को अधिक-से-अधिक आनंदित करेगा, वही अधिक लोकप्रिय भी होगा। अतः उसी को अधिक महत्त्व भी श्रोताओं द्वारा दिया जाएगा। यह बात संगीत ही नहीं अन्य सभी कलाओं पर भी लागू होती है। शास्त्रीय संगीत भी रंजक या आनंददायक न हो तो वह बिलकुल नीरस ही कहलाएगा।

प्रश्न-7 पाठ में दिए गए अंतरों के अलावा संगीत शिक्षक से चित्रपट संगीत एवं शास्त्रीय संगीत का अंतर पता करें। इन अंतरों को सूचीबद्ध करें।

उत्तर- शास्त्रीय संगीत- 1. इसे पारंपरिक संगीत भी कहा जाता है।2. यह स्वरों के अधार पर गाया जाता है।3. इसमें लय, ताल आदि का उल्लंघन वर्जित होता है।4. यह रागों पर आधारित होता है।5. इसमें आरोह-अवरोह आदि पर विशेष ध्यान दिया है। 6. इसमें हास्यरस का प्रायः अभाव रहता है।

चित्रपट संगीत- 1. इसमें लोकसंगीत तथा शास्त्रीय संगीत दोनों का ही प्रयोग हो सकता है। 2. इसे स्वरों या बिना स्वरों के अनुसार परिस्थिति के अनुरूप गाया जाता है। 3. इसका मुख्य आधार लोकप्रियता है, अतः इसके गायन में स्वतंत्रता है। 4. इसमें रागों के साथ-साथ लोकगीतों का मिश्रण भी किया जाता है। 5. इसमें कर्णप्रियता पर अधिक ध्यान दिया जाता है। जाता है। 6. फ़िल्मी संगीत में हास्य प्रधान गीतों का गायन भी खूब होता है।

प्रश्न-8 कुमार गंधर्व ने लिखा है-चित्रपट संगीत गाने वाले को शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी होना आवश्यक है? क्या शास्त्रीय मानकों को भी चित्रपट संगीत से कुछ सीखना चाहिए? कक्षा में विचार-विमर्श करें।

उत्तर- यह बात बिलकुल सत्य है कि चित्रपट संगीत को गाने के लिए शास्त्रीय संगीत का अच्छा ज्ञान होना आवश्यक है। यह उतना सरल भी नहीं है, जितना इसे समझा जाता है। प्रायः फ़िल्मों में शास्त्रीय संगीत का भी प्रयोग देखा जाता है। उसमें भी स्वरों में उतार-चढ़ाव व लय आदि का ध्यान रखना होता है, अत: बिना शास्त्रीय संगीत सीखे एक अच्छा चित्रपट संगीत गायक नहीं बना जा सकता। किंतु शास्त्रीय संगीत के गायकों को स्वर-ताल आदि के विषय में चित्रपट संगीत से कुछ सीखने की आवश्यकता नहीं होती। हाँ, उन्हें इस विषय में अवश्य कुछ सीखना चाहिए कि शास्त्रीय संगीत को भी चित्रपट संगीत के समान लोकप्रिय कैसे बनाया जाए? ताकि अधिक-से-अधिक लोग शास्त्रीय संगीत की ओर आकर्षित हो सकें। इसके अतिरिक्त इसमें नए-नए प्रयोगों के लिए भी अवकाश रखना चाहिए। शास्त्रीय संगीत वर्षों से उन्हीं नियमों में बँधा। हुआ है। उसमें नएपन का अभाव है, इसी कारण वह इतना लोकप्रिय नहीं हो पाता। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार चित्रपट संगीत में नई धुनों व गीतों का समावेश किया जाता है, उसी प्रकार शास्त्रीय संगीत में भी नए-नए रागों की रचना निरंतर होती रहनी चाहिए। तभी यह लोकरंजक होकर लोकप्रिय हो सकेगा। अतः शास्त्रीय गायकों को ये तथ्य चित्रपट संगीत के गायकों से सीखने चाहिए।

प्रश्न-9 लता मंगेशकर को बेजोड़ गायिका क्यों माना गया है? कोई तीन कारण लिखिए।

उत्तर- लता मंगेशकर को बेजोड़ कहने का कारण है

(क) उनकी सुरीली आवाज़ जो ईश्वर की देन तो है ही, पर स्वयं लता जी ने उसे बहुत त्याग करके निखारा है।

(ख) उनके गायन में जो 'गानपन' है वैसा किसी अन्य में नहीं मिलता।

(ग) उच्चारण में शुद्धता और नाद का जैसा संगम है, जैसी भावों में निर्मलता है, उसने लता जी को सभी अन्य गायिकाओं से अलग बना दिया है।

प्रश्न-10 लेखक ने प्रसिद्ध गायिका नूरजहाँ से लता मंगेशकर के आगे निकल जाने का क्या कारण बताया है?

उत्तर- लता से पूर्व चित्रपट संगीत में प्रसिद्ध गायिका नूरजहाँ का अपना एक जमाना था, परंतु उसी क्षेत्र में बाद में आई हुई लता उससे कहीं आगे निकल गई। कला के क्षेत्र में ऐसे चमत्कार कम ही होते हैं, पर होते तो हैं। लेखक के अनुसार, नूरजहाँ की गायकी का स्वर मादक उत्तान भरा था, जबकि लता के स्वर में निर्मल, कोमल और मुग्धता भरी हुई है और यही उनकी लोकप्रियता का कारण है।

प्रश्न-11 कुमार गंधर्व ने लता जी की गायकी के किन दोषों का उल्लेख किया है?

उत्तर- कुमार गंधर्व का मानना है कि लता जी की गायकी में करुण रस विशेष प्रभावशाली रीति से व्यक्त नहीं होता। उन्होंने करुण रस के साथ उतना न्याय नहीं किया। बजाय इसके मुग्ध श्रृंगार की अभिव्यक्ति वाले गीत बड़ी उत्कटता से गाए हैं। दूसरी बात यह है कि लता ज्यादातर ऊँची पट्टी में ही गाती हैं जो चिलवाने जैसा लगता है। आगे लेखक ने दोनों ही दोषों को निर्देशकों पर डालकर लता जी को दोषमुक्त कर दिया है।

प्रश्न-12 लेखक के अनुसार लता जी का तीन मिनट का गायन शास्त्रीय संगीत के तीन घंटे से भी अधिक प्रभावशाली है। कैसे?

उत्तर- लेखक कुमार गंधर्व के अनुसार शास्त्रीय गायन किसी उत्तम लेखक के किसी विस्तृत लेख में जीवन के रहस्य का विशद रूप में वर्णन जैसा है। वही बात, वही रहस्य, छोटे से सुभाषित का, या नन्हीं-सी कहावत में सुंदरता और परिपूर्णता के साथ प्रकट होता है, लता जी के गायन में यही श्रेष्ठता है। वे आगे लिखते हैं कि तीन घंटों की रंगदार महफिल का सारा रस लता की तीन मिनट की ध्वनि मुद्रिका में आस्वादित किया जा सकता है। उनका एक-एक गाना एक संपूर्ण कलाकृति होती है।

प्रश्न-13 'भारतीय गायिकाओं में बेजोड़: लता मंगेशकर'पाठ में गाने के लिए किन तत्वों को आवश्यक माना गया है?

उत्तर- पाठ के लेखक कुमार गंधर्व के अनुसार गाने की सारी मिठास, सारी ताकत उसकी रंजकता पर मुख्यतः अवलंबित रहती है। रंजकता का मर्म रसिक वर्ग के समक्ष कैसे प्रस्तुत किया जाए, किस रीति से उसकी बैठक बिठाई जाए और श्रोताओं से कैसे सुसंवाद साधा जाए इसमें समाविष्ट है। सरल शब्दों में कहें तो गाने के लिए सबसे आवश्यक तत्व है उसकी रंजकता अर्थात् श्रोताओं द्वारा जो गायकी सबसे अधिक पसंद की जाती है वही सर्वश्रेष्ठ है। गाने की कसौटी उसकी लोकप्रियता है।

प्रश्न-14 लता मंगेशकर को चित्रपट संगीत के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ साबित करने के लिए लेखक ने क्या कहा है?

उत्तर- चित्रपट संगीत के क्षेत्र की लता अनभिषिक्त साम्राज्ञी हैं। और भी अनेक पार्श्व गायिकाएँ हैं, पर लता की लोकप्रियता इन सबसे कहीं अधिक है। उनकी लोकप्रियता के शिखर का स्थान अचल है। बीते अनेक वर्षों से आज तक उनकी लोकप्रियता अबाधित है। लगभग आधी शताब्दी तक जनमत पर "सतत प्रभुत्व रखना आसान नहीं है। लता की लोकप्रियता केवल देश में ही नहीं, विदेशों में भी लोगों को उनके गीत पागल कर देते हैं। अंत में, वे कहते हैं कि ऐसा कलाकार शताब्दियों में एक ही पैदा होता है।

प्रश्न-15 आज शास्त्रीय संगीत के स्थान पर फ़िल्म संगीत को अधिक पसंद किया जाता है। क्यों?

उत्तर- भारत में शास्त्रीय संगीत प्रायः घरानों के नाम से काफ़ी पुराने समय से चला आ रहा है। पहले यह राजदरबारों, मंदिरों आदि तक सीमित था। इसे श्रेष्ठता का सूचक माना जाता था। आधुनिक युग में फ़िल्मों के आने से संगीत की दिशा बदली। शास्त्रीय संगीत अपनी सीमा को लाँघना नहीं चाहता था। कठिन होने के कारण जनसाधारण की समझ से यह बाहर था। फ़िल्मी संगीत सरल होने के कारण जनसाधारण में लोकप्रिय हो गया। फ़िल्मी संगीत सरल, सर्वसुलभ, कर्णप्रिय होने के कारण आम जनता इसकी तरफ आकर्षित हो रही है। शास्त्रीय संगीत सरकारी सहायता का मोहताज रहता है। सरकारी कार्यक्रमों को छोड़कर अन्य सभी सामाजिक कार्यक्रमों में फ़िल्मी संगीत छाया रहता है। शास्त्रीय संगीत को सीखने में कठिन मेहनत, धैर्य व धन की जरूरत होती है। आज की दृष्टि में यह ज्यादा लाभदायक नहीं है जबकि फ़िल्मी संगीत कम मेहनत, से सीखा जा सकता है। इससे आय भी अधिक होती है। इसलिए फ़िल्मी संगीत ज्यादा लोकप्रिय है।

प्रश्न-16 चित्रपट संगीत का दिनोदिन विस्तार क्यों होता जा रहा है?

उत्तर- लेखक ने बताया है कि शास्त्रीय संगीत शुद्धता पर अधिक ज़ोर देता है। इस कारण यह सीमित हो रहा है। चित्रपट संगीत में नित नए प्रयोग किए जा रहे हैं। उनमें शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ लोकगीतों, भक्ति गीतों, कृषकगीतों आदि का भी समावेश किया जा रहा है। श्रोता को नएपन की दरकार रहती है। श्रोता को गायन में सुरीलापन व भावुकता अधिक पसंद है। चित्रपट संगीत श्रोताओं की पसंद व परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को ढाल लेता है।

चित्रपट संगीत का क्षेत्र व्यापक है। इसमें रेगिस्तान का रंग भी है तो समुद्र की लहरें भी गरजती हैं। कहीं वर्षा है तो पर्वतीय गुफाओं के पहाड़ी गीत भी होते हैं। अनेक राज्यों के संगीत को मिलाकर नए गाने बनाए जा रहे हैं। हम कह सकते हैं कि चित्रपट संगीत ने अपने द्वार खोल रखे हैं। वह विश्व के हर रूप को अपने अंदर समाहित कर रहा है।

उसका एकमात्र लक्ष्य श्रोताओं को आनंद प्रदान करना है। इसके लिए वह हर नियम को तोड़ने के लिए तैयार है। यही कारण है कि चित्रपट संगीत का विस्तार दिनोंदिन होता जा रहा है।

2. राजस्थान की रजत बूँदें- अनुपम मिश्र

जन्म-1948ई., वर्धा(महाराष्ट्र)। निधन- 2016 ई.। कार्यक्षेत्र- पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर लेखन कार्य। रचनाएँ-आज भी खरे हैं तालाब, राजस्थान की रजत बूँदें।भाषा- हिन्दी। पाठ के मुख्य शब्द- चेलवांजी, चेजा, समेटती, मरुभूमि, बारीक, पालर पानी, रेजाणी पानी, खींप, खलियान, चड़स, फरेड़ी, रंभाने, आबाद, चारोली।

लेखक परिचय- अनुपम मिश्र का जन्म 1948 ई. में महाराष्ट्र के वर्धा में हुआ। ये पर्यावरण प्रेमी हैं तथा पर्यावरण संबंधी कई आंदोलन से घनिष्ठ रूप से जुड़े रहे हैं। इन्होंने लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने का अभियान भी छेड़ा है। ये 1977 ई. से गाँधी शांति प्रतिष्ठान के पर्यावरण कक्ष से संबद्ध रहे हैं। इन्होंने पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर कई पुस्तकें लिखी हैं।

सारांश- यह रचना राजस्थान की जल-समस्या का समाधान मात्र नहीं है, बल्कि यह जमीन की अतल गहराईयों में जीवन की पहचान है। यह रचना धीरे-धीरे भाषा की ऐसी दुनिया में ले जाती है जो कविता नहीं है, कहानी नहीं है, पर पानी की हर आहट की कलात्मक अभिव्यक्ति है। लेखक राजस्थान की रेतीली भूमि में पानी के स्रोत कुंई का वर्णन करता है। वह बताता है कि कुंई खोदने के लिए चेलवांजी काम कर रहा है। वह बसौली से खुदाई कर रहा है। अंदर भयंकर गर्मी है।गर्मी कम करने के लिए बाहर खड़े लोग बीच-बीच में मुट्ठी भर रेत बहुत जोर से नीचे फेंकते हैं। इससे ताजी हवा अंदर आती है और गहराई में जमा दमघोंटू गर्म हवा बाहर निकलती है। चेलवांजी सिर पर काँसे, पीतल या अन्य किसी धातु का बर्तन टोप की तरह पहनते हैं, ताकि चोट न लगे। थोड़ी खुदाई होने पर इकट्ठा हुआ मलबा बाल्टी के जरिए बाहर निकाला जाता है। चेलवांजी कुएँ की खुदाई व चिनाई करने वाले प्रशिक्षित लोग होते हैं। कुंई कुएँ से छोटी होती है, परंतु गहराई कम नहीं होती। कुंई में न सतह पर बहने वाला पानी आता है और न भूजल।

मरुभूमि में रेत अत्यधिक है। यहाँ वर्षा का पानी शीघ्र भूमि में समा जाता है। रेत की सतह से दस पंद्रह हाथ से पचास-साठ हाथ नीचे खड़िया पत्थर की पट्टी चलती है। इस मिट्टी के परिवर्तन से इस खड़ियापट्टी का पता चलता है। कुओं का पानी प्रायः खारा होता है। पीने के पानी के लिए कुंइयाँ बनाई जाती हैं। पट्टी का तभी पता चलता है जहाँ बरसात का पानी एकदम नहीं समाता। यह पट्टी वर्षा के पानी व गहरे खारे भूजल को मिलने से रोकती है। अत: बरसात का पानी रेत में नमी की तरह फैल जाता है। रेत के कण अलग होते हैं, वे चिपकते नहीं। पानी गिरने पर कण भारी हो जाते हैं, परंतु अपनी जगह नहीं छोड़ते। इस कारण मरुभूमि में धरती पर दरारें नहीं पड़तीं वर्षा का भीतर समाया जल अंदर ही रहता है। यह नमी बूंद-बूंद करके कुंई में जमा हो जाती है।

राजस्थान में पानी को तीन रूपों में बाँटा है- पालरपानी यानी सीधे बरसात से मिलने वाला पानी है। यह धरातल पर बहता है। दूसरा रूप पातालपानी है जो कुंओं में से निकाला जाता है तीसरा रूप है-रेजाणीपानी। यह धरातल से नीचे उतरा, परंतु पाताल में न मिलने वाला पानी रेजाणी है। वर्षा की मात्रा 'रेजा' शब्द से मापी जाती है जो धरातल में समाई वर्षा को नापता है। यह रेजाणीपानी खड़िया पट्टी के कारण पाताली पानी से अलग रहता है अन्यथा यह खारा हो जाता है। इस विशिष्ट रेजाणी पानी को समेटती है कुंई। यह चार-पाँच हाथ के व्यास तथा तीस से साठ-पैंसठ हाथ की गहराई की होती है। कुंई का प्राण है-चिनाई। इसमें हुई चूक चेजारो के प्राण ले सकती है।

हर दिन की खुदाई से निकले मलबे को बाहर निकालकर हूए काम की चिनाई कर दी जाती है। कुंई की चिनाई ईंट या रस्से से की जाती है। कुंई खोदने के साथ-साथ खींप नामक घास से मोटा रस्सा तैयार किया जाता है, फिर इसे हर रोज कुंई के तल पर दीवार के साथ सटाकर गोला बिछाया जाता है। इस तरह हर घेरे में कुंई बँधती जाती है। लगभग पाँच हाथ के व्यास की कुंई में रस्से की एक कुंडली का सिर्फ एक घेरा बनाने के लिए लगभग पंद्रह हाथ लंबा रस्सा चाहिए। इस तरह करीब चार हजार हाथ लंबे रस्से की जरूरत पड़ती है।पत्थर या खींप न मिलने पर चिनाई का कार्य लकड़ी के लंबे लट्ठों से किया जाता है। ये लट्ठे, अरणी, बण, बावल या कुंबट के पेड़ों की मोटी टहनियों से बनाए जाते हैं। ये नीचे से ऊपर की ओर एक-दूसरे में फँसाकर सीधे खड़े किए जते हैं तथा फिर इन्हें खींप की रस्सी से बाँधा जाता है। खड़िया पत्थर की पट्टी आते ही काम समाप्त हो जाता है और कुंई की सफलता उत्सव का अवसर बनती है। पहले काम पूरा होने पर विशेष भोज भी होता था। चेजारो कोतरह-तरह की भेंट, वर्ष-भर के तीज-त्योहारों पर भेंट, फसल में हिस्सा आदि दिया जाता था, परंतु अब सिर्फ मजदूरी दी जाती है।

जैसलमेर में पालीवाल ब्राह्मण व मेघवाल गृहस्थी स्वयं कुंइयाँ खोदते थे। कुंई का मुँह छोटा रखा जाता है। इसके तीन कारण हैं। पहला रेत में जमा पानी से बूंदें धीरे-धीरे रिसती हैं। मुँह बड़ा होने पर कम पानी अधिक फैल जाता है, अत: उसे निकाला नहीं जा सकता। छोटे व्यास की कुंई में पानी दो-चार हाथ की ऊँचाई ले लेता है। पानी निकालने के लिए छोटी चड़स का उपयोग किया जाता है। दूसरे, छोटे मुँह को ढकना सरल है। तीसरे, बड़े मुँह से पानी के भाप बनकर उड़ने की संभावना अधिक होती है। कुंइयों के ढक्कनों पर ताले भी लगने लगे हैं। यदि कुंई गहरी हो तो पानी खींचने की सुविधा के लिए उसके ऊपर घिरनी या चकरी भी लगाई जाती है। यह गरेड़ी, चरखी या फरेड़ी भी कहलाती है।

खड़िया पत्थर की पट्टी एक बड़े क्षेत्र में से गुजरती है। इस कारण कुंई लगभग हर घर में मिल जाती है। सबकी निजी संपत्ति होते हुए भी यह सार्वजनिक संपत्ति मानी जाती है। इन पर ग्राम पंचायतों का नियंत्रण रहता है। किसी नई कुंई के लिए स्वीकृति कम ही दी जाती है, क्योंकि इससे भूमि के नीचे की नमी का अधिक विभाजन होता है। राजस्थान में हर जगह रेत के नीचे खड़िया पत्थर नहीं है। यह पट्टी चुरू, बीकानेर, जैसलमेर और बाड़मेर आदि क्षेत्रों में है। यही कारण है कि इस क्षेत्र के गाँवों में लगभग हर घर में एक कुंई है।

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 राजस्थान में कुंई किसे कहते हैं? इसकी गहराई और व्यास तथा सामान्य कुओं की गहराई और व्यास में क्या अंतर होता है?

उत्तर- राजस्थान के रेतीले इलाके में पीने के पानी की बड़ी भारी समस्या है। वहाँ जमीन के नीचे खड़िया पत्थर की कठोर परत को तलाशकर उसके ऊपर गहरी खुदाई की जाती है और विशेष प्रकार से चिनाई की जाती है। इस चिनाई के बाद खडिया की पट्टी पर रेत के कणों में रिस-रिसकर जल एकत्र हो जाता है। इस पेय जल आपूर्ति के साधन को कुंई कहते हैं। इसकाव्यास बहुत छोटा और गहराई तीस-पैंतीस हाथ के लगभग होता है। कुओं की तुलना में इसका व्यास और गहराई बहुत ही कम है। राजस्थान में कुओं की गहराई डेढ़ सौ/दो सौ हाथ होती है और कुआँ भू-जल को पाने के लिए बनता है। उस पर उसका पानी भी खारा होता है। कुंई इससे बिलकुल अलग कम गहरी, संकरे व्यासवाली होती है। इसका जल खड़िया की पट्टी पर रिस-रिसकर गिरनेवाला जल है। यह जल मीठा, शुद्ध और रेगिस्तान के मूल निवासियों द्वारा खोजा गया अमृत है।

प्रश्न-2 दिनोंदिन बढ़ती पानी की समस्या से निपटने में यह पाठ आपको कैसे मदद कर सकता है तथा देश के अन्य राज्यों में इसके लिए क्या उपाय हो रहे हैं? जानें और लिखें?

उत्तर- मानव की दोहन नीति के कारण आज पानी की समस्या भयंकर होती जा रही है, नदियों का जल-स्तर घटता जा रहा है। शहरों व गाँवों में पेयजल की भारी कमी हो रही है। यह पाठ हमें पानी के समुचित प्रयोग को सिखाता है। अगर हम वर्षा के बूंद-बूंद पानी का उचित संग्रहण व इस्तेमाल कर सकें तो पानी की समस्या दूर हो जाए। आज हम

पानी का दुरुपयोग करते हैं। कोई व्यक्ति भविष्य की चिंता नहीं करता। खेती, उद्योग, निजी उपयोग हर जगह पानी के प्रति लापरवाही है। हमें प्रकृति के उपहार वर्षा के जल का संग्रहण करना चाहिए। इसके लिए गाँवों में तालाब का पुनर्निर्माण करना चाहिए। घरों में भी कुएँ बनाकर पानी का संग्रहण किया जा सकता है। छोटे-छोटे जलाशय बनाकर भूमिगत जलस्तर को बढ़ाया जा सकता है

प्रश्न-3 चेजारो के साथ गाँव समाज के व्यवहार में पहले की तुलना में आज क्या फ़र्क आया है पाठ के आधार पर बताइए?

उत्तर- चेजारों को खासकर कुंई बनानेवाले चेजारों का राजस्थान के समाज में बड़ा की महत्वपूर्ण स्थान है। अन्नदाता से भी बड़ा अमृतदाता (पानी देनेवाला) है-चेजारो। यह गाँव-समाज के लिए मीठे पानी की कुंई बनाता है अर्थात् सबकी प्यास बुझाता है। खुदाई और चिनाई की जो विशेष प्रक्रिया वह जानता है उसकी-सी जानकारी अन्य किसी के पास नहीं है। कुंई की खुदाई के पहले दिन से ही चेजारो का विशेष ध्यान रखा जाता है। कुंई की सफलता और सजलता के बाद चेजारों की विदाई पर विशेष भोज का आयोजन कर उन्हें तरह-तरह की भेंट दी जाती है। वर्ष-भर हर तीज-त्योहार पर उनको भेंट एवं उपहार दिए जाते हैं। फ़सल आने पर खलिहानों में उनके नाम से अनाज का अलग ढेर लगाया जाता है। ये सब पारंपरिक बातें अब कम होती जा रही हैं और मजदूरी देकर काम करवाने का रिवाज़ पनपता जा रहा है।

प्रश्न-4 **निजी होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में कुइयों पर ग्राम-समाज का अंकुश लगा रहता है। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा?**

उत्तर- राजस्थान में खड़िया पत्थर की पट्टी पर ही कुंइयों का निर्माण किया जाता है। कुंई का निर्माण ग्राम-समाज की सार्वजनिक जमीन पर होता है, परंतु उसे बनाने और उससे पानी लेने का हक उसका अपना हक है। सार्वजनिक जमीन पर बरसने वाला पानी ही बाद में वर्ष-भर नमी की तरह सुरक्षित रहता है। इसी नमी से साल भर कुंइयों में पानी भरता है। नमी की मात्रा वहाँ हो चुकी वर्षा से तय हो जाती है। अत: उस क्षेत्र में हर नई कुंई का अर्थ है-पहले से तय नमी का बँटवारा। इस कारण निजी होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में बनी कुंइयों पर ग्राम-समाज का अंकुश लगा रहता है। यदि यह अंकुश न हो तो लोग घर-घर अनेक कुंई बना लेंगे और सबको पानी नहीं मिलेगा। बहुत जरूरत पड़ने पर ही समाज नई कुंई के लिए अपनी स्वीकृति देता है।

प्रश्न-5 कुंई निर्माण से संबंधित निम्न शब्दों के बारे में जानकारी प्राप्त करें-पालरपानी, पातालपानी, रेजाणीपानी।

उत्तर- पालरपानी-बरसाती पानी, वर्षा का जल जिसे इकट्ठा करके रख लिया जाता है और साफ़ करके प्रयोग में लाया जाता है। पातालपानी–वह जल जो दो सौ हाथ नीचे पाताल में मिलता है। यह जल ज्यादातर खारा होता है। रेजाणीपानी-रेत के कणों की गहराई में खड़िया की पट्टी के ऊपर कुंई में रिस-रिसकर एकत्र होनेवाला पानी रेजाणीपानी कहलाता है।

प्रश्न-6 कुंई की निर्माण प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- मरुभूमि में कुंई के निर्माण का कार्य चेलवांजी यानी चेजारो करते हैं। वे खुदाई व विशेष तरह की चिनाई करने में दक्ष होते हैं। कुंई बनाना एक विशिष्ट कला है। चार-पाँच हाथ के व्यास की कुंई को तीस से साठ-पैंसठ हाथ की गहराई तक उतारने वाले चेजारो कुशलता व सावधानी के साथ पूरी ऊँचाई नापते हैं। चिनाई में थोड़ी-सी भी चूक चेजारो के प्राण ले सकती है। हर दिन थोड़ी-थोड़ी खुदाई होती है, डोल से मलबा निकाला जाता है और फिर आगे की खुदाई रोककर अब तक हो चुके काम की चिनाई की जाती है ताकि मिट्टी धँसे नहीं।बीस-पच्चीस हाथ की गहराई तक जाते-जाते गर्मी बढ़ती जाती है और हवा भी कम होने लगती है। तब ऊपर से मुट्ठी-भरकर रेत तेजी से नीचे फेंकी जाती है ताकि ताजा हवा नीचे जा सके और गर्म हवा बाहर आ सके। चेजारो सिर पर काँसे, पीतल या किसी अन्य धातु का एक बर्तन टोप की तरह पहनते हैं ताकि ऊपर से रेत, कंकड़-पत्थर से उनका बचाव हो सके। किसी-किसी

स्थान पर ईट की चिनाई से मिट्टी नहीं रुकती तब कुंई को रस्से से बाँधा जाता है। ऐसे स्थानों पर कुंई खोदने के साथ-साथ खींप नामक घास का ढेर लगाया जाता है। खुदाई शुरू होते ही तीन अंगुल का मोटा रस्सा बनाया जाता है।

एक दिन में करीब दस हाथ की गहरी खुदाई होती है। इसके तल पर दीवार के साथ सटाकर रस्से का एक के ऊपर एक गोला बिछाया जाता है और रस्से का आखिरी छोर ऊपर रहता है। अगले दिन फिर कुछ हाथ मिट्टी खोदी जाती है और रस्से की पहली दिन जमाई गई कुंडली दूसरे दिन खोदी गई जगह में सरका दी जाती है। बीच-बीच में जरूरत होने पर चिनाई भी की जाती है। कुछ स्थानों पर पत्थर और खींप नहीं मिलते। वहाँ पर भीतर की चिनाई लकड़ी के लंबे लट्ठों से की जाती है लट्ठे अरणी, बण, बावल या कुंबट के पेड़ों की मोटी टहनियों से बनाए जाते हैं। इस काम के लिए सबसे अच्छी लकड़ी अरणी की है, परंतु इन पेड़ों की लकड़ी न मिले तो आक तक से भी काम किया जाता है। इन पेड़ों के लट्ठे नीचे से ऊपर की ओर एक-दूसरे में फैसा कर सीधे खड़े किए जाते हैं। फिर इन्हें खींप की रस्सी से बाँधा जाता है। यह बँधाई कुंडली का आकार लेती है। इसलिए इसे साँपणी कहते हैं। खड़िया पत्थर की पट्टी आते ही काम रुक जाता है और इस क्षण नीचे धार लग जाती है। चेजारो ऊपर आ जाते हैं कुंई बनाने का काम पूरा हो जाता है।

प्रश्न-7 कुंई का मुँह छोटा क्यों रखा जाता है? स्पष्ट करें?

उत्तर- कुंई का मुँह छोटा रखने के के तीन कारण प्रमुख हैं-

1. रेत में जमी नमी से पानी की बूंदें धीरे-धीरे रिसती हैं। दिनभर में एक कुंई में मुश्किल से दो-तीन घड़े पानी जमा होता है। कुंई के तल पर पानी की मात्रा इतनी कम होती है कि यदि कुंई का व्यास बड़ा हो तो कम मात्रा का पानी ज्यादा फैल जाएगा। ऐसी स्थिति में उसे ऊपर निकालना संभव नहीं होगा। छोटे व्यास की कुंई में धीरे-धीरे रिस कर आ रहा पानी दो-चार हाथ की ऊँचाई ले लेता है।
2. कुंई के व्यास का संबंध इन क्षेत्रों में पड़ने वाली तेज गर्मी से भी है। व्यास बड़ा हो तो कुंई के भीतर पानी ज्यादा फैल जाएगा और भाप बनकर उड़ने से रोक नहीं पाएगा।
3. कुंई को और उसके पानी को साफ रखने के लिए उसे ढककर रखना जरूरी है। छोटे मुँह को ढकना सरल होता है। कुंई पर लकड़ी के ढक्कन, खस की पट्टी की तरह घास-फूस या छोटी-छोटी टहनियों से बने ढक्कनों का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न- 8 राजस्थान में जल संग्रह के लिए बनी कुंई किसी वैज्ञानिक खोज से कम नहीं है। स्पष्ट करें।

उत्तर- यह बात बिल्कुल सही है कि राजस्थान में जल संग्रह के लिए बनी कुंई किसी वैज्ञानिक खोज से कम नहीं है। मरुभूमि में चारों तरफ अथाह रेत है। वर्षा भी कम होती है। भूजल खारा होता है। ऐसी स्थिति में जल की खोज, उसे निकालना आदि सब कुछ वैज्ञानिक तरीके से हो सकता है। मरुभूमि के भीतर खड़िया की पट्टी को खोजने में भी पीढ़ियों का अनुभव काम आता है। जिस स्थान पर वर्षा का पानी एकदम न बैठे, उस स्थान पर खड़िया पट्टी पाई जाती है। कुंई के जल को पाने के लिए मरुभूमि के समाज ने खूब मंथन किया तथा अनुभवों के आधार पर पूरा शास्त्र विकसित किया।

कुंई खोदने में वैज्ञानिक प्रक्रिया अपनाई जाती है। चेजारो के सिर पर धातु का बर्तन उसे चोट से बचाता है। ऊपर से रेत फेंकने से ताजा हवा नीचे जाती है तथा गर्म हवा बाहर निकलती है, फिर कुंई की चिनाई भी पत्थर, ईट, खींप की रस्सी या अरणी के लट्ठों से की जाती है। यह खोज आधुनिक समाज को चमत्कृत करती है।

प्रश्न-9 कुंई की खुदाई किससे की जाती है?

उत्तर- कुंई का व्यास बहुत कम होता है। इसलिए इसकी खुदाई फावड़े या कुल्हाड़ी से नहीं की जा सकती। बसौली से इसकी खुदाई की जाती है। यह छोटी डंडी का छोटे फावड़े जैसा औजार होता है जिस पर लोहे का नुकीला फल तथा लकड़ी का हत्था लगा होता है।

प्रश्न-10 कुंई की खुदाई के समय ऊपर जमीन पर खड़े लोग क्या करते हैं?

उत्तर- कुंई की खुदाई के समय गहराई बढ़ने के साथ-साथ गर्मी बढ़ती जाती है। उस गर्मी को कम करने के लिए ऊपर जमीन पर खड़े लोग बीच-बीच में मुट्ठी भर रेत बहुत जोर के साथ नीचे फेंकते हैं। इससे ऊपर की ताजी हवा नीचे की तरफ जाती है और गहराई में जमा दमघोंटू गर्म हवा ऊपर लौटती है। इससे चेलवांजी को गर्मी से राहत मिलती है।

प्रश्न- 11 खड़िया पत्थर की पट्टी कहाँ चलती है?

उत्तर- मरुभूमि में रेत का विस्तार व गहराई अथाह है। यहाँ अधिक वर्षा भी भूमि में जल्दी जमा हो जाती है। कहीं-कहीं मरुभूमि में रेत की सतह के नीचे प्राय: दस-पंद्रह हाथ से पचास-साठ हाथ नीचे खड़िया पत्थर की एक पट्टी चलती है। यह पट्टी लंबी-चौड़ी होती है, परंतु रेत में दबी होने के कारण दिखाई नहीं देती।

प्रश्न- 12 खड़िया पत्थर की पट्टी का क्या फायदा है?

उत्तर- खड़िया पत्थर की पट्टी वर्षा के जल को गहरे खारे भूजल तक जाकर मिलने से रोकती है। ऐसी स्थिति में उस क्षेत्र में बरसा पानी भूमि की रेतीली सतह और नीचे चल रही पथरीली पट्टी के बीच अटक कर नमी की तरह फैल जाता है।

प्रश्न- 13 खड़िया पट्टी के अलग-अलग क्या नाम हैं?

उत्तर- खड़िया पट्टी के कई स्थानों पर अलग-अलग नाम हैं। कहीं यह चारोली है तो कहीं धाधड़ी, धड़धड़ी, कहीं पर बिट्टू रो बल्लियो के नाम से भी जानी जाती है तो कहीं इस पट्टी का नाम केवल 'खड़ी' भी है।

प्रश्न- 14 कुंई के लिए कितने रस्से की जरूरत पड़ती है?

उत्तर- लेखक बताता है कि लगभग पाँच हाथ के व्यास की कुंई में रस्से की एक ही कुंडल का सिर्फ एक घेरा बनाने के लिए लगभग पंद्रह हाथ लंबा रस्सा चाहिए। एक हाथ की गहराई में रस्से के आठ-दस लपेटे लग जाते हैं। इसमें रस्से की कुल लंबाई डेढ़ सौ हाथ हो जाती है। यदि तीस हाथ गहरी कुंई की मिट्टी को थामने के लिए रस्सा बाँधना पड़े तो रस्से की लंबाई चार हजार हाथ के आसपास बैठती है।

प्रश्न-15 रेजाणीपानी की क्या विशेषता है? 'रेजा' शब्द का प्रयोग किसलिए किया जाता है ?

उत्तर- रेजाणीपानी पालरपानी और पातालपानी के बीच पानी का तीसरा रूप है। यह धरातल से नीचे उतरता है, परंतु पाताल में नहीं मिलता। इस पानी को कुंई बनाकर ही प्राप्त किया जाता है। 'रेजा' शब्द का प्रयोग वर्षा की मात्रा नापने के लिए किया जाता है। यह माप धरातल में समाई वर्षा को नापता है। उदाहरण के लिए यदि मरुभूमि में वर्षा का पानी छह अंगुल रेत के भीतर समा जाए तो उस दिन की वर्षा को पाँच अंगुल रेजा कहेंगे।

प्रश्न-16 कुंई से पानी कैसे निकाला जाता है?

उत्तर- कुंई से पानी चड़स के द्वारा निकाला जाता है। यह मोटे कपड़े या चमड़े की बनी होती है। इसके मुँह पर लोहे का वजनी कड़ा बँधा होता है। आजकल ट्रकों की फटी ट्यूब से भी छोटी चड़सी बनने लगी है। चडस पानी से टकराता है तथा ऊपर का वजनी भाग नीचे के भाग पर गिरता है। इस तरह कम मात्रा के पानी में भी वह ठीक तरह से डूब जाती है। भर जाने के बाद ऊपर उठते ही चड़स अपना पूरा आकार ले लेता है।

प्रश्न- 17 गहरी कुंई से पानी खींचने का क्या प्रबंध किया जाता है?

उत्तर- गहरी कुंई से पानी खींचने के लिए उसके ऊपर घिरनी या चकरी लगाई जाती है। यह गरेडी, चरखी या फरेड़ी भी कहलाती है। ओड़ाक और चरखी के बिना गहरी व संकरी कुंई से पानी निकालना कठिन काम होता है। ओड़ाक और चरखी चड़सी को यहाँ-वहाँ टकराए बिना सीधे ऊपर तक लाती है। इससे वजन खींचने में भी सुविधा रहती है।

प्रश्न- 18 गोधूलि के समय कुंइयों पर कैसा वातावरण होता है?

उत्तर- गोधूलि बेला में प्राय: पूरा गाँव कुंइयों पर आता है। उस समय-मेला सा लगता है। गाँव से सटे मैदान में तीस-चालीस कुंइयों पर एक साथ घूमती घिरनियों का स्वर गोचर से लौट रहे पशुओं की घंटियों और रंभाने की आवाज में समा जाता है। दो-तीन घड़े भर जाने पर डोल और रस्सियाँ समेट ली जाती हैं।

3. आलो-आँधारि - बेबी हालदार

जन्म- 1974ई., जम्मू कश्मीर में। रचना-आलो आँधारि। भाषा- मूलतः बांग्ला। कार्यक्षेत्र- घरेलू नौकरानी एवं लेखन। पाठ के मुख्य शब्द- स्वामी, फ़ौरन, राज़ी, कोठी, हठात, गुज़ारा, डस्टिंग, मसोसकर, आहिस्ता, आमार मेये बेला, बेमतलब, बंधु, जबरन, तातुश, व्यास, अवाक्, अभिधान, माथा-पच्ची, स्मरणीय, परिवेश।

जीवन परिचय- लेखिका बेबी हालदार का जन्म जम्मू कश्मीर के किसी स्थान पर हुआ, जहाँ सेना की नौकरी में उनके पिता तैनात थे। इनका जन्म संभवतया 1974 ई. में हुआ। परिवार की आर्थिक दशा कमजोर होने के कारण तेरह वर्ष की आयु में इनका विवाह दोगुनी उम्र के व्यक्ति से कर दिया गया। इस कारण उन्हें सातवीं कक्षा में पढ़ाई छोड़नी पड़ी। 12-13 वर्षों के बाद पति की ज्यादतियों से परेशान होकर वे तीन बच्चों सहित पति का घर छोड़कर दुर्गापुर से फरीदाबाद आ गईं। कुछ समय बाद वे गुड़गाँव चली आई और घरेलू नौकरानी के रूप में काम कर रही हैं। इनकी एकमात्र रचना है-आलो-आँधारि। यह मूल रूप से बांग्ला भाषा में लिखी गई तथा बाद में इसका हिंदी अनुवाद किया गया।

आलो-आँधारि- लेखिका की आत्मकथा है-यह उन करोड़ों झुग्गियों की कहानी है जिसमें झाँकना भी भद्रता के तकाजे से बाहर है। यह साहित्य के उन पहरुओं के लिए चुनौती है जो साहित्य को साँचे में देखने के आदी हैं, जो समाज के कोने-अँतरे में पनपते साहित्य को हाशिए पर रखते हैं और भाषा एवं साहित्य को भी एक खास वर्ग की जागीर मानते हैं। यह एक ऐसी आपबीती है जो मूलत: बांग्ला में लिखी गई, लेकिन पहली ऐसी रचना जो छपकर बाज़ार में आने से पहले ही अनूदित रूप में हिंदी में आई। अनुवादक प्रबोध कुमार ने एक जबान को दूसरी जबान दी पर रूह को छुआ नहीं। एक बोली की भावना दूसरी बोली में बोली, रोई, मुसकराई।

लेखिका अपने पति से अलग किराए के मकान में अपने तीन छोटे बच्चों के साथ रहती थी। उसे हर समय काम की तलाश रहती थी। वह सभी को अपने (लेखिका) लिए काम ढूँढ़ने के लिए कहती थी। शाम को जब वह घर वापिस आती तो पड़ोस की औरतें काम के बारे में पूछतीं। काम न मिलने पर वे उसे सांत्वना देती थीं। लेखिका की पहचान सुनील नामक युवक से थी। एक दिन उसने किसी मकान मालिक से लेखिका को मिलवाया। मकान मालिक ने आठ सौ रुपये महीने पर उसे रख लिया और घर की सफाई व खाना बनाने का काम दिया। उसने पहले काम कर रही महिला को हटा दिया। उस महिला ने लेखिका से भला-बुरा कहा। लेखिका उस घर में रोज सवेरे आती तथा दोपहर तक सारा काम खत्म करके चली जाती। घर जाकर बच्चों को नहलाती व खिलाती। उसे बच्चों के भविष्य की चिंता थी। जिस मकान में वह रहती थी, उसका किराया अधिक था। उसने कम सुविधाओं वाला नया मकान ले लिया। यहाँ

के लोग उसके अकेले रहने पर तरह-तरह की बातें बनाते थे। घर का खर्च चलाने के लिए वह और काम चाहती थी। वह मकान मालिक से काम की नयी जगह ढूँढ़ने को कहती है। उसे बच्चों की पढ़ाई, घर के किराए व लोगों की बातों की भी चिंता थी। मालिक सज्जन थे। एक दिन उन्होंने लेखिका से पूछा कि वह घर जाकर क्या-क्या करती है। लेखिका की बात सुनकर उन्हें आश्चर्य हुआ। उन्होंने स्वयं को 'तातुश' कहकर पुकारने को कहा। वे उसे बेबी कहते थे तथा अपनी बेटी की तरह मानते थे। उनका सारा परिवार लेखिका का ख्याल रखता था। वह पुस्तकों की अलमारियों की सफाई करते समय पुस्तकों को उत्सुकता से देखने लगती। यह देखकर तातुश ने उसे एक किताब पढ़ने के लिए दी।

तातुश ने उससे लेखकों के बारे में पूछा तो उसने कई बांग्ला लेखकों के नाम बता दिए। एक दिन तातुश ने उसे कॉपी व पेन दिया और कहा कि समय निकालकर वह कुछ जरूर लिखे। काम की अधिकता के कारण लिखना बहुत मुश्किल था, परंतु तातुश के प्रोत्साहन से वह रोज कुछ पृष्ठ लिखने लगी। यह शौक आदत में बदल गया। उसका अकेले रहना समाज में कुछ लोगों को सहन नहीं हो रहा था। वे उसके साथ छेड़खानी करते थे और बेमतलब परेशान करते थे। बाथरूम न होने से भी विशेष दिक्कत थी। मकान मालिक के लड़के के दुर्व्यवहार की वजह से वह नया घर तलाशने की सोचने लगी। एक दिन लेखिका काम से घर लौटी तो देखा कि मकान टूटा हुआ है तथा उसका सारा सामान खुले में बाहर पड़ा हुआ है। वह रोने लगी। इतनी जल्दी मकान ढूँढ़ने की भी दिक्कत थी। दूसरे घरों के लोग अपना सामान इकट्ठा करके नए घर की तलाश में चले गए। वह सारी रात बच्चों के साथ खुले आसमान के नीचे बैठी रही। उसे दुख था कि दो भाई नजदीक रहने के बावजूद उसकी सहायता नहीं करते। तातुश को बेबी का घर टूटने का पता चला तो उन्होंने अपने घर में कमरा दे दिया। इस प्रकार वह तातुश के घर में रहने लगी। उसके बच्चों को ठीक खाना मिलने लगा। तातुश उसका बहुत ख्याल रखते।

बच्चों के बीमार होने पर वे उनकी दवा का प्रबंध करते। उनके सद्व्यवहार को देखकर बेबी हैरान थी। उसका बड़ा लड़का किसी के घर में काम करता था। वह उदास रहती थी। तातुश ने उसके लड़के को खोजा तथा उसे बेबी से मिलवाया। उस लड़के को दूसरी जगह काम दिलवाया। लेखिका सोचती कि तातुश पिछले जन्म में उसके बाबा रहे होंगे। तातुश उसे लिखने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने अपने कई मित्रों के पास बेबी के लेखन के कुछ अंश भेज दिए थे। उन्हें यह लेखन पसंद आया और वे भी लेखिका का उत्साह बढ़ाते रहे। तातुश के छोटे लड़के अर्जुन के दो मित्र वहाँ आकर रहने लगे, परंतु उनके अच्छे व्यवहार से लेखिका बढ़े काम को खुशी-खुशी करने लगी। तातुश ने सोचा कि सारा दिन काम करने के बाद बेबी थक जाती होगी। उसने उसे रोजाना शाम के समय पार्क में बच्चों को घुमा लाने के लिए कहा। इससे बच्चों का दिल बहल जाएगा। अब वह पार्क में जाने लगी। पार्क में नए-नए लोगों से मुलाकात होती। उसकी पहचान बंगाली लड़की से हुई जो जल्दी ही वापिस चली गई। लोगों के दुर्व्यवहार के कारण उसने पार्क में जाना छोड़ दिया। लेखिका को किताब, अखबार पढ़ने व लेखन-कार्य में आनंद आने लगा। तातुश के जोर देने पर वह अपने जीवन की घटनाएँ लिखने लगी। तातुश के दोस्त उसका उत्साह बढ़ाते रहे। एक मित्र ने उसे आशापूर्णा देवी का उदाहरण दिया। इससे लेखिका का हौसला बढ़ा और उसने उन्हें जेठू कहकर संबोधित किया। एक दिन लेखिका के पिता उससे मिलने पहुँचे। उसने उसकी माँ के निधन के बारे में बताया। लेखिका के भाइयों को पता था, परंतु उन्होंने उसे बताया नहीं। लेखिका काफी देर तक माँ की याद करके रोती रही। बाबा ने बच्चों से माँ का ख्याल रखने के लिए समझाया। लेखिका पत्रों के माध्यम से कोलकाता और दिल्ली के लेखक मित्रों से संपर्क रखने लगी। उसे हैरानी थी कि लोग उसके लेखन को पसंद करते हैं।

शर्मिला दी उससे तरह-तरह की बातें करती थी। लेखिका सोचती कि अगर तातुश उससे न मिलते तो यह जीवन कहाँ मिलता। लेखिका का जीवन तातुश के घर में आकर बदल गया। उसका बड़ा लड़का काम पर लगा था। दोनों छोटे बच्चे स्कूल में पढ़ रहे थे। वह स्वयं लेखिका बन गई थी। पहले वह सोचती थी कि अपनों से बिछुड़कर

कैसे जी पाएगी, परंतु अब उसने जीना सीख लिया था। वह तातुश से शब्दों के अर्थ पूछने लगी थी। तातुश के जीवन में भी खुशी आ गई थी। अंत में वह दिन भी आ गया जब लेखिका की लेखन-कला को पत्रिका में जगह मिली। पत्रिका में उसकी रचना का शीर्षक था- 'आलो-आँधारि' बेबी हालदार। लेखिका अत्यंत प्रसन्न थी। तातुश के प्रति उसका मन कृतज्ञता से भर आया। उसने तातुश के पैर छूकर आशीर्वाद प्राप्त किया।

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 पाठ के किन अंशों से समाज की यह सच्चाई उजागर होती है कि पुरुष के बिना स्त्री का कोई अस्तित्व नहीं है। क्या वर्तमान समय में स्त्रियों की इस सामाजिक स्थिति में कोई परिवर्तन आया है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- पाठ में ऐसे अनेक अंश हैं जिनसे ज्ञात होता है कि पुरुष के बिना स्त्री का कोई अस्तित्व नहीं है-

1. बेबी के प्रति उसके आस-पड़ोस के लोगों का व्यवहार अच्छा नहीं था। वे सदा उससे पूछा करते कि उसका स्वामी कहाँ है? मकान मालकिन उससे पूछती कि वह कहाँ गई थी? क्यों गई थी? आदि।
2. मकान मालकिन का बड़ा बेटा उसके द्वार पर आकर बैठ जाता है और वह इस तरह की बातें करता है जिनका अर्थ था उसके चाहने से ही बेबी उस घर में रह सकती है।
3. कुछ लोग जानबूझकर उसके स्वामी के विषय में प्रश्न पूछा करते थे तथा इसी बात पर उसे ताने देते या छेड़ते थे।
4. जब झुग्गियों पर बुलडोजर चलाया गया तो सभी अपना सामान समेटकर दूसरे घरों में चले गए, पर वह अकेली बच्चों के साथ खुले आसमान के नीचे बैठी रही।

उपर्युक्त अंशों से स्पष्ट होता है कि पुरुष स्त्री पर ज्यादती करे तो भी पूरे समाज की ज्यादतियों से बचने का एक सुरक्षा कवच तो है ही।वर्तमान समय में स्त्रियों की स्थिति में काफी बदलाव आया है। शिक्षितहोने और महिला सुरक्षा कानूनों के कारण स्त्रियों की आमदनी में बढ़ोतरी हुई है। अब वे अकेली रहकर भी जीवन यापन कर सकती हैं।

प्रश्न-2 अपने परिवार से तातुश के घर तक के सफ़र में बेबी के सामने रिश्तों की कौन-सी सच्चाई उजागर होती है?

उत्तर- बेबी के अपने परिवार में माता-पिता, भाई-भाभी, बहन आदि सभी थे, पर नाम के ही थे। बिना सोचे-समझे, एक तेरह वर्ष की लड़की को अधेड़ पुरुष के साथ बाँध दिया गया। मुसीबत के समय भी भाइयों ने उसे सहारा नहीं दिया। यहाँ तक कि माँ की मृत्यु की सूचना भी नहीं दी गई। यह खून का रिश्ता रखने वाले लोगों का हाल था। इधर तातुश जैसे सहृदय मनुष्य बेबी के दुख-दर्द को समझकर उसे अपने घर में आश्रय देते हैं। उसके बच्चों की देखरेख, उनके लिए दूध, दवा, स्कूल आदि की व्यवस्था तक करते हैं। बेबी के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हैं। उसके बड़े बेटे को खोजकर लाते हैं। वास्तव में, उन्होंने जैसा व्यवहार किया ऐसे बहुत कम उदाहरण हैं। ये बताते हैं करुणा, दया और स्नेह के संबंध खून के रिश्तों से कहीं बढ़कर होते हैं।

प्रश्न-3 इस पाठ से घरों में काम करने वालों के जीवन की जटिलताओं का पता चलता है। घरेलू नौकरों को और किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस पर विचार करिए।

उत्तर- इस पाठ से घरेलू नौकरों के घरों में काम करने वालों के जीवन की निम्नलिखित जटिलताओं का पता चलता है –

1. इन लोगों को आर्थिक सुरक्षा नहीं मिलती।
2. इन्हें गंदे व सस्ते मकान किराए पर मिलते हैं क्योंकि ये अधिक किराया नहीं दे सकते।
3. इनका शारीरिक शोषण भी किया जाता है।
4. इनके काम के घंटे भी अधिक होते हैं।

अन्य समस्याएँ

1. आर्थिक तंगी के कारण इनके बच्चे अशिक्षित रह जाते हैं।

2. चिकित्सा सुविधा व खाने के अभाव में ये अशिक्षित रहते हैं।

प्रश्न-4 आलो-आँधारि रचना बेबी की व्यक्तिगत समस्याओं के साथ-साथ कई सामाजिक मुद्दों को समेटे है। किन्ही दो मुख्य समस्याओं पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर- आलो-आँधारि एक ऐसी कृति है जो बेबी हालदार की आत्मकथा होने के साथ-साथ हमें एक अनदेखी दुनिया के दर्शन करवाती है। यह एक ऐसी दुनिया है जो हमारे पड़ोस में है, फिर भी हम इसमें झाँकना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं। कुछ समस्याएँ निम्नलिखित हैं –

(क) परित्यक्ता स्त्री के साथ व्यवहार – यह पुस्तक एक परित्यक्ता स्त्री की कहानी कहती है। बेबी किराए के मकान में रहकर घरेलू नौकरानी का कार्य करके अपना जीवन निर्वाह कर रही है। समाज का दृष्टिकोण उसके प्रति स्वस्थ नहीं है। स्वयं औरतें ही उस पर ताना मारती हैं। हर व्यक्ति उस पर अपना अधिकार समझता है तथा उसका शोषण करना चाहता है। उसे सदा संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। सहायता के नाम पर उसका मजाक उड़ाया जाता है।

(ख) स्वच्छता का अभाव – संसाधनों के अभाव में घरेलू नौकर गंदी बस्तियों में रहते हैं। शौचालय की सुविधा न होना, पानी की जमाव, कूड़े के ढेर आदि के कारण बीमारियाँ फैलती हैं। सरकार भी इन्हें उपेक्षित करती हैं।

प्रश्न-5 तुम दूसरी आशापूर्णा देवी बन सकती हो- जेठू का यह कथन रचना संसार के किस सत्य को उद्घाटित करता है?

उत्तर- रचना संसार और इसमें रहने वाले लोगों की अपनी एक अलग ही जीवन-शैली है। ये लोग लेखन कार्य के लिए सारी-सारी रात जाग सकते हैं, और जागतेभी हैं। तुम दूसरी आशापूर्णा देवी बन सकती हो'–जेठू का यह कथन बेबी को यही बात समझाने के लिए था। जेठू ने यह भी समझाया था कि आशापूर्णा देवी भी सारा काम-काज निबटाकर रात-रात भर चोरी-चोरी लिखती थी, जब लोग सो जाते थे। यह सच है रचना संसार में लेखन का एक नशा होता है, जैसा मुंशी प्रेमचंद को भी था, जो कई मील पैदल चलकर आते, खाने-पीने का ठिकाना न था, फिर भी डिबरी की रोशनी में कई-कई घंटे बैठकर लेखन कार्य करते थे। ऐसी ही बेबी हालदार ने भी किया। जब सारी झुग्गी बस्ती सो जाती तो वह लेखन कार्य करती रहती थी।

प्रश्न-6 बेबी की जिंदगी में तातुश का परिवार न आया होता तो उसका जीवन कैसा होता? कल्पना करें और लिखें।

उत्तर- बेबी के जीवन में तातुश एक सौभाग्य की भाँति हैं। तातुश जैसे लोग सबको नहीं मिलते। यदि वे बेबी के जीवन में न आते तो बेबी स्वयं कभी अपनी क्षमता को पहचान न पाती। उसी गलीच माहौल में बेबी नर्क भोगती रहती, घर-घर झाडू-बरतन करती घूमती रहती। जो लोग उसे बुरी नजर से देखते थे उनका शिकार हो जाती। उसके बच्चे कभी स्कूल का मुँह न देख पाते और शायद उससे सदा के लिए बिछुड़ जाते। उसका बड़ा बेटा कहाँ काम कर रहा है, यह तातुश ही तोखोज लाए थे। वह भी घृणास्पद अज्ञात कुचक्र के जीवन में कहीं खोकर रह जाती। हमें उसकी आत्मकथा पढ़ने का अवसर न मिल पाता।

प्रश्न-7 'बेबी के लिए तातुश के हृदय में माया है'- ऐसा किन बातों से बेबी को महसूस होता था?

उत्तर- तातुश ने बेबी को उसके बच्चों को पढ़ाने की प्रेरणा दी। मदद करके उन्हें स्कूल में प्रवेश दिलवाया। उसे दूसरी कोठी में काम न करने की सलाह देकर उसकी और सहायता करने का आश्वासन दिया। वे कहते तो कुछ न थे, पर कुछ ऐसा करते थे कि बेबी को महसूस होता था कि वे बेबी के प्रति माया (ममता) रखते हैं, जैसे कभी-कभी जब वह काम करने जाती तो तातुश बरतन पोंछ रहे होते, कभी जाले ढूँढ़ रहे होते थे।

प्रश्न-8 'तातुश ने बेबी के अँधेरे जीवन में आलोक फैला दिया।' तर्क सहित पुष्टि कीजिए।

उत्तर- तातुश जैसे सहृदय लोग सौभाग्य से ही मिलते हैं। उन्होंने बेबी को अपने घर में घरेलू काम के लिए रखा, पर सदा उसका ध्यान रखते हुए यह सोचा कि उसका भी मन है, उसकी भी इच्छाएँ हैं, उसे भी अच्छी तरह जीने का अवसर मिलना चाहिए।एक झुग्गी में रहने वाली बेबी लेखिका बनना तो दूर अपने बच्चों की पढ़ाई, पेट पालने, आवास

आदि सुविधाओं की व्यवस्था भी नहीं कर पा रही थी। झुग्गी बस्ती की घिनौनी मानसिकता और समाज की संकीर्ण सोच के कारण उसे दिन-रात उलटी-सीधी बातें सुननी पड़ती थीं। कभी बस्ती और मकान बदलना पड़ता तो कभी बुलडोजर उसका मकान गिरा जाता। इस निराशाजनक माहौल में तातुश ने उसे पढ़ने के लिए किताबें दीं और लेखन के लिए बाध्य किया और कहा कि लेखन को वह तातुश का काम समझकर करे, जैसा भी हो गलती हो तो भी लिखे। वह अपना ही जीवन-परिचय लिख सकती है। वे बेबी को समझाते कि जो बुरे हैं वे ऐसे क्यों हैं? उन्हें माफ करने का प्रयास करो। उसके लिखे हुए की वे केवल तारीफ़ही नहीं करते वरन् उसे अपने सभी मित्रों में प्रसारित करते। इस व्यवहार से ही बेबी को यह मुकाम हासिल हुआ।अतः यह कथन पूर्णत: सत्य है कि बेबी के अँधेरे जीवन में तातुश ने ही उजाला (आलोक) फैला दिया।

प्रश्न-9 'बेबी हालदार का जीवन संघर्ष से सफलता का संदेश देता है। स्पष्ट करें।

उत्तर- बेबी हालदार का जीवन इस बात की जीती-जागती मिसाल है कि मनुष्य संघर्ष कर हर मुकाम को पा सकता है। पति की ज्यादतियों को सहने वाली लाखों स्त्रियाँ हमारे समाज में रहती हैं। जो निम्न, मध्यम और उच्च-तीनों ही वर्गों में समान रूप से हैं। असल में बेबी जैसी स्त्रियाँ बहुत कम हैं जो अपने ऊपर विश्वास करके अत्याचारी पति को ठुकराकर बाहर निकल सकें। उसके बाद समाज में ओछी बातों पर ध्यान न देकर चुपचाप जीवन-जीना, अपने बच्चों को पालना ये सभी बातें हमें प्रेरित करती हैं कि अन्याय को सहन मत करो, स्वयं में विश्वास रखो और सदा मेहनत करते रहो। मेहनत कभी बेकार नहीं जाती। इसी शिक्षा को ग्रहण कर हमें सदा मेहनत और संघर्ष के साथ अन्याय को ठुकराना है।

प्रश्न-10 तातुश के घर में रहने के बाद बेबी के बच्चों में क्या परिवर्तन आया और क्यों?

उत्तर- तातुश के घर आने से पूर्व बेबी के बच्चे इधर-उधर भागते रहते थे। वे जरा-जरा-सी बात पर रोने-चिल्लाने लगते थे। बेवजह घूमने की बातें करते थे, लेकिन अब वह सब नहीं करते थे। वे सारी आदतें छूट गई थीं। अब उनकी पढाई भी ठीक चल रही थी। कई प्रकार के प्रश्न और प्रतिक्रियाएँ पहले नहीं होती थीं। इसका कारण यह था कि पहले घर-घर काम की तलाश या काम करती हुई घूमने वाली बेबी को अब अपने बच्चों के लिए समय मिलता था। बच्चों को भी अब अच्छा माहौल मिला था। वे स्कूल जाकर पढ़ाई करते और सभ्य लोगों को देखते और सुनते।

प्रश्न-12 बेबी हालदार के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- प्रारम्भिक जीवनी बेबी हालदार के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं –

1. बेबी हालदार एक अत्यंत सामान्य लड़की थी। तेरह वर्ष की आयु में जब वह सातवीं कक्षा में पढ़ती थी तो उसका विवाह अपने से दोगुनी उम्र के व्यक्ति से कर दिया गया। जीवन की सबसे संवेदनशील उम्र में वह तीन बच्चों की माँ बन गई। ज्यादतियों की वेदना जब असहनीय हो गई तो वह अपने तीनों बच्चों को लेकर घर से निकल गई।
2. **कठोर जीवन –** परिवार छोड़ने के बाद उसे समाज की ठोकरें और झुग्गियों में रहकर यातनाएँ मिली। वह दुर्गापुर से फरीदाबाद आ गई। कुछ समय बाद वह वहाँ से भी गुड़गाँव आ गई। वह घर-घर काम-काज करती और दुनिया की उलटी-सीधी बातें मुँह और कान बंद कर सुनती रहती थी।
3. **तातुश का स्नेह –** उसे एक ऐसे घर में काम मिला जो लोग बहुत अच्छे थे। घर के मालिक जिन्हें बेबी तातुश कहती हैं, वे देवता के समान थे। उन्होंने बेबी के मन, इच्छा और रुझान को पढ़ने-लिखने की तरफ़ मोड़ दिया। बेबी को सज्जन लोगों का साथ और उनसे जो प्रोत्साहन मिला उसने उसे लेखिका की संज्ञा दिलवाई, जो हमारे सामने एक अनुकरणीय उदाहरण है।
4. **स्नेहमयी माता –** बेबी हालदार को अपने बच्चों के भविष्य की चिंता रहती थी। वह तातुश की मदद से बच्चों को स्कूल भेजती हैं। अपने बड़े लड़के के लिए वह व्याकुल रहती थी जो किसी के घर में घरेलू नौकर था। तातुश उसे घर लाते हैं।

केंद्रीय विद्यालय संगठन, चंडीगढ़ संभाग

आदर्श प्रश्नपत्र 2024-25

कक्षा- ग्यारहवीं : विषय- हिंदी (कोर)

निर्धारित समय 3 -घंटे **अधिकतम अंक-80**

सामान्य निर्देश -:

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न पत्र में 12 प्रश्न है ।
- इस प्रश्न पत्र में तीन खण्ड हैं –क, ख,ग।
- सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।
- उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड - क

प्रश्न-1 निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़करपूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए- (10 अंक)

हँसी भीतरी आनंद का बाहरी चिह्न है। जीवन की सबसे प्यारी और उत्तम-से-उत्तम वस्तु एक बार हँस लेना तथा शरीर को अच्छा रखने की अच्छी-से-अच्छी दवा एक बार खिलखिला उठना है। पुराने लोग कह गए हैं कि हँसो और पेट फुलाओ। हँसी न जाने कितने ही कला-कौशलों से भली है। जितना ही अधिक आनंद से हँसोगे उतनी ही आयु बढ़ेगी। एक यूनानी विद्वान कहता है कि सदा अपने कर्मों को झीखने वाला हेरीक्लेस बहुत कम जिया, पर प्रसन्न मन डेमाक्रीटस 109 वर्ष तक जिया। हँसी-खुशी का नाम जीवन है। जो रोते हैं, उनका जीवन व्यर्थ है। कवि कहता है- 'जिंदगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दादिल खाक जिया करते हैं।'

मनुष्य के शरीर के वर्णन पर एक विलायती विद्वान ने एक पुस्तक लिखी है। उसमें वह कहता है कि उत्तम सुअवसर की हँसी उदास-से-उदास मनुष्य के चित्त को प्रफुल्लित कर देती है। आनंद एक ऐसा प्रबल इंजन है कि उससे शोक और दुख की दीवारों को ढा सकते हैं। प्राण रक्षा के लिए सदा सब देशों में उत्तम-से-उत्तम उपाय मनुष्य के चित्त को प्रसन्न रखना है। सुयोग्य वैद्य अपने रोगी के कानों में आनंदरूपी मंत्र सुनाता है। एक अंग्रेज डॉक्टर कहता है कि किसी नगर में दवाई लदे हुए बीस गधे ले जाने से एक हँसोड़ आदमी को ले जाना अधिक लाभकारी है। डॉक्टर हस्फलेंडने एक पुस्तक में आयु बढ़ाने का उपाय लिखा है। वह लिखता है कि हँसी बहुत उत्तम चीज पाचन के लिए है, इससे अच्छी औषधि और नहीं है। एक रोगी ही नहीं, सबके लिए हँसी बहुत काम की वस्तु है।

हँसी शरीर के स्वास्थ्य का शुभ संवाद देने वाली है। वह एक साथ ही शरीर और मन को प्रसन्न करती है। पाचन-शक्ति बढ़ाती है, रक्त को चलाती और अधिक पसीना लाती है। हँसी एक शक्तिशाली दवा है। एक डॉक्टर कहता है कि वह जीवन की मीठी मदिरा है। डॉ. हयूड कहता है कि आनंद से बढ़कर बहुमूल्य वस्तु मनुष्य के पास और नहीं है। कारलाइल एक राजकुमार था।उसने संसार का त्याग कर दिया था। वह कहता है कि जो जी से हँसता है, वह कभी बुरा नहीं होता। जी से हँसी, तुम्हें अच्छा लगेगा। अपने मित्र को हँसाओ, वह अधिक प्रसन्न होगा। शत्रु को हँसाओ, तुमसे कम घृणा करेगा। एक अनजान को हँसाओ, तुम पर भरोसा करेगा। उदास को हँसाओ, उसका दुख घटेगा। निराश को हँसाओ, उसकी आशा बढ़ेगी।

(i) भीतरी आनंद का बाहरी चिह्न क्या है? -1

क- आशा

ख- हँसी
ग-जीत
घ-सलाह

(ii) ऐसा क्या है जो उदास-से-उदास मनुष्य के चित्त को प्रफुल्लित कर देती है? -1
क- अनुचित हँसी
ख- उत्तम सुअवसर की हँसी
ग-बेमतलब का रोना
घ-बेसमय का गाना

(iii) सुयोग्य वैद्य अपने रोगी के कानों में क्या सुनाता है? -1

क- समय का मोती
ख- सेवा का फल
ग-दुःख के बोल
घ-आनंदरूपी मंत्र

(iv) किसने एक पुस्तक में आयु बढ़ाने का उपाय लिखा है? -1
(v) हँसी शरीर के स्वास्थ्य के लिए किस प्रकार उपयोगी है? -2
(vi) राजकुमार कारलाइल ने हँसने और हँसाने के विषय में क्या कहा? -2
(vii) दवाई लदे हुए बीस गधे ले जाने से एक हँसोड़ आदमी को ले जाना अधिक लाभकारी क्यों है? -2

प्रश्न-2 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-(8 अंक)

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय।।
रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुनी इठलैहैं लोग सब, बांटी न लैहैं कोय।।
रहिमन विपदा की भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जान परत सब कोय।।
रहिमन ओछे नरन ते, तजौ बैर अरु प्रीत।
काटे चाटे स्वान के, दोउ भाँति विपरीत।।
रूठे सुजन मनाइए, जो रूठे सौ बार।
रहिमन फिरि फिरि पोइए, टूटे मुक्ताहार।।

(i) रहीम कवि ने प्रेम रूपी धागे को झटका देकर न तोड़ने की बात क्यों कही है? -1
क- यह आसानी टूट जाता है
ख- इससे बेवजह शक्ति नष्ट होती है
ग- यह बहुत कोशिशों के बाद भी नहीं टूटता है
घ- धागा टूटने के बाद नहीं जुड़ता है और जुड़ने पर गाँठ बन जाती है

(ii) रहीम कवि ने अपने मन के दुःख को किसी से कहने के लिए क्यों मना किया? -1
क- मन का दुःख और बढ़ जाता है
ख- घर के लोग बहुत नाराज होते हैं
ग- लोग मन के दुःख को कम नहीं करते बल्कि उसका उपहास उड़ाते हैं

घ- मन को बहुत सुकून मिलता है

(iii) हितैषी और गैरहितैषी लोगों की पहचान कब होती है? -1

क- खुशी के हर मौके में शामिल होता है

ख- मुसीबत की घड़ी में जब कोई साथ देता और कोई नहीं देता है

ग- हमेशा अपनी दूरी बनाकर रखता है

घ- बुरा काम करते हुए कभी-कभी भलाई का काम करता है

(iv) कवि रहीम ने तुच्छ लोगों से मित्रता और शत्रुता करने से बचने के लिए किसका उदाहरण दिया है? -1

(v) कवि के अनुसारनाराज होने वाले सज्जन व्यक्ति को किस तरह मनाना चाहिए? -2

(vi) रहीम द्वारा रचित इन दोहों में से आपको सबसे अच्छा कौन सा दोहा लगा इसका भावार्थ लिखिए? -2

खण्ड - ख

प्रश्न-3 निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषयपर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए- (6 अंक)

1. जब मैंने पहली बार कार चलाई
2. मौसम की पहली बारिश
3. अगर मैं देश का प्रधानमंत्री होता / होती

प्रश्न-4 निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषयपर पत्र लिखिए- (5 अंक)

आपके शहर में जल विभाग के मुख्य अभियंता को शहर में अपर्याप्त जल आपूर्ति की समस्या पर चिंता व्यक्त करते हुये एवं उसके समाधान हेतु पत्र लिखिए ।

अथवा

स्वयं को जयपुर निवासी अपूर्व / अपूर्वा मानते हुये अपने शहर (पर्यटन स्थल) में सड़कों की दुर्दशा पर चिंता व्यक्त करते हुये किसी दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए ।

प्रश्न-5 (क)निम्नलिखितछह प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिये- (2x4=8)

i. समाचार से क्या आशय है, परिभाषा लिखिए?
ii. समाचार लेखन में छः ककार क्या हैं?
iii. पत्रकारिता में बीट किसे कहते हैं?
iv. वॉचडॉग पत्रकारिता का क्या अर्थ है?
v. खोजी पत्रकारिता का क्या अर्थ है?
vi. पत्रकार कितने तरह के होते हैं?

(ख) निम्नलिखितप्रश्नों को पढ़कर किसी एक का उत्तर लिखें - (3x1=3)

पटकथा लेखन की परिभाषा देते हुये नाटक एवं फिल्म की पटकथा में अंतर बताइए ।

अथवा

कार्यसूची(एजेंडा) एवं प्रेस विज्ञप्ति (प्रेस रिलीज़) की परिभाषा देते हुये इन्हे स्पष्ट करें ।

खण्ड - ग

प्रश्न-6 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-(5 अंक)

वे मुतमइन हैं कि पत्थर पिघल नहीं सकता,
मैं बेकरार हूँ आवाज में असर के लिए।
तेरा निजाम है सिल दे जुबान शायर की,
ये एहतियात जरूरी हैं इस बहर के लिए।
जिएँ तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले,
मरें तो गैर की गलियों में गुलमोहर के लिए।

(i) कवि किसलिए बेचैन है?

क- सत्ता पाने के लिए

ख- आराम से रहने के लिए

ग- सुख भोगने के लिए

घ- जनता को सचेत करने के लिए

(ii) उच्च पदों पर आसीन वर्ग के पास कौन-सी ताकत है?

क- सत्ता की

ख- बाहुबल की

ग- धनबल की

घ- इनमें से कोई नहीं

(iii) उच्च पदों पर आसीन वर्ग को किस तरह की सावधानी की जरुरत है?

क- कवियों की ज़ुबान बंद करने की

ख- रैलियाँ निकालने की

ग- आम जन को परेशान करने की

घ- इनमें से कोई नहीं

(iv) जिएँ तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले- पंक्ति में 'बगीचे' का प्रतीकार्थ क्या है?

क- धन-दौलत

ख- मन-सम्मान

ग- राग-रंग

घ- देश-समाज

(v) दुश्मन की कैद में रहकर भी कवि किसके लिए मरना चाहता है?

क- नेताओं के लिए

ख- जनता की भलाई के लिए

ग- अधिकारियों के लिए

घ- पूँजीपतियों के लिए

प्रश्न-7 निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए (3x2=6)

(i) 'मुर्दा शांति से भर जाना और हमारे सपनों का मर जाना'-इनको सबसे खतरनाक माना गया है। आपकी दृष्टि में इन बातों में परस्पर क्या संगति है और ये क्यों सबसे खतरनाक है?

(ii) 'चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती' कविता में पूर्वी प्रदेशों की स्त्रियों की किस विडंबनात्मक स्थिति का वर्णन हुआ है?

(iii) 'इस दौर में भी बचाने को बहुत कुछ बचा है'-आओ मिलकर बचाएं कविता की इस पंक्ति का क्या आशय है?

प्रश्न-8 निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए (2x2-4)

(i) ईश्वर के स्वरूप के विषय में कबीर क्या कहते हैं?

(ii) घर की याद कविता में कवि ने पिता के व्यक्तित्तव की किन विशेषताओं को उकेरा है ?

(iii) अक्क महादेवी ने ईश्वर के लिए किस दृष्टांत का प्रयोग किया गया है? ईश्वर और उसके साम्य का आधार बताइए।

प्रश्न-9 निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए- (5 अंक)

दूसरे दिन माली ने चपरासी को बताया, चपरासी ने क्लर्क को, क्लर्क ने हैड-क्लर्क को। थोड़ी ही देर में सेक्रेटेरियेट में यह अफ़वाह फैल गई कि दबा हुआ आदमी शायर है। बस, फिर क्या था। लोगों का झुंड-का-झुंड शायर को देखने के लिए उमड़ पड़ा। इसकी चर्चा शहर में भी फैल गई और शाम तक गली-गली से शायर जमा होने शुरू हो गए। सेक्रेटेरियेट का लॉन भाँति-भाँति के कवियों से भर गया और दबे हुए आदमी के चारों ओर कवि-सम्मेलन का-सा वातावरण उत्पन्न हो गया। सेक्रेटेरियेट के कई क्लर्क और अंडर-सेक्रेटरी तक जिन्हें साहित्य और कविता से लगाव था, रुक गए। कुछ शायर दबे हुए आदमी को अपनी कविताएँ और दोहे सुनाने लगे। कई क्लर्क उसको अपनी कविता पर आलोचना करने को मजबूर करने लगे।

(i) सेक्रेटेरियेट में किस बात की अफ़वाह फैल गई?

क- चपरासी शायर है

ख- क्लर्क शायर है

ग- माली शायर है

घ- दबा हुआ आदमी शायर है

(ii) लोगों का झुंड किसे देखने के लिए उमड़ पड़ा?

क- चपरासी को

ख- क्लर्क को

ग- शायर को

घ- माली को

(iii) सेक्रेटेरियेट का लॉन किन लोगों से भर गया?

क- चपरासियों से

ख- कवियों से

ग- नेताओं से

घ- अंडर-सेक्रेटरी से

(iv) दबे हुए आदमी के चारों ओर कैसा वातावरण उत्पन्न हो गया?

क- कवि सम्मेलन-सा

ख- मेले-सा

ग- जुलूस-सा

घ- धर्म स्थल-सा

(v) 'जामुन का पेड़' पाठ के लेखक का क्या नाम है?

क- रजनी
ख- मन्नू भंडारी
ग- कृश्नचंदर
घ- लीला बेन

प्रश्न-10 निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तरलगभग 60 शब्दों में लिखिए (3x2=6)

(i) मास्टर त्रिलोक सिंह के किस कथन को लेखक ने ज़बान के चाबुक कहा है और क्यों?

(ii) किसी फिल्म की शूटिंग करते समय फिल्मकार को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उन्हें सूचीबद्ध कीजिए।

(iii) जब किसी का बच्चा कमज़ोर होता है, तभी उसके माँ-बाप दयूशन लगवाते हैं। अगर लगे कि कोई टीचर लूट रहा है, तो उस टीचर से न ले ट्यूशन, किसी और के पास चले जाएँ. यह कोई मजबूरी तो है नहीं-प्रसंग का उल्लेख करते हुए बताएँ कि यह संवाद आपको किस सीमा तक सही या गलत लगता है, तर्क दीजिए।

प्रश्न-11 निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तरलगभग 40 शब्दों में लिखिए (2x2=4)

(i) मियाँ नसीरुददीन को नानबाइयों का मसीहा क्यों कहा गया है?

(ii) आठ करोड़ प्रजा के गिड़गिड़ाकर विच्छेद न करने की प्रार्थना पर आयने ज़रा भी ध्यान नहीं दिया-यहाँ किस ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया गया है?

(iii) भारत की चर्चा नेहरू जी कब और किससे करते थे?

प्रश्न-12 निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तरलगभग 100 शब्दों में लिखिए (5x2=10)

(i) तुम दूसरी आशापूर्णा देवी बन सकती हो-जेठू का यह कथन रचना संसार के किस सत्य को उद्घाटित करता है?

(ii) 'चित्रपट संगीत ने लोगों के कान बिगाड़ दिए'- अकसर यह आरोप लगाया जाता रहा है। इस संदर्भ में कुमार गंधर्व की राय और अपनी राय लिखें।

(iii) निजी होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में कुड़यों पर ग्राम-समाज का अंकुश लगा रहता है। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा?

....

केंद्रीय विद्यालय संगठन, चंडीगढ़ संभाग

अंक-योजना 2024-25

कक्षा -ग्यारहवीं

विषय- हिंदी (कोर)

समय : 3 घंटे **कुल अंक : 80**

निर्देश- इस प्रश्न-पत्र के तीन खंड है- 'क','ख' और 'ग'।

अंक योजना में दिए गये उत्तर बिंदु अंतिम नहीं हैं। ये उत्तर सुझावात्मक संभावित एवं सांकेतिक हैं।विद्यार्थी इससे भिन्न उत्तर भी दे सकते हैं। परीक्षक स्वविवेक से अंक दें।

खण्ड-क

प्रश्न-1 निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़करपूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए- (10 अंक)

(i) ख- हँसी

(ii) ख- उत्तम सुअवसर की हँसी

(iii) घ- आनंदरूपी मंत्र

(iv) डॉक्टर हस्फलेंडने एक पुस्तक में आयु बढ़ाने का उपाय लिखा है। उन्होंने लिखा कि पाचन के लिएहँसी बहुत उत्तम चीज है, इससे अच्छी औषधि और नहीं है। एक रोगी ही नहीं, सबके लिए हँसी बहुत काम की वस्तु है।

(v) हँसी शरीर के स्वास्थ्य का शुभ संवाद देने वाली है। वह एक साथ ही शरीर और मन को प्रसन्न करती है। पाचन-शक्ति बढ़ाती है, रक्त को चलाती और अधिक पसीना लाती है। हँसी एक शक्तिशाली दवा है। एक डॉक्टर कहता है कि वह जीवन की मीठी मदिरा है।

(vi) कारलाइल एक राजकुमार था। उसने संसार का त्याग कर दिया था। उसने कहा है कि जो जी से हँसता है, वह कभी बुरा नहीं होता। जी से हँसी, तुम्हें अच्छा लगेगा। अपने मित्र को हँसाओ, वह अधिक प्रसन्न होगा। शत्रु को हँसाओ, तुमसे कम घृणा करेगा। एक अनजान को हँसाओ, तुम पर भरोसा करेगा। उदास को हँसाओ, उसका दुख घटेगा। निराश को हँसाओ, उसकी आशा बढ़ेगी।

(vii) लेखक ने हँसी के विषय में बहुत अच्छी जानकारी दी है। हँसी भीतरी आनंद का बाहरी चिह्न है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हँसना जरुरी है। यह सबसे उत्तम औषधि है।इससे पाचन-शक्ति बढ़ती है, रक्त का संचार होता है और मन प्रसन्न होता है। इसलिए दवाई लदे हुए बीस गधे ले जाने से एक हँसोड़ आदमी को ले जाना अधिक लाभकारी है।

प्रश्न-2 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-(8 अंक)

(i) घ- धागा टूटने के बाद नहीं जुड़ता है और जुड़ने पर गाँठ बन जाती है

(ii) ग- लोग मन के दुःख को कम नहीं करते बल्कि उसका उपहास उड़ाते हैं

(iii) ख- मुसीबत की घड़ी में जब कोई साथ देता और कोई नहीं देता है

(iv) कवि रहीम ने तुच्छ लोगों से मित्रता और शत्रुता करने से बचने के लिए काटने और चाटने वाले कुत्ते का उदाहरण दिया है।

(v) कवि के अनुसार नाराज होने वाले सज्जन व्यक्ति को हर संभव मनाने का प्रयास करना चाहिए। जिस तरह से माला में गूँथे हुये मोती के निकल जाने सेहम उसे धागे में पिरोलेते हैं। ठीक वैसे ही सज्जन व्यक्ति के नाराज होने पर मना लेना चाहिए।

(vi) विद्यार्थी अपनी इच्छा अनुसार उत्तर लिखेंगे।

खण्ड - ख

प्रश्न-3 निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषयपर अनुच्छेद लिखिए- (6 अंक)

प्रारंभ

विषय-विस्तार

भाषा

समापन

प्रश्न-4 निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषयपर पत्र लिखिए- (5 अंक)

प्रारंभ

विषय-विस्तार

भाषा

समापन

प्रश्न-5 (क) निम्नलिखित छह प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिये- (2x4=8)

(i) देश-दुनिया में घटित वे घटनाएँ जिनका अधिक से अधिक से लोगों पर प्रभाव पड़ता हो तथा जिनमें अधिक से अधिक लोगों की रूचि हो, उन्हें समाचार कहते हैं।

(ii) कब, कहाँ, कैसे, कौन, क्या, क्यों।

(iii) संवाददाताओं में उनकी रूचि और क्षमता के अनुसार कार्य का विभाजन ही बीट कहलाता है।

(iv) जो पत्रकारिता सरकार के कामकाज पर निगाह रखती है और कोई गड़बड़ी होते ही उसका पर्दाफाश करती है, उसे वॉचडॉग पत्रकारिता कहते हैं।

(v) घटना की तह में जाकर तथ्यों को सामने लाना जिन्हें छिपाने एवं दबाने का प्रयास किया जाता है।

(vi) पत्रकार तीन तरह के होते हैं- 1-पूर्णकालिक पत्रकार 2-अंशकालिक पत्रकार 3-स्वतंत्र पत्रकार

(ख) निम्नलिखितदो प्रश्नों को पढ़ कर किसी एक का सही उत्तर लिखें - (3x1=3)

पटकथा लेखन- पटकथा लेखन एक विशिष्ट तरह का सृजनात्मक लेखन है। अंग्रेजी में पटकथा को 'स्क्रीनप्ले' कहते हैं। पटकथा लेखक **मनोहर श्याम जोशी** ने अपनी पुस्तक 'पटकथा लेखन: एक परिचय' में लिखा है -**"पटकथा कुछ और नहीं, कैमरे से फिल्म के पर्दे पर दिखाए जाने के लिए लिखी गई कथा है।"**

पटकथा की संरचना- पटकथा के निम्न अंग होते हैं।

- पात्र- पटकथा में नायक तथा प्रतिनायक होते हैं।
- द्वंद्व- स्क्रीन के लिए लिखी गई कथा में टकराहट और फिर समाधान होता है।
- घटनास्थल- इसमें अलग-अलग घटनास्थल होते हैं।
- दृश्य- पटकथा में कई प्रकार के दृश्य होते हैं।

नाटक और फिल्म की पटकथा में अंतर-

- नाटक में दृश्य लंबे होते हैं जबकि फिल्म के दृश्य छोटे होते हैं।
- नाटक एक सजीव कला माध्यम है जबकि पटकथा फिल्मांकन है।
- नाटक में घटनास्थल सीमित होते हैं जबकि फिल्म में घटनास्थल असीमित होते हैं।
- नाटक में कथा का विकास रेखीय होता है जबकि फिल्म में कथा का विकास कई प्रकार से होता है।

अथवा

कार्यसूची (एजेंडा)

किसी भी संस्था की औपचारिक बैठक की कार्यसूची उस बैठक में चर्चा के लिए निर्धारित विषयों की पहले से प्राप्त जानकारी देती है। इससे बैठक के अनुशासित संचालन में सहायता मिलती है। निर्धारित विषयों से सम्बंधित या उससे जुड़ी हुई स्पष्ट टिप्पणियाँ सदस्यों को कार्यसूची के साथ पहले ही भेजी जाती हैं ताकि वे बैठक में पूरी तैयारी से आ सकें। कार्यसूची में क्रमशः उपस्थित लोगों कीराय का पूरा विवरण दिया जाता है।

प्रेस विज्ञप्ति (प्रेस रिलीज़)

कोई संस्थान या व्यक्ति किसी विषय या किसी बैठक में जो निर्णय लेता है, उसे प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से आम जनता तक पहुँचाया जाता है। निर्णय में हुई देरी का कारण भी बताया जाता है और उस निर्णय से होने वाले लाभ के बारे में भी जानकारी दी जाती है।

<u>खण्ड - ग</u>

प्रश्न-6 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए। (5 अंक)

(i) घ- जनता को सचेत करने के लिए

(ii) क- सत्ता की

(iii) क- कवियों की जुबान बंद करने की

(iv) घ- देश-समाज

(v) ख- जनता की भलाई के लिए

प्रश्न- 7 निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए (3x2=6)

(i) 'मुर्दा शांति से भर जाना' का अर्थ है-निष्क्रिय होना, जड़ हो जाना या प्रतिक्रिया शून्य हो जाना। ऐसी स्थिति बहुत खतरनाक है। ऐसा व्यक्ति सामाजिक अन्याय के खिलाफ संघर्ष नहीं कर पाता। उसके मन में किसी तरह की कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। वह जीवित होते हुए भी मृत के समान होता है। 'हमारे सपनों का मर जाना' का अर्थ है-कुछ करने की इच्छा समाप्त होना। मनुष्य कल्पना करके ही नए-नए कार्य करता है तथा विकसित होता है। सपनों के मर जाने से हम यथास्थिति को स्वीकार करके स्थिर एवं विचारशून्य हो जाते हैं।

(ii) इस कविता में पूर्वी प्रदेशों की स्त्रियों की व्यथा को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। रोजगार कीतलाश में युवक कलकत्ता जैसे बड़े शहरों में जाते हैं और वहीं के होकर रह जाते हैं। पीछे उनकी स्त्रियाँ वपरिवार के लोग अकेले रह जाते हैं। स्त्रियाँ अनपढ़ होती हैं, अत: वे पति की चिट्ठी भी नहीं पढ़ पातीं औरन अपना संदेश भेज पाती हैं। उनका जीवन पिछड़ा रहता है तथा वे पति का वियोग सहन करने को विवशरहती हैं।

(iii) -'इस दौर में भी' का आशय है कि वर्तमान परिवेश में पाश्चात्य और शहरी प्रभाव ने सभी संस्कारपूर्ण मौलिक तत्वों को नष्ट कर दिया है, परंतु कवयित्री निराश नहीं है, वह कहती है कि हमारी समृद्ध परंपरा में आज भी बहुत कुछ शेष है। आओ हम उसे मिलकर बचा लें। यही इस समय की माँग है। लोगों का विश्वास, उनकी टूटती उम्मीदों को जीवित करना, सपनों को पूरा करना आदि को सामूहिक प्रयासों से बचाया जा सकता है।

प्रश्न-8 निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए (2x2=4)

(i) कबीर कहते हैं कि ईश्वर एक है और उसका कोई निश्चित रूप या आकार नहीं है। वह सर्वव्यापी है। अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए उन्होंने कई तर्क दिए हैं। जैसे-संसार में एक ही हवा बहती है, एक ही पानी है तथा एक ही प्रकार का प्रकाश सबके अंदर समाया हुआ है। जैसे बढ़ई लकड़ी को काट सकता है परंतु आग को नहीं। वैसे ही शरीर नष्ट हो जाता है किंतु आत्मा सदैव अमर बनी रहती है। आत्मा परमात्मा का ही अंश है जो अलग-अलग रूपों में सबमें समाया हुआ है। अत: ईश्वर एक है।

(ii) वास्तव में कवि अपने पिता के विषय में बताता है कि उनमें वृद्धावस्था का कोई लक्षण नहीं दिखाई देता है।वे आज भी बहुत फुर्तीले हैं और दौड़ लगा सकते हैं।खिलखिलाकर हँसते हैं।वे इतने निडर हैं कि मौत के सामने भीनहीं हिचकिचाते।उनमें इतना साहस है कि वे शेर के सामने भी भयभीत नहीं होंगे। उनकी आवाज़ मानो बादलों की गर्जना है।हर काम को तूफ़ान की रफ्तार से करने की उनमें अद्भुत क्षमता है।वे नियमित गीता का पाठ और व्यायाम करते हैं। वे बहुत ही भावुक एवं संवेदनशील हैं उनमें राष्ट्र-प्रेम भी है।

(iii) अक्क महादेवी दूसरे वचन में ईश्वर को जूही के फूल के समान बताती हैं। इन दोनों में साम्य का आधार यह है कि जिस प्रकार जूही का फूल श्वेत,सात्विक, कोमल और सुगंधयुक्त है, उसी प्रकार ईश्वर भी समस्त विश्व में सबसे सात्विक, कोमल हृदय हैं। जिस प्रकार जूही का पुष्प अपनी सुगंध बिखेरने में भेदभाव नहीं करता, उसी प्रकार ईश्वर भी अपनी कृपा सब पर समान रूप से बरसाते हैं।

प्रश्न-9 निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-(5 अंक)

(i) घ- दबा हुआ आदमी शायर है

(ii) ग- शायर को

(iii) ख- कवियों से

(iv) क- कविसम्मेलन-सा

(v) ग- कृश्नचंदर

प्रश्न-10 निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए (3x2=6)

(i) एक दिन धनराम को तेरह का पहाड़ा नहीं आया तो आदत के अनुसार मास्टर जी ने संटी मँगवाई और धनराम से सारा दिन पहाड़ा याद करके छुट्टी के समय सुनाने को कहा। जब छुट्टी के समय तक उसे पहाड़ा याद न हो सका तो मास्टर जी ने उसे मारा नहीं वरन् कहा कि "तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें ?" यही वह कथन था जिसे पाठ में लेखक ने जबान के चाबुक कहा है, क्योंकि धनराम एक लोहार का बेटा था और मास्टर जी का यह कथन उसे मार से भी अधिक चुभ गया। जैसा कि कहा भी जाता है 'मार का घाव भर जाता है, पर कड़वी जबान का नहीं भरता'। यही धनराम के साथ हुआ और निराशा के कारण वह अपनी पढ़ाई आगे जारी नहीं रख सका।

(ii) किसी फ़िल्म की शूटिंग करते समय फिल्मकार को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता है-धन की कमी,कलाकारों का चयन, कलाकारों के स्वास्थ्य, मृत्यु आदि की स्थिति, पशु-पात्रों के दृश्य की समस्या,बाहरी दृश्यों हेतु लोकेशन ढूँढ़ना, प्राकृतिक दृश्यों के लिए मौसम पर निर्भरता,स्थानीय लोगो काहस्तक्षेप व असहयोग,संगीतव दृश्यों की निरंतरता हेतु भटकना।

(iii) रजनी ट्यूशन के रैकेट के बारे में निदेशक के पास जाती है। उसे बताती है कि बच्चों को जबरदस्ती ट्यूशन करने के लिए कहा जाता है। ऐसे लोगों के बारे में बोर्ड क्या कर रहा है? निदेशक ने इस समस्या को गंभीरता से नहीं लिया। वे सहज भाव से कहते हैं कि ट्यूशन करने में कोई मजबूरी नहीं है। कमजोर बच्चे को ट्यूशन पढ़ना पड़ता है। अगर कोई अध्यापक उन्हें लूटता है तो वे दूसरे के पास चले जाएँ।शिक्षा निदेशक का यह जवाब बहुत घटिया व गैरजिम्मेदाराना है। वे ट्यूशन को बुरा नहीं मानते। उन्हें इसमें गंभीरता नज़र नहीं आती। वे बच्चों के शोषण को नहीं रोकना चाहते। ऐसी बातें कहकर वह अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ना चाहते है।

प्रश्न-11 निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए (2x2-4)

(i) मियाँ नसीरुद्दीन को नानबाइयों का मसीहा कहा गया है क्योंकि वे मसीहाई अंदाज से रोटी पकाने की कला का बखान करते थे। वे नानबाई हुनर में माहिर थे। उन्हें छप्पन तरह की रोटियाँ बनानी आती थी। यह तीन पीढ़ियों से उनका खानदानी पेशा था। उनके दादा और पिता बादशाह सलामत के यहाँ शाही बावर्ची खाने में बादशाह की खिदमत किया करते थे। मियाँ रोटी बनाने को कला मानते हैं तथा स्वयं को उस्ताद कहते हैं। उनका बातचीत करने का ढंग भी महान कलाकारों जैसा है।

(ii) लेखक ने यहाँ बंगाल के विभाजन की ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया है। लॉर्ड कर्ज़न दो बार भारत का वायसराय बनकर आया। उसने भारत पर अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थाई करने के लिए अनेक काम किए। भारत में राष्ट्रवादी भावनाओं को कुचलने के लिए उसने बंगाल का विभाजन करने की योजना बनाई। कर्ज़न की इस चाल को देश की जनता समझ गई और उसने इस योजना का विरोध किया, परंतु कर्ज़न ने अपनी जिद्द को पूरा किया। बंगाल के दो हिस्से कर दिए गए-पूर्वी बंगाल तथा पश्चिमी बंगाल।

(iii) भारत की चर्चा नेहरू जी देश के कोने-कोने में आयोजित जलसों में जाकर अपने सुनने वालों से किया करते थे। इस विषय की चर्चा ज्यादातर वे किसानों से करते थे। उन्हें लगता था कि किसानों को संपूर्ण भारत के बारे में जानकारी कम है तथा उनका दृष्टिकोण सीमित है। वे उन्हें हिंदुस्तान का नाम भारत देश के संस्थापक के नाम से परंपरा से चला आ रहा है। इस देश का एक हिस्सा दूसरे से अलग होते हुए भी देश एक है। इस भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराने के लिए आंदोलन की प्रेरणा देते थे।

प्रश्न-12 निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए (5x2=10)

(i) रचना संसार और इसमें रहने वाले लोगों की अपनी एक अलग ही जीवन-शैली है। ये लोग लेखन कार्य के लिए सारी-सारी रात जाग सकते हैं, और जागतेभी हैं। तुम दूसरी आशापूर्णा देवी बन सकती हो'–जेठू का यह कथन बेबी को यही बात समझाने के लिए था। जेठू ने यह भी समझाया था कि आशापूर्णा देवी भी सारा काम-काज निबटाकर रात-रात भर चोरी-चोरी लिखती थी, जब लोग सो जाते थे। यह सच है रचना संसार में लेखन का एक नशा होता है, जैसा मुंशी प्रेमचंद को भी था, जो कई मील पैदल चलकर आते, खाने-पीने का ठिकाना न था, फिर भी डिबरी की रोशनी में कई-कई घंटे बैठकर लेखन कार्य करते थे। ऐसी ही बेबी हालदार ने भी किया। जब सारी झुग्गी बस्ती सो जाती तो वह लेखन कार्य करती रहती थी।

(ii) शास्त्रीय संगीतकारों का एक बहुत बड़ा वर्ग हमारे देश में रहता है। शास्त्रीय संगीत की परंपरा बहुत प्राचीन व उत्कृष्ट है। शास्त्रीय संगीत में प्रत्येक राग के अनुसार स्वर, लय, ताल आदि निश्चित होते हैं, उनमें थोड़ा-सा भी परिवर्तन असहनीय होता है। लोक संगीत या फ़िल्मी संगीत स्वर, लय, ताल आदि के संबंध में इतना सख्त रवैया नहीं रखता। इसमें जो भी श्रोताओं को आहलादित करे, वही श्रेष्ठ समझा जाता है। इसे सीखने के लिए भी शास्त्रीय संगीत की तरह वर्षों के अभ्यास की जरूरत नहीं होती। शास्त्रीय संगीत के आचार्य चित्रपट या फ़िल्मी संगीत पर यह दोष मढ़ते रहते हैं कि उसने लोगों के कान बिगाड़ दिए हैं; अर्थात् उसके कारण लोगों को केवल कर्णप्रिय धुनें सुनने की आदत पड़ गई है।इस विषय में कुमार गंधर्व का मत है कि वस्तुतः फ़िल्मी संगीत ने लोगों के कान बिगाड़े नहीं अपितु सुधारे हैं। आज फ़िल्मी संगीत के कारण एक साधारण श्रोता भी स्वर, लय, ताल आदि के विषय में जानकारी रखने लगा है। लोगों की रुचि संगीत में बढ़ी है। शास्त्रीय संगीत के काल में कितने लोग संगीत का ज्ञान रखते थे? कितने लोग उसके दीवाने होते थे? अर्थात् बहुत कम। आज लोग केवल फ़िल्मी

संगीत ही नहीं शास्त्रीय संगीत की ओर भी मुड़ने लगे हैं। यह भी फ़िल्मी संगीत के कारण ही संभव हुआ है। हमारा मत भी कुमार गंधर्व से मिलता है। हमारा भी यही मानना है कि आज के फ़िल्मी संगीत के कारण ही शास्त्रीय संगीतकारों की पूछ भी बढ़ी है। जब उन्हें फ़िल्मों में संगीत देने व कार्यक्रम प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है तो लाखों लोग उन्हें पहचानते हैं। अतः फ़िल्मी संगीत पर उपर्युक्त दोष लगाना उचित नहीं है।

(iii) राजस्थान में खड़िया पत्थर की पट्टी पर ही कुंइयों का निर्माण किया जाता है। कुंई का निर्माण ग्राम-समाज की सार्वजनिक जमीन पर होता है,परंतु उसे बनाने और उससे पानी लेने का हक उसका अपना हक है। सार्वजनिक जमीन पर बरसने वाला पानी ही बाद में वर्ष-भर नमी की तरह सुरक्षित रहता है। इसी नमी से साल भर कुंइयों में पानी भरता है। नमी की मात्रा वहाँ हो चुकी वर्षा से तय हो जाती है। अत: उस क्षेत्र में हर नई कुंई का अर्थ है- पहले से तय नमी का बँटवारा। इस कारण निजी होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में बनी कुंइयों पर ग्राम-समाज का अंकुश लगा रहता है। यदि यह अंकुश न हो तो लोग घर-घरअनेककुंई बना लेंगे और सबको पानी नहीं मिलेगा। बहुत जरूरत पड़ने पर ही समाज नई कुंई के लिए अपनी स्वीकृति देता है।

संदर्भ एवं आभार

1- www.learncbse.in>ncert-solutions- forclass 11-hindi

2- https://keepinspringme.in>question

3- www.studyrankers.com>ncert

4- www.cbsetuts.com>ncert-solutions

5- https://cbseacademic-nic.in

6- https://ncert.nic.in/textbook

7- https://hindicoaching.in

X--X